Library

वार्षिक प्रतिवेदन
2005–2006

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

विषय–सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	1
उद्देश्य	3
प्रशासनिक प्रतिवेदन	
• के.हो.अ.प. का संगठनात्मक ढांचा	7
• शासी निकाय	9
• स्थायी वित्त समिति	11
• वैज्ञानिक सलाहकार समिति	11
• औषध मानकीकरण के लिए उप–समिति	12
• नैदानिक अनुसंधान के लिए उप–समिति	13
• होम्योपैथिक रोगोत्पादक परीक्षण (औषध प्रमाणन) पर उप–समिति	14
• परिषद् की सेवाओं में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति का प्रतिनिधित्व	15
• बजट प्रावधान	15
तकनीकी प्रतिवेदन	
• नैदानिक अनुसंधान (भाग–I) और (भाग–II)	21
• प्राकृतिक आपदाओं/महामारियों में चिकित्सा राहत	94
• नैदानिक सत्यापन अनुसंधान	99
• औषध प्रमाणन अनुसंधान	135
• औषध मानकीकरण	139
• औषधीय पादपों का सर्वेक्षण, संग्रहण और खेती करना	143
• सहयोगात्मक अध्ययन	149
– अन्तर्राष्ट्रीय	
– भारत में अनुसंधान अध्ययन	
• प्राकारबाह्य अनुसंधान योजना	155
प्रकाशन	159
प्रलेखन तथा पुस्तकालय	160
विविध	
• समितियों की बैठकें	163
• कार्यशालाएं/संगोष्ठियां/अभिमुखीकरण कार्यक्रम	164
• स्वास्थ्य मेले/प्रदर्शनियां	165
के.हो.अ.प. के अधीन संस्थान/इकाइयां	167
संकेताक्षर	169
वित्तीय विवरण	173

प्राक्कथन

होम्योपैथी में अनुसंधान को सरल और कारगर बनाने के लिए, भारत सरकार द्वारा सुनियोजित और व्यवस्थित अनुसंधान की आवश्यकता प्रबलता से महसूस की गई थी । इसके परिणामस्वरूप, आयुर्वेद और सिद्धा, यूनानी औषध, योग और प्राकृतिक चिकित्सा तथा होम्योपैथी में अनुसंधान करने के लिए सन् 1969 में केन्द्रीय भारतीय औषध और होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् (सी.सी.आर.आई.एम.एच.) की स्थापना की गई थी । केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् (सी.सी.आर.एच.) का औपचारिक गठन 30 मार्च, 1978 को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में एक स्वायत्त संगठन के रूप में किया गया था । तथापि, जनवरी 1979 में ही परिषद् ने एक स्वतंत्र संगठन के रूप में कार्य करना आरंभ किया ।

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् देश में होम्योपैथी में व्यवस्थित अनुसंधान के कार्य में लगी एक शीर्ष संगठन है । यह देश के विभिन्न भागों में स्थित 37 संस्थानों और इकाइयों के एक नेटवर्क के माध्यम से अपने उद्देश्यों को पूरा करती है । यह केन्द्र होम्योपैथी के अनेक पहलुओं में अनुसंधान करते है । अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्र हैं : नैदानिक अनुसंधान, औषध प्रमाणन, नैदानिक सत्यापन, औषध मानकीकरण और औषधीय पादयों का सर्वेक्षण, संग्रहण और पोषण ।

परिषद् ने सामान्य और जनजातीय क्षेत्रों में, अपने संस्थानों और इकाइयों को सौंपे गए 33 रोगों पर नैदानिक अनुसंधान के कार्य को पूरा कर लिया है । अपने औषध प्रमाणन कार्यक्रम के अंतर्गत इसने नई औषधियों, विशेष रूप से देशी मूल की औषधियों, के प्रमाणन में कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं और 71 औषधियों पर काम को पूरा किया है । अपने औषध मानकीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद् ने होम्योपैथी में इस्तेमाल की गई 227 औषधियों पर औषध प्रभाव विज्ञान अध्ययन, 205 औषधियों पर भौतिक–रसायन अध्ययन और 124 औषधियों पर औषध निर्माण विज्ञान संबंधी अध्ययन भी पूरे कर लिये हैं । 55 औषधियों का नैदानिक सत्यापन पूरा कर लिया गया है और तैयार किए गए रोग सूचक आंकड़े, व्यवसाय के लाभ के लिए प्रकाशित कर दिए गए हैं ।

परिषद् ने, व्यवसाय के लाभ के लिए चिकित्सा सार और वर्तमान स्वास्थ्य साहित्य जागरूकता सेवा के अलावा अब तक सी.सी.आर.एच. के तिमाही बुलेटिनों के 27 खण्ड, सी.सी.आर.एच. न्यूज के 36 अंक, विभिन्न रोगों पर 24 हैंड–आउट/फोल्डर, 08 बिना मूल्य वाली पुस्तकें और 23 समूल्य पुस्तकें प्रकाशित की हैं और आम जनता की सूचना के लिए दो वीडियो फिल्में अर्थात 'मैजिक ऑफ टाइनी ग्लॉब्यूल्स' और 'होम्योपैथी : मिथ्स एण्ड फैक्ट्स' तैयार की हैं ।

वर्ष 2005–2006 में परिषद् का वास्तविक व्यय, योजनागत के अंतर्गत 905.55 लाख रूपये और गैर–योजनागत के अंतर्गत 550.03 लाख रूपये था ।

मुझे, वर्ष 2005–2006 की परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट जिसमें इस अवधि के दौरान इसके कार्यकलापों को दर्शाया गया है, प्रस्तुत करने में प्रसन्नता हो रही है ।

च. नायक

प्रोफेसर सी. नायक

निदेशक

उद्देश्य

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् की स्थापना 30 मार्च, 1978 को सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन अधिनियम, 1860 का **XXI** के अंतर्गत निम्नलिखित मुख्य उद्देश्यों से की गई थी :

- होम्योपैथी में कोई अनुसंधान या अन्य कार्यक्रम शुरू करना।
- होम्योपैथी में अनुसंधान से संबंधित सूचना का प्रसार करना और जानकारी का प्रचार करना।
- रोगों के कारणों, फैलने के तरीके, निवारण और उपचार के संबंध में प्रयोगात्मक उपाय प्रारंभ करना।
- होम्योपैथी के विभिन्न पहलुओं–मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त में, वैज्ञानिक अनुसंधान प्रारंभ करना, उसमें सहायता, विकास और समन्वय करना।
- सी.सी.आर.एच. के उद्देश्यों के समान उद्देश्यों में रूचि रखने वाले अन्य संस्थानों, एसोसिएशनों, समितियों के साथ सूचना का आदान प्रदान करना।

प्रशासनिक प्रतिवेदन

संगठनात्मक ढांचा

परिषद् 37 इकाइयों/संस्थानों का एक नेटवर्क था जिसमें देश के विभिन्न भागों में 11 इकाइयां जनजातीय क्षेत्रों में स्थित थी।

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान	1	कोट्टायम (केरल)
होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान	1	लखनऊ (उ.प्र.)
क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान	8	नई दिल्ली, पुरी (उड़ीसा), जयपुर (राजस्थान), मुंबई (महाराष्ट्र), गुडिवाड़ा (आंध्र प्रदेश), इम्फाल (मणिपुर), गुवाहाटी (असम), शिमला (हि.प्र.)
नैदानिक अनुसंधान इकाइयां (होम्यो.)	6	भोपाल (म.प्र.), गुड़गांव (हरियाणा), उडुपी (कर्नाटक), पोर्ट ब्लेयर (अंडमान एवं निकोबार), तिरुपति (आ.प्र.), चेन्नई (तमिलनाडु),
नैदानिक अनुसंधान इकाइयां (जनजातीय क्षेत्र)	11	अगरतला (त्रिपुरा) एजावल (मिजोरम), भरौच (गुजरात), दीमापुर (नागालैंड), गंगटोक (सिक्किम), ईटानगर (अरूणाचल प्रदेश), जगदलपुर (छत्तीसगढ़), पांडिचेरी, रांची (झारखण्ड), शिलांग (मेघालय), सिलिगुड़ी (प.बंगाल)
औषध प्रमाणन अनुसंधान इकाइयां	3	कोलकाता (प.बंगाल) मिदनापुर (प.बंगाल), गाजियाबाद (उ.प्र.),
औषध मानकीकरण इकाइयां	2	गाजियाबाद (उ.प्र.) हैदराबाद (आ.प्र.)
नैदानिक सत्यापन इकाइयां	3	गाजियाबाद (उ.प्र.) पटना (बिहार), वृंदावन (उ.प्र.)
औषधीय पादपों का सर्वेक्षण एवं संग्रहण इकाई	1	उढगामंडलम (तमिलनाडु)
होम्योपैथिक उपचार केन्द्र (एच.टी.सी)	1	सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली

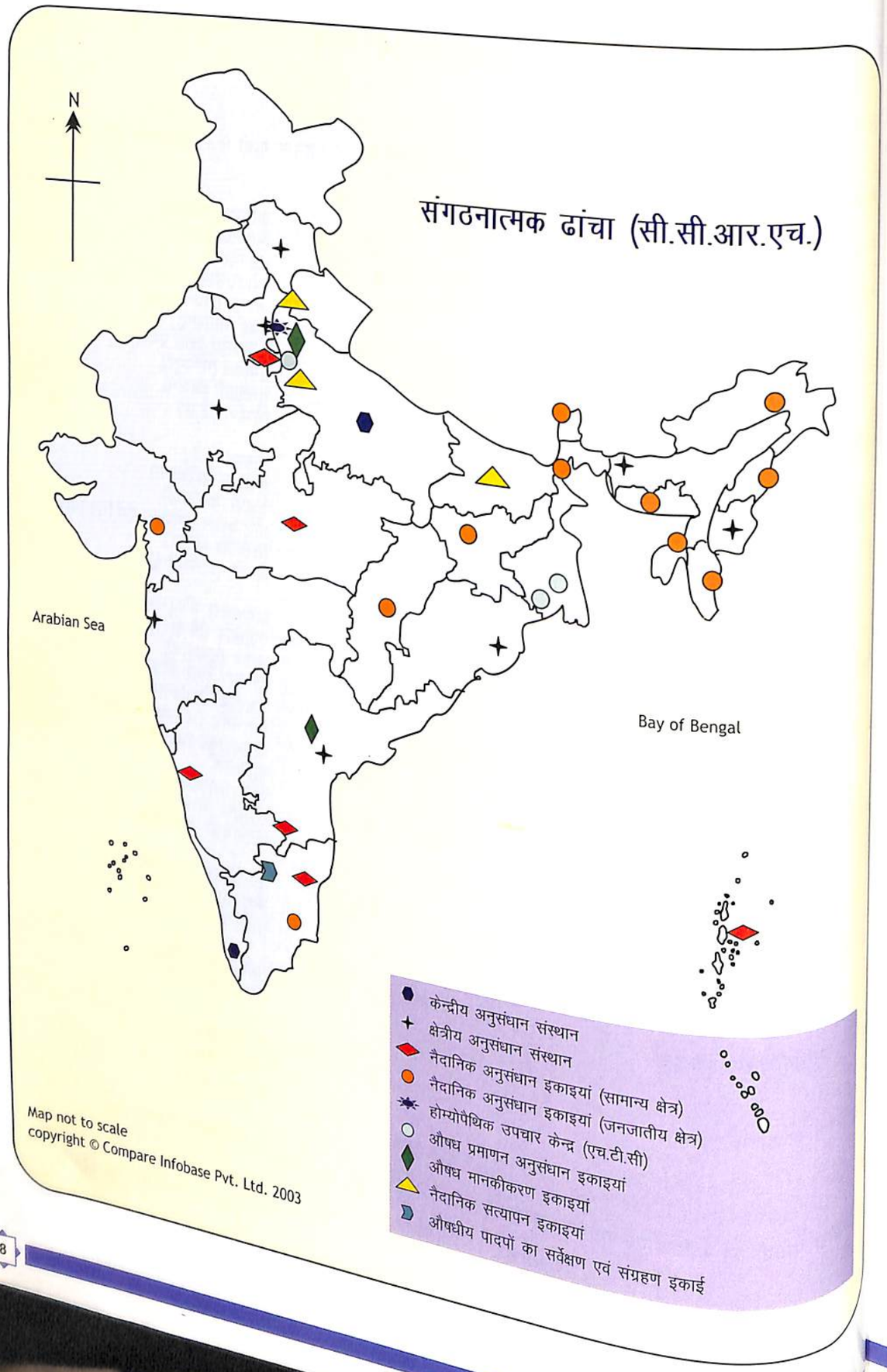

शासी निकाय

के.हो.अ.प. के शासी निकाय का पुनर्गठन 1 अक्तूबर, 2003 को तीन वर्षों के लिए किया गया था। तत्कालीन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री द्वारा (केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के अध्यक्ष की हैसियत से) संघ के ज्ञापन और नियमावली के नियम 19 के अंतर्गत प्रदत्त अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए शासी निकाय में नामांकन किए गए थे। पुनर्गठित शासी निकाय के सदस्य निम्नलिखित हैं :

1.	केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, निर्माण भवन, नई दिल्ली ।	अध्यक्ष
2.	केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री, निर्माण भवन, नई दिल्ली ।	उपाध्यक्ष–I (सरकारी)
3.	डा. जुगल किशोर, 86 गोल्फ लिंक्स, नई दिल्ली–110003	उपाध्यक्ष–II (गैर–सरकारी)

सरकारी सदस्य

4.	सचिव (आयुष), आयुष विभाग, रैड क्रास रोड, नई दिल्ली।	सदस्य
5.	अपर सचिव (वित्तीय सलाहकार), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, निर्माण भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
6.	संयुक्त सचिव (आयुष) आयुष विभाग, रैड क्रास रोड, नई दिल्ली।	सदस्य

गैर–सरकारी सदस्य

7.	डा. जनार्दन रेड्डी प्रोफेसर तथा अपर निदेशक (सेवानिवृत), आंध्र प्रदेश सरकार, म.न. 3–5–199/ए 15, गली नं. 5, नारायणगुडा, एस.बी.एच., हिमायत नगर लेन, हैदराबाद।	सदस्य
8.	डा. बी.एन. सिंह प्रधानाचार्य नेशनल होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, 1, विराज खंड, गोमती नगर, लखनऊ।	सदस्य

9. डा. कल्याण बनर्जी
1–1691, चित्तरंजन पार्क,
नई दिल्ली–110019. — सदस्य

10. डा. वी.के. चौहान,
बी–6/8, सफदरजंग एनक्लेव,
एन.सी.सी. कार्यालय के निकट,
नई दिल्ली–110029. — सदस्य

11. डा. अरूण बी. जाधव
प्रधानाचार्य
होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल,
भारती विद्यापीठ, कटराज, धनकावाडी,
पुणे–411013. — सदस्य

12. प्रोफेसर एम. प्रभाकर, पीएच.डी.
म.न. 6–4–361/26/ए,
अंजनेय स्वामी कालोनी,
भोलाशपुर, सिकन्दराबाद । — सदस्य

13. प्रोफेसर वाई.के. गुप्ता, एम.डी.,
विभागाध्यक्ष (भेशज गुण विज्ञान),
अ.भा.आ. संस्थान, अंसारी नगर,
नई दिल्ली । — सदस्य

14. डा. वी.जी.आर. शास्त्री,
बी–23 (डी–प्र टाइप फ्लैट),
मोती बाग–I, नई दिल्ली । — सदस्य

15. निदेशक,
राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान,
ब्लॉक जी.ई., सैक्टर– III, साल्ट लेक सिटी,
कोलकाता, पश्चिम बंगाल–700 106. — सदस्य

16. निदेशक,
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली। — सदस्य–सचिव

शासी निकाय, परिषद् के मामलों का प्रबंधन करती है, की गई प्रगति की समीक्षा करती है तथा वैज्ञानिक सलाहकार समिति/स्थायी वित्त समिति द्वारा संस्तुत नई योजनाओं/प्रस्तावों और परिषद् के बजट का अनुमोदन करती है।

स्थाई वित्त समिति

1. संयुक्त सचिव (आयुष), — सभापति
आयुष विभाग,
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
रैड क्रास रोड,नई दिल्ली।

2. संयुक्त सचिव (वित्तीय सलाहकार), — सदस्य
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
निर्माण भवन, नई दिल्ली।

परिषद् के अध्यक्ष द्वारा नामित — सदस्य
शासी निकाय के दो गैर–सरकारी सदस्य

3. डा. कल्याण बनर्जी — सदस्य
1–1691, चित्तरंजन पार्क,
नई दिल्ली–110019.

4 डा. जनार्दन रेड्डी — सदस्य
प्रोफेसर तथा अपर निदेशक (सेवानिवृत),
आंध्र प्रदेश सरकार,
म.न. 3–5–199/ए 15, गली नं. 5,
नारायणगुडा, एस.बी.एच., हिमायत नगर लेन,
हैदराबाद।

5. निदेशक, — सदस्य–सचिव
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति

के.हो.अ.प. के शासी निकाय के अध्यक्ष की हैसियत से माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री द्वारा परिषद् की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 13 अगस्त, 2002 को तीन वर्ष के लिए किए गए गठन की अवधि 12 अगस्त, 2005 को समाप्त हो गई । वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्य निम्नलिखित थे :

1. डा. दीवान हरीश चन्द, — सभापति
1, हनुमान रोड,
नई दिल्ली।

2. डा. डी.पी. रस्तोगी — सदस्य
ई–1/बी 7, अलकनंदा
शापिंग काम्पलैक्स,
नई दिल्ली।

3. डा. वी.के. गुप्ता,
सी–3/29, राजौरी गार्डन,
नई दिल्ली–110027. — सदस्य

4. डा. वी.के. चौहान,
एसोशिएट प्रोफेसर,
नेहरू होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज तथा अस्पताल,
बी–ब्लॉक, डिफैन्स कालोनी,
नई दिल्ली। — सदस्य

5. डा. आर.पी. पटेल,
हनीमैन हाऊस, कॉलेज रोड,
कोट्टायम, (केरल)–686001. — सदस्य

6. डा. गिरीश गुप्ता,
गौरंग क्लीनिक एवं होम्योपैथिक
अनुसंधान केन्द्र, बी–1/16, सेक्टर–ए,
कपूरथला, अलीगंज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश। — सदस्य

7. डा. कुमार धावले,
मनीषा, 285–ए, पांचवी रोड,
चैम्बूर, मुम्बई–400071. — सदस्य

8. डा. जनार्धन रेड्डी,
मकान नं. 3–5–199/ए–15,
गली नं. 5, नारायणगुडा, एस.बी.एच.,
हिमायत नगर लेन, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)। — सदस्य

9. निदेशक,
केन्द्रीय हौम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली। — सदस्य–सचिव

औषध मानकीकरण के लिए विशेष समिति

1. डा. के.पी. मजूमदार,
विवेक 105–टी.पी.एस. III, चोदहवीं रोड,
बान्द्रा, मुम्बई–400050. — सभापति

2. डा. मीनाती नन्दी,
भेषज गुण विज्ञान विभाग,
राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान,
सेक्टर–III, साल्ट लेक सिटी,
कोलकाता। — सदस्य

3. डा. ए.के. बासु,
22/1 (पी 177) रुबी पार्क ईस्ट,
पोस्ट ऑफिस हाल्तू, कोलकाता–700078 — सदस्य

4. निदेशक,
सी.आई.एम.ए.पी.,
पोस्ट ऑफिस सी.आई.एम.ए.पी.,
लखनऊ–226015 या उसका प्रतिनिधि। — सदस्य

5. निदेशक,
होम्योपैथिक भेषज अभिज्ञान प्रयोगशाला,
सी.जी.ओ. कॉम्पलैक्स, हापुड चुंगी रोड,
गाजियाबाद। — सदस्य

6. डा. एस.पी. सिंह,
सलाहकार (होम्यो.),
आयुष विभाग, रैड क्रास बिल्डिंग,
रैड क्रास रोड, नई दिल्ली। — सदस्य

7. निदेशक,
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली। — सदस्य–सचिव

नैदानिक अनुसंधान के लिए विशेष समिति

1. डा. दीवान हरीश चन्द,
1, हनुमान लेन,
नई दिल्ली–110 001. — सभापति

2. डा. आर.पी. पटेल,
हनीमैन हाऊस, कॉलेज रोड,
कोट्टायम, (केरल)–686 001. — सदस्य

3. डा. कुमार धावले,
मनीषा, 285–ए, पांचवी रोड,
चैम्बूर, मुम्बई–400 071. — सदस्य

4. डा. वी.टी. अगस्टीन,
401, मंदाकिनी एनक्लेव,
अलकनंदा, नई दिल्ली–110 019. — सदस्य

5. डा. ईश्वर दास,
उप सलाहकार (होम्यो.)
आयुष विभाग, रैड क्रास बिल्डिंग,
रैड क्रास रोड, नई दिल्ली। — सदस्य

6. निदेशक,
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली। — सदस्य–सचिव

होम्योपैथिक रोगोत्पादक परीक्षण (औषध प्रमाणन) पर विशेष समिति

1. डा. जुगल किशोर,
86, गोल्फ लिंक्स,
नई दिल्ली–110 003. — सभापति

2. डा. वी.के. गुप्ता,
सी–3/29, राजौरी गार्डन,
नई दिल्ली–110 027. — सदस्य

3. डा. वी.के. खन्ना,
प्रधानाचार्य,
नेहरू होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज व अस्पताल,
बी–ब्लॉक, डिफैन्स कालोनी, नई दिल्ली–110 024. — सदस्य

4. डा. एस.के. तिवारी,
प्रधानाचार्य,
फादर मूलर होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज,
कान्कानाडी, मैंगलौर–575 002. — सदस्य

5. डा. अशोक दास,
एसोशिएट प्रोफेसर,
राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान,
सैक्टर–III, साल्ट लेक सिटी,
कोलकाता–700 106 — सदस्य

6. निदेशक,
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली। — सदस्य–सचिव

परिषद् की सेवाओं में अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों का प्रतिनिधित्व एवं उनके लिए कल्याणकारी उपाय :

परिषद् की सेवाओं में अनुसूचित जाति/जनजाति के आरक्षण तथा प्रतिनिधित्व के संबंध में भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी किए गए आदेशों एवं मार्ग–निर्देशों का पालन परिषद् कर रही है। दिनांक 31.3.2006 को यथास्थिति परिषद् में स्वीकृत पदों, भरे गए पदों की संख्या और कार्यरत अनु.जा./अनु.ज.जा. तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के कर्मचारियों की संख्या निम्नलिखित थी :

समूह	स्वीकृत पदों की संख्या	भरे गए पदों की संख्या	अ.जा.	अ.ज.जा.	अन्य पिछड़ा वर्ग
क	135	123	27	02	13
ख	08	07	–	–	–
ग	187	177	32	07	26
घ	110	103	28	14	08

बजट

निम्नलिखित सारणी परिषद् के वर्ष 2005–06 के बजट को दर्शाती है:

	बजट अनुमान 2005–06 (लाख रू. में)	संशोधित अनुमान 2005–06 (लाख रू. में)	वास्तविक व्यय' 2005–06 (लाख रू. में)
योजनागत	1100.00	910.00	905.55
गैर–योजनागत	490.00	500.00	550.00
कुल	**1590.00**	**1410.00**	**1455.58***

*इसमें प्राप्तियों का उपयोग तथा पेशगियों का समायोजन शामिल है।

तकनीकी प्रतिवेदन

नैदानिक अनुसंधान

1. नैदानिक अनुसंधान

होम्योपैथी में नैदानिक अनुसंधान, औषध प्रमाणन का अनुपूरक होता है और स्वस्थ मानवों पर औषध प्रमाणन के दौरान संगृहित आंकड़ों की नैदानिक वैधता स्थापित करने में इसकी दीर्घकालिक भूमिका होती है । नैदानिक अध्ययन, विशिष्ट रोग अवस्थाओं में औषध पदार्थों की चिकित्सीय उपयोगिता के मूल्यांकन को भी सुसाध्य बनाते हैं जिससे उनके उचित और इश्टतम चिकित्सीय इस्तेमाल को प्रोत्साहन मिलता है । संक्षेप में, मरीजों की किसी लक्षित जनसंख्या पर नैदानिक अध्ययन, चिकित्सीय एजेंटों के विकास का एक अभिन्न अंग हैं । इसलिए परिषद् ने, राष्ट्रीय स्वास्थ्य के महत्व के रोगों अर्थात फाइलेरिया, एच.आई.वी. / एड्स, मलेरिया, कैंसर आदि की कुछ रोग अवस्थाओं में और देश के विभिन्न भागों में आम रोगों में भी होम्योपैथिक औषधियों के नैदानिक मूल्यांकन पर उचित जोर दिया है । अक्तूबर 2005 से, 1 केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, 8 क्षेत्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थानों, 1 होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, 6 नैदानिक अनुसंधान इकाइयों (सामान्य क्षेत्रों में), 11 नैदानिक अनुसंधान इकाइयों (जनजातीय क्षेत्रों में) और सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली के 1 होम्योपैथिक चिकित्सा केन्द्र तथा 2 औषध मानकीकरण इकाइयों, जिनमें सामान्य और जनजातीय क्षेत्र दोनों शामिल हैं, में नैदानिक अनुसंधान अध्ययन किए गए । इसलिए वर्ष 2005–06 का वार्षिक प्रतिवेदन दो भागों में संकलित किया गया है । भाग–1 में, अप्रैल, 2005 और अगस्त, 2005 से सामान्य क्षेत्रों में चल रहे निम्नलिखित 23 नैदानिक अध्ययनों के संबंध में आंकड़े दिए गए हैं :

1.
2. मानसिक रोग (व्यवहार विकृति रोग)
3. श्वसनीशोथ
4. गर्भाश्य ग्रीवा शोथ एवं अपरदन
5. संक्रमणीय रोग (औषध प्रतिरोधी क्षयरोग)
6. मधुमेह मेलीटस (एनआईडीडीएम)
7. तंत्रिका–रोग सहित मधुमेह फुट
8. मिरगी रोग (अपस्मार)
9. अमाशय शोथ
10. वृद्धावस्था विकृति
11. जियार्डियासिस
12. एच.आई.वी. / एड्स
13. सविरामी ज्वर
14. उत्तेजनशील आन्त्र सिंड्रोम
15. कुष्ठ रोग
16. श्वेत कुष्ठ (त्वचा विकृति)
17. अस्थि संधिशोथ
18. बाल रोग की समस्याएं
19. परिदंत शोथ
20. मूत्रांग में पथरी
21. सिक्कल सैल एनिमिया
22. त्वचा विकृतियां (खारिश)
23. उष्ण कटिबंधीय इओसिन रागी कौशिका बहुलता ऊपरी श्वासनली संक्रमण (यू.आर.टी.आई.)

प्रगति के मूल्यांकन का मानदंड

रोगियों की प्रगति के नैदानिक मूल्यांकन के लिए अपनाया गया मानदंड, अन्यथा विनिर्धारित किए गए रोगियों के अलावा, नीचे दिया गया है ।

- अरोग्यता : रोग के लक्षणों और चिन्हों का पूरी तरह निराकरण और उसके पश्चात रोग के स्वरूप (रोग के तीव्र / दीर्घकालिक / नैसर्गिक प्रगति) पर निर्भर करते हुए एक सप्ताह से तीन वर्ष तक की अवधि के लिए बीमारियों का दुबारा न होना ।
- सुधार
  - अति सुधार : रोग के लक्षणों और चिन्हों का पूरी तरह निराकरण ।
  - मध्यम सुधार : रोग के लक्षणों रोगलक्षणों का पूरी तरह निराकरण और चिन्हों में आंशिक राहत ।
  - अल्प सुधार : रोग के लक्षणों और चिन्हों में आंशिक राहत ।
  - सुधार नहीं : काफी समय तक उपचार करने के पश्चात कोई अनुक्रिया नहीं ।
  - उग्रता : रोग के लक्षणों और चिन्हों में वृद्धि ।
  - असूचित : पहले, दूसरे या तीसरे आगमन के पश्चात मरीज वापस सूचना नहीं देता।
- अनउपचारार्थ : मरीज परियोजना की अपेक्षिता को पूरा नहीं करते या इलाज करने वाला चिकित्सक, वैध कारणों से मरीज को अध्ययन के अधीन नहीं रखना चाहता ।
- उपचाराधीन : मरीज की स्थिति अस्थिर रहती है ।
  या
  मरीज रिर्पोटिंग वर्ष के अंतिम दिनों में आता है ।

इन निष्कर्षों का सकारात्मक लाभ यह है होम्योपैथी चिकित्सकों के पास अब मरीजों का इलाज करते समय, प्रमाण देने के लिए प्रमाणित रोगसूचक लक्षणों वाली होम्योपैथिक औषधियों कम संख्या में है । आरंभिक अध्ययनों के परिणामों और विशिष्ट नैदानिक अवस्थाओं में होम्योपैथिक औषधियों के छोटे समूह के रोगसूचक लक्षण के आधार पर परिषद् ने, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (आई.सी.एम.आर.), राष्ट्रीय संक्रमणीय रोग संस्थान (एन.आई. सी.डी.), राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (एन.ए.सी. ओ.) के संबंधित क्षत्रों के विशेषज्ञों और प्रतिष्ठित होम्योपैथिक शिक्षकों तथा अनुसंधानकर्ताओं के परामर्श से तैयार किए संलेखों पर, औषधियों के छोटे समूह, की चिकित्सीय उपयोगिता सुनिश्चित करने के लिए 18 बहु–केन्द्रिक अध्ययन आरंभ किए हैं ।

भाग–II, अक्तूबर 2005 और मार्च, 2006 के बीच प्राप्त नए अध्ययनों के अनुसंधान आंकड़ों से संबंधित है । अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, (एम्स), भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (आई.सी.एम.आर.), राष्ट्रीय संक्रमणीय रोग संस्थान (एन.आई.सी.डी.), राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (एन.ए.सी.ओ.) के विशेषज्ञ सलाहकारों और प्रतिष्ठित होम्योपैथिक शिक्षकों तथा अनुसंधानकर्ताओं के परामर्श से प्रतिपादित संलेखों पर अक्तूबर, 2005 में नए अध्ययन आरंभ किए गए थे । नियंत्रण के बाहर के

कारणों जैसे संबंधित विद्या विशेष में सलाहकारों की पहचान और नियुक्ति तथा नैदानिक–अध्ययनों में से प्रत्येक के लिए संलेख में यथा निर्धारित प्रयोगशाला संबंधी जांचों की आउटसोर्सिंग, से नए नैदानिक अध्ययन आरंभ करने में कुछ अनभिप्रेत विलंब हुआ है । इनसे संबंधित प्रस्तावों का अनुमोदन दिनांक 28 सितंबर, 2005 को हुई शासी निकाय की 15वीं बैठक (अनुमोदित कार्यवृत्त फरवरी, 2006 में प्राप्त हुआ) में उसके द्वारा किया गया । इस प्रकार सलाहकारों की नियुक्ति और प्रयोगशाला संबंधी जांचों की आउटसोर्सिंग केवल मार्च, 2006 में की जा सकी । इसलिए रिपोर्ट के अधीन वर्ष में सृजित और भाग–II में प्रस्तुत किए गए आंकड़े, नैदानिक अध्ययनों में नामांकन के लिए विशयों की जांच करने से संबंधित हैं ।

18 नए संलेखों पर नैदानिक अध्ययन, पहले ही आरंभ किए जा चुके हैं और स्वापक की लत छुड़ाने का संलेख, सोसायटी ऑफ यूथ फॉर प्रमोशनल मास (एस.वाई.पी.एम.) जो दिल्ली आधारित एक संगठन और अध्ययन में सहयोगी है, के परामर्श से तैयार किया जा रहा है । नए अध्ययन निम्नलिखित हैं :

1. अवसादक घटना के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका सुनिश्चित करने के लिए खुला नैदानिक परीक्षण ।
2. खंडित मानसिकता में होम्योपैथिक चिकित्सीय प्रभाव की व्यवहार्यता का मूल्यांकन करना, एक खुला नैदानिक परीक्षण ।
3. साधारण और श्लेषमल पुरानी श्वसनी शोथ में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
4. पुराने साइनुसाइटिस में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
5. सुसाध्य प्रॉस्टेट अतिवृद्धि में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
6. रजोनिवृत्ति के वर्शों के दौरान होने वाले कष्ट के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका सुनिश्चित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
7. पनसिकामयता में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
8. आमाशय आंत्रशोथ के नियंत्रण में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
9. पुराने वाहिका श्वसनीशोथ के नियंत्रण में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
10. मूत्राशय में पथरी में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
11. बच्चों में तीव्र नासिका रोग के नियंत्रण मे प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
12. श्वेत कुष्ट में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका सुनिश्चित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक नैदानिक परीक्षण ।
13. उपगामी एच.आई.वी. संक्रमण में होम्योपैथिक औषधियों का एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
14. एच.आई.वी. संक्रमण में साइक्लोस्पोरीन, अमीलीयम नाइट्रोजम, काकेनम म्यूरियाटिकम, अजाथीओपरीन और कोर्टीसन के होम्योपैथिक संपाक का एक नैदानिक परीक्षण ।
15. मधुमेह दूरवर्ती प्रतिसम (प्राथमिक संवेदी) बहुतंत्रिकारोग में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
16. उष्ण वलयिक इओसिनोफिलिया में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
17. मधुमेह फुट अल्सर में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।
18. बच्चों में तीव्र अतिसार रोग के नियंत्रण में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह विकसित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

भाग–।

अप्रैल 2005–अगस्त 2005

1. व्यवहारजन्य विकृतियां स्थिर होती हैं, वातावरण पर कम आधारित होती हैं और उनका उपचार करना अधिक कठिन होता है। होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता का मूल्यांकन करने की यह परियोजना केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.) को सौंपी गई थी ।

i) जराजीर्णता और जराजीर्णतापूर्व एंद्रिय मनोवैश्लेशिक स्थिति

01 नए रोगी सहित तीन रोगियों का अध्ययन किया गया । इनमें से दो में मध्यम सुधार और एक में अल्प सुधार देखा गया ।

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
लाइकोपोडियम 200	01	01
पल्साटिला 1 एम.	01	01

ii) खंडित मनस्कता

63 रोगियों (12 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया । इनमें से 07 में अति सुधार, 06 में मध्यम सुधार और 07 में अल्प सुधार देखा गया । दो रोगियों में सुधार नहीं देखा गया और 41 रोगी उपचाराधीन थे ।

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आर्सेनिक एल्बम 200, 1 एम.	01	
बेलाडोना 200	06	01
कल्केरिया कार्बोनिकम 200, 1 एम.	04	03
इग्नेशिया 1 एम.	03	03
लैकेसिस 200, 1 एम.	05	01
नेट्रम म्यूरिएटिकम 200	03	02
नक्स वोमिका 30, 1 एम.	13	02
पल्साटिल्ला 200	02	06
स्ट्रामोनियम 200	05	01
सल्फर 200, 1 एम.	09	02
		04

iii) प्रभावी मनोविकृति

120 रोगियों (43 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया । इनमें से 32 में अति सुधार, 26 में मध्यम सुधार और 21 में अल्प सुधार देखा गया । 14 रोगियों में सुधार नहीं देखा गया । 21 रोगियों ने कोई सूचना नहीं दी ।

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आर्सेनिक एल्बम 200, 1 एम.	07	03
बेलाडोना 200, 1 एम.	26	10
जेल्सीमियम 200, 1 एम.	04	03
हायोसायमस 1 एम.	06	03
इग्नेशिया 200, 1 एम.	17	05
लैकेसिस 200	10	03
नेट्रम म्यूरिएटिकम 200	04	02
नाइट्रिक एसिड 200, 1 एम.	10	03
नक्स वोमिका 200, 1 एम.	09	06
फास्फोरस 200, 1 एम.	20	07
प्लैटीना 200, 1 एम.	04	02
पल्साटिल्ला 200, 1 एम.	23	08
सल्फर 200, 1 एम.	11	04

iv) मद्यसारिक मनोविकृति

07 रोगियों (04 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया । इनमें से 03 में अति सुधार, 01 में मध्यम सुधार और 02 में अल्प सुधार देखा गया । एक रोगी उपचाराधीन था ।

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
लाइकोपोडियम 200	01	01
नक्स वोमिका 200	02	02
सल्फर 200	02	

v) संभ्रान्ति विकृति

07 रोगियों (03 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया । इनमें से 03 में अति सुधार, 03 में मध्यम सुधार देखा गया । एक रोगी प्रेक्षण अधीन था ।

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
लैकेसिस 200	03	02
फास्फोरस 200	01	01
पल्साटिल्ला 200, 1 एम.	01	01
सल्फर 200, 1 एम.	01	01

vi) बाल्यावस्था विशिष्ट मूलक मनोविकृति

13 रोगियों (06 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया । इनमें से 05 में अति सुधार और 08 में अल्प सुधार देखा गया ।

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
कल्केरिया कार्बोनिकम 200, 1 एम.	03	02
लाइकोपोडियम 200	02	01
फास्फोरस 200	03	02

vii) मनोदैहिक विकृति

विभिन्न नैदानिक समस्याओं वाले 123 रोगियों (28 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया और उनमें अलग-अलग स्तरों का सुधार पाया गया ।

2. श्वसनीशोथ

'श्वसनीशोथ में होम्यापैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने की' परियोजना नैदानिक अनुसंधान और महामारी सैल भोपाल तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुवाहाटी को सौंपी गई थी । इक्तालिस रोगियों का अध्ययन किया गया । इनमें से 19 रोगियों में अति सुधार, 24 रोगियों में मध्यम सुधार और 08 रोगियों में अल्प सुधार देखा गया। एक रोगी में सुधार नहीं हुआ ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
एकोनाइट नेप. 30	03	03
ब्रायोनिया 30, 200	03	03
डल्कामारा 30	02	02
आर्सेनिक आयोडेटम 30	04	04
रस टाक्सिकोडेन्ड्रन 30, 200	12	12
ड्रासेरा 30, 200	02	02
स्पाँजिया 30	07	07
हीपर सल्फ. 30	02	02
जस्टीशिया अधा. 30	03	03

अध्ययन के दौरान यह अवलोकन किया गया कि बारम्बारता की अवधि और बाद के दौरों में सघनता कम हो गई है और उन पर प्रभावी ढंग से नियंत्रण पा लिया गया है।

3. गर्भाशय ग्रीवा शोथ एवं अपरदन

'गर्भाशय ग्रीवा शोथ एवं अपरदन में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.) शिमला और औषध मानकीकरण इकाई (विस्तार इकाई) हैदराबाद को सौंपी गई थी । इक्कीस रोगियों (17 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया । इनमें से 03 रोगियों में अति सुधार, 03 रोगियों में मध्यम सुधार और 04 रोगियों में अल्प सुधार देखा गया । चार रोगी असूचित और 06 रोगी उपचाराधीन थे।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
एलूमिना 30, 200	01	01
क्रियोजोट 30, 200	01	01
लैकेसिस 30	01	01
नेट्रम म्यूरिएटिकम 30, 200	02	01
नाइट्रिक एसिड 30	01	01
सीपिया 30, 200	04	02

4. संक्रमणीय रोग

'संक्रामणीय रोगों में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता का पता लगाने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), तिरूपति को सौंपी गई थी ।

34 रोगियों (22 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया । इनमें से 19 रोगियों को रोगमुक्त किया गया, 03 रोगियों में मध्यम सुधार देखा गया । उन्नीस रोगियों में रोग की पुनरावृत्ति नहीं देखी गई।

अध्ययन किए गए 34 रोगियों (22 नए रोगियों सहित) की स्थिति अर्थात प्रतिश्याय (इन्फ्लुइंजा)–16, पेचिश–04, संक्रामक आमाशय आन्त्र शोथ–02 ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

प्रतिश्याय (इन्फ्लुइंजा)

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आर्सेनिक एल्बम 30, 200	05	04
बेलाडोना 200, 1 एम.	03	03
यूपाटोरियम पर्फोलिएटम 30, 200	02	02
जेल्सीमियम 30, 200	02	01
रस टाक्सिकोडेन्ड्रन 30, 200	04	03

पेचिस

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
एलो सोक. 200	01	01
मर्क. सोल. 30, 200	01	01
नक्स वोमिका 30, 200	02	02

आमाशय आंत्रशोथ

आर्सेनिक एल्बम 30, 200	01	01
कार्बो वेज. 30, 200	01	01

5. मधुमेह मेलीटस (एनआईडीडीएम)

'मधुमेह मेलीटस में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), नई दिल्ली, नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), चेन्नई और गुडगांव को सौंपी गई थी । अध्ययन किए गए 25 रोगियों में से, 06 रोगियों में अति सुधार, 05 रोगियों में मध्यम सुधार, 11 रोगियों में मध्यम सुधार हुआ और 3 रोगी में सुधार नहीं हुआ ।

प्रत्येक औषधि के सामने नीचे दी गई संख्या वाले रोगियों को विभिन्न स्तरों में मधुमेह मेलीटस के रोगलक्षणों से छुटकारा देने में निम्नलिखित औषधियों उपयोगी पाई गई :

यूरेनियम नाइट्रिकम 30	02
कल्केरिया कार्बोनिकम 200	01
एसिड फास्फोरिकम 30, 200	04
फास्फोरस 30, 20	02
नेट्रम म्यूर. 30, 200	02
पल्साटिल्ला 30, 200	04
इन्सुलिन 30, 200	07

6. बाह्य तंत्रिका रोग सहित मधुमेह फुट

'बाह्य तंत्रिका रोग सहित मधुमेह फुट में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता का मूल्यांकन करने' की परियोजना औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद को सौंपी गई थी । अठावन रोगियों (08 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया। अध्ययन के दौरान व्यक्तिपरक और उद्देश्यपरक रोगलक्षणों से छुटकारा मिला।

प्रत्येक औषधि के सामने नीचे दी गई संख्या वाले रोगियों को विभिन्न स्तरों में बाह्य तंत्रिका रोग सहित मधुमेह मेलीटस के रोगलक्षणों से छुटकारा देने में निम्नलिखित औषधियों उपयोगी पाई गई :

आर्सेनिक एल्बम 6, 30, 200	05
मर्क्यूरियस सोल्युविलिस. 30, 200	04
नेट्रम म्यूरिएटिकम 30	05
फास्फोरस 30	04
पल्साटिल्ला 30	05
साइलीशिया 30	03
सल्फर 30, 200	05

7. मिरगी रोग (अपस्मार)

'मिरगी रोग में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना केन्द्रीय अनुसंधान (होम्यो.), कोट्टायम को सौंपी गई थी । इक्यानवें रोगियों (09 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया। इनमें से 02 रोगियों में अति सुधार, 06 में मध्यम सुधार और 02 में मध्यम सुधार देखा गया।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आर्निका मोन्ट. 200	01	01
ओपियम 30	01	01
फास्फोरस 30	01	01
सल्फर 30	01	01

8. अमाश्य शोथ

'अमाश्य शोथ में होम्योपैथिक औषधियों का मूल्यांकन करने' की परियोजना क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), इम्फाल को सौंपी गई थी । छब्बीस रोगियों का अध्ययन किया गया । इनमें से 7 में अति सुधार, 8 में मध्यम सुधार और 11 में अल्प सुधार देखा गया ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
ऐनाकार्डियम 30, 200	03	03
आर्सेनिक एल्बम 30, 200	11	09
नक्स वोमिका 30, 200	15	12
फास्फोरस 30	04	04

9. जरा व्याधिकी/वृद्धावस्था विकृति

'जरा व्याधिकी विकृति में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना, नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), गुडगांव और औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद को सौंपी गई थी । तरेसठ रोगियों (34 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया। इनमें से 02 रोगियों में सामान्य सुधार और 34 में अल्प सुधार देखा गया । 10 रोगियों में सुधार नहीं देखा गया ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आवेना सैटाइवा	01	01
ब्रायोनिया	29	19
कास्टिकम	02	02
एब्रोमा अगस्ता	06	05
एलूमिना	01	01
लैकेसिस	01	01
लाइकोपोडियम	02	01
नैट्रम म्यूरिएटिकम	01	01
नक्स वोमिका	01	01
पल्साटिल्ला	01	01

10. जियार्डियासिस

'जियार्डियासिस रोग में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना, नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), पोर्ट ब्लेयर को सौंपी गई थी। अठाइस रोगियों (20 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया । इनमें से 03 रोगियों में अति सुधार और 02 रोगियों में सामान्य सुधार देखा गया । 02 रोगियों ने सूचना नहीं दी और 01 रोगी छोड़कर चला गया । 20 रोगियों में रोग की कोई पुनरावृत्ति नहीं देखी गई।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
एटिस्टा इंडिका 30	10	08
चाइना 30	07	07
पोडोफाइलम 30	08	07
सल्फर 30	03	03

11. एच.आई.वी./एड्स

उद्देश्य: एचआईवी/एड्स के नियंत्रण में होम्योपैथिक औषधियों की भूमिका का नैदानिक मूल्यांकन करना। यह परियोजना, क्षेत्रीय अनुसंधान इकाई (होम्यो.), मुम्बई, गुडीवाडा, नई दिल्ली और इम्फाल, नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), चेन्नई और होम्योपैथिक उपचार केन्द्र, सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली को सौंपी गई थी।

रोग के संचरण का तरीका	रोगियों की संख्या	
	नये	पुराने
यौन सम्बन्ध		
- विभिन्न लिंगों में	86	148
- समलिंगकामुकता	01	–
संक्रमित निडल्स/सीरीन्ज	–	07
रक्त परिसरन	–	–
मातृ–भ्रूण (स्तन पान सहित)	02	11
अन्य अज्ञान	04	–
सीडीसी वर्गीकरण के अनुसार चरण (आरंभ में)		
चरण-I- तीव्र सीरम परिवर्तन	–	–
चरण-II- उपगामी सीरम सकारात्मक	53	99
चरण-III- स्थायी व्यापकीकृत लिम्फाडेनोपैथी	12	06
चरण-IV(क)- एड्स संबंधी जटिलताएं	24	34
चरण-IV(ख)- तंत्रिका विज्ञान संबंधी अभिव्यक्ति के साथ एआरसी या एड्स	–	–
चरण-IV(ग)- अपोरचुनिस्टिक्स संक्रमणों में एड्स शामिल है	02	05
चरण-IV(घ)- सांघातिकता	–	–
चरण-IV(ङ)- अन्य स्थितियां/बालचिकित्सा	–	–
उपचाराधीन	–	–
असूचित	–	–
जिनकी मृत्यु हो गई	02	–

अध्ययन किए गए 263 रोगियों (93 नए और 170 पुराने) में से कुछ रोगी अप्रैल 2005 से मार्च 2006 की अवधि के दौरान पंजीकृत किए गए थे । इसलिए अनुवर्तन की अल्प अवधि के कारण रिपोर्टिंग के समय उनकी स्थिति निर्धारित करना कठिन है । अध्ययन के दौरान यह अवलोकन किया गया कि निदर्शित औषधियों का सेवन करने से अनेक लक्षणों और रोगलक्षणों अर्थात खांसी, मौखिक कंडीडियासिस, सिरदर्द, कमरदर्द, वजन घट जाने, कमजोरी, दीर्घकालिक अतिसार, जननांगों में फूटन आदि जो एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति में बार–बार देखे जाते हैं, से छुटकारा देने में सहायता मिली ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आर्सेनिक एल्बम 30, 200	18	17
कल्केरिया कार्ब. 200	02	02
चाइना 30, 200	02	01
मर्क.सोल. 200	37	36
नेट्रम म्यूर. 200	11	11
पल्साटिल्ला 200	18	17
रस टाक्स. 30, 200	46	43
सीपिया 1 एम.	02	02
सल्फर 30, 200	02	01
टुबरकुलीनम 200	02	01
थूजा 30, 200, 1 एम.	03	03
ब्रायोनिया 30, 200	38	38
बेलाडोना 30, 200	02	02
नक्स वोमिका 30, 200	17	17
लाइकोपोडियम 30, 200	10	09
एसिडम फास्फोरिकम 30	07	07
एलोज 30, 200	09	09
नाईट्रिक एसिड 30	05	05

12. सविरामी ज्वर

'सविरामी ज्वर में होम्यापैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, जयपुर को सौंपी गई थी । तैंतीस रोगियों (21 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया । इनमें से 19 रोगी रोगमुक्त हो गए, 08 में अति सुधार और 06 में सामान्य सुधार देखा गया। पंद्रह रोगियों में रोग की कोई पुनरावृत्ति नहीं देखी गई ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आर्सेनिक एल्बम 30	04	04
बेलाडोना 30	03	03
चाइना आर्स.	04	04
यूपाटोरियम पर्फोलिएटम 30	06	06
रस टाक्सिकोडेन्ड्रन 30	07	07

13. उत्तेजनशील आंत सिंड्रोम

'उत्तेजनशील आंत सिंड्रोम में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), पोर्ट ब्लेयर को सौंपी गई थी।

20 रोगियों (15 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया। इनमें से 07 में अति सुधार, 09 में मध्यम सुधार और 02 में मध्यम सुधार देखा गया। दो रोगियों ने कोई सूचना नहीं दी । आठ रोगियों में रोग की पुनरावृत्ति नहीं देखी गई।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आर्सेनिक एल्बम 200	01	01
चाइना 200	01	01
लाइकोपोडियम 200	01	03
नक्स वोमिका 200	04	04
फास्फोरस 200	05	03
सल्फर 200	04	02
आर्जेण्टम नाइट्रिकम 200	03	03
जेल्सीमियम 200	04	03
	03	

14. कुष्ठ रोग

'कुष्ठ रोग में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पुरी और नैदानिक अनुसंधान इकाई, चेन्नई को सौंपी गई थी ।

इस रोग में प्रभावी पाई गई औषधियां हैं–मर्क. सोल. 30,200, मर्क.बिन.आयोड. 6,200, साईलीशिया 30,6एक्स.,200, सल्फर 30,200, एविना सटाइवा 30, रस टाक्सिकोडेन्ड्रन 200, हाइड्रोकोटाइल 6 ।

कुष्ठ रोग पर एक खुला नैदानिक परीक्षण अक्तूबर, 2003 में क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पुरी में आरंभ किया गया था । सोसाइटल नैदानिक कैम्पों के माध्यम से रोगी एकत्र किए गए थे । अप्रैल 2005 से सितंबर 2005 के दौरान, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पुरी में 20 ऐसे रोगी अध्ययन के अधीन थे जिनमें चमड़ी पर (ए. बी) सकारात्मक धब्बे देखे गए। इन रोगियों को एमडीटी (मल्टी ड्रग थैरेपी ट्रीटमैंट्र) के पश्चात पोस्ट रिसीडयुअल शिकायतें हुई ।

बीस रोगियों में से 03 रोगियों में ग्रेड 'ओ' की अनुक्रिया अर्थात अनेसथिसिया का अभाव/विकलांगता/आंखों की समस्या/प्लांटर अल्सर, देखी गई, चार रोगियों में ग्रेड 'I' की अनुक्रिया अर्थात उपरोक्त में से किसी रोग लक्षण की उपस्थिति परन्तु कोई स्पष्ट क्षति नहीं, देखी गई, चार रोगियों में ग्रेड 'II' की अनुक्रिया अर्थात उपरोक्त में से किसी रोग लक्षण की उपस्थिति परन्तु किसी स्पष्ट क्षति के बिना देखी गई, और 5 रोगी अभी भी उपचाराधीन हैं । एक रोगी में सुधार नहीं देखा गया और 3 रोगी अनुपस्थित थे।

15. धवल रोग

'धवल रोग में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने की' परियोजना अप्रैल 2005 से अगस्त 2006 दौरान क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), गुडीवाडा को सौंपी गई थी । एक सौ चौंसठ नए रोगियों (09 नए और 155 पुराने) अध्ययन किया गया । इनमें से 26 रोगियों की हालत स्थिर रही, 05 रोगी रोगमुक्त हो गए, 08 रोगियों में अच्छा खासा सुधार में सामान्य सुधार और 08 रोगियों में अल्प सुधार देखा गया। दो रोगियों में सुधार नहीं देखा गया गया । 52 रोगियों ने सूचना दी, 40 रोगी महत्वपूर्ण नहीं थे, 06 रोगी असूचित, 02 रोगियों में उग्रता गई और 06 रोगियों को शामिल नहीं किया गया । के दौरान यह अवलोकन किया गया कि निम्नलिखित निदर्शित औषधियों ने, अध्ययन में नामांकित मरीजों में लक्षणों रोगलक्षणों से छुटकारा देने में सहायता की ।

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	कुल	रोग–मुक्त हुए	अति सुधार	माध्यम सुधार	अल्प सुधार	कोई खास राहत नहीं	स्थिर	उग्रता हुई
आर्स.एल्ब.200	32	02	02	02	02	17	05	02
कल्क.कार्ब.200	03	01	00	00	00	00	01	00
मर्क.सोल.200	05	00	00	00	00	03	02	00
फास्फोरस 200	28	00	03	04	01	11	09	00
साइलीशिया 1एम.	03	01	02	0	0	0	00	00
सल्फर 200	14	00	01	01	01	06	05	00
जिनमें पुनः वर्णकता दिखाई दी								
जिनमें रोग आगे बढ़ने से रूका		–	72					
परीक्षण के दौरा सुधार हुए		–	26					

अनेक रोगियों ने निम्नलिखित संबद्ध शिकायतें की :

संबद्ध शिकायतें

	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित	रोगमुक्त किए गए
उच्च रक्तचाप	13	10
निम्न रक्तचाप	49	09

37 रोगियों में एक औषधि से सुधार हुआ, 9 रोगियों का उपचार एक से अधिक औषधि से किया गया, 28 रोगियों का उपचार एक से अधिक औषधि से और बीच–बीच में मध्यवर्ती इलाज से किया गया ।

16. अस्थि संधिशोथ

'अस्थि संधिशोथ में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का पता लगाने की' परियोजना केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.) कोट्टायम और क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), गुडीवाडा को सौंपी गई थी । 213 रोगियों (57 नए रोगियों सहित) का अध्ययन किया गया। इनमें से 87 रोगियों में अच्छा खासा सुधार, 50 में मध्यम सुधार और 59 में अल्प सुधार देखा गया । 07 रोगियों ने कोई सूचना नहीं दी ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
आर्निका 200	01	01
ब्रायोनिया 200	60	60
कल्केरिया कार्बोनिकम 30, 200	06	01
कास्टिकम 30, 200	21	21
लैकेसिस 30, 200	03	03
लाइकोपोडियम 30, 200	03	03
रस टाक्सिकोडेन्ड्रन 30, 200, 1 एम.	113	106

17. बाल चिकित्सा की समस्याएं

'बाल चिकित्सा की समस्याओं में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता का मूल्यांकन करने' की परियोजना होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, शिमला, औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद, नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), गुड़गांव, पटियाला और तिरूपति को सौंपी गई थी ।

293 रोगी पंजीकृत किए गए थे जिनमें से 133 रोगी अतिसार के, 140 रोगी तीव्र श्वसनी संक्रमण के, 20 रोगी दंतविन्यास संबंधी समस्याओं से संबंधित थे । इनमें से 244 रोगी रोगमुक्त हो गए, 01 रोगी में अच्छा खासा सुधार देखा गया, 01 रोगी में सुधार नहीं देखा गया, 32 रोगियों ने कोई सूचना नहीं दी और 15 रोगी असूचित । 60 रोगियों में कम गहनता के साथ रोग की पुनरावृत्ति देखी गई ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
ईगल मार्मिलोज 30		02
एलोज 30	02	39
आर्सेनिक एल्बम 30, 200	43	10
बेलाडोना 30, 200	14	06
ब्रायोनिया 200	07	41
कमोमिला 30	48	17
डल्कामारा 30	23	01
इपिकाक. 30	01	03
जस्टीशिया अधा. 30	03	12
मर्क.कोर. 6,30	14	01
मर्क.सोल. 30, 200	09	02
नक्स वोमिका 30, 200	02	02
पोडोफाइलम 30	02	01
	01	

रस टाक्स. 30		
सेनेगा 6	01	01
स्पाँजिया 30	05	05
सल्फर 30	04	04
	02	02

18. परिदंत शोथ

'परिदंत शोथ' में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), नई दिल्ली और होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ को सौंपी गई थी ।

अध्ययन किए गए 35 नए रोगियों की स्थिति: 31 रोगियों में अति सुधार हुआ, 02 रोगियों ने सूचना नहीं दी और 02 रोगी असूचित ।

निम्नलिखित औषधियों ने दांतों के दर्द, मसूड़ों की सूजन और उपचार के बाद नरमी से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
क्रियोजोट 30	06	05
मर्क्यूरियस सोल्यूविलिस 30, 200	27	23
मेजीरियम 30	01	01
हैक्ला लावा 30	01	01

19. वृक्कीय पथरी

'वृक्कीय पथरी में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), इम्फाल को सौंपी गई थी । बारह नए रोगियों का अध्ययन किया गया । दो रोगियों में अति सुधार, 04 में मध्यम सुधार और 06 में अल्प सुधार देखा गया ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
कैन्थरिस 30	03	03
लाइकोपोडियम 200	02	02
सर्सापैरिल्ला 30, 200	03	03
बर्बेरिस वुल्गैरिस 30, 200	03	03

20. सिक्कल सैल एनिमिया

नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी) सम्बलपुर (उड़ीसा) के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पुरी के साथ विलय हो जाने के परिणामस्वरूप, परिषद् ने क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पुरी में कार्यक्रम को जारी रखा । स्थानीय लोगों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, परिषद् की वैज्ञानिक परामर्श समिति ने इच्छा व्यक्त की कि सिक्कल सैल एनिमिया से पीड़ित मरीजों के लिए संबलपुर में हर महीने एक तीन दिवसीय शिविर आयोजित किया जाए । रिपोर्ट के अधीन वर्ष के दौरान ऐसे 44 रोगियों का उपचार किया गया जिनमें सिक्कल सैल एनिमिया के प्रयोगशाला के साक्ष्य मौजूद थे । उनमें रोग लक्षणों से राहत देखी गई । जो औषधियों प्रभावी पाई गई वह हैं : चाइना 200, आवेना सैटाइवा क्यू, नेट्रम म्यूरिएटिकम 200, ब्रायोनिया एल्बा 200, चेलिडोनियम मेजस 30 और एसिड फास्फोरिकम 200 । इन सभी 44 रोगियों का अनुवर्तन किया जा रहा है ।

21. त्वचा विकृतियां

'त्वचा विकृतियों में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ और नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.) उडुपी को सौंपी गई थी । बयालीस नए रोगियों का पंजीयन किया गया था । चूंकि अध्ययन में नामांकित रोगियों की संख्या बहुत कम थी, इसलिए, कोई निश्चयात्मक अवलोकन नहीं किया जा सका ।

22. इओसिनोफिलिया

इओसिनोफिलिया पर नैदानिक खुला परीक्षण अक्तूबर, 2003 में क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), पुरी और नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), पोर्ट ब्लेयर में आरंभ किया गया था । छियानवें रोगियों का अध्ययन किया गया । इनमें से 64 रोगियों में मध्यम सुधार, 31 में मध्यम सुधार और 01 में अति सुधार देखा गया ।

उपचार के 6 महीने पश्चात इओसिनोफिलिया काउन्ट में कमी देखी गई। इक्कीस रोगियों में रोग की कोई पुनरावृत्ति नहीं देखी गई।

निम्नलिखित औषधियों ने लक्षणों और रोगलक्षणों से छुटकारा देने में सहायता की।

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम

	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आर्सेनिक एल्बम 30, 200	12	11
रस टाक्स. 30	41	35
एपिस मेलीफिका 30	09	08
ब्रायोनिया एल्बा 30, 200	15	10
पल्साटिल्ला निग. 30, 200	05	04
नेट्रम म्यूरिएटिकम 30	03	02
प्लेटिना सीपा 30	04	01

23. ऊपरि श्वसन नली संक्रमण

'ऊपरि श्वसन नली संक्रमण में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), गुवाहाटी और नैदानिक अनुसंधान व महामारी सैल, भोपाल को सौंपी गई थी । बारह रोगियों का अध्ययन किया गया था, जिनमें से 12 में अति सुधार देखा गया ।

निम्नलिखित औषधियों ने शिकायतों की बारंबारता, अवधि और सघनता से छुटकारा दिया :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आर्सनिक एल्बम 30, 200	05	05
जस्टीशिया 30, 200	02	02
रस टाक्स. 30	04	04
डल्कामारा 30, 200	01	01

ख. जनजातीय क्षेत्रों में नैदानिक अनुसंधान

परिषद् निम्नलिखित नैदानिक स्थितियों में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता के नैदानिक मूल्यांकन के उद्देश्य से बारह जनजातीय क्षेत्रों में नैदानिक अनुसंधान इकाइयां चला रही थी :

क्र. सं.	नैदानिक स्थितियां	निर्धारित की गई होम्योपैथिक औषधियां	स्थान
1.	श्वसनी संक्रमण	फेरम फास., ब्रायोनिया एल्बा, फास्फोरस, इपिकाकुअन्हा, एण्टिमोनियम आर्से., काली बाइक्रोमिकम, काली कार्बोनिकम, एण्टिमोनियम टार्टेरिकम, वेराट्रम विराइड, स्पाँजिया टोस्टा	पांडिचेरी
2.	रजोधर्म विशयक विकृतियां / रजोनिवृत्ति सिंड्रोम	पल्साटिल्ला, ऊफोरिनम, नक्स वोमिका, नक्स मास्केटा, अस्टिलेगो मेडिस, जिंकम वेल., ग्लोनाइनम, क्रोटेलस केसकावेला, मैंगीफेरा इण्डिका, कोनियम मेक., सल्फर, सोराइनम, म्यूरेक्स पर्पूरिया, ग्रेफाइटिस, सैंग्वीनेरिया कैना., सिमिसीफ्यूगा रेसमोसा, थ्लासपी बुर्सा पैस्टोरिस, टुबरकुलीनम, बेलाडोना, केलियम कार्ब., इरिजरोन कैना., मैग्नीशियम फास्फोरिकम, साराका इंडिका, कैस्टोरियम, लैक कैनीनम, वाइबर्नम ओपूलस, एंथियम स्पाईनोजम, सैबाइना, लैकेसिस मूटस, कल्केरिया कार्बोनिका, सीपिया, एमिल नाइट्रोजम	पांडिचेरी रांची (झारखंड)

3.	हैजा / जठर आंत्र शोथ	क्यूप्रम मेटालिकम, वेराट्रम एल्बम, कैम्फोरा, आर्सेनिकम एल्बम, एथूजा सिनापियम, फास्फोरस टाबैकम, क्यूप्रम आर्स. मे., जैट्रोफा, नेट्रम सल्फ., बिस्मथम	सिलिगुड़ी (प.ब.)
4.	उच्च रक्तचाप	बेलाडोना, राउलफोलिया सेर., स्ट्रोंटियम कार्बे., स्ट्रोंटियम आयोड., सुम्बुलस मोस्केटस, बैराइटा म्यूरिएटिका, ग्लोनाइनम, एड्रिनैलिन, बोरेहेविया डिफ्यूजा, ग्रैशियोला, प्लम्बम मेटालिकम, औरम मेटालिकम, विस्कम एल्बम, वेराट्रम एल्बम	गंगटोक (सिक्किम) ऐजवाल (मिजोरम)
5.	मौखिक विकृतियां	बोरेक्स, बेलाडोना, बैप्टीशिया, काली क्लोरिकम, काली म्यूरिएटिकम, नाइट्रिक एसिड,म्यूरिएटिक एसिड, मर्क्युरियस डलसिस, मर्क्युरियस सोल., नेट्रम म्यूर., फास्फोरस, आर्सेनिकम एल्ब., सिन्नाबैरिस, साइलीशिया, हाइड्रैस्टिस, हीपर सल्फ्यूरिस कल्केरियम, एरम ट्रिफाइलम, कौण्डुरैंगो	दीमापुर (नागालैण्ड)
6.	ज्वर	जेल्सीमियम सेमप., वेराट्रम वेराइड, चाइना आफिसिनैलिस, चिनिनम आर्सेनिकोसम, एपिस मेलिफिका, आर्सेनिकम एल्बम, बैप्टीशिया टिंक्टोरिया, पाइरोजीनियम, एसिडम म्यूरिएटिकम, मर्क्युरियस सोल., ओपियम, हायोसायमस नाइगर, ग्लोनाइनम, हेलीबोरस, नाइगर, क्युप्रम मेटालिकम, कैम्फोरा आफिसिनैलिस, कोनियम मेकूलेटम, यूपाटोरियम पर्फोलिएटम, एकोनाइटम नैपेल्लस, रस टाक्सिकोडेन्ड्रन, ब्रायोनिया एल्बा, बेलाडोना, फास्फोरस, टुबरकुलीनम, स्ट्रामोनियम कार्ब., सल्फर, सिक्यूटा विरोसा, बोरेक्स	ऐजवाल (मिजोरम)
7.	सूखा रोग	एब्रोटेनम, अमोनियम म्यूर., कल्केरिया सिल., साइलीशिया, बोरेक्स, क्रिओजोटम, टुबरकुलीनम, अर्जेण्टम नाइट्रिकम, कल्केरिया कार्बोनिका, कल्केरिया फास्फोरिका, आयोडियम, नेट्रम म्यूर., सैनीक्यूला एकुआ, एथूजा सिनापियम	गंगटोक (सिक्किम) ईटानगर (अरूणाचल प्रदेश)
8.	पीलिया	एक्कुलस हिप्प., ब्रायोनिया एल्ब., मर्क्युरियस सोल., हाइड्रोकोटाइल एसाइटिका, चाइना ऑफिसिनैलिस, बोरेहेविया डिफ्यूजा, कैरिका पपाया, पोडोफाइलम, पेलटेटम, नक्स वोमिका, डिजिटैलिस पर., कार्डुअस मैरिएनस, नेट्रम सल्फ्यूरिकम, टी.एन.टी., चेलिडोनियम मेजस	शिलांग (मेघालय), सिलिगुड़ी (प.ब.), ऐजवाल (मिजोरम), जगदलपुर (छत्तीसगढ़)

9.	परा नासिका गर्तदाह	मर्क्युरियस सोल., स्टिक्टा पल., मर्क्युरियस बिनिओडेटस, काली आयोड., नाइट्रिकम एसिड, कालीयम आयोडेटम, साइलीशिया, नेट्रम म्यूर., सल्फर, टियूक्रियम मैरम वेरम, थूजा आक्सी., आर्सेनिकम आयोडेटम, कालीयम सल्फ्यूरिकम, लाइकोपोडियम क्लेवेटम, कार्सिनोजिनम, हीपर सल्फ्यूरिस कल्केरियम, पल्साटिल्ला नाइग्रेकेंस, हाइड्रैस्टिस कैनेडेंसिस, कालीयम बाइक्रोमिकम	अगरतला (त्रिपुरा), शिलांग (मेघालय), दीमापुर (नागालैण्ड)
10.	चर्म रोग और पनसिकामयता	सल्फर, मर्क्युरियस सोल., सेलेनियम, आर्स. एल्ब., कार्बोनियम सल्फ., डल्कामारा, कास्टिकम, आर्निका मोन्टाना, साइलीशिया, हीपर सल्फ.कल्के., काली सल्फ., कार्बो वेज., लाइकोपोडियम, बेलाडोना, लैकेसिस, सोराइनम, रस टाक्स., ऐंथ्रासीनम, सीकेल कौर., पैट्रोलियम, क्रोटेलस होराइडस, फास्फोरिकम एसिडम	अगरतला (त्रिपुरा), जगदलपुर (छत्तीसगढ़), भारूच (गुजरात)

उपलब्धियां :

I. श्वसनी संक्रमण

'श्वसनी संक्रमण में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), पांडिचेरी को सौंपी गई थी । तीन सौ बयालिस नए रोगियों का पंजीयन किया गया था । इनमें से 39 रोगी अरोग्य हुए, 35 रोगियों में अति सुधार, 42 में मध्यम सुधार और 83 में अल्प सुधार देखा गया । बावन रोगियों में सुधार नहीं हुआ, 06 रोगी अनउपचारार्थ रहें।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
एण्टिमोनियम क्रुड. 6,30,200,1 एम.	30	15
एण्टिमोनियम टार्टरिकम 6,30,200,1 एम.	34	23
ब्रायोनिया एल्बा. 6,30,200,1 एम.	31	17
फेरम फास्फोरिकम 6,30,200	27	19
इपिकाक 6,30,200,1 एम.	48	33
काली बाइक्रोमिकम 6,30,200	51	23
काली कार्ब. 6,30,200,1 एम.	15	08

फास्फोरस 6,30,200	27	14
स्पाँजिया 6,30,200	34	23
वेराट्रम एल्बम 6,30,200	26	15

II. रजोधर्म विषयक विकृतियां / रजोनिवृत्ति सिंड्रोम

'रजोधर्म विषयक विकृतियों / रजोनिवृत्ति सिंड्रोम में होम्यापैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना, नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी) पांडिचेरी और रांची को सौंपी गई थी । दो सौ छियासी रोगियों का पंजीयन किया गया था । इनमें से 02 रोगी रोगमुक्त हुए । बावन रोगियों में अति सुधार, 62 में मध्यम सुधार और 77 में अल्प सुधार देखा गया । चौबीस रोगियों में सुधार नहीं हुआ । छप्पन रोगियों ने कोई सूचना नहीं दी और 08 रोगी अनउपचारार्थ रहें।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या	
	औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
एमिल नाइट्रोसम 6,30,200,1 एम.	16	13
बेलाडोना 6,30,200	13	08
कल्केरिया कार्ब. 6,30,200,1 एम.	44	25
सिमिसीफ्यूगा 30,200,1 एम.	16	11
कोनियम मेक. 6,30,200	19	11
इरिजरोन 6,30,200,1 एम.	01	01
ग्लोनाइन 6,30,200,1 एम.	06	05
ग्रैफाइटिस 6,30,200,1 एम.	14	10
काली कार्ब. 6,30,200,1 एम.	15	08
लैकेसिस 6,30,200,1 एम.	20	12
मैग्नीशिया फास्फोरिका 6,30,200	20	15
म्यूरेक्स 6,30,200,1 एम.	02	01
नक्स मास्केटा	03	02
नक्स वोमिका	09	05
ऊफोरीनम 6,30,200,1 एम.	01	01
पल्साटिल्ला 6,30,200,1 एम.	30	13
सोराइनम 6,30,200	02	01
सैबाइना 6,30,200	06	03
सैंग्वीनेरिया कैन. 6,30,200,1 एम.	04	03
सीपिया 6,30,200,1 एम.	16	09
सल्फर 6,30,200	02	02
थ्लासपी बुर्सा पैस्टोरिस 6, 30	02	01
ट्यूबरकुलीनम 6,30,200,1 एम.	13	12
अस्टिलेगो मेडिस 6, 30	01	01

III. हैजा / जठर आंत्र शोथ

'हैजा / आंत्र शोथ में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), सिलीगुड़ी को सौंपी गई थी । 126 रोगियों का पंजीयन किया गया था ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
वेराट्रम एल्बम 30,200,1 एम.	41	33
आर्स एल्ब. 30,200	37	32
फास्फोरस 30,200	08	04
नेट.सल्फ. 30,200	20	14
बिस्मथ 30,200	12	06
एथूजा 30,200	08	05

IV. उच्च रक्तचाप :

'उच्च रक्तचाप में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी) गंगटोक और एजावल को सौंपी गई थी । एक सौ सतरह रोगियों का पंजीयन किया गया था । इनमें से 64 में अति सुधार, 14 में मध्यम सुधार और 16 में अल्प सुधार देखा गया । चौदह रोगियों में सुधार नहीं हुआ और 04 रोगियों की उपचार के पश्चात हालत बिगड़ गई । चार रोगियों ने सूचना नहीं दी और 05 रोगी अनउपचारार्थ रहे ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
ग्लोनाइन 200	34	25
बेलाडोना 200	28	20
औरम मेटालिकम 200	32	20
बैराइटा म्यूर. 200	23	16

V. मौखिक विकृतियां :

'मौखिक विकृतियों में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना, नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), दीमापुर को सौंपी गई थी । पंजीकृत किए गए रोगियों की संख्या अपर्याप्त होने के कारण, यहां आंकड़े प्रदर्शित नहीं किए जा सके ।

VI. ज्वर (सविरामी / अल्पविरामी / डेंगू / जापानी मस्तिष्क शोथ) :

'ज्वर में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), एजावल को सौंपी गई थी । पंजीकृत किए गए रोगियों की संख्या अपर्याप्त होने के कारण यहां आंकड़े प्रदर्शित नहीं किए जा सके ।

VII. सूखा रोग :

'सूखा रोग में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी) गंगटोक और ईटानगर को सौंपी गई थी । पंजीकृत किए गए रोगियों की संख्या अपर्याप्त होने के कारण यहां आंकड़े प्रदर्शित नहीं किए जा सके ।

VIII. पीलिया :

'पीलिया में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), शिलांग, सिलीगुड़ी, एजावल और जगदलपुर को सौंपी गई थी । एक सौ पैंतालिस रोगियों का पंजीयन किया गया था ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
चैलिडोनियम क्यू.,30,200	53	42
कार्डुअस मैरिएनस 30,200,1 एम.	03	02
नक्स वोमिका 30,200,1 एम.	32	25
चाइना आफिसिनेलिस 30,200,1 एम.	16	12
मर्क.सोल. 30,200,1 एम.	29	23
ब्रायोनिया एल्बम 30,200,1 एम.	15	12
नेट्रम सल्फ. 30,200,1 एम.	24	15

IX. परा नासिका गर्तदाह :

'परा नासिका गर्तदाह में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी) अगरतला, शिलांग और दीमापुर को सौंपी गई थी । तेरह रोगियों का पंजीयन किया गया था । इनमें से 02 में अति सुधार, 08 में मध्यम सुधार और 03 में अल्प सुधार देखा गया ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या औषधि निर्धारित किए गए	रोगमुक्त पाए गए
काली. आयोड. 30,200	06	06
हाइड्रैस्टिस कैन. 200	01	01

काली बाइक्रोमिकम 30,200	01	01
नेट्रम म्यूर. 30,200	01	01
नाइट्रिक एसिड 30,200	01	01
सल्फर 200	01	01
टियूक्रियम एम. वेरूम 30	01	01
थूजा ओसी. 200	01	01

X. चर्मरोग और पनसिकामयता :

'चर्मरोग और पनसिकामयता में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने' की परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), अगरतला, जगदलपुर और भड़ौच को सौंपी गई थी । चवालिस रोगियों का पंजीयन किया गया था । इनमें से 24 में अति सुधार, 12 में मध्यम सुधार और 05 में अल्प सुधार देखा गया । तीन रोगियों ने सूचना नहीं दी ।

निम्नलिखित औषधियों ने रोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की :

पोटेंसियों सहित औषधियों के नाम	रोगियों की संख्या औषधि निर्धारित रोगमुक्त किए गए	पाए गए
आर्निका मोन्टाना 30	04	04
हिपर सल्फ. 30	07	06
मर्क.सोल. 30,200	23	21
रस टाक्स. 30	04	04
सल्फर 200	06	06

भाग–II
(अक्तूबर, 2005 – मार्च, 2005)

I. अवसादक घटना के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का पता लगाना।

परिचय

अवसाद शब्द का इस्तेमाल, किसी भावात्मक स्थिति, किसी सिंड्रोम और विकृतियों के एक समूह का वर्णन करने के लिए किया जाता है । जब अवसाद को किसी सिंड्रोम या विकृति के एक भाग के रूप में देखा जाता है तो अवसाद में कुछ घंटों से दिनों तक और कभी–कभी अधिक समय तक रहने वाली गैर–रोगात्मक, सर्वव्यापी मनोदशा के रूप में स्वतः आंतराग, भावात्मक, बोधात्मक, संज्ञानात्मक और व्यवहार की अभिव्यक्तियां होती है । अवसाद की अनुभूतियां, दुःख, उदासी की मनोदशा, निराशा में डूब जाने, अप्रसन्नता और दयनीयता की अनुभूतियां होती है । किसी विफलता या हानि के बाद, अवसाद की मनोदशा का होना एक आम और स्वाभाविक बात है ।

अवसादक विकृति, अवसादक घटना में यथा विनिर्दिश्ट अवसाद की घटनाओं के बार–बार होने, सामान्य या तीव्र, मनोदशा उन्नत होने की स्वतंत्र घटनाओं के इतिहास के बिना और उन्माद का मानदंड पूरा करने वाली अत्याधिक सक्रियता के कारण होती है । तथापि, इस शब्द का इस्तेमाल तब भी किया जा सकता है यदि मध्यम मनोदशा उन्नत होने और अत्याधिक सक्रियता की संक्षिप्त घटनाओं का ऐसा साक्ष्य हो जो किसी अवसादक घटना (कभी–कभी अवसाद के उपचार द्वारा प्रेरित) के तुरंत बाद अति उन्माद का मानदंड पूरा करता हो । व्यवहारजन्य विकृतियों पर एक खुला अध्ययन, वर्ष 1991 में केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम में परिषद् द्वारा सबसे अधिक उपयोगी होम्योपैथिक औषधियों, उनके नैदानिक निदर्शानों और सबसे उपयोगी पोटेंसियों का पता लगाने के लिए आरंभ किया गया था । कुछ मामला अध्ययनों से पता चला कि अवसादक विकृतियों में होम्योपैथिक औषधियों का इस्तेमाल सफलतापूर्वक किया जा सकता है । परिषद् के बाहर किया गया कार्य दर्शाता है कि गहराई से प्रभाव डालने वाली स्वास्थ्यकर औषधियां, इस अवस्था के नियंत्रण में अधिक उपयोगी होती हैं । अवसाद के दुबारा बाद में हो जाने से रोकने के लिए बनाई जाने वाली रणनीति पर भिन्न–भिन्न मत हैं । पिछले अध्ययनों के लाभों को संशोधित करने की दृष्टि से परिषद् ने, अवसाद के नैदानिक नियंत्रण में होम्योपैथिक औषधियों की चिकित्सीय भूमिका निर्धारित करने और उसका मूल्यांकन करने के लिए नैदानिक परीक्षण आरंभ किया है ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या : 100 (50 रोगी प्रति वर्ष)

अध्ययन की अवधि : 3 वर्ष+2 महीनें
(नामांकन के लिए 2 वर्ष +
अनुवर्तन के लिए 1 वर्ष)

उद्देश्य

पृष्ठ

हमील्टन डिप्रैसन रेटिंग स्केल (एच डी आर एस) की सिंड्रोम संबंधी जटिलता में नैदानिक वैष्विक सुधार (सी जी आई) के संबंध में अवसादक घटना के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का पता लगाना ।

गौण

i. होम्योपैथिक औषधि की भूमिका का पता लगाना और अवसादक घटना से स्वास्थ्यलाभ में उपयोगी औषधि के सत्यापित विशेषता वाले चिन्हों को स्थापित करना ।

ii. अवसादक घटना की विभिन्न गहनताओं के नियंत्रण के लिए सबसे अधिक उपयोगी रणनीति निर्धारित करना ।

iii. द्विध्रुवीय विकृति को बढ़ने से रोकना ।

iv. रोग की दुबारा होने से रोकथाम करना ।

अध्ययन केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम

पद्धति

अध्ययन में नामांकित रोगी, संस्थान के वाहय रोगी विभाग में आए रोगियों में से और संलेख में विनिर्धारित शामिल किए जाने के मानदंड की भार्त पूरी करने वाले व्यक्तियों में से लिये गए थे । योग्यता का निर्धारिण, एक मनोचिकित्सक द्वारा मानक मानदंड (आई.सी.डी. 10) और हमील्टन डिप्रैसन रेटिंग स्केल (एच डी आर एस) का इस्तेमाल करके, किया गया । एक सप्ताह की 'रन–इन' अवधि रखी गई थी और जिस (जिन) रोगी (रोगियों) ने सहज सुधार दर्शाया, उसे (उन्हें) अध्ययन से बाहर निकाल दिया गया । अलग–अलग रोगियों द्वारा दर्शाये गए चिन्हों का संग्रह किया गया और होम्योपैथिक औषध–शास्त्र देखने के पश्चात उपयुक्त औषधि निर्धारित की गई । सीमीलीमम के होम्योपैथिक सिद्धांत के आधार पर होम्योपैथिक औषधियां निर्धारित की गई । अध्ययन में नामांकित किए गए रोगियों का अनुवर्तन, संलेख में यथानिर्धारित नियमित रूप से किया गया ।

परीक्षित औषधियां

औषधि का चयन, अलग–अलग रोगियों में दर्शाये गए रोग के लक्षणों और चिन्हों का संग्रह करके, किया गया । पहला नुस्खा उस औषधि का था जिसने, अलग–अलग रोगियों द्वारा दर्शाये गए लक्षणों और चिन्हों में उच्चतम उपयोगिता दर्शायी । औषधि के चयन के लिए अलग–अलग रोगियों के अभिलक्षण, मानसिक/भावात्मक और शारीरिक लक्षणों तथा सहवर्ती बातों यदि कोई हो, पर भी ध्यान दिया गया ।

परिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान 11 रोगियों को छांटा गया । सभी ने शामिल किए जाने का मानदंड पूरा किया और उन्हें अध्ययन में नामांकित किया गया ।

परीक्षण के दौरान इस्तेमाल की गई निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधियों ने विभिन्न रोगियों ने

अलग–अलग अनुक्रिया दर्शायी :

औषधि और पोटेंसी	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	निम्नलिखित रूप में राहत प्राप्त रोगियों की संख्या		
		अति सुधार	मध्यम	अल्प सुधार
लैकेसिस 200	2	0	0	1
लाइकोपोडियम 30	1	0	0	1
नेट्रम म्युर. 1 एम	2	0	0	1
नक्स वोमिका 1 एम	1	0	0	1
फास्फोरस 200	1	0	0	0
प्लैटीना 1 एम	1	0	0	1
पल्साटिल्ला 200	2	0	0	0
सीपिया 1 एम, 10 एम	1	0	0	0
सल्फर 1 एम	1	0	0	0
योग	12'	0	0	5

'रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, रोगियों में से एक ने एक से अधिक औषधि प्राप्त की ।

अध्ययन के दौरान सत्यापित की गई औषधियों के अभिलक्षण / नैदानिक रोगलक्षण :

लाइकोपोडियम – सो कर उठने पर सुबह के समय आशंकित, भ्रमित विचार, उदासी । समय बहुत धीरे–धीरे बीतता है, विस्मरणशीलता, हताश, मृत्यु का डर, बचपन में यौन दुर्व्यवहार का डर, मीठा खाने की इच्छा ।

नेट्रम म्युर – लंबे निरंतर दुःख, उदासी और अवसाद के बुरे प्रभाव, संबंधों के प्रति उदासीनता, धूप में निकलने पर सिरदर्द, नीचे लेटे रहने की इच्छा । डरावने स्वप्न, छोटी–मोटी घटना पर उदासी, रोने की प्रवृत्ति, सोने के दौरान चौंक जाना, कभी–कभी गुस्सा भड़क उठना ।

लैकेसिस – बैचैनी, आशंकित, काम करने में अनिच्छा, एक ही बात को बार–बार दोहराना, कार्यकलापों में धीमापन, बातूनी, निगलने में परेशानी, एक विशय से दूसरे विषय पर चले जाना, दुःखी और निराश ।

सल्फर – मानसिक कार्य से विमुखता, कार्यकलापों में धीमापन, कमजोरी, लेटे रहने की अभिरूचि।

प्लैटीना – मार डालने की अप्रतिरोध्य इच्छा, अपने बच्चे को डुबाकर मारने की इच्छा, आत्महत्या की मनोवृत्ति, सुबह के समय विषाद, निरूद्ध रजोधर्म के साथ जुड़े मानसिक रोगलक्षण ।

क्त
यों
ंख्या
28

पल्साटिल्ला – साथ रहने की इच्छा, निरूत्साह और सुस्ती, पहल करने में कमी, दुखी और उदास, कार्यकलापों में धीमापन, भ्रान्ति जैसे कि अजनबी व्यक्ति उसके संबंधी हैं ।

फास्फोरस – आसानी से थक जाना, डरावनापन, बाह्य प्रभावों के प्रति अतिसंवेदनशील, बेचैनी, मटरगश्ती की प्रवृत्ति, उदासीनता ।

नक्स वोमिका – धीरे–धीरे समय व्यतीत करना, छोटी–मोटी बीमारियों से भी अधिक प्रभावित हो जाना, दूसरे व्यक्तियों की निन्दा करने की आदत, विश्वास की कमी, निरूत्साह और सुस्त, आत्महत्या के विचार, डरावने स्वप्न, छाती के भरे होने का आभास ।

सीपिया – संबंधों के प्रति उदासीनता, जिद्दी, बहकावट संभ्रान्ति, रोना ।

प्रेक्षण

अध्ययन के अधीन विकृति का स्वरूप आवर्तक है । दो रोगियों में एच डी आर एस और सी जी आई में कुछ कमी आई । तथापि केवल इसी मूल्यांकन के आधार पर कुछ निश्चयात्मक टिप्पणी करना जल्दबाजी है ।

II. रजोनिवृत्ति काल के वर्षों के दौरान होने वाले कष्ट के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का पता लगाने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

बच्चे को जन्म देने की आयु के पश्चात लगभग सभी महिलाएं, मासिक धर्म बंद हो जाने के तुरंत पहले और बाद कष्टदायक नैदानिक अभिव्यक्तियों से पीड़ित होती है । रजोनिवृत्ति को, एक वर्ष के लिए मासिक धर्म स्थायी रूप से बंद हो जाने के रूप में परिभाषित किया गया है और यह कोलिकूलर क्रिया समाप्त हो जाने के परिणामस्वरूप एस्ट्रोजन स्त्राव में होने वाली कमी के साथ शरीर विज्ञान की दृष्टि से सहसंबंधित है । तथापि इससे ठीक पहले के वर्ष और इसके पश्चात के दशक अधिक नैदानिक महत्व के होते हैं । रजोनिवृत्ति और पेरी–रजोनिवृत्ति संबंधी विकृतियों में कोई व्यवस्थित अनुसंधान अध्ययन किया गया प्रतीत नहीं होता है । इस विकृति में परिषद् ने कोई अध्ययन भी आरंभ नहीं किया है । इसलिए, रजोनिवृत्ति काल के वर्षों के दौरान होने वाले कष्ट से जुड़े लक्षणों और चिन्हों के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका निश्चयात्मक ढंग से निर्धारित करने के लिए एक नैदानिक अध्ययन 2005–06 में किया गया था ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या : 400 (प्रत्येक केन्द्र पर प्रति वर्ष 35 रोगी)

अध्ययन की अवधि : 3 वर्ष (नामांकन के लिए 2 वर्ष + अनुवर्तन के लिए 1 वर्ष) + अंतिम रिपोर्ट का संकलन करने के लिए 2 महीने

उद्देश्य

मुख्य

रजोनिवृत्ति काल के वर्षों के दौरान होने वाले कष्ट के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का पता लगाना ।

गौण

1. हार्मोन एफ एस एच के स्तर पर निर्देशित होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करना ।
2. लीपिड प्रोफाइल में होने वाले परिवर्तनों को समझना ।
3. हड्डियों की सघनता में होने वाले परिवर्तनों को समझना ।

अध्ययन स्थल

अध्ययन निम्नलिखित स्थलों पर किया गया :

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, शिमला ।
2. औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद ।
3. नैदानिक अनुसंधान इकाई, रांची ।
4. नैदानिक अनुसंधान इकाई, पांडिचेरी ।
5. नैदानिक अनुसंधान इकाई, चेन्नई ।
6. नैदानिक अनुसंधान इकाई, ऊडुपी ।

पद्धति

अध्ययन में नामांकित रोगी, संस्थान और इकाइयों के वाहय रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए रोगियों और संलेख में विनिर्धारित शामिल किए जाने के मानदंड की शर्ते पूरी करने वाले रोगियों में से लिये गए । अलग–अलग रोगियों द्वारा दर्शाये गए चिन्हों का संग्रह किया गया और औषध–शास्त्र देखने के पश्चात उपयुक्त औषधि निर्धारित की गई । सीमीलीमम के होम्योपैथिक सिद्धांत के आधार पर होम्योपैथिक औषधियां निर्धारित की गई । अध्ययन में नामांकित किए गए रोगियों का अनुवर्तन संलेख में यथानिर्धारित नियमित रूप से किया गया ।

परीक्षित औषधियां

औषधि का चयन, अलग–अलग रोगियों के दर्शाये गए लक्षणों और चिन्हों का संग्रह करके किया गया । पहला नुस्खा उस औषधि का था जिसने, अलग–अलग रोगियों द्वारा दर्शाये गए लक्षणों और चिन्हों में उच्चतम उपयोगिता दर्शायी और जो अलग–अलग रोगियों के मानसिक/भावात्मक और शारीरिक चिन्हों तथा सहवर्ती मामलों, यदि कोई हों, द्वारा नियंत्रित हो ।

परिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, अध्ययन में शामिल किए जाने के लिए 69 रोगियों को छांटा गया । इनमें से 29 जो शामिल किए जाने का मानदंड पूरा करते थे, को अध्ययन में नामांकित किया गया । अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई विभिन्न होम्योपैथिक औषधियों के प्रति अलग–अलग रोगियों की अलग–अलग प्रतिक्रिया थी ।

औषधि और पोटेंसी

	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	निम्नलिखित रूप में राहत प्राप्त रोगियों की संख्या		
		अच्छी खासी	सामान्य	मध्यम
क्रोटेलस होराइडस 30	1	0	0	2
क्रियोजोट 30	1	0	0	1
लैकेसिस 30	2	0	0	1

इनमें से 02 रोगियों में अति सुधार, 01 में मध्यम, 08 ने अल्प सुधार महसूस किया । चार ने कोई सुधार महसूस नहीं किया और 03 ने नियमित रूप से सूचना नहीं दी । चार रोगियों को अध्ययन से बाहर निकाल दिया गया और 07 रोगी उपचाराधीन थे ।

अध्ययन के दौरान सत्यापित की गई औषधियों के गुण/नैदानिक रोगलक्षण

क्रोटेलस होराइडस 30 – उष्ण लालिमा, चिन्ता, धड़कन तेज होना ।

क्रियोजोट 30 – उष्ण लालिमा, श्वेत प्रदर, पेरीनीयम में ड्रेगिंग अनुभूति ।

लैकेसिस 30 – उष्ण लालिमा और चिन्ता ।

प्रेक्षण

जब रजोनिवृत्ति वाली महिलाओं को होम्योपैथिक औषधियां क्रोटेलस होराइडस 30, क्रियोजोट 30, लैकेसिस 30, नाइट्रिक एसिड 30 निर्धारित की गई तो चिन्हों अर्थात उष्ण लालिमा, चिन्ता, धड़कन, श्वेत प्रदर आदि में काफी सुधार देखा गया ।

III. परंपरागत चिकित्सीय उपचार प्रतिरोधी खंडित मनस्कता वाले रोगियों में होम्योपैथिक चिकित्सीय हस्तक्षेप के लाभ और व्यवहार्यता का मूल्यांकन करना । उपचार के किसी अन्य रूप के अलावा नए रोगियों में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का पता लगाना ।

विचार, अवबोधन, मनोविकार, संचलन और आचरण वाले रोग के लक्षणों और चिन्हों की अधिकता में खंडित मनस्कता अभिव्यक्त होती है । रोगियों के बीच काफी विभिन्नताएं सृजित करते हुए, यह अभव्यक्तियां अनेक तरीकों से संयुक्त होती हैं परंतु बीमारी का संचयी प्रभाव सदैव तीव्र और आमतौर पर लंबे समय तक रहने वाला होता है । परिषद् 1984 से कोट्टायम में व्यवहारजन्य विकृतियों में होम्योपैथिक औषधियों का नैदानिक मूल्यांकन कर रही है । सन् 2002 तक खंडित मनस्कता के 743 रोगियों का अध्ययन किया गया । छियासठ प्रतिशत रोगियों में विभिन्न चरण की सुधार दरों (मध्यम से अच्छा खासा तक) का अवलोकन किया गया । हालांकि यह अध्ययन एक खुला परीक्षण था जिसमें मूल्यांकन के कोई सख्त मापदंड नहीं थे, फिर भी नैदानिक प्रतिक्रिया दर उत्साहजनक थी जिसमें खंडित मनस्कता के नियंत्रण में होम्योपैथी की सकारात्मक भूमिका का सुझाव दिया गया । अध्ययन के मानकीकरण की कमी के कारण, खंडित मनस्कता में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका निश्चयात्मक रूप से निर्धारित नहीं की जा सकी । इसलिए, मौजूदा अध्ययन की योजना अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किए जाने वाले निश्चित परिणामी मानदंडों वाले विस्तृत वैज्ञानिक संलेख के आधार पर तैयार की गई । यह प्रयास किया जाता है कि रोगियों का रोगनिदान आई.सी.डी 10 वर्गीकरण के अंतर्गत निर्धारित किए गए मानदंड के अनुसार किया जाए और संलेख में दिए गए मार्गनिर्देशों के अनुसार उनका अनुवर्तन किया जाए ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या : 300 (प्रत्येक केन्द्र पर 50 रोगी प्रति वर्ष)

अध्ययन की अवधि : 3 वर्ष (नामांकन के लिए 2 वर्ष + अनुवर्तन के लिए 1 वर्ष) + अंतिम रिपोर्ट का संकलन करने के लिए 2 महीने ।

उद्देश्य

खंडित मनस्कता में होम्योपैथिक चिकित्सीय हस्तक्षेप की व्यवहार्यता का मूल्यांकन करना ।

उपचार के किसी अन्य रूप के अलावा नए रोगियों में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का पता लगाना ।

होम्योपैथिक उपचार का मूल्यांकन करना ।

खंडित मनस्कता के मनोविकृति औषध प्रतिरोधी रोगियों (अर्थात 50 प्रतिशत से अधिक सुधार नहीं) में तीव्र उत्तेजनाओं में आमतौर पर उपयोगी उपचारों के मुख्य निदर्शनों का पता लगाना ।

घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकना ।

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम ।

रोगमुक्त रोगियों की संख्या

28

4

1

1

2

1

1

1

1

1

2

पद्धति

अध्ययन में नामांकित रोगी, संस्थान के वाहय रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए रोगियों और संलेख में विनिर्धारित शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करने वाले रोगियों में से लिये गए । योग्यता का निर्धारण मनोचिकित्सकों द्वारा मानक मानदंड (आई.सी.डी. 10) और इंस्ट्रुमेंट ब्रीफ साइकेकिट्रक रेटिंग स्केल (बी.पी.आर.एस.) का इस्तेमाल करके किया गया । सीमीलीमम के होम्योपैथिक सिद्धांत के आधार पर होम्योपैथिक औषधियों का निर्धारण किया गया । अलग–अलग रोगियों द्वारा दर्शाए गए चिन्हों का संग्रह किया गया और होम्योपैथिक औषध–शास्त्र देखने के पश्चात उपयुक्त औषधि निर्धारित की गई । अध्ययन में नामांकित किए गए रोगियों का अनुवर्तन संलेख में यथानिर्धारित नियमित रूप से किया गया ।

परीक्षित औषधियां

औषधियों का चयन, अलग–अलग रोगियों के दर्शाये गए लक्षणों और चिन्हों, मानसिक/भावात्मक अभिलक्षण और शारीरिक लक्षणों के आधार पर किया गया ।

परिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, अध्ययन में शामिल किए जाने के लिए 19 रोगी छांटे गए । उनमें से 16, जो शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे, को अध्ययन में नामांकित किया गया । अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई विभिन्न औषधियों के प्रति अलग–अलग प्रतिक्रिया थी । इन औषधियों को नीचे सारणीकृत किया गया है :

औषधि और पोटेंसी	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	निम्नलिखित रूप में राहत प्राप्त रोगियों की संख्या		
		अति सुधार	मध्यम	अन्य
आर्सेनिक एल्बम 30,200,1 एम.	2	0	0	1
बेलाडोना 200,1 एम.	3	0	0	2
लाइकोपोडियम 200	2	0	0	1
नक्स वोमिका 30,200,1 एम.	4	0	0	2
फास्फोरस 30,200,1 एम.	3	0	0	1
स्ट्रामोनियम 30,200,1 एम.	4	0	0	3
सल्फर 30,200,1 एम.	7	0	0	3

रोगियों के नैदानिक प्रस्तुतीकरण पर निर्भर करते हुए कुछ रोगियों ने एक से अधिक औषधि प्राप्त की । अध्ययन के दौरान सत्यापित की गई औषधियों के लक्षण/नैदानिक रोगलक्षण :

आर्सेनिक एल्बम – बेचैनी, उत्पीड़न की भ्रान्ति, आत्म विस्मृति, वाचालता, थुकना, व्यर्थ की बात करना, इशारेबाजी करना, उदासी, चिड़चिड़ापन, नहाने से विमुखता, हंसना, गर्वयुक्त बात करना, चिन्ता, नींद न आना ।

बेलाडोना – हंसना, दांत पीसना, रोना, बड़बड़ाना, नींद न आना, साथ रहने से विमुखता, हाथी का डर, काले व्यक्तियों का डर, बचकाना व्यवहार, मृत्यु की इच्छा करना, नंगा हो जाने की इच्छा, उदासी, नाक पर पसीना आना ।

लाइकोपोडियम – बेचैनी, मटरगश्ती, नींद न आना, श्रवण संबंधी मतिभ्रम, शोर का डर, कब्ज, गोपन, धूम्रपान की इच्छा, गरजवाले तूफान का डर ।

नक्स वोमिका – सुनने की भ्रान्ति, दृष्टि संबंधी मतिभ्रम, साथ रहने से विमुखता, हंसना, धूम्रपान की अभिलाषा, भ्रान्ति, नींद न आना ।

फास्फोरस – काले व्यक्तियों का डर, आत्म विस्मृति, हंसना, श्रवण संबंधी मतिभ्रत, सुस्ती, क्रोध, डर से बीमार हो जाना, कुत्तों से डर जाना, मटरगश्ती, धार्मिक, याददाश्त कमजोर, हंसना, भड़कीला दीखना, अन्यमनस्कता ।

स्ट्रामोनियम – धार्मिक प्रेम, गाली देना, क्रोध, दृष्टि संबंधी मतिभ्रम, कागज एकत्रीकरण और धुलाई करने की इच्छा, साथ रहने से विमुखता, मतिभ्रम, प्रार्थना करना, ईश्वर से संप्रेशण का भ्रम, निन्दा करना, अवज्ञाकारी, इशारेबाजी करना, मार डालने की इच्छा, हंसना, व्यर्थ की बात करना, बड़बडाना, बेचैनी ।

सल्फर – सुस्ती, अलग रहना, कम बात करना, नींद न आना, कार्य के प्रति विमुखता, रोना, अधिक भूख लगना, अधिक प्यास लगना, निन्दा करना, हंसना, सोचना, खूब पसीना आना, ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई ।

अध्ययन में नामांकित रोगियों का अनुवर्तन केवल 6 महीने तक किया गया है जो कोई निश्चित टिप्पणी करने के लिए बहुत कम समय है । तथापि, 03 रोगियों में सी.जी.आई. (क्लिनीकल ग्लोबल इंप्रैशन स्केल) देखा गया ।

बच्चों में तीव्र रहीनाइटिस के नियंत्रण में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक, खुला नैदानिक परीक्षण ।

ऊपरि श्वसन नली के संक्रमण में, चिकित्सकों और अन्य प्राथमिक उपचार प्रदायकों द्वारा सामना किए गए सामान्य आम संक्रमण रोगों में से कुछ रोग शामिल हैं । ग्रसनीशोथ, स्वरयंत्रशोथ, रहीनाइटिस, साइनुसाइटिस, कर्णशोथ एक्सटेरना और कर्णशोथ मीडिया के कारण हर वर्ष कई हजार रोगी चिकित्सकों के पास जाते हैं ।

रोगमुक्त रोगियों की संख्या
28
4
1
1
2
1
1
1
1
1
2
1
1
26
5
2
1

हालांकि ऐसे संक्रमण आमतौर पर इतने हल्के होते हैं कि उनका उपचार वाहय रोगी आधार पर किया जा सकता है फिर भी प्राथमिक उपचार करने वाले चिकित्सक को ग्रसनीशोथ से पेरिटोन्सीलर फोड़े, साइनुसाइटिस से उपपरिअस्थिक फोड़े और आक्रामक कर्णशोथ एक्सटेरना से अल्पकालिक अस्थि मृदुलता जैसी उनकी गंभीर जटिलताओं को समझने योग्य होना चाहिए । चिकित्सक को कण्डच्छद, लुडविग का कण्ठशूल और नासिक प्रमस्तिश्कीय श्लेषमल कवकता जैसे सिर और गर्दन के, जीवन के लिए घातक संभावित खतरों का भी पता लगाना चाहिए । इसलिए, बच्चों में तीव्र श्हीनाइटिस से जुड़े लक्षणों और चिन्हों के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका निर्धारित करने के लिए एक अध्ययन की योजना बनाई गई ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या : 500 (प्रत्येक केन्द्र में प्रतिवर्ष 50 रोगी)

अध्ययन की अवधि : 2 वर्ष + अंतिम रिपोर्ट का संकलन करने के लिए 2 महीने ।

उद्देश्य

मुख्य

बच्चों में तीव्र श्हीनाइटिस में निम्नलिखित 13 होम्योपैथिक औषधियों की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना :

1. एकोनाइट
2. बेलाडोना
3. कार्बो वेजीटेबिलिस
4. कल्केरिया कार्बोनिकम
5. केमोमिला
6. डलकामारा
7. इलैप्स
8. हीपर सल्फ्युरिकम
9. काली बायोक्रोमिकम
10. मर्क्यूरियस सोल्यूबिलिस
11. नक्स वोमिका
12. पल्साटिल्ला
13. सल्फर

गौण

इस्तेमाल की गई औषधियों के विशेष चिन्हों का पता लगाना और उनका सत्यापन करना ।
अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियों के संबंध में अतिरिक्त/नैदानिक चिन्हों का पता लगाना ।

होम्योपैथिक उपचार के अधीन चिन्हों की गहनता की मात्रा का मूल्यांकन करना।
रोग बढ़ने पर नियंत्रण में होम्योपैथिक उपचार की भूमिका का मूल्यांकन करना ।

अध्ययन स्थल

1. केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम ।
2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, इम्फाल ।
3. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, शिमला ।
4. नैदानिक अनुसंधान इकाई, गुड़गांव ।
5. नैदानिक अनुसंधान इकाई, पोर्ट ब्लेयर ।

अवधि

अध्ययन में नामांकित रोगी, संस्थान के वाहय रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए रोगियों और शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करने वाले रोगियों में से लिये गए । अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई औषधियों के लक्षण, परीक्षण के अधीन और सीमीलीमम के होम्योपैथिक सिद्धांत के अनुसार निर्धारित की गई औषधि के लिए अर्हक नहीं थे परंतु उनका उपचार किन्हीं अन्य रोगियों की तरह वाहय रोगी विभाग में किया गया । इस रोग की शीघ्र होने के कारण रोगियों का अनुवर्तन एक सप्ताह के लिए किया गया और इसके पश्चात परिणाम का मूल्यांकन किया गया ।

परीक्षित औषधियां

औषधियों का चयन, नैदानिक परीक्षण के लिए चुनी गई औषधियों में से किया गया । पहला नुस्खा उस औषधि का था जिसने अलग–अलग रोगियों द्वारा दर्शाये गए लक्षणों और चिन्हों में उच्चतम उपयोगिता दर्शायी । इसके अलावा चयन, मानसिक/भावात्मक और शारीरिक चिन्हों तथा सहवर्ती बातों, यदि कोई हो, द्वारा नियंत्रित किया गया ।

परिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, अध्ययन में शामिल किए जाने के लिए 52 रोगी छांटे गए । उनमें से 24 को शामिल किए जाने के मानदंड पूरा करते थे, को अध्ययन में नामांकित किया गया । अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई विभिन्न औषधियों के प्रति अलग–अलग प्रतिक्रिया थी । इन औषधियों को नीचे सारणीकृत किया गया है :

औषधि और पोटेंसी	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	निम्नलिखित रूप में राहत प्राप्त रोगियों की संख्या		
		अति सुधार	मध्यम	अल्प
बेलाडोना 6	2	1	1	0
मर्क्यूरियस सोल्यूबिलिस 6	2	1	0	0
नक्स वोमिका 6	4	1	1	2
पल्साटिल्ला 6	2	2	0	0

अध्ययन के दौरान सत्यापित की गई औषधियों के गुण/नैदानिक रोगलक्षण :

बेलाडोना – नाक बहना, पीले रंग का, गले और आंखों में जलन, ज्वर, नासिका में श्लेषमल, संकुलन, नेत्र श्लेषमला संकुलन ।

मर्क्यूरियस सोल्यूबिलिस – नाक बहना, छींके आना, नाक में पानीदार स्त्राव, स्त्राव के साथ नाक में अवरोधन, नासिका में संकुलन के साथ नाक, गले, आंखों में जलन ।

नक्स वोमिका – छींके आना, नाक बहना, पानीदार/पीला स्त्राव, नाक गले और आंखों में जलन, स्त्राव के साथ नाक में अवरोधन, नासिक में संकुलन ।

पल्साटिल्ला – पानीदार/पीला स्त्राव, नाक, गले और आंखों में जलन, स्त्राव के साथ नाक में अवरोधन, नासिका में श्लेषमल संकुलन ।

प्रेक्षण

परिणामों ने दर्शाया कि होम्योपैथिक औषधियों ने बच्चों में तीव्र र्‌हिनाइटिस के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की जैसा कि 'बेसलाइन स्कोर' से होने वाले अनुकूल परिवर्तन से स्पष्ट है । इसके अलावा, अध्ययन में नामांकित रोगियों में र्‌हिनाइटिस की पुनरावृत्ति के साथ बच्चों में आमतौर पर देखी जाने वाली किसी जटिलता का कोई आपतन नहीं हुआ ।

V. सुसाध्य प्रॉसटेट अतिवृद्धि (बी.एच.पी.) में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

प्रॉसटेट की अतिवृद्धि ऐसे रोगों में से एक है जो बूढ़े पुरूषों को प्रभावित करती है और यदि उपचार न किया जाए तो रोगी व्यक्ति को उसके बाकी जीवन के लिए अक्षम बना देती है । चालीस वर्ष की आयु से प्रॉसटेट के आकार में औसतन 2.4 घन से.मी. प्रतिवर्ष वृद्धि होती है । यह प्रक्रिया, प्रॉसटेट के परिमूत्रमार्ग (केन्द्रीय) जोन में

...होती है और विभिन्न मात्राओं में ग्रंथीय और पीठिका टिशू दोनों को शामिल कर लेती है । साठ वर्ष से संबद्ध ...लक्षण आम होते हैं और 80 वर्ष से अधिक की आयु के 50 प्रतिशत पुरूषों में सुसाध्य प्रॉसटेट अतिवृद्धि (बी.पी. ...) से संबद्ध नीचली मूत्रांग संबंधी रोगलक्षण होंगे । रोग के बढ़ने या जटिलताओं का खतरा निश्चित नहीं होता है ...यपि यह बात स्पष्ट है कि रोगसूचक रोग वाले पुरूषों में रोग का बढ़ना अपरिहार्य नहीं है और बी.एच.पी. वाले ...व्यक्ति तीव्रता से सुधार या अपने रोगलक्षण समाप्त होने का अनुभव करते हैं ।

उपलब्ध सूचना की समीक्षा दर्शाती है कि बी.एच.पी. के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका निर्धारित ...ने के लिए कोई महत्वपूर्ण अनुसंधान नहीं किया गया है । इसके अलावा, होम्योपैथिक चिकित्सीय पुस्तकों और ...में दी गई रिपोर्ट के अनुसार, बी.एच.पी. के होम्योपैथिक उपचार के मौजूदा रिकार्डों का वैज्ञानिक वैधीकरण ...जाने की आवश्यकता है । इसलिए परिषद् ने वर्ष 2005–06 में बी.एच.पी. के नियंत्रण में होम्योपैथिक औषधियों ...भूमिका निर्धारित करने के लिए एक अध्ययन आरंभ किया है ।

...ययन में नामांकित किए जाने वाले ...रोगियों की संख्या	:	650 (प्रत्येक केन्द्र में प्रतिवर्ष 50 रोगी)
...ययन की अवधि	:	3 वर्ष (नामांकन के लिए 2 वर्ष + अनुवर्तन के लिए 1 वर्ष) + अंतिम रिपोर्ट के संकलन के लिए 2 महीने ।

...सुसाध्य प्रॉसटेट अतिवृद्धि में निम्नलिखित 20 होम्योपैथिक औषधियों की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता ...रित करना :

1. एपिस मेलीफिका
2. आर्जेण्टम नाइट्रिकम
3. बैराइटा कार्बोनिकम
4. कल्केरिया कार्बोनिकम
5. चिमाफिला
6. कोनियम मैकूलेटम
7. डिजिटैलिस परपुरिया
8. हायोसायमस
9. लाइकोपोडियम
10. मेडोहीनम
11. मर्क्युरियस सोल्यबिलिस

12. नाइट्रिक एसिडम
13. परेरा ब्रैवा
14. फास्फोरस
15. पल्साटिल्ला
16. सेलेनियम
17. साइलीशिया
18. स्टैफिसैग्रिया
19. सल्फर
20. थूजा आक्सिडेन्टैलिस

गौण

इस्तेमाल की गई औषधियों के विशिष्ट रोगलक्षण निर्धारित करना और उनका सत्यापन करना ।
रोग को बढ़ने से रोकना ।

अध्ययन स्थल

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ।
2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुडिवाड़ा ।
3. होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ।
4. नैदानिक अनुसंधान व महामारी सैल, भोपाल ।
5. नैदानिक अनुसंधान इकाई, सिलीगुड़ी ।
6. नैदानिक अनुसंधान इकाई, तिरूपति ।

पद्धति

अध्ययन में नामांकित रोगी, संस्थान के वाहय रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए रोगियों और संलेख में विनिर्धारित शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करने वाले रोगियों में से लिये गए । अलग–अलग रोगियों द्वारा दर्शाये गए चिन्हों का संग्रह किया गया और होम्योपैथिक औषध–शास्त्र को देखने के पश्चात उपयुक्त औषधि निर्धारित की गई । होम्योपैथिक औषधियां, सीमीलीमम के होम्योपैथिक सिद्धांत के आधार पर निर्धारित की गई । अध्ययन में नामांकित रोगियों का अनुवर्तन, संलेख में यथा विनिर्धारित नियमित रूप से किया गया ।

यदि कोई रोगी, पूर्व–परिभाशित औषधियों में से कोई औषधि प्राप्त करने योग्य नहीं था तो उसे अध्ययन में नामांकित नहीं किया गया परंतु किसी अन्य निर्देशित औषधि से वाहय रोगी विभाग में उसका उपचार किया गया ।

...त औषधियां

औषधियों का चयन, नैदानिक परीक्षण के लिए चुनी गई 20 औषधियों में से किया गया । पहला नुस्खा उस ...का था जिसने रोग के दर्शाये गए लक्षणों और चिन्हों में उच्चतम उपयोगिता दर्शायी और इसका चयन, ...क/भावात्मक लक्षणों और शारीरिक चिन्हों तथा सहवर्ती बातों, यदि कोई हो, द्वारा नियंत्रित हुआ ।

...

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, अध्ययन में शामिल किए जाने के लिए 142 रोगी छांटे गए । इनमें से 03, ...मिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे, को अध्ययन में नामांकित किया गया । अध्ययन के दौरान ...की गई विभिन्न होम्योपैथिक औषधियों के प्रति अलग–अलग प्रतिक्रियाएं थी । यह औषधियों नीचे ...त की गई हैं :

...धि और पोटेंसी	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	निम्नलिखित रूप में राहत प्राप्त रोगियों की संख्या		
		अति सुधार	मध्यम	अल्प
...डियम 30	3	–	3	–

...संभवतः कोई निश्चयात्मक प्रेक्षण नहीं किया जा सका क्योंकि अध्ययन के अधीन रोगियों के अनुवर्तन का ...कम था और बी.एच.पी. का स्वाभाविक इतिहास अनेक वर्षों में फैला हुआ था । अध्ययन में पर्याप्त संख्या ...का नामांकन करने के पश्चात ही निश्चयात्मक प्रेक्षण किया जाएगा ।

...पुराने साइनुसाइटिस में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए एक ...बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

...साइनुसाइटिस एक ऐसी उत्तेजक स्थिति में संबंधित है जिसमें नासिका की कोटरिकाओं के चारों ओर चार ...संरचनाएं होती हैं । शिरानालों को पूर्ववर्ती समूह (जंभिका, पूर्ववर्ती झर्झरिकास्थि और अग्रवती शिरानाल) ...परवर्ती समूह (परवर्ती झर्झरिकास्थि और जातूकास्थि) शिरानालों में विभाजित किया जाता है । हालांकि ...साइटिस के रोगियों में एक से अधिक शिरानाल होते हैं परंतु जंभिका शिरोनाल सबसे आम होता है । ...के क्रम में झर्झरिकास्थि, अग्रवर्ती और जातूकास्थि इसके बाद आते हैं ।

रोगमुक्त रोगियों की संख्या

28

4

1

1

2

1
1

1
1

1

2
1

1

26
5

2
1

1

1

1

1

तीव्र साइनुसाइटिस को चार सप्ताह से कम की अवधि के साइनुसाइटिस के रूप में परिभाषित किया जाता है । चिरकालिक साइनुसाइटिस, 12 सप्ताह से अधिक रहने वाले शिरानाल उत्तेजना के चिन्हों के कारण होता है । यह बीमारी सबसे अधिक आमतौर पर या तो जीवाणु या फफूँद से संबंद्ध होती है और अधिकांश रोगियों में नैदानिक रोगमुक्ति बहुत कठिन है । बहुत से रोगियों ने जीवाणु प्रतिरोधी एजेंटों और बहुविध शिरानाल शल्यचिकित्साओं के बार–बार कोर्सों से उपचार कराया जिससे जीवाणु प्रतिरोधी रोगजनक और शल्यचिकित्सा संबंधी समस्याओं के साथ उपनिवेशन का खतरा बढ़ गया । रोगी अक्सर बहुत वर्षों तक अत्याधिक रूग्णता से पीड़ित रहते हैं । आधुनिक औषधियां इस बात को स्वीकार करती हैं कि चिरकालिक साइनुसाइटिस में पूरी तरह रोगमुक्ति नहीं है और इसलिए मूलभूत शल्यचिकित्सा ही इसका विकल्प है ।

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् ने चार केन्द्रों, गंगटोक (1991–2003), विजयवाढा (1988–2003), चेन्नई (1988–2003) और शिमला (1985–1999) में साइनुसाइटिस (खुला परीक्षण) पर अध्ययन किए गए हैं । अध्ययन में 1869 रोगियों को नामांकित किया गया और होम्योपैथी के प्रभावीकरण के लिए उनका विश्लेशण किया गया । अध्ययन के निष्कर्ष पर 55 प्रतिशत की सुधार दर (अलग–अलग स्तरों पर) की सूचना दी गई । स्वास्थ्यकर, संपूर्णता और रोगात्मक आधार पर रोगियों का अनुवर्तन किया गया । तथापि, वस्तुपरक मूल्यांकन के लिए किसी पूर्वनिर्धारित संलेख या मानदंडों का अनुसरण नहीं किया गया, विभिन्न केन्द्रों से प्राप्त परिणामों में एकरूपता नहीं थी । इसलिए, अध्ययनों में कोई निश्चयात्मक निष्कर्ष नहीं निकला । तथापि, रोगियों में से 55 प्रतिशत में व्यक्तिपरक सुधार में साइनुसाइटिस के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की सकारात्मक भूमिका की सूचना दी गई । इसलिए, परिणामों के मूल्यांकन के लिए, पूरे विश्व में अपनाए जाने वाले सभी मानदंडों के साथ एक बहुकेन्द्रिक नैदानिक परीक्षण आरंभ किया गया ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या	:	500 (प्रत्येक केन्द्र में प्रतिवर्ष 50 रोगी)
अध्ययन की अवधि	:	3 वर्ष (नामांकन के लिए 2 वर्ष + अनुवर्तन के लिए 1 वर्ष) + अंतिम रिपोर्ट के संकलन के लिए 2 महीनें ।

उद्देश्य

मुख्य

चिरकालिक साइनुसाइटिस में निम्नलिखित 17 होम्योपैथिक औषधियों की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना :

1. आर्सेनिक एल्बम
2. कल्केरिया कार्बोनिकम
3. क्युप्रम मेटालिकम
4. हिपर सल्फ. कल्केरियम
5. हाइड्रैस्टिस
6. काली बाइक्रोमिकम
7. काली क्लोरिकम
8. काली आयोड.
9. क्रियोजोट
10. लाइकोपोडियम
11. मर्क्युरियस सोल्यबिलिस
12. नक्स वोमिका
13. फास्फोरस
14. पल्साटिल्ला
15. सैंग्वीनेरिया
16. साइलीशिया
17. थूजा आक्सिडेण्टैलिस

होम्योपैथिक औषधि की भूमिका का पता लगाना और इस्तेमाल की गई औषधि के सत्यापित विशिष्ट ... स्थापित करना ।

चिरकालिक साइनुसाइटिस के कारण होने वाले रोगजनक परिवर्तनों को उलटने में होम्योपैथिक औषधियों की भूमिका का मूल्यांकन करना ।

अलग–अलग सघनता के नियंत्रण के लिए सबसे अधिक उपयोगी रणनीति निर्धारित करना ।

रोग को पुनरावृत्ति से रोकना ।

... स्थल

जनशक्ति की पर्याप्तता, प्रयोगशाला संबंधी जांच–परख की सुविधाओं और संस्थान में अनुसंधान से ... कार्मिकों की सहयोगशीलता को ध्यान में रखते हुए, अनुसंधान संबंधी अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित ... / इकाइयों का चयन किया गया :

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), शिमला ।
2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), जयपुर ।
3. नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), ऊडुपी ।
4. नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी.), अगरतला ।
5. नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी.), गंगटोक ।
6. नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी.), शिलांग ।

अध्ययन में नामांकित किए गए रोगी, संस्थान के वाहय रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए और ... विनिर्धारित शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करने वाले रोगियों में से लिये गए । अलग–अलग

रोगमुक्त रोगियों की संख्या
28
4
1
1
2
1
1
1
1
1
2
1
1
26
5
2
1
1
1
1
1

रोगियों द्वारा दर्शाये गए रोगलक्षण का संग्रह किया गया और होम्योपैथिक औषध–शास्त्र को देखने के पश्चात, परीक्षण के अधीन औषधियों में से उपयुक्त औषधि निर्धारित की गई । होम्योपैथिक औषधियां, सीमीलीमम के होम्योपैथिक सिद्धांत के आधार पर निर्धारित की गई । अध्ययन में नामांकित रोगियों का अनुवर्तन, संलेख में यथा विनिर्धारित नियमित रूप से किया गया । परीक्षण के अधीन औषधियों में से कोई औषधि प्राप्त करने के पात्र न पाए गए रोगियों को अध्ययन में शामिल नहीं किया गया परंतु उनका उपचार, वाहय रोगी विभाग में अन्य रोगियों की तरह किया गया ।

परीक्षित औषधियां

औषधियों का चयन, नैदानिक परीक्षण के लिए चुनी गई 17 औषधियों में से किया गया । पहला नुस्खा उस औषधि का था जिसने रोग के दर्शाये गए लक्षणों और चिन्हों में उच्चतम उपयोगिता दर्शायी और इसका चयन मानसिक/भावात्मक और शारीरिक चिन्हों तथा सहवर्ती बातों, यदि कोई हो, द्वारा नियंत्रित हुआ । औषधि के चयन को होम्योपैथिक औषध–शास्त्र देखकर अंतिम रूप दिया गया ।

परिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, अध्ययन में शामिल किए जाने के लिए 172 रोगियों को छांटा गया । इनमें से 14, जो शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे, को अध्ययन में नामांकित किया गया । अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियों के प्रति अलग–अलग प्रतिक्रियाएं थी । यह औषधियां नीचे सारणीकृत की गई हैं :

औषधि और पोटेंसी

औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	निम्नलिखित रूप में राहत प्राप्त रोगियों की संख्या		
	अति सुधार	मध्यम	अल्प
काली बाइक्रोमिकम 30	5	—	—
साइलीशिया 30	4	1	—
लाइकोपोडियम क्लेवेटम 30	2	—	—
मर्क्युरियस सोल्युबिलिस 30	1	—	—

सत्यापित औषधियों के लक्षण/नैदानिक रोगलक्षण :

काली बाइक्रोमिकम – नाक का अवरोधन, दर्द शिरानाल, नाक से स्त्राव, बाद में नाक टपकना, कफोत्सारण के साथ खांसी, दुर्गन्ध श्वास, घ्राणनाश, एपिक्सटाक्सिस, सामान्य उष्ण अनुभूति ।

साइलीशिया – नाक का अवरोधन, दर्द शिरानाल, नाक से स्त्राव, बाद में नाक टपकना, कफोत्सारण के साथ खांसी, दुर्गन्ध श्वास, घ्राणनाश ।

लाइकोपोडियम क्लेवेटम – नाक का अवरोधन, दर्द शिरानाल, नाक से स्त्राव, बाद में नाक टपकना, कफोत्सारण के साथ खांसी, दुर्गन्ध श्वास, घ्राणनाश, उदर वायु, डकारें ।

मर्क्युरियस सोल्यूबिलिस – नाक में अवरोधन, दर्द शिलानाल, नाक से स्त्राव, बाद में नाक टपकना, कफोत्सारण के साथ खांसी, दुर्गन्ध श्वास, घ्राणनाश, अत्याधिक लार टपकना ।

निष्कर्ष

परिणामों ने दर्शाया कि अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियों ने चिरकालिक साइनुसाइटिस के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की । इसके अलावा, चिरकालिक साइनुसाइटिस से संबंद्ध किसी जटिलता का कोई आपतन नहीं हुआ । चूंकि अध्ययन किए जाने वाले रोगियों की संख्या बहुत कम थी और अनुवर्तन का समय बहुत कम था, इसलिए कोई निश्चयात्मक प्रेक्षण नहीं किया जा सका ।

चर्चा

मधुमेह दूरवर्ती प्रतिसाम्य (मुख्यतः संवेदी) बहुतंत्रिकारोग में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

मधुमेह मेलीटस पूरे विश्व में एक बहुत आम चयापचयी सिन्ड्रोम है । हालांकि मधुमेह को नियंत्रण में रखा जा सकता है परंतु फिर भी मधुमेह की जटिलताएं अनियंत्रित रोगियों में, रूग्णता और मृत्यु का मुख्य कारण हैं । मधुमेह तंत्रिकारोग, अपेक्षाकृत मधुमेह का आरंभिक और आम समस्या है । इसका बने रहना मधुमेह की अवधि और चयापचयी नियंत्रण की मात्रा से संबंधित होता है । यह अधिकतर 40 वर्ष और इससे अधिक आयु के मधुमेह रोगियों और कम से कम 20 वर्ष से निदान किए गए रोगियों में हमेशा मौजूद रहता है । कुछ रिपोर्टों से यह सूचना मिलती है कि जिन रोगियों का मधुमेह नियंत्रण में भी रहता है उनमें भी मधुमेह तंत्रिका रोग को परंपरागत औषधियों द्वारा प्रभावी ढंग से नियंत्रित नहीं किया जा सकता ।

होम्योपैथिक साहित्य में उपलब्ध सूचना से संकेत मिलता है कि मधुमेह से संबंधित तंत्रिकारोग में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता को प्रकाश में लाने के लिए अब तक कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया गया है । होम्योपैथिक औषधियों से मधुमेह से संबंधित तंत्रिकारोग के उपचार के कुछ निर्देशन मौजूद हैं परंतु वैधीकरण के लिए परिणामों के दोहराए जाने की आवश्यकता है । इसलिए, परिषद ने वर्ष 2005–06 में, पूर्व चयनित औषधि (मधुमेह और इसकी जटिलताओं में उपयोगी बताई गई) होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका निर्धारित करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक नैदानिक अध्ययन आरंभ किया ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या : 500 (प्रत्येक केन्द्र में प्रतिवर्ष 50 रोगी) छोड़कर जाने वाले रोगियों की संख्या को भी ध्यान में रखा गया है ।

अध्ययन की अवधि : 4 वर्ष (अध्ययन के लिए 2 वर्ष + अनुवर्तन के लिए 1 वर्ष + पुनरावृति की जांच के लिए 1 वर्ष) + अंतिम रिपोर्ट के संकलन के लिए 2 महीने ।

उद्देश्य

मुख्य

मधुमेह, दूरवर्ती प्रतिसाम्य बहुतंत्रिका रोग के चिरकालिक चरण में निम्नलिखित 14 होम्योपैथिक औषधियों और तीव्र चरण में निम्नलिखित 08 होम्योपैथिक औषधियों की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना :

चिरकालिक चरण

1. सल्फर
2. लाइकोपोडियम
3. रस टाक्स.
4. नक्स वोमिका
5. फास्फोरिक एसिड
6. फास्फोरस
7. आर्सेनिकम एल्बम
8. कोनियम मेक.
9. काक्कूलस
10. ओपियम
11. रोडोडेन्ड्रन
12. प्लैटिना
13. ग्रैफाइटिस
14. स्ट्रामोनियम

तीव्र चरण

1. सल्फर
2. कमोमिला
3. काली कार्ब.
4. लाइकोपोडियम
5. रस टाक्स.
6. ओपियम
7. प्लम्बम
8. कल्केरिया कार्ब.

इस्तेमाल की गई औषधि(यों) के विशिष्ट रोगलक्षण निर्धारित करना और उनका सत्यापन करना ।

रोग के बढ़ने से रोकना ।

निम्नलिखित नैदानिक निष्कर्षों पर भी अध्ययन में विचार किया जाएगा :

(क) रक्त शर्करा के स्तर का नियंत्रण ।

(ख) तंत्रिका रोग के लक्षणों और चिन्हों में परिवर्तन ।

(ग) अवरोधन धमनी रोग के लक्षणों और चिन्हों में परिवर्तन ।

अध्ययन स्थल

जनशक्ति की पर्याप्तता, प्रयोगशाला संबंधी जांच–परख की सुविधाओं और संस्थान में अनुसंधान से संबंधित कार्मिकों की सहयोगशीलता को ध्यान में रखते हुए, अनुसंधान संबंधी अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित संस्थानों/इकाइयों का चयन किया गया है :

1. औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद ।
2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुवाहाटी ।
3. नैदानिक अनुसंधान इकाई, तिरूपति ।
4. नैदानिक अनुसंधान इकाई, पांडिचेरी ।

पद्धति

अध्ययन में नामांकित किए गए रोगी, संस्थान के वाह्य रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए और संलेख में विनिर्धारित, शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करने वाले रोगियों में से लिये गए । अलग–अलग रोगियों द्वारा दर्शाये गए चिन्हों का संग्रह किया गया और होम्योपैथिक औषध–शास्त्र को देखने के पश्चात, परीक्षण के अधीन औषधियों में से उपयुक्त औषधि निर्धारित की गई । होम्योपैथिक औषधियां, सीमीलीमम के होम्योपैथिक सिद्धांत के आधार पर निर्धारित की गई । अध्ययन में नामांकित रोगियों का अनुवर्तन, संलेख में यथा विनिर्धारित प्रारूप में किया गया । परीक्षण के अधीन औषधियों में से कोई औषधि प्राप्त करने के पात्र न पाए गए रोगियों को अध्ययन में शामिल नहीं किया गया परंतु उनका उपचार, वाह्य रोगी विभाग में अन्य रोगियों की तरह किया गया ।

परीक्षित औषधियां

औषधियों का चयन, चिरकालिक चरण के लिए चुनी गई 14 औषधियों में से और तीव्र चरण के लिए चुनी गई 08 औषधियों में से किया गया ।

परिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, अध्ययन में शामिल किए जाने के लिए 86 रोगी छांटे गए । इनमें से 25, जो शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे, को अध्ययन में नामांकित किया गया । अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई विभिन्न होम्योपैथिक औषधियों के प्रति अलग–अलग प्रतिक्रियाएं थी । यह औषधियां नीचे सारणीकृत की गई हैं :

औषधि और पोटेंसी	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	निम्नलिखित रूप में राहत प्राप्त रोगियों की संख्या		
		अति सुधार	मध्यम	अल्प
एसिड फास्फोरिकम 30	3	0	1	2
आर्सेनिक एल्बम 30	1	0	0	1
कोनियम 30	1	0	0	1
लाइकोपोडियम क्लेवेटम 30	5	1	2	2
नक्स वोमिका 30	4	1	2	1
फास्फोरस 30	2	1	1	1

अध्ययन के दौरान सत्यापित औषधियों के लक्षण/नैदानिक रोगलक्षण :

एसिड फास्फोरिकम – मधुमेह मेलीटस, कमजोरी, मानसिक थकावट ।

आर्सेनिक एल्बम – मधुमेह मेलीटस, मानसिक बेचैनी, शारीरिक कमजोरी ।

कोनियम 30 – मधुमेह मेलीटस, कालपूर्व जराजीर्णता ।

लाइकोपोडियम क्लेवेटम 30 – मधुमेह मेलीटस, भाम को बढ़ जाना, स्मरणशक्ति कम जो जाना ।

नक्स वोमिका 30 – मधुमेह मेलीटस, संधिशोथ, श्वेत प्रदर ।

फास्फोरस 30 – मधुमेह मेलीटस, गर्मी के दौरान दर्द अधिक, बहुत अधिक प्यास के साथ ।

प्रेक्षण

परिणामों ने दर्शाया कि अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियों ने मधुमेह तंत्रिकारोग के लक्षणों और चिन्हों से छुटकारा देने में सहायता की । चूंकि अध्ययन अभी–अभी आरंभ किया गया है और नामांकित किए गए रोगियों की संख्या कम है तथा अनुवर्तन अप्रर्याप्त है, इसलिए कोई निश्चयात्मक प्रेक्षण नहीं किया जा सका ।

VIII. बच्चों में तीव्र अतिसार रोग के नियंत्रण में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

भविष्य

एक अनुमान के अनुसार, पूरे विश्व में अतिसार से और उसके परिणामस्वरूप होने वाले निर्जलन से हर वर्ष दस मिलीयन बच्चों की मृत्यु हो जाती है और अतिसार के परिणामस्वरूप अनेक बच्चे कुपोषण तथा विलंबित विकास के शिकार हो जाते हैं । अतिसार को या तो मलत्याग की बारंबारता में वृद्धि या मलत्याग के सामंजस्य में कमी के रूप में परिभाषित किया गया है । हालांकि बच्चों में अतिसार के अधिकांश रोगी, वायरल, जीवाणु और परजीवी रोगजनकों के कारण होते हैं फिर भी अतिसार रोग वाले 50: से अधिक बच्चों में किसी विशिष्ट रोगजनक का आमतौर पर पता नहीं लगता है । बच्चों की बीमारियों में होम्योपैथिक औषधियां अत्याधिक प्रभावी बताई गई है । तथापि, बच्चों की बीमारियों के नियंत्रण में उनकी निश्चयात्मक भूमिका निर्धारित करने के लिए कोई व्यवस्थित अध्ययन किए जाने की सूचना प्राप्त नहीं हुई है । परिषद् ने, सितंबर 2003–मार्च 2004 की अवधि में अतिसार सहित, बाल विकृतियों में होम्योपैथिक औषधियों के नैदानिक परीक्षण आरंभ किए हैं । परिणामों ने बच्चों में अतिसार के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की सकारात्मक भूमिका दर्शायी है परंतु एक निश्चयात्मक निष्कर्ष को सुविधाजनक बनाने के लिए अध्ययन में नामांकित किए गए रोगियों की संख्या बहुत अधिक नहीं थी । इसने बच्चों के अतिसार रोग में एक बहुकेन्द्रिक अध्ययन को प्रोत्साहित किया ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या : 300 (प्रत्येक केन्द्र में 50 रोगी प्रतिवर्ष)

अध्ययन की अवधि : 2 वर्ष + अंतिम रिपोर्ट के संकलन के लिए 2 महीने ।

उद्देश्य

मुख्य

बच्चों में तीव्र अतिसार रोग में निम्नलिखत होम्योपैथिक औषधियों की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना :

1. एथूजा सिनापियम
2. कल्केरिया सल्फ्यूरिका
3. कल्केरिया कार्बोनिका
4. कमोमिला
5. मैग्नीशिया म्यूरिएटिकम
6. मर्क्युरियस सोल.
7. सोराइनम
8. इपिकाकुअन्हा
9. रियूम

10. साइलीशिया
11. स्ट्रामोनियम
12. सल्फर
13. फास्फोरस
14. पोडोफाइलम

गौण

इस्तेमाल की गई औषधियों के विशिष्ट रोगलक्षण निर्धारित करना और उनका सत्यापन करना ।
अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियों के संबंध में अतिरिक्त नैदानिक रोगलक्षण, यदि कोई हों, का पता लगाना ।

अध्ययन स्थल

अध्ययन निम्नलिखित स्थलों पर किया जा रहा है :

1. औषध मानकीकरण इकाई (विस्तार), हैदराबाद ।
2. होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ।
3. नैदानिक अनुसंधान इकाई, गुड़गांव ।

पद्धति

अध्ययन में नामांकित किए गए रोगी, संस्थान के वाहय रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए और शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करने वाले रोगियों में से लिये गए । होम्योपैथिक औषधियां, सीमीलीमम के होम्योपैथिक सिद्धांत के अनुसार, परीक्षण के अधीन औषधियों में से निर्धारित की गई । जो रोगी, पूर्व निर्धारित औषधियों में से कोई औषधि प्राप्त करने के पात्र नहीं थे, उन्हें अध्ययन में नामांकित नहीं किया परंतु उनका उपचार वाहय रोगी विभाग में अन्य रोगियों की तरह किया गया । यह एक तीव्र रोग होने के कारण, रोगियों का एक सप्ताह तक अनुवर्तन किया गया और इसके पश्चात परिणाम का मूल्यांकन किया गया ।

प्रेक्षण

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, संलेख की शर्तों के अनुसार केवल एक रोगी को छांटा गया और उसे अध्ययन में नामांकित किया गया । कोई निश्चयात्मक प्रेक्षण देना बहुत जल्दबाजी होगी ।

IX. तीव्र श्वास प्रणाल श्वसनीशोथ के नियंत्रण में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

तीव्र श्वास प्रणाल श्वश्नीशोथ अक्सर तीव्र प्रतिश्याय के पश्चात होता है । यह, पिछले पुट्ठे में कष्ट, छाती में जकड़न के साथ उत्तेजक अनुत्पादक खांसी के साथ आरंभ होता है और यदि यह श्वसनी के साथ हो तो घरघराहट और श्वासहीनता हो जाती है । थूक आरंभ में कम मात्रा में या श्लेषमल होता है । एक या दो दिन के पश्चात थूक श्लेषमल पीपदार, अधिक मात्रा में और अक्सर रक्त से सना हुआ हो जाता है । तीव्र भवसनी संक्रमण, ज्वर (38–390 सी) और स्वेताणुवृद्धि के साथ जुड़ा हो सकता है ।

परिषद् ने जयपुर और गंगटोक स्थित अपनी अनुसंधान इकाइयों में एक नैदानिक अध्ययन आरंभ किया था । छः सौ ग्यारह रोगियों को नामांकित किया गया था । इनमें से 434 रोगियों ने होम्योपैथिक थैरेपी के प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया दी । चूंकि यह अध्ययन श्वसनीशोथ के नियंत्रण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका निर्धारित करने के लिए आरंभ किया था, इसलिए परीक्षित औषधियों से संबंधित लक्षणों और चिन्हों को ही सत्यापित किया जा सका । कोई विशयपरक मूल्यांकन नहीं किया जा सका ।

पिछले अध्ययन के लाभ को संघटित करने की दृष्टि से और विशयपरक साक्ष्य द्वारा समर्थित निश्चयात्मक भूमिका निर्धारित करने के लिए वर्ष 2005–06 में एक समान संलेख के साथ एक बहुकेन्द्रिक अध्ययन आरंभ किया गया ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या	:	150 रोगी (प्रत्येक केन्द्र में 25 रोगी प्रतिवर्ष)
अध्ययन की अवधि	:	2 वर्ष और 2 महीने (अनुवर्तन सहित नामांकन के लिए 2 वर्ष और रिपोर्ट का संकलन करने के लिए 2 महीने)

उद्देश्य

मुख्य

तीव्र श्वास प्रणाल श्वसनीशोथ में निम्नलिखत होम्योपैथिक औषधियों की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना :

1. फास्फोरस
2. आर्सेनिकम एल्बम
3. पल्साटिल्ला
4. ब्रायोनिया
5. लाइकोपोडियम क्लेवेटम
6. नक्स वोमिका
7. इपिकाक.
8. काली कार्ब.

9. साइलीशिया
10. एकोनाइट नेप.
11. नेट्रम म्यूर.
12. स्पाँजिया
13. स्क्विल्ला
14. स्टैनम मेट.

गौण

इस्तेमाल की गई औषधियों के विशिष्ट रोगलक्षण निर्धारित करना और उनका सत्यापन करना ।
परीक्षण के अधीन होम्योपैथिक औषधियों के संबंध में अतिरिक्त/नैदानिक चिन्हों, यदि कोई हैं, का पता लगाना और
यह पता लगाना कि क्या अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियों का किसी मौसम विशेष या उष्मीय परिवर्तनों के साथ कोई विशेष संबंध है या नहीं ।

अध्ययन स्थल

1. नैदानिक अनुसंधान इकाई, रांची ।
2. नैदानिक अनुसंधान इकाई, सीलीगुड़ी ।
3. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, शिमला ।

पद्धति

अध्ययन में नामांकित किए गए रोगी, संस्थान के वाहय रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए और शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करने वाले रोगियों में से लिये गए । होम्योपैथिक औषधियां, परीक्षण के अधीन औषधियों में से सीमीलीमम के होम्योपैथिक सिद्धांत के अनुसार निर्धारित की गई । जो रोगी, पूर्व निर्धारित औषधियों में से कोई औषधि प्राप्त करने के पात्र नहीं थे, उन्हें अध्ययन में शामिल नहीं किया गया परंतु उनका उपचार वाहय रोगी विभाग में अन्य रोगियों की तरह किया गया । यह रोग तीव्र होने के कारण, रोगियों का एक सप्ताह तक अनुवर्तन किया गया और इसके पश्चात परिणाम का मूल्यांकन किया गया ।

परिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, संबंधित इकाइयों के वाहय रोगी विभाग में आए 79 रोगियों को अध्ययन के लिए छांटा गया । इनमें से 10 ने शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी की और उन्हें, अध्ययन में नामांकित किया गया । इनमें से एक ने अल्प सुधार दर्शाया और रिपोर्टिंग के समय 9 रोगी अभी चिकित्साधीन थे ।

प्रेक्षण

कोई निश्चयात्मक प्रेक्षण नहीं किया जा सका क्योंकि अब तक अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या बहुत कम है ।

X. मधुमेह फुट अल्सर में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

मधुमेह मेलीटस, गैर–अभिघातज निम्न अग्रांग विच्छेदन का एक मुख्य कारण है । फुट अल्सर और संक्रमण मधुमेह मेलीटस से पीड़ित व्यक्तियों में, विकृति का एक मुख्य स्त्रोत है ।

निम्न अग्रांग संबंधी समस्याएं या मधुमेह फुट का उद्भावन एक पेचीदा सिंड्रोम बनाता है और इसमें कुछ रोगमूलक कारकों जैसे तंत्रिका रोग, असामान्य फुट तंत्र, परिधीय संवहनी रोग, घाव का देर से भरना और संक्रमणों के प्रति बढ़ती प्रवृत्ति की अन्योन्यक्रिया होती है ।

निम्न अग्रांग की समस्या बढ़ने से संबद्ध खतरे वाले कारक हैं – पुरूष की कामवासना, 10 वर्ष की अवधि से अधिक का मधुमेह, फुट की समान्य संरचना अर्थात हड्डी की असामान्यता, कठोर विरचन, धुंधले नाखून, परिधीय संवहनी रोग, धूम्रपान और कम शर्करा नियंत्रण ।

परिषद् ने 1997–2003 में मधुमेह मेलीटस में एक नैदानिक अध्ययन आरंभ किया था । मधुमेह मेलीटस के 100 रोगियों (53 पुरूष और 47 महिलाएं) का नामांकन किया गया । रक्त शर्करा स्तर के नियंत्रण में सिफलैंड्रा इंडिका (मदर टिंचर) की भूमिका का पता लगाने के लिए इसका नैदानिक परीक्षण किया गया । इन रोगियों में से 92 ने नैदानिक प्रस्तुतीकरण और रक्त शर्करा स्तर दोनों में समान्य से लेकर अति सुधार तक अलग–अलग सुधार व्यक्त किए ।

प्रिंसेस दुरू शोहवार बाल चिकित्सालय, हैदराबाद के साथ एक सहयोगात्मक अध्ययन, अगस्त 2003 में मधुमेह फुट अल्सर के नियंत्रण में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता का पता लगाने के लिए, उक्त अस्पताल में स्थित औषध मानकीकरण इकाई विस्तार इकाई में आरंभ किया गया । इस अवस्था वाले निदान किए गए 50 रोगियों को अध्ययन में नामांकित किया गया । परिणामों ने मधुमेह फुट अल्सर के नियंत्रण में होम्योपैथिक औषधी की सकारात्मक भूमिका दर्शायी ।

परिणामों का सत्यापन करने के लिए, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुडीवाढ़ा (आंध्र प्रदेश) और प्रिंसेस दुरू शोहवार बाल चिकित्सालय, हैदराबाद में काम कर रही औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद विस्तार इकाई में एक बहुकेन्द्रिक अध्ययन आरंभ किया गया । अध्ययन का उद्देश्य मधुमेह फुट अल्सर से संबंधित रूग्णता कम करने और शल्यचिकित्सा के हस्तक्षेप की आवश्यकता कम करने में होम्योपैथिक औषधियों की भूमिका का मूल्यांकन करना है ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या	:	200 रोगी (प्रत्येक केन्द्र में 50 रोगी प्रतिवर्ष)
अध्ययन की अवधि	:	3 वर्ष (अध्ययन के लिए 2 वर्ष + अनुवर्तन के लिए 1 वर्ष + रिपोर्ट तैयार करने के लिए 1 महीना)

उद्देश्य

मुख्य

मधुमेह फुट अल्सर में निम्नलिखत होम्योपैथिक औषधि(यों) की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना :

1. सल्फर
2. फास्फोरिक एसिड
3. साइलीशिया
4. ओपियम
5. लाइकोपोडियम
6. मर्क्युरियस सोल.
7. आर्सेनिकम एल्बम
8. पल्साटिल्ला
9. लैकेसिस
10. कमोमिला
11. फास्फोरस
12. ग्रैफाइटिस
13. कल्केरिया कार्बो.
14. नेट्रम म्यूर.
15. सीकेल कौर्नूटम
16. ओलिएण्डर
17. रस टाक्स.
18. स्ट्रामोनियम
19. सीपिया
20. नक्स वोमिका

गौण

इस्तेमाल की गई औषधियों के विशिष्ट रोगलक्षण स्थापित करना और उनका सत्यापन करना ।

अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधि(यों) के संबंध में अतिरिक्त / नैदानिक रोगलक्षण, यदि कोई हों, का पता लगाना ।

अध्ययन स्थल

1. औषध मानकीकरण इकाई (विस्तार), हैदराबाद (स्थल कोड – डी.एस. 01, ई) ।
2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुडिवाढ़ा (स्थल कोड – आर.आई. 08) ।

पद्धति

परीक्षण वाली औषधियों का चयन, मधुमेह फुट अल्सर के चिन्हों का संग्रह करके किया गया है । यह संग्रह, संदर्भ पुस्तिका के रूप में रैपरटरी का इस्तेमाल करके किया गया । इस तथ्य पर विचार करते हुए कि यह अध्ययन मधुमेह फुट अल्सर से संबंधित है, रैपरटरी में "अच्छा न होने वाले अल्सर" और "निम्न अग्रांग पर अल्सर" शीर्षक के सामने उल्लिखित पहले चरण में (3 पाइंट) इसके पश्चात दूसरे चरण में (2 पाइंट) दी गई औषधियां छांटी गईं ।

परिवर्तनशीलता को और कम करने के लिए, सभी संबंधित शीर्षकों का संग्रह करने के पश्चात इन औषधियों में से प्रत्येक औषधि के विशिष्ट नियत चिन्हों का परिणाम भी निकाला गया ।

जो रोगी औषधियों में से कोई औषधि प्राप्त करने के पात्र नहीं थे, उन्हें अध्ययन में नामांकित नहीं किया परंतु उनका उपचार वाहय रोगी विभाग में अन्य रोगियों की तरह किया गया ।

उपचार से पहले, उपचार के दौरान और उपचार के पश्चात अल्सर के आकार, रूप और विस्तार का स्पश्ट दृश्य देते हुए उसी कोण और उतने ही फासले से अल्सर वाले अंग के चित्र लिये जाएंगे ।

परिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, तीन रोगियों को छांटा गया । सभी तीन, शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे और उन्हें अध्ययन में शामिल किया गया ।

रिपोर्टिंग के समय तक तीनों में से किसी ने भी अपनी हालत में कोई सुधार नहीं दर्शाया था ।

अब तक जिन औषधियों का इस्तेमाल किया गया वह हैं : कल्केरिया कार्बे और लैकेसिस जिनकी पोटेंसी 30 से 200 तक भिन्न–भिन्न थी ।

साधारण और श्लेषमल पीपदार चिरकालिक श्वसनीशोथ में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक XI.

समूह तैयार करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

चिरकालिक श्वसनीशोथ, लगातार 2 वर्षों से अधिक तक, वर्ष में कम से कम 3 महीने तक कफोत्सारण के साथ खांसी का कारण बनने के लिए पर्याप्त अत्याधिक श्वासप्रणाल श्वसनीशोथ संबंधी श्लेषमल उत्पन्न करने से संबंध एक स्थिति है । सामान्य चिरकालिक श्वसनीशोथ एक ऐसी स्थिति है जो श्लेषमल थूक उत्पन्न होने का कारण बनती है । चिरकालिक श्लेषमल पीपदार श्वसनीशोथ, श्वसनिक जैसे स्थानिक पीप लाने वाले रोगों के अभाव में थूक के लगातार या बार–बार सपूयता के कारण होता है ।

नैदानिक प्रस्तुतीकरण, बिना विकलांगता वाले सामान्य चिरकालिक श्वसनीशोथ से लेकर चिरकालिक श्वास रूक जाने वाली गंभीर विकलांगता की स्थिति तक अनेक प्रकार के होते हैं । सुनियोजित नियंत्रण के बावजूद प्रमुख श्वसनीशोथ वाले रोगी श्वास रूक जाने की अनेक ऐसी घटनाओं का अनुभव कर सकते हैं जहां से उचित थेरेपी से प्रायः स्वास्थ्य लाभ हो जाता है ।

परिषद् ने, चिरकालिक श्वसनीशोथ वाले रोगियों पर होम्योपैथिक औषधियों का प्रभाव देखने के लिए एक अध्ययन आरंभ किया था । परिणामों ने दर्शाया कि चिरकालिक श्वसनीशोथ के नैदानिक नियंत्रण में होम्योपैथिक

औषधियां उपयोगी हैं । तथापि चूंकि चिरकालिक श्वसनीशोथ के नियंत्रण में उपयोगी होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने पर बल दिया गया था, इसलिए किए गए प्रेक्षण, विषयपरक सुधार के बारे में थे और वह प्रयोगशाला के मूल्यांकन पर आधारित नहीं थे ।

परिणामों ने, परिणामों के मूल्यांकन के लिए पहचान की गई औषधियों और पूरे विश्व में अपनाए गए मानदंडों के साथ एक विस्तृत अध्ययन को प्रेरित किया ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या	:	1050 रोगी (प्रत्येक केन्द्र में 75 रोगी प्रतिवर्ष)
अध्ययन की अवधि	:	4 वर्ष और 1 महीना (अध्ययन के लिए 2 वर्ष + 2 वर्ष + अनुवर्तन के लिए 2 वर्ष + रिपोर्ट तैयार करने के लिए 1 महीना)

उद्देश्य

मुख्य

चिरकालिक श्वसनीशोथ के नियंत्रण में निम्नलिखत होम्योपैथिक औषधियों की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना :

1. स्टैनम मेटालिकम
2. हिपर सल्फ्यूरिकम
3. आर्सेनिकम एल्बम
4. इपिकाकुअन्हा
5. फास्फोरस
6. ब्रायोनिया एल्बा.
7. लाइकोपोडियम क्लेवेटम
8. कास्टिकम
9. पल्साटिल्ला नाइग्रिकम
10. एण्टिमोनियम टार्टेरिकम
11. कल्केरिया कार्बोनिका
12. कार्बो वेज.
13. सल्फर
14. साइलीशिया
15. डल्कामारा
16. स्पाँजिया टोस्टा
17. ड्रासेरा रोटनडिफोलिया
18. सिनकोना आफिसिनैलिस

गौण

इस्तेमाल की गई औषधियों के विशिष्ट रोगलक्षण निर्धारित करना और उनका सत्यापन करना ।
इस बात का पता लगाना कि क्या अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधि(यों) का किसी मौसम विशेष या उष्मीय परिवर्तनों के साथ कोई विशेष संबंध है या नहीं ।
चिरकालिक श्वसनीशोथ के कारण होने वाले रोगजनक परिवर्तनों को उलटने में होम्योपैथिक औषधियों की भूमिका का मूल्यांकन करना ।
भिन्न-भिन्न सघनता के नियंत्रण के लिए सबसे उपयोगी रणनीति निर्धारित करना ।
जटिलताओं को बढ़ने से रोकना ।
पुनरावृत्ति को रोकना ।

अध्ययन स्थल

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुवाहाटी ।
2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पुरी ।
3. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ।
4. केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम ।
5. नैदानिक अनुसंधान इकाई, चैन्नई ।
6. नैदानिक अनुसंधान इकाई, पांडिचेरी ।
7. नैदानिक अनुसंधान इकाई, तिरूपति ।

पद्धति

औषधियों का चयन, परीक्षण के लिए पूर्व-चयनित औषधियों में से, चिरकालिक श्वसनीशोथ के लक्षणों और चिन्हों का संग्रह करके किया गया । संदर्भ पुस्तिका के रूप में रैपरटरी का इस्तेमाल करके संग्रह किया गया । इस तथ्य पर विचार करते हुए कि अध्ययन चिरकालिक श्वसनीशोथ से संबंधित है, रैपरटरी में "चिरकालिक खांसी" के सामने उल्लिखित प्रथम चरण में (3 पाइंट), इसके पश्चात दूसरे चरण (2 पाइंट) में औषधियां छांटी गई ।

परिणाम

कुछ 180 रोगी छांटे गए । इन 180 रोगियों में से 43 रोगी, शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे और उन्हें अध्ययन में नामांकित किया गया । परीक्षण वाली औषधियों की प्रतिक्रिया निम्नलिखित सारणी में दी गई है :

परिणाम	रोगियों की संख्या
अरोग्यता	0
अति सुधार	02
मध्यम सुधार	15
अल्प सुधार	16
स्थिर स्थिति	10
कोई सुधार नहीं	0
उग्रता	0
कुल	43

इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियां

क्र0 सं0	औषधि और पोटेंसी (सियां)	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	राहत महसूस करने वाले रोगियों की संख्या
1.	आर्सेनिक एल्बम 6,30,200,1 एम.	22	18
2.	कल्केरिया कार्बोनिका 30	01	01
3.	फास्फोरस 30	11	11
4.	सल्फर 30,200	01	01
5.	एण्टिम टार्टेरिकम 6	01	00
6.	हिपर सल्फ्यूरिकम 6	02	01
7.	पल्साटिल्ला नाइग्रिकेंस 6	02	00
8.	स्टैनम मेटालिकम	01	01
9.	स्पाँजिया टोस्टा 6	01	01
10.	साइलीशिया 6	01	01
	जोड़	43	35

XII. उष्ण वलयिक (इओसिनोफीलिया) में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

उष्ण इओसीनोफीलिया एक ऐसा सिंड्रोम है जिसकी प्रकृति एलर्जिक होती है जो 20 से 90 प्रतिशत के अति इओसीनोफीलिया, परजीवी संक्रण और अजीर्णता के साथ सूखी खांसी के दौरे के कारण होता है । वर्तमान साक्ष्य से संकेत मिलता है कि मानवेतर और कभी–कभी मानव गोलकृमि के प्रति अतिसंवेदनशीलता के परिणामस्वरूप ऊतकों में विशेष रूप से फेफड़ों में उनका विनाश हो जाता है जहां उनके अवशेष नाभीय प्रतिक्रिया को उद्दीपित करते हैं । उष्ण इओसीनोफीलिया वनज कम हो जाने, कभी–कभी दमे या क्षयरोग और विशिष्ट विकिरणी चित्रण फुफ्फुसीय परिवर्तनों से मिलते जुलते फुफ्फुसीय चिन्हों से जुड़ी उच्च इओसीनोफीलिया की एक अवस्था के लिए एक सम्मिलितशब्द है । इओसीनोफीलिया की संपूर्ण संख्याओं में बहुत वृद्धि हुई है । त्वग्रक्तिमा अवसादन दर (ई.एस.आर.) में वृद्धि हो जाती है ।

यह, प्रबल फुफ्फुसीय अभिव्यक्तियों वाली किसी सामान्यकृत ऊतक प्रतिक्रिया की विशेषता बताता है । खांसी, हांफने, घरघराहट, परिधीय इओसीनोफीलिया में अच्छी खासी वृद्धि और इओसीनोफीलिया संबंधी फुफ्फुसीय अंतःसरण की मौजूदगी इन सबसे एक अंतर्निहित अतिसंवेदनशीलता की प्रतिक्रिया का पता चलता है । अन्य स्थानों पर किए गए अध्ययनों से उष्ण इओसीनोफीलिया वाले व्यक्तियों में अतिसंवेदनशीलता की प्रतिक्रिया के एक महत्वपूर्ण अंतर्निहित कारण के रूप में अंतःसरण संक्रमण का संकेत मिलता है ।

परिषद् ने पुरी और गुड़िवाढ़ा (1984–2005) स्थित अनुसंधान केन्द्रों में फाइलेरिऐसिस में एक नैदानिक अध्ययन किया था । परिणामों ने दर्शाया कि फाइलेरिया संबंधी संक्रमण से जुड़ी कुछ समस्याओं का उपचार करने के लिए होम्योपैथिक थैरेपी का सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया जा सकता है ।

परिषद् द्वारा, निदानशास्त्र पर ध्यान दिए बिना, 2005–06 में अपने चार अनुसंधान केन्द्रों में उष्ण इओसीनोफीलिया में एक बहुकेन्द्रिक अध्ययन किया गया ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या : 600(प्रत्येक केन्द्र में 50 रोगी प्रतिवर्ष)

अध्ययन की अवधि : 4 वर्ष और 2 महीना (अध्ययन के लिए 3 वर्ष + अनुवर्तन के लिए 1 वर्ष + अंतिम रिपोर्ट तैयार करने के लिए 2 महीने)

पद्धति

यह एक खुला नैदानिक परीक्षण है । उष्ण इओसीनोफीलिया के लक्षणों और चिन्हों का संग्रह करके 24 औषधियों का चयन किया गया । रैपरटोराइजिशन के लिए में संपूर्ण रैपरटरी का इस्तेमाल किया गया । इस तथ्य पर विचार करते हुए कि अध्ययन उष्ण इओसीनोफीलिया से संबंधित है, रैपरटरी में 'सूखी प्रवेगी खांसी ढ रात में और श्लेषमल पीपदार थूक' शीर्षक के सामने उल्लिखित पहले श्रेणी में और इसके पश्चात दूसरे श्रेणी में परीक्षण के लिए औषधियां छांटी गई ।

उद्देश्य

मुख्य

करना : उष्ण इओसीनोफीलिया में निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधियों की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित

1. काली कार्बोनिका
2. सीपिया
3. लाइकोपोडियम क्लेवेटम
4. हायोसायमस
5. साइलीशिया
6. फेरम फास.
7. कल्केरिया कार्बोनिका
8. कार्बो वेजीटेबिलिस
9. फास्फोरस
10. सल्फर
11. सिनकोना आफिसिनैलिस (चाइना)
12. लैकेसिस
13. कोनियम मेकूलेटम
14. नेट्रम म्यूरिएटिकम
15. अमोनियम कार्बोनिकम
16. नाइट्रिकम एसिडम
17. कास्टिकम
18. मर्क्युरियस सोल्युबिलिस
19. आयोडियम
20. पल्साटिल्ला नाइग्रिकेनस

गौण

चिरकालिक श्वसनीशोथ के नियंत्रण में उपयोगी होम्योपैथिक औषधियों की पहचान करना और उनके विशिष्ट चिन्हों का पता लगाना तथा उनका सत्यापन करना ।

अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियों के संबंध में अतिरिक्त और/या नैदानिक चिन्हों, यदि कोई हों का पता लगाना ।

अध्ययन स्थल

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पुरी ।
2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुड़िवाढ़ा ।
3. नैदानिक अनुसंधान इकाई, पोर्ट ब्लेयर ।

परिणाम

कुल 78 रोगियों को छांटा गया । सभी शामिल किए जाने का मानदंड पूरा करते थे और उन्हें अध्ययन में नामांकित किया गया ।

परिणाम

अरोग्यता	रोगियों की संख्या
अति सुधार	0
मध्यम सुधार	27
अल्प सुधार	25
कोई सुधार नहीं	19
उग्रता	07
असूचित	0
अनउपचारार्थ	0
निचिकित्साधीन	0
कुल	0
	78

इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियां

क्र0 सं0	औषधि और पोटेंसी (सियां)	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	राहत महसूस करने वाले रोगियों की संख्या
1.	आर्सेनिकम एल्बम	07	03
2.	आर्सेनिकम आयोडेटम	03	02
3.	बैसीलीनम	07	03
	कल्केरिया कार्बोनिकम	11	02
	हिपर सल्फ्यूरिकम	06	04
	इपिकाकुअन्हा	07	03
	नेट्रम सल्फ्यूरिकम	06	04
	फास्फोरस	11	04
	साइलीशिया	10	04
	सल्फर	10	34
	जोड़	78	

मुक्त
गियों
संख्या

28

मूत्रांग में पथरी में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का पता लगाने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

विषय

मूत्रांग में होने वाली पथरियां समूहों के रूप में सख्त पथरियां होती हैं तो मूत्रांग में कहीं भी बन जाती हैं जिससे दर्द, रक्तस्त्राव, मूत्र प्रवाह में अवरोधन या संक्रमण हो सकता है ।

पथरियों में से लगभग 80 प्रतिशत कैल्शियम का संघटन होता है जो मूत्र अम्ल, सिस्टाइन और स्ट्रुवाइट सहित विभिन्न पदार्थों का अवशिश्ट होता है । स्ट्रुवाइट पथरियां जो मैग्नीशियम, अमोनियम और फासफेट का मिश्रण है, को संक्रमण पथरियां भी कहा जाता है क्योंकि वे केवल सक्रंमित मूत्र में ही बनती हैं ।

0.5 से.मी. व्यास से कम की पथरियां आमतौर पर तीव्रता से निकल जाती है और उनकी अनदेखी की जा सकती है । एक से.मी. के व्यास से बड़े व्यास की पथरी के मामले में आमतौर पर दखल दिए जाने की आवश्यकता है । निरंतर दर्द, तेज दर्द के बार–बार दौरे या मूत्र रुक जाना पुनः थैरेपी दिए जाने के संकेत हैं । दखल की आवश्यकता तब भी पड़ती है यदि पथरी हिलती डुलती न हो हालांकि संक्रमण के अभाव में इससे आंशिक अवरोधन होता हो ।

वृक्कीय पथरी, 0.1: से 0.4: के वार्शिक आपतन वाली एक आम विकृति है । इस रोग के आरंभ होने की आयु सीमा 20 से 30 वर्ष के बीच है और महिलाओं की तुलना में पुरूष इससे 3–4 गुना प्रभावित होते हैं । पथरी बनने की दर वंश, पोशण और पर्यावरणीय कारकों द्वारा प्रभावित होती है ।

कम से कम परेशानी के साथ गुर्दे की पथरी के निकलने में या पथरी को निकालने में सहायता करने के लिए होम्योपैथिक औषधियां परंपरागत रूप से अत्यधिक प्रभावोत्पादक मानी गई है । इसलिए, 2005–06 में परिषद द्वारा मूत्रांग में पथरी में होम्योपैथिक थैरेपी की प्रभावोत्पादकता निर्धारित करने के लिए एक अध्ययन की योजना तैयार की गई और अध्ययन किया गया ।

रोगियों की संख्या : 240 रोगी (प्रति केन्द्र 20 रोगी प्रतिवर्ष)

अध्ययन की अवधि : नामांकन के लिए 2 वर्ष + अनुवर्तन के लिए 1 वर्ष + अंतिम रिपोर्ट तैयार करने के लिए 2 महीने

पद्धति

अध्ययन के लिए रोगी संस्थान के वाहय रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए रोगियों में से लिये गए और जो रोगी, शामिल किए जाने का मानदंड पूरा करते थे, उन्हें अध्ययन में नामांकित किया गया । रैपरटरी का इस्तेमाल करके अलग–अलग रोगियों का संग्रह किया गया । परीक्षण औषधियों में से ऐसी होम्योपैथिक औषधियां पहले नुस्खे के रूप में इस्तेमाल की गई जिनके रोगलक्षण, रोगों के प्रस्तुत किए गए लक्षणों और चिन्हों तथा अलग–अलग रोगियो के मानसिक/भावात्मक और शारीरिक दोनों लक्षणों से मेल खाते थे । ऐसे रोगियों को अध्ययन में शामिल नहीं किया गया जिनके रोगलक्षण परीक्षण औषधियों में से किसी औषध से मेल नहीं खाते थे परंतु उनका उपचार वाहय रोग विभाग में अन्य रोगियों की तरह किया गया ।

उद्देश्य

मुख्य

मूत्रांग में पथरी में निम्नलिखित औषधियों की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना :

1. कैंथरिस
2. बेलाडोना
3. एपिस मेलीफिका
4. लाइकोपोडियम क्लेवेटम
5. पल्साटिल्ला नाइग्रिकेनस
6. सल्फर
7. नक्स वोमिका
8. आर्जेण्टम नाइट्रिकम
9. मर्क्युरियस सोल्युबिलिस
10. कास्टिकम
11. क्रियोजोट
12. नाइट्रिकम एसिडम
13. आर्निका मोन्टाना
14. मर्क्युरियस कौरोसाइवस
15. टेरीबिंथिना

गौण

इस्तेमाल की गई औषधियों के सत्यापित विशिष्ट रोगलक्षण स्थापित करना ।
अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधि(यों) के संबंध में अतिरिक्त/ नैदानिक चिन्हों, यदि कोई हैं, का पता लगाना ।
इस बात का पता लगाना कि क्या मूत्रांग की पथरी के निष्कासन/विलयन में होम्योपैथिक औषधि सहायता करती है ।
गुर्दे के तीव्र शूल में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का पता लगाना ।

अध्ययन स्थल

1. केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम ।
2. होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ।
3. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुड़िवाढ़ा ।
4. नैदानिक अनुसंधान इकाई, दीमापुर (नागालैंड) ।
5. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर ।

रोक्षण

चूंकि परियोजना विलंब से सौंपी गई थी, इसलिए कोई रोगी पंजीकृत नहीं किया गया ।

XIV.

जठर आंत्रशोथ के नियंत्रण में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

विकासशील देशों में अतिसार रोग एक बड़ी जन स्वास्थ्य संबंधी समस्या है । एक अनुमान के अनुसार, हर वर्ष अतिसार की 1.3 बिलियन घटनाएं होती हैं और अतिसार से 5 वर्ष से कम आयु के 3.2 मिलियन बच्चों की मृत्यु हो जाती है । अतिसार रोगशब्द, रोग के एक समूह के लिए एक ऐसी सुविधाजनक अभिव्यक्ति मानी जाती है जिसमें प्रबल रोगलक्षण अतिसार होता है । मौखिक पुनर्जलयोजन थैरेपी को बढ़ावा देने के माध्यम से अतिसार से संबंधित मृत्यु दर को कम करने के लिए 1980 (छटी पंचवर्षीय योजना) में भारत सरकार ने राष्ट्रीय अतिसार नियंत्रण कार्यक्रम आरंभ किया था । अधिकांश अतिसार रोग एक या एक से अधिक रोगोत्पादकों के कारण होता है और जठर आंत्रशोथ की पहली नैदानिक अभिव्यक्ति होती है ।

हैजे की महामारी, जिसने 1854 में ग्रेट ब्रिटेन के एक भाग में क्षति की, में होम्योपैथिक थैरेपी का सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया गया और जठर आंत्रशोथ में इसके उपयोगी होने की सूचना प्राप्त हुई । मौजूदा अध्ययन, जठर आंत्रशोथ के उपचार और नियंत्रण में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए और तीव्र जठर आंत्रशोथ के उपचार में निश्चयात्मक रूप से प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए 2005–06 में आरंभ किया गया ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या	:	300 रोगी (प्रति केन्द्र 50 रोगी प्रतिवर्ष)
अध्ययन की अवधि	:	2 वर्ष + अंतिम रिपोर्ट के संकलन के लिए 2 महीने

उद्देश्य

मुख्य

: जठर आंत्रशोथ में निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधि(यों) की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना

1. एगारिकस मस्केरियस
2. आर्सेनिक एल्बम
3. एण्टिम क्रूड.
4. एण्टिम टार्टेरिकम
5. एपिस मेलीफिका
6. आर्जेण्टम नाइट्रिकम
7. ब्रायोनिया एल्बम
8. कल्केरिया कार्बोनिकम
9. कार्बो वेज.
10. कमोमिला
11. चाइना आफीसिनैलिस
12. क्युप्रम मेटालिकम
13. डल्कामारा
14. फेरम मेटालिकम
15. इपिकाक.
16. आइरिस वर्सीकलर
17. लाइकोपोडियम क्लेवेटम
18. नक्स वोमिका
19. पल्साटिल्ला नाइग्रिकेंस

20. साइलीशिया
21. सल्फर
22. वेराट्रम एल्बम

इस्तेमाल की गई औषधि(यों) के विशिष्ट रोगलक्षण निर्धारित करना और उनका सत्यापन करना ।
अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधि(यों) के संबंध में अतिरिक्त/ नैदानिक चिन्हों, यदि कोई हैं, का पता लगाना ।
इस बात का पता लगाना कि क्या अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधि(यों) का किसी विशेष मौसम या उष्मीय परिवर्तनों के साथ कोई संबंध है या नहीं ।

अध्ययन स्थल

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर ।
2. नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), भारूच ।
3. नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), एजवाल ।

प्रक्रिति

अध्ययन के लिए रोगी संस्थान के वाह्य रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए रोगियों में से लिये गए और जो रोगी, शामिल किए जाने का मानदंड पूरा करते थे, उन्हें अध्ययन में नामांकित किया गया । रैपरटरी का इस्तेमाल करके अलग–अलग रोगियों का संग्रह किया गया । परीक्षण औषधियों में से ऐसी होम्योपैथिक औषधियां पहले सूखे के रूप में इस्तेमाल की गई जिनके रोगलक्षण, रोगों के प्रस्तुत किए गए लक्षणों और चिन्हों तथा अलग–अलग रोगियों के मानसिक/भावात्मक और शारीरिक दोनों लक्षणों से मेल खाते थे । ऐसे रोगियों को अध्ययन में शामिल नहीं किया गया जिनके रोगलक्षण परीक्षण औषधियों में से किसी औषधि से मेल नहीं खाते थे परंतु उनका उपचार वाह्य रोग विभाग में अन्य रोगियों की तरह किया गया ।

परिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, अध्ययन में शामिल किए जाने के लिए 41 रोगी छांटे गए थे । इनमें से 30 जो शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे, को अध्ययन में नामांकित किया गया । अलग–अलग होम्योपैथिक औषधियों के प्रति अलग–अलग रोगियों की अलग–अलग प्रतिक्रियाएं थी । इन 30 रोगियों में से 18 में क्षति सुधार, 8 में मध्यम सुधार और 2 में अल्प सुधार देखा गया । दो रोगियों के अनुवर्तन की अवधि बहुत कम थी । इसलिए उनकी सूचना नहीं दी गई ।

इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियां

क्र0 सं0	औषधि और पोटेंसी (सियां)	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	राहत महसूस करने वाले रोगियों की संख्या
1.	एण्टिमोनियम क्रूडम 6,30,200	7	7
2.	मर्क्युरियस सोल्युबिलिस 6,30,200	5	5
3.	नक्स वोमिका 6,30,200	3	2
4.	सल्फर 6,30,200	4	1
5.	आर्सेनिक एल्बम 6,30,200	5	1
	जोड़	30	16

प्रेक्षण

चूंकि अध्ययन अभी आरंभिक चरण में है, इसलिए कोई निश्चयात्मक प्रेक्षण नहीं किए गए ।

XV. फोड़ा फुंसी रोगों के नियंत्रण में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

फोड़ा फुंसी रोग, त्वचा का एक आम संक्रमण है जो स्वर्णमय गुच्छाणु के कारण होता है । फोड़ा फुंसी रोग सहित त्वचा के अनेक संक्रमणों में होम्योपैथिक औषधियों के उपयोगी होने की सूचना प्राप्त हुई है । तथापि, फोड़ा फुंसी रोग में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका निर्धारित करने के लिए कोई सुनियोजित अध्ययन किए जाने की कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है । मौजूदा अध्ययन, फोड़ा फुंसी रोग के उपचार में होम्योपैथी की चिकित्सीय भूमिका का पता लगाने के लिए और इस संक्रमण में प्रभावोत्पादक होम्योपैथिक औषधियों का एक समूह तैयार करने के लिए 2005–06 में आरंभ किया गया ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले रोगियों की संख्या : 400 रोगी (प्रत्येक अध्ययन स्थल पर 50 रोगी प्रतिवर्ष)

अध्ययन की अवधि : 2 वर्ष + अंतिम रिपोर्ट का संकलन करने के लिए 2 महीने

उद्देश्य

फोड़ा फुंसी रोग में निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधि(यों) की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना

1. एण्टिम क्रूड.
2. आर्निका मोन्टाना
3. आर्सेनिक एल्बम
4. बर्बेरिस बुल्गैरिस
5. कल्केरिया कार्बोनिकम
6. कल्केरिया फास्फोरिकम
7. हीपर सल्फर
8. सल्फर

इस्तेमाल की गई औषधि(यों) के विशिष्ट रोगलक्षण निर्धारित करना और उनका सत्यापन करना ।

रोग को बढ़ने से रोकना ।

अध्ययन स्थल

यह अध्ययन निम्नलिखित स्थलों पर किया जा रहा है :

1. नैदानिक अनुसंधान इकाई, ईटानगर ।
2. नैदानिक अनुसंधान इकाई, जगदलपुर ।
3. नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), भारूच ।
4. नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), एजवाल ।

पद्धति

अध्ययन के लिए रोगी संस्थान के वाहय रोगी विभाग में पंजीकृत किए गए रोगियों में से लिये गए और जो रोगी, शामिल किए जाने का मानदंड पूरा करते थे, उन्हें अध्ययन में नामांकित किया गया । रैपरटरी का इस्तेमाल करके अलग–अलग रोगियों का संग्रह किया गया । परीक्षण औषधियों में से ऐसी होम्योपैथिक औषधियां पहले नुस्खे के रूप में इस्तेमाल की गई जिनके रोगलक्षण, रोगों के प्रस्तुत किए गए लक्षणों और चिन्हों तथा अलग–अलग रोगियों के मानसिक/भावात्मक और शारीरिक दोनों लक्षणों से मेल खाते थे । ऐसे रोगियों को अध्ययन में शामिल नहीं किया गया जिनके रोगलक्षण परीक्षण औषधियों में से किसी औषध से मेल नहीं खाते थे परंतु उनका उपचार वाहय रोग विभाग में अन्य रोगियों की तरह किया गया ।

परिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, अध्ययन में शामिल किए जाने के लिए 58 रोगी छांटे गए थे । इनमें से 49, जो शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे, को अध्ययन में नामांकित किया गया । 49 रोगियों में से 47 रोगियों में अति सुधार, एक में मध्यम सुधार और 1 में अल्प सुधार देखा गया ।

इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियां

क्र0 सं0	औषधि और पोटेंसी (सियां)	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	राहत महसूस करने वाले रोगियों की संख्या
1.	हीपर सल्फ. 6,30,200,1एम.	22	21
2.	सल्फर 6,30,200,1एम.	09	09
3.	साइलीशिया 6,30,200,1एम.	04	04
4.	नेट्रम म्यूर. 6,30,200,1एम.	02	02
5.	कल्केरिया कार्ब. 6,30,200,1एम.	02	02
6.	बेलाडोना 6,30,200,1एम.	01	01
7.	आर्निका 6,30,200,1एम.	01	01
8.	सीपिया 6,30,200,1एम.	01	01
9.	अन्य 6,30,200,1एम.	07	06
	जोड़	49	47

XVI. श्वेत कुष्ट रोग में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का पता लगाने के लिए एक बहुकेन्द्रिक खुला नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

मौजूदा अध्ययन का उद्देश्य, श्वेत कुष्ट रोग, जो त्वचा संबंधी एक आम अवस्था है, में सहायक होम्योपैथिक औषधियों का पता लगाना है ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले की संख्या : 500 रोगी (प्रत्येक अध्ययन स्थल पर रोगियों 65 रोगी प्रतिवर्ष)

अध्ययन की अवधि : 3 वर्ष + अंतिम रिपोर्ट का संकलन करने के लिए 2 महीने (अध्ययन के लिए 1 वर्ष + अनुवर्तन के लिए 2 वर्ष)

उद्देश्य

होम्योपैथिक सिद्धांतों (अलग–अलग रोगियों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले लक्षणों और चिन्हों) के आधार पर ी गई होम्योपैथिक औषधि(यों) की चिकित्सीय प्रभावोत्पादकता निर्धारित करना और श्वेत कुष्ट रोग के नियंत्रण होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का पता लगाना ।

ीण

श्वेत कुष्ट रोग के नियंत्रण में उपयोगी होम्योपैथिक औषधियों की पहचान करना और उनके विशिष्ट लक्षण का सत्यापन करना ।

अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधि(यों) के संबंध में अतिरिक्त/ नैदानिक चिन्हों, यदि कोई हैं, का पता लगाना ।

ध्ययन स्थल

1. नैदानिक अनुसंधान इकाई, चेन्नई ।
2. होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ।
3. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पुरी ।
4. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुड़िवाढ़ा ।

द्धति

अध्ययन के लिए रोगी, संबंधित अध्ययन केन्द्रों के वाहय रोगी विभागों में पंजीकृत किए गए रोगियों में से लिए गए और अध्ययन में उन्हें नामांकित किया गया जो शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे । होम्योपैथिक औषधियां सीमीलीमम के होम्योपैथिक सिद्धांत के अनुसार निर्धारित की गई । यह रोग एक चिरकालिक ोग होने के कारण, रोगियों का अनुवर्तन एक वर्ष तक किया गया और इसके पश्चात परिणाम का मूल्यांकन किया या ।

रिणाम

रिपोर्ट के अधीन अवधि के दौरान, अध्ययन में शामिल किए जाने के लिए 80 रोगी छांटे गए । इनमें से 6 रोगी, जो शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे, अध्ययन में नामांकित किए गए । अध्ययन के दौरान स्तेमाल किए गए रोगियों की संख्या कम होने के कारण, विभिन्न होम्योपैथिक औषधियों का विस्तृत मूल्यांकन ैयार नहीं किया जा सका ।

अध्ययन किए गए 6 रोगियों की स्थिति : 03 में अल्प सुधार हुआ और 03 में सुधार नहीं हुआ ।

इस्तेमाल की गई होम्योपैथिक औषधियां

क्र0 सं0	औषधि और पोटेंसी (सियां)	औषधि निर्धारित किए गए रोगियों की संख्या	राहत महसूस करने वाले रोगियों की संख्या
1.	आर्सेनिकम सल्फ. फ्लैवम 30	02	01
2.	नेट्रम म्यूर. 200	04	02
	जोड़	06	03

प्रेक्षण

अध्ययन अभी आरंभिक चरण में है, इसलिए संभवतः कोई निश्चयात्मक प्रेक्षण नहीं किया जा सकता ।

XVII. उपगामी एच.आई.वी. संक्रमण में होम्योपैथिक औषधियों का एक बहुकेन्द्रिक नैदानिक परीक्षण ।

परिचय

एच.आई.वी./एड्स की विश्वव्यापी महामारी काफी पहले से चल रही है । प्रतिरक्षित अभाव (इम्यूनोडेफिशियंसी), जो एड्स के रूप में जानी जाती है, के आश्चर्यजनक रूप के पहले रोगी की सूचना 1981 में संयुक्त राज्य अमरीका में प्राप्त हुई थी । यू.एन. एड्स का अनुमान है कि 2003 के अंत तक, विश्व में लगभग 18.5 मिलियन महिलाओं और 15 वर्ष से कम आयु के 3 मिलियन बच्चों सहित 40 मिलियन एच.आई.वी. संक्रमण पहले ही हो चुके हैं । इस महामारी के आरंभ होने के समय से, एड्स से संबंधित रोगों से 3 मिलियन से अधिक लोगों की मृत्यु पहले ही हो चुकी है । जबकि संयुक्त राज्य अमरीका और यूरोप में नये एच.आई.वी. संक्रमण लगभग अपनी चरम सीमा पर पहुँच गए हैं और अफ्रीका में एक निम्न दर से घट रहे हैं, दक्षिण और दक्षिण पूर्वी एशिया में नये एच. आई.वी. संक्रमण में वृद्धि होनी अभी–अभी आरंभ हुई है । यू.एन. एड्स का अनुमान है कि 2003 के अंत तक दक्षिण और दक्षिण पूर्वी एशिया में एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्तियों की संख्या लगभग 6 मिलियन थी । राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (एन.ए.सी.ओ.), भारत का अनुमान है कि 2004 के अंत तक देश में 5.13 मिलियन एच.आई.वी. संक्रमण पहले ही हो चुके थे (पहले एच.आई.वी. संक्रमण और एड्स के रोगी की क्रमशः चेन्नई और मुंबई में होने की सूचना 1986 में प्राप्त हुई थी) । हालांकि राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन द्वारा लगाये गए अनुमान दर्शाते हैं कि नये एच.आई.वी. संक्रमणों में कमी आई है क्योंकि वर्ष 2004 में 0.03 मिलियन रोगी हैं (2003 में 5.1 मिलियन से 2004 में

5.13 मिलियन हो गई थी) । 2003 में 520,000 नये संक्रमणों की तुलना में भारत में कुल 28000 नये संक्रमण हों गए हैं । यह आश्वासन देने वाला हो सकता है परंतु स्थिति गंभीर होती जा रही है क्योंक अब से कुछ वर्षों तक संचयी प्रभाव का महसूस किया जाना निश्चित है ।

एच.आई.वी. द्वारा संक्रमित व्यक्तियों में से अधिकांश इस समय उपगामी चरण से गुजर रहे हैं और आने वाले वर्षों में उन्हें नैदानिक रूप से सक्रिय एच.आई.वी. रोग हो जाएगा ।

संगठित प्रयासों के बावजूद, अभी तक एच.आई.वी./एड्स का कोई रोगनाशक और सुरक्षित उपचार उपलब्ध नहीं है । पिछले 3–4 वर्षों के दौरान वायरल प्रतिरोधी थैरेपी के मार्गनिर्देशों में संशोधन हुआ है । जबकि पहले विचार यह था कि भीध्र प्रहार करों और प्रबल प्रहार करें चाहे सी डी 4 कोशाणुओं की संख्या कितनी भी हो परंतु अब, थैरेपी के विशाक्त प्रभावों से बचने के लिए थैरेपी में यथासंभव विलंब करने की वकालत की गई है । वायरल प्रतिरोधी थैरेपी अब एच.आई.वी. वाले उन व्यक्तियों के लिए निर्धारित की जाती है जिनके सी डी 4 कोशाणु से 200/सी यू. एम एम हों या एड्स से संबंधित रो (रोगों) की अभिव्यक्ति वाले रोगियों में इससे कुछ अधिक हों । इस बात पर अभी बहस चल रही है कि सी डी 4 कोशाणुओं की संख्या कितनी कम हो जिनमें वायरल प्रतिरोधी थैरेपी आवश्यक हो ।

पूरे विश्व में एच.आई.वी./एड्स की महामारी रोकने को दिए जा रहे महत्व को ध्यान में रखते हुए, औषधि के क्षेत्र में सभी स्त्रोतों को इकठ्ठा किए जाने और उपयोग किए जाने की आवश्यकता है । केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् ने 1989 में, यह पता लगाने के लिए कि क्या होम्योपैथिक औषधियों का एच.आई.वी. संक्रमण के उपचार में कोई भूमिका है या नहीं, एक प्रमुख अनुसंधान अध्ययन आरंभ किया ।

यह अध्ययन, "एच.आई.वी. संक्रमण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का मूल्यांकन करने" के उद्देश्य से क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), मुंबई (मई, 1989) और नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), चेन्नई (अक्तूबर, 1991) में आरंभ किया गया था ।

इसके परिणाम सकारात्मक थे और इसने मुंबई में (1995–97) एक यादृच्छिक नियंत्रित अध्ययन को प्रोत्साहित किया । साथ–साथ चलाए जाने वाले दो अध्ययनों में 100 रोगियों को नामांकित किया गया । परिणामों ने यह दर्शाया कि आरंभिक उपगामी एच.आई.वी. संक्रमण में होम्योपैथिक थैरेपी की एक सकारात्मक भूमिका है (ब्रिटिश होम्योपैथिक जर्नल, 1999) ।

परिषद् द्वारा किए गए एक अन्य अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि होम्योपैथिक थैरेपी, मनोवैज्ञानिक परामर्श, पुष्टिकारक पदार्थों तथा श्वास क्रियाओं, ध्यान क्रिया और प्राकृतिक भोजन अनुपूरकों का विवेकपूर्ण मिश्रण, एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्तियों के नियंत्रण में सहायता कर सकता है (ए जरनी टु डाइलॉग – एच.आई.वी./एड्स एण्ड ट्रैडीशनल मेडिसिन, नई दिल्ली, 9–10 नवंबर, 2000) ।

इस तथ्य पर विचार करते हुए कि 200/सी यू. एम एम या इससे अधिक सी डी 4 कोशाणु गिनती वाले उपगामी एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्तियों को सुस्थापित वायरल प्रतिरोधी थैरेपी निर्धारित नहीं की जाती, परिषद् ने, 250/सी यू. एम एम या इससे अधिक सी डी 4 कोशाणु गिनती वाले और संक्रमण के उपगामी चरण से गुजर रहे रोगियों के साथ, उपगामी एच.आई.वी. संक्रमण में होम्योपैथिक थैरेपी का एक बहुकेन्द्रिक नैदानिक परीक्षण आरंभ किया ।

उद्देश्य

मुख्य

एच.आई.वी. संक्रमण को रोकने या उसके बढ़ने में विलंब करने में होम्योपैथिक औषधि की चिकित्सीय भूमिका का पता लगाना ।

गौण

सी डी 4/सी डी 8 गिनती में परिवर्तन के जरिए प्रतिरोधी प्रणाली पर होम्योपैथिक औषधियों की प्रतिक्रिया का नैदानिक मूल्यांकन करना ।

इस बात का पता लगाना कि क्या एच.आईवी. वायरल भार मात्रा के परिवर्तन, होम्योपैथिक थैरेपी के अंतर्गत सी डी 4/सी डी 8 गिनती में होने वाले परिवर्तन से संबंध सूचक हैं ।

होम्योपैथिक थैरेपी के अंतर्गत शारीरिक क्रियाओं और जीवन की गुणवत्ता में होने वाले परिवर्तनों का पता लगाना ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले संख्या	:	600 रोगी (वरीयतः प्रत्येक केन्द्र पर रोगियों की 100 रोगी)
अध्ययन की अवधि	:	3 वर्ष (पहले 18 महीनों में रोगियों का नामांकन किया जाएगा और 18 महीने तक प्रत्येक रोगी का अनुवर्तन किया जाएगा)

अध्ययन स्थल

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, मुंबई ।
2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुड़िवाढ़ा ।
3. नैदानिक अनुसंधान इकाई, चेन्नई ।
4. होम्योपैथिक औषध केन्द्र, सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली ।
5. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली।
6. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, इम्फाल, मणिपुर ।

क्त
यों
ख्या

:8

द्धति

ऐसे रोगी अध्ययन में नामांकित किए गए जो संलेख में विनिर्धारित शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें पूरी करते थे अर्थात उपगामी एच.आई.वी. संक्रमण और सी डी 4 गिनती 250/सी यू. एम एम या इससे अधिक वाले रोगी ।

होम्योपैथिक औषधि, प्रस्तुत किए गए रोग के लक्षणों और चिन्हों (एच.आई.वी. संक्रमण से संबंधित नहीं) और अलग–अलग रोगी के मानसिक/भावात्मक तथा शारीरिक लक्षणों के आधार पर निर्धारित की गई ।

नैदानिक प्रस्तुतीकरण में होने वाले परिवर्तन और सी डी 4 + टी कोशाणु गिनती में होने वाले परिवर्तन में प्रतिरोधी पार्श्व चित्र संबंधी अभिव्यक्ति को दर्ज किया गया और उसका विश्लेशण किया गया ।

रिणाम

अध्ययन, अक्तूबर, 2005 में आरंभ किया गया परंतु एच.आई.वी. वायरल भार परीक्षण (संलेख में विनिर्धारित क परीक्षण) सुविधा की अनुपलब्धता, नैदानिक एच.आई.वी. औषध में सलाहकार सूक्ष्मजीव विज्ञानी और विशेषज्ञ की नियुक्ति लंबित रहने सहित विभिन्न कारणों से अध्ययन, योजना के अनुसार आरंभ नहीं किया जा सका । इसे अप्रैल, 2006 के महीने में पुनः आरंभ करने की योजना बनाई गई है ।

क्षण

ऐसी आशा है कि यह, अध्ययन की प्रस्तावित अवधि के अंदर अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेगा क्योंकि आवश्यक जांच–परख की व्यवस्था को अंतिम रूप दे दिया गया है ।

XVIII. एच.आई.वी. संक्रमण में साइक्लोस्पोरीन, अमीनियम नाइट्रोसम, कोकेनम म्यूरिआटिकम, एजाथियोपरीन और कोर्टीसन के होम्योपैथिक सम्पाक का एक नैदानिक परीक्षण ।

पूरे विश्व में एच.आई.वी./एड्स की महामारी रोकने को दिए जा रहे महत्व को ध्यान में रखते हुए, औषधि के क्षेत्र में सभी स्त्रोतों को इकठ्ठा किए जाने और उपयोग किए जाने की आवश्यकता है । केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् ने 1989 में, यह पता लगाने के लिए कि क्या होम्योपैथिक औषधियों का एच.आई.वी. संक्रमण के उपचार में कोई भूमिका है या नहीं, एक प्रमुख अनुसंधान अध्ययन आरंभ किया ।

यह अध्ययन, "एच.आई.वी. संक्रमण में होम्योपैथिक थैरेपी की भूमिका का मूल्यांकन करने" के उद्देश्य से क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), मुंबई (मई, 1989) और नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), चेन्नई (अक्तूबर, 1991) में आरंभ किया गया था ।

इसके परिणाम सकारात्मक थे और इसने मुंबई में (1995–97) एक यादृच्छिक नियंत्रित अध्ययन को प्रोत्साहित किया । साथ–साथ चलाए जाने वाले दो अध्ययनों में 100 रोगियों को नामांकित किया गया । परिणामों ने यह दर्शाया कि आरंभिक उपगामी एच.आई.वी. संक्रमण में होम्योपैथिक थैरेपी की एक सकारात्मक भूमिका है (ब्रिटिश होम्योपैथिक जर्नल, 1999) ।

परिषद् द्वारा किए गए एक अन्य अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि होम्योपैथिक थैरेपी, मनोवैज्ञानिक परामर्श, पुष्टिकारक पदार्थों तथा श्वास क्रियाओं, ध्यान क्रिया और प्राकृतिक भोजन अनुपूरकों का विवेकपूर्ण मिश्रण, एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्तियों के नियंत्रण में सहायता कर सकता है (ए जरनी टु डाइलॉग – एच.आई.वी. / एड्स एण्ड ट्रैडीशनल मेडिसिन, नई दिल्ली, 9–10 नवंबर, 2000) ।

इस तथ्य पर विचार करते हुए कि 200 / सी यू. एम एम या इससे अधिक सी डी 4 कोशाणु गिनती वाले उपगामी एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्तियों को सुस्थापित वायरल प्रतिरोधी थैरेपी निर्धारित नहीं की जाती, परिषद् ने, 250 / सी यू. एम एम या इससे अधिक सी डी 4 कोशाणु गिनती वाले और संक्रमण के उपगामी चरण से गुजर रहे रोगियों के साथ, उपगामी एच.आई.वी. संक्रमण में होम्योपैथिक थैरेपी का एक बहुकेन्द्रिक नैदानिक परीक्षण आरंभ किया ।

उद्देश्य

मुख्य

प्रतिरोधी प्रणाली पर और एच.आई.वी. संक्रमण के बढ़ने में विलंब करने में होम्योपैथिक औषधि साइक्लोस्पोरीन, अमीनियम नाइट्रीसम, कोर्टीसन, एजाथीओपरीन तथा कोकेनम म्यूरियाटिकम की चिकित्सीय भूमिका का पता लगाना ।

गौण

सी डी 4 / सी डी 8 गिनती में होने वाले परिवर्तन के जरिए प्रतिरोधी प्रणाली पर होम्योपैथिक सम्पाकों की प्रतिक्रिया का नैदानिक मूल्यांकन करना ।

इस बात का पता लगाना कि क्या एच.आईवी. वायरल भार मात्रा के परिवर्तन, होम्योपैथिक थैरेपी के अंतर्गत सी डी 4 / सी डी 8 गिनती में होने वाले परिवर्तन से संबंध सूचक हैं ।

होम्योपैथिक थैरेपी के अंतर्गत शारीरिक क्रियाओं और जीवन की गुणवत्ता में होने वाले परिवर्तनों का पता लगाना ।

अध्ययन में नामांकित किए जाने वाले : 150 रोगी, वरीयतः प्रत्येक केन्द्र पर रोगियों की संख्या 50 रोगी (प्रत्येक औषधि के अंतर्गत 10 रोगी)

अध्ययन की अवधि : 2 वर्ष, प्रत्येक रोगी न्यूनतम 1 वर्ष के अनुवर्तन के साथ ।

रोगमुक्त रोगियों की संख्या
28
4
1
1
2
1
1
1
1

यन स्थल

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ।
2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, मुंबई ।
3. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुड़िवाढ़ा (आंध्र प्रदेश) ।

ति

ऐसे रोगी अध्ययन में नामांकित किए गए जो संलेख में विनिर्धारित शामिल किए जाने के मानदंड की शर्तें ी करते थे अर्थात उपगामी एच.आई.वी. संक्रमण और सी डी 4 गिनती 250 / सी यू. एम एम या इससे अधिक वाले गी ।

निर्धारित की गई औषधियों में से ली गई होम्योपैथिक औषधि, संबंधित औषध के बारे में उपलब्ध ोग–विज्ञान संबंधी सूचना के आधार पर दी गई । लक्षणों और चिन्हों (एच.आई.वी. संक्रमण से संबंधित नहीं) और लग–अलग रोगी की मानसिक / भावात्मक और शारीरिक विशेषताओं के रूप में नैदानिक प्रस्तुतीकरण दर्ज किए ए ताकि अध्ययन के निष्कर्ष के समय उनका विश्लेषण किया जा सके और संबंधित औषधियों का नैदानिक औषध रिदृश्य तैयार किया जा सके ।

नैदानिक प्रस्तुतीकरण में होने वाले परिवर्तन और सी डी 4 + टी कोशाणु गिनती में होने वाले परिवर्तन में तिरोधी पार्श्व चित्र संबंधी अभिव्यक्ति को दर्ज किया गया और उसका विश्लेषण किया गया ।

रिणाम

अध्ययन, अक्तूबर, 2005 में आरंभ किया गया परंतु एच.आई.वी. वायरल भार परीक्षण (संलेख में विनिर्धारित क परीक्षण) सुविधा की अनुपलब्धता, नैदानिक एच.आई.वी. औषध में सलाहकार सूक्ष्मजीव विज्ञानी और विशेषज्ञ की नियुक्ति लंबित रहने सहित विभिन्न कारणों से अध्ययन, योजना के अनुसार आरंभ नहीं किया जा सका । इसे अप्रैल, 2006 के महीने में पुनः आरंभ करने की योजना बनाई गई है ।

क्षण

ऐसी आशा है कि यह, अध्ययन की प्रस्तावित अवधि के अंदर अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेगा क्योंकि आवश्यक जांच–परख की व्यवस्था को अंतिम रूप दे दिया गया है ।

प्राकृतिक आपदाओं / महामारियों में चिकित्सा राहत

मुंबई में चिकित्सा राहत शिविर

4 अगस्त से 30 अगस्त 2005 तक मुंबई में और उसके आस–पास 20 स्थानों पर, बाढ़ से प्रभावित व्यक्तियों के लिए चिकित्सा राहत शिविर आयोजित किए गए । इनका आयोजन, सी.एम.पी. होम्योपैथिक मेडिकल कालेज व अस्पताल, मुंबई के सहयोग से क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), मुंबई द्वारा किया गया ।

ज्वर, त्वचा संक्रमण, जी.आई.टी संक्रमण और श्वसनी रोगों तथा भावात्मक समस्याओं के रोगियों को देखा गया ।

विभिन्न बीमारियों में प्रभावी पाई गई औषधियां थी – आर्स.एल्ब., चाइना सल्फ., मलेरिया आफ., एकोन.नेप., सीना, मेग.फास., क्रोटेलस, मेडो., एलोज, अल्फा–अल्फा, क्रोटन टिग., क्राइसैरोबिनम, डलकामारा, इचनेशिया, यूपाटोरियम पर., नक्स वोमिका, पोडो., पल्स., एण्ट.टार्टे., आर्निका, बैसीलीनम, जेल्सीमियम, ग्रेफा., ब्रायो., काली म्यूर., स्टैफिसैग्रिया, रूटा, रस टाक्स., सीपिया, साइलीशिया, लाइको., लोब.इन्फलैटा, लैके., चेलिडोनियम, कैंथरिस, कार्बो वेज., हीप. सल्फ., पाइरोजन

जापानी मस्तिष्कशोथ की महामारी

सितंबर–अक्तूबर, 2005 में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर और महाराजगंज जिलों में जापानी मस्तिश्कशोथ की महामारी का पता चला था । होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के दो दलों ने इन क्षेत्रों का दौरा किया । स्थानीय अस्पताल में भर्ती किए गए 30 रोगियों में निम्नलिखित लक्षणों और चिन्हों के आधार पर बेलाडोना 200 को "जीनस एपिडेमीकस" पाया गया :

1. तेज सिरदर्द ।
2. तेज ठंड और जूड़ी के साथ उच्च ज्वर ।
3. मांसपेशियों में जकड़न विशेष रूप से गर्दन में ।
4. उल्टी ।
5. बिना चाहे पेशाब निकल जाना ।
6. मांसपेशियों की संकुचन और ऐंठन ।
7. मरोड़ ।
8. बेहोशी ।
9. सम्मूर्च्छा ।
10. रोग के आरंभ में कुछ रोगियों में उल्टी और अतिसार भी पाए गए । इसके पश्चात कब्ज, पक्षाघात, उदासीनता, गले में दुखन, मौखिक कानाडियासिस, अवसन्नता, पिचकी हुई भाक्ल, पीला चेहरा, क्षुधा अभाव, भूख और प्यास क्षीण हो जाना आदि की शिकायत देखी गई ।

प्रभावित जनता को निम्नलिखित विवरण के अनुसार होम्योपैथिक रोगनिरोधक औषधि बेलाडोना 200 (एक खुराक दिन में दो बार तीन दिन के लिए) का वितरण किया गया :

गोरखपुर

27 गावों में कवर की गई जनसंख्या	–	172900
42 स्कूलों में कवर की गई जनसंख्या	–	31526
कुल	–	204426

महाराजगंज

23 गावों में कवर की गई जनसंख्या	–	106748
41 स्कूलों में कवर की गई जनसंख्या	–	15241
कुल	–	121989

गोरखपुर में अनुवर्तन कार्यक्रम (उद्‌भवन अवधि पूरी होने के पश्चात)

15 गावों में कवर की गई जनसंख्या	–	90900
23 स्कूलों में कवर की गई जनसंख्या	–	16983
कुल	–	107883

होम्योपैथिक रोगनिरोधक औषधि का वितरण करने के पश्चात जापानी मस्तिश्कशोथ द्वारा प्रभावित पाए गए रोगियों की संख्या

	रोगियों की संख्या
गांव	
गहिरा	01
भातट	01
कुल	02

महाराजगंज में गांवों और स्कूलों का अनुवर्तन कार्यक्रम (उद्‌भवन अवधि पूरी होने के पश्चात)

14 गावों में कवर की गई जनसंख्या	–	59560
29 स्कूलों में कवर की गई जनसंख्या	–	12767
कुल	–	72327

किया गया यादृच्छिक अनुवर्तन (उद्‌भवन अवधि के अंदर)

10 स्कूलों में कवर की गई जनसंख्या	–	2315
6 गावों में कवर की गई जनसंख्या	–	26500
कुल	–	28815

होम्योपैथिक रोगनिरोधक औषधि का वितरण करने के पश्चात जापानी मस्तिश्कशोथ द्वारा प्रभावित पाए गए रोगियों की संख्या

गोरखपुर	–	02
महाराजगंज	–	01

के. हो. अ. प. की मैडिकल टीम जापानी मस्तिश्कशोथ के रोगी का निरीक्षण करते हुए

2. नैदानिक सत्यापन

नैदानिक सत्यापन, प्रमाणित औषधियों और विखंडित आंकड़ों वाली औषधियों (अंशतः प्रमाणित औषधियों) की नैदानिक योज्यता का मूल्यांकन करने की प्रक्रिया है । यह प्रक्रिया चिकित्सीय अनुप्रयोग के लिए विश्वसनीय लक्षण प्राप्त करने में भी र्शन करती है । परिषद् ने भारतीय मूल की अनेक ऐसी औषधियों का प्रमाणन किया है जिन्हें नैदानिक सत्यापन कार्यक्रम में गया है । ऐसी 35 औषधियां, नैदानिक सत्यापन अनुसंधान में लगे संस्थानों / इकाइयों को नैदानिक परीक्षणों के लिए सौंपी हैं ।

	दानिक सत्यापन अनुसंधान लगे संस्थान / इकाइयां	निर्धारित की गई औषधियां
1.	होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान (हो.), लखनऊ	1. एकैलिफा इंडिका 2. एसिड ब्यूटाइरिकम
2.	क्षेत्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	3. अल्फाल्फा 4. अरेनिया डायडेमा
3.	क्षेत्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान,	5. अरेनिया सिनेंसियाशिमला 6. आर्सेनिकम ब्रोमैटम
4.	नैदानिक सत्यापन इकाई (हो.), पटना	7. अजाडिरैकटा इंडिका 8. बेलिस पेरेनिस
5.	नैदानिक सत्यापन इकाई (हो.), गाजियाबाद	9. कैलोट्रापिस जिजांटिया 10. कैसिया फिस्चुला
6.	नैदानिक सत्यापन इकाई (हो.), वृंदाबन	11. क्रोमो. काली सल्फ 12. कुरकुमा लोंगा 13. साइनोडोन डक्टीलोन 14. यूफोर्बिया लेथीरिस 15. ग्लीसीरहीजा ग्लैब्रा 16. होलारहेना एन्टीडाइसेनटेरीका 17. इक्थियोलम 18. लैपिस एल्बस 19. मैग्नीशिया सल्फ्यूरिका 20. मैंगीफेरा इंडिका 21. माइगेल लेसियोडोरा 22. औसीमम कैनम 23. आक्सीट्रोपिस लम्बरटी 24. फाइलैन्थस निरूरी

रोगमुक्त रोगियों की संख्या

28
4
1
1
2
1
1
1
1
1
2
1
1
6

25. पाइरस अमेरीकाना
26. राउवोल्फीया सर्पेन्टीना
27. रिसिनस कौम्यूनिस
28. स्टेफाइलोकोसीनम
29. ट्रिबुलस टेर्रेस्ट्रिस
30. टारेण्टुला क्यूबेन्सिस
31. टीलिया अरेनिया
32. टर्मीनेलिया अर्जुना
33. थिआ चिनेंसिस
34. थेरीडियन
35. टाइलोफोरा इंडिका

इन औषधियों के साहित्य का स्त्रोत

अध्ययन के अधीन नामांकन के लिए रोगी, उन केन्द्रों के सामान्य वाहय रोगी विभागों से लिये गए जहां अध्ययन किया गया । औषध रोगजनन में, परिषद् द्वारा किए गए प्रमाणन के दौरान प्राप्त लक्षण और चिन्ह तथा निम्नलिखित स्त्रोत पुस्तकों में संबंधित औषधियों के अधीन पहले से ही शामिल किए गए रोग के लक्षण और चिन्ह शामिल हैं :

1. व्यावहारिक होम्योपैथिक मैटिरिया मेडिका की संदर्शिका–डा0 जोहन हेनरी क्लार्क ।
2. हमारे होम्योपैथिक मैटिरिया मेडिका के मार्गदर्शी चिन्ह – डा0 सी0 हेरिंग ।
3. विशुद्ध होम्योपैथिक मैटिरिया मेडिका का विश्व–कोष – टी.एफ.एलन. ।
4. होम्योपैथिक मैटिरिया मेडिका और संग्रह की पाकेट निमय पुस्तक – विलियम बोरीक ।
5. हिन्दुस्तान की औषधियां – डा. एस.सी. घोष ।
6. कोई अन्य स्त्रोत ।

वर्ष 2005–06 के दौरान उपलब्धियां

इस वर्ष के दौरान, उपरोक्त 35 औषधियों के रोगजनन का नैदानिक सत्यापन करने के लिए, इस कार्यक्रम को चलाने वाले विभिन्न संस्थानों / इकाइयों में कुल 15649 रोगी (नये अनुसंधान वाले 7,157 रोगी और अनुवर्तन वाले 8,492) पंजीकृत किए गए ।

ऐसे रोग के लक्षण और चिन्ह जिनके निर्धारित की गई होम्योपैथिक औषधि(यों) से समाप्त हो जाने / छुटकारा मिल जाने की सूचना प्राप्त हुई

प्रत्येक औषधि के अंतर्गत सत्यापित किए गए चिन्हों का उल्लेख नीचे सारणीकृत रूप में किया गया है । केवल उन्हीं चिन्हों का उल्लेख किया गया है जिनका सत्यापन इस वर्ष के दौरान किया गया । पिछले वर्षों के दौरान सत्यापित किए गए पुराने चिन्हों को शामिल नहीं किया गया ।

कोष्ठक में दिए गए चिन्ह वह है जो केवल नैदानिक सत्यापन अध्ययन के दौरान पाए गए परंतु साहित्य में नहीं पाए गए ।

एकैलिफा इंडिका

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
सिर	सिर में भारीपन और चक्कर, < लेटे रहना	15	11
नाक	नाक से पानीदार स्त्राव	16	10
	छींकों के साथ नाक से पानीदार स्त्राव < सुबह	15	4
	नहाने के बाद छींकें	7	1
मुंह	मसूड़ों से खून आना	2	1
उदर	अधिजठर में भारीपन और खट्टी डकारों के साथ अपचन, हृदय में जलन और बेचैनी, < आधी रात, > मलत्याग के बाद	10	6
मलाशय	मल पतला, मल से पहले उदरशूल, < शाम को मल सख्त, कठिनाई से आना	7	5
मूत्राशय	पेशाब की बारंबारता में वृद्धि	6	1
स्त्री जननांग	श्वेत प्रदर, लसलसा < चलने फिरने से	11	10
श्वसन प्रणाली	गाढ़े पीले कफोत्सारण के साथ खाँसी, < सुबह को, > रात	19	14
	ज्वर महसूस होने के साथ सूखी खाँसी, < रात को, > ठंडा पानी पीने से	24	14
	खाँसी, > ठंडा पानी पीने से	11	4
	पीले कफोत्सारण के साथ खाँसी < सुबह, रात को	7	1
	नमकीन कफोत्सारण के साथ खाँसी < सुबह, रात को	6	2

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
छाती	छाती में तेज दर्द < खाँसी के बाद	5	1
पीठ	लंबर भाग में तेज दर्द < मलत्याग, > आराम करने पर	6	2
अग्रांग	दाहिने कंधे के जोड़ में दर्द < हिलाने डुलाने से	2	2
	पीठ में तेज दर्द < मलत्याग के बाद	1	1

2. एसिड ब्यूटाइरिकम

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 30

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
मस्तिष्क	मस्तिष्क में थकान, < शाम को	4	4
सिर	सिर से गर्मी का आवेग > ठंडे पानी के अनुप्रयोग से	14	10
आँखें	बांयी आँख से चुभन वाला दर्द > ठंडे पानी के अनुप्रयोग से	1	1
	सिरदर्द के साथ बांयी आँख में चुभन वाला दर्द > ठंडे पानी से	1	1
चेहरा	पूरे चेहरे पर लाल दाने	21	15
उदर	अधिक प्यास के साथ खट्टी डकारें	5	3
	अधिक भूख के साथ खट्टी डकारें	4	2
	कम भूख	3	2
आमाशय	दुर्गंध के साथ उदरवायु < रात को	3	2
पीठ	पीठ दर्द < चलने पर	2	1
पसीना	पैरों में बदबूदार पसीना	2	1
सार्वदैहिक	कमजोरी < सुबह, > निरंतर चलने फिरने से	6	6
	पूरे शरीर से गर्मी का आवेग < गर्मी से, > ठंडे पानी से नहाने से ।	2	1

3. अल्फाल्फा

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
	सिर में भारीपन, चक्कर और दर्द	1	1
	थकान तीव्र	1	1
	गले में कटापन और जलन > ठंडे पेय पदार्थों से	4	4
	खाली उदर में उबकाई	4	1
	अधिक प्यास	2	1
	भूख कम	5	4
	आमाशय में भारीपन के साथ डकारें < खाने के बाद	1	1
	गुदाद्वार में जलन	1	1
	मल सख्त और कम, कठिनाई के साथ मल आना	1	1
	बार-बार पेशाब आना, < रात को	17	11
	सूखी खाँसी < रात को	7	7
	गर्दन में तेज दर्द < सुबह के समय	12	10
	ज्वर, < सुबह के समय	9	7
	थकान की अनुभूति < चलने पर	1	1
	आलस्य की अनुभूति		
	सुस्ती और उनिंदापन		

...निया डायडेमा

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
	बात करने में विमुखता	5	8
	सिर में खालीपन की अनुभूति के साथ सिर में चक्कर	8	4
	भारीपन के साथ मंद चुभने वाला दर्द < कम शोर से	4	

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
	सिर में काँपने वाला दर्द	3	3
	पश्चकपाल भाग में हथौड़े मारना महसूस होना < शाम के समय	1	1
नाक	इपिसटाक्सिस < सूर्य की गर्मी में,	6	2
	(> ठंडे पानी से)	6	2
	छूते समय, दर्द के साथ नाक के अंदर फोड़ा फुंसी महसूस होना	1	1
मुँह	सुबह के समय बुरा स्वाद	4	3
	मेटालिक स्वाद	4	2
दांत	दांतों में दर्द < रात को, लेटे रहने पर	5	5
उदर	उबकाई < सुबह के समय	1	1
आमाशय	नाभीय भाग में दर्द < खाना खाने के बाद	1	1
मलाशय	श्वेत श्लेष्मा के साथ पतला मल और मलद्वार का सुखापन	3	3
पुरुष जननांग	कामुक स्वप्नों के साथ रात को शुक्रीय निस्सरण, प्रत्येक तीसरे–सातवे दिन	40	10
	बढ़ी हुई काम वासना, < रात को	6	1
	कालपूर्व स्खलन	2	2
महिला जननांग	श्वेत प्रदर, चिपचिपा	4	3
अग्रांग	पिण्डली की माँसपेशियों में चुभन वाला दर्द < शाम को	5	3
	सुस्ती के साथ पिण्डली की माँसपेशियों में चुभन वाला दर्द > लेटे रहने पर, > आराम करने पर, दबाने पर	1	1
	ओ एस कलकेनियम में दर्द < सुबह के समय, पहली बार चलने फिरने पर, दाँयी तरफ	1	1
	सुन्नपन के साथ तलवों में सूजन की अनुभूति	1	1
ज्वर	ठंड के साथ ज्वर	31	22
	माथे में दर्द के साथ ज्वर	30	22
	ज्वर, < सुबह के समय	8	1
	अग्रभाग में तेज दर्द के साथ ज्वर, < सुबह से दोपहर तक	4	3
नींद	रात को नींद में व्यवधान	2	1

5. अरेनिया सिनेंसिया

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
सिर	भारीपन के साथ अग्रभाग में मंद दर्द, < सूर्य की गर्मी में	1	1
मुँह	मुँह का कड़वा स्वाद	1	1
उदर	भूख कम	1	1
अमाशय	अमाशय के ऊपरी भाग में चुभन वाला मंद दर्द, < खाना खाने के बाद, > हल्का दबाने से	1	1
	पूरे अमाशय में भारीपन के साथ डकारें, < खाना खाने के बाद, > उदर–वायु निकलने के बाद	1	1
सार्वदेहिक	कमजोरी महसूस करना	1	1

6. आर्सेनिकम ब्रोमैटम

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30

नाक	नाक से पानीदार स्त्राव के साथ नज़ला	6	2
	(< सुबह के समय)	6	2
	दोनों नथुनों से पानीदार कड़ुआ स्त्राव, < ठंडे पेय पदार्थों, ठंडी हवा से	4	1
	नाक से पानीदार स्त्राव	3	3
चेहरा	तैलीय चेहरा	10	2
गला	गले में खराश की अनुभूति, > पानी पीने के बाद	1	1
उदर	पूरे उदर में भारीपन के साथ डकारें < खाना खाने के बाद, > उदर वायु निकलने के बाद	3	2
मलाशय	मल–कब्ज	5	4
	मल जाने के बाद गुदाद्वार में जलन वाला दर्द	3	3
	मलाशय में दर्द, < गुदाद्वार में जलन के साथ मल	2	1

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
ज्वर	ठंड के साथ ज्वर, < दोपहर के बाद	3	1
त्वचा	खुजली के साथ पूरे शरीर पर लाल दाने, < गर्मी से, > ठंडे पानी से	3	1

7. अजाडिरैकटा इंडिका

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

मस्तिष्क	चिन्ता, कुछ बुरा होने की आशंका और धड़कन तेज होना	1	1
सिर	शिरोवल्क पर दाग और फुंसीदार फूटन	27	23
	माथे में चुभन वाला मंद दर्द > दबाने से	3	3
कान	कानों में सिसकारी की ध्वनि, < सुबह के समय	3	3
नाक	छींके < खुली हवा में, > गरम कमरे में	44	38
मुँह	मुँह में शुष्कता, < रात को, सोते हुए	2	2
उदर	डकारें, उदर में भारीपन, > डकार लेने से	2	1
मलाशय	मल–खाना खाने के बाद जाने की इच्छा	48	42
	मल जाने के दौरान उदर में दर्द और झागदार श्लेष्मा के साथ पतला मल	1	1
श्वसन प्रणाली	गाढ़े पीले कफोत्सारण के साथ खांसी, < सुबह, शाम को	4	2
	छाती में जकड़न के साथ खाँसी	2	2
अग्रांग	घुटने के जोड़ों में दर्द, < चलने फिरने पर	12	6
	बाँए कंधे, जोड़ में दर्द < हाथ मोड़ने पर	1	1

8. बेलिस पेरेनिस

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30

सिर	उनिन्देपन के साथ तेज सिर दर्द, < शाम के समय	29	25
	सिर के पिछले भाग में चुभनवाला दर्द > लेटने पर	1	1

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
नाक	पानी टपकने के साथ तेज छींके, < सुबह के समय, > दोपहर के बाद	31	28
चेहरा	चेहरे पर मुँहासे	5	4
गला	गले में दर्द, < पानी निकलने पर	1	1
मलाशय	श्लेष्मा के साथ पतली टट्टी	4	1
पीठ	पीठ के कड़ेपन के साथ लंबर भाग में दर्द < थकावट से, > दबाने से	2	2
	पीठ में दुखन के साथ मुड़कन	1	1
	गिरने के कारण पीठ पर चिरकालिक अंदरूनी चोट	1	1
	श्रोणीय भाग में बार–बार दुखन	1	1
	श्रोणीय भाग में तेज दर्द < चलने से, पेशाब करने से	1	1
	लंबर भाग में चुभन वाला दर्द < चलने फिरने से, > आराम करने पर	1	1
अग्रांग	लिखने में जकड़न	2	2
	बैठने की स्थिति से उठने पर जानुपृश्ठ भाग में और घुटने के जोड़ों में चुभन वाला दर्द और दुखन	1	1
	घुटने के जोड़ों में चुभन वाला दर्द, < चलने पर	1	1
त्वचा	पूरे शरीर पर फूटन जैसे दुखने वाले फोड़े	28	26
	खुजली वाले और गाढ़े सफेद स्त्राव के साथ पैरों और नितंबों तथा शरीर के अन्य भागों पर बहुविध फोड़े	20	5
	दर्द के साथ पूरे शरीर पर फोड़े	3	2
	माथे पर, गाढ़ी मवाद और खून रिसने वाले, कभी–कभी खुजली वाले बहुविध फोड़े	1	1
	चेहरे पर, दाँयी तरफ, कभी–कभी खुजली के साथ, बिना स्त्राव वाले लाल फूटन	1	1

9. कैलोट्रापिस जिजांटिया

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

सिर	माथे में दर्द, > दबाने से	1	1
नाक	बार–बार छींक और सफेद श्लेष्मा नासीय स्त्राव के साथ नज़ला, < बिस्तर से उठने पर, शाम को, > दिन में	1	1
	बार–बार सफेद नासीय स्त्राव	1	1

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
गला	गले की दुखन, < सुबह बिस्तर से उठने के बाद	16	14
अमाशय	प्यास परंतु एक बार में कम पानी लेना	13	11
मलाशय	सख्त मल, मल के बजाए उदर–वायु निकलना	2	2
पुरुष जननांग	खुजली और दर्द के साथ शिशनमुण्डच्छद्र के नीचे लाल दाने, < मूत्रण के दौरान और बाद में	1	1
ज्वर	ज्वर के साथ अग्रांगों में दर्द	1	1
त्वचा	जांघों के बीच ऊरू–मूल में खुजली, रगड़ने के बाद पानीदार स्त्राव निकलना < गर्मी में	5	2
	खुजली और पानीदार स्त्राव निकलने के साथ पूरे शरीर पर छोटे फूटन, < गर्मी में, > रगड़ने के बाद	8	2

10. कैसिया फिस्चुला

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 30, 200

मस्तिष्क	बात करने में विमुखता	12	9
सिर	सिर में विस्फोटक दर्द	11	8
आँख	आँखों में जलन < गर्मी से, > ठंडे पानी से धोने पर	13	6
	दर्द के साथ आँखों में खुजली और जलन की अनुभूति, < सुबह के समय, > ठंडे पानी से धोने से	1	1
नाक	नाक और आँखों से पानीदार स्त्राव के साथ बार–बार छींके, < सुबह के समय	18	12
	नाक के अवरोधन के साथ छींके < सुबह के समय	1	1
गला	खखारने की प्रवृत्ति	3	3
	गले में सूजन की अनुभूति	2	2
अमाशय	भूख में कमी	21	17
	अमाशय में दर्द, < ठंडा पानी पीने से	5	3
	अधिजठर में खालीपन के अनुभूति, < खाने के बाद	3	1

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
उदर	उदर के फूलने और भारीपन के साथ अपचन	1	1
मलाशय	मल त्याग की इच्छा	3	3
सार्वदेहिक	धबराहट, कमजोरी और थकावट महसूस करना	8	8
	बेचैनी	10	8

11. क्रोमो. काली सल्फ

इस वर्ष के दौरान कोई नया चिन्ह सत्यापित नहीं किया गया ।

12. कुरकुमा लोंगा

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30

चक्कर	सिर में चक्कर > लेटे रहने पर	4	4
सिर	सिर दर्द, टेम्पोरल भाग में स्पंदन < शाम को	9	7
आँखें	खुजली के साथ आँखों में लालिमा	1	1
चेहरा	सिर की खुजली जैसी खुजली गालों और ठोढी पर लाल रंग के रोमगुच्छ – फफोलेदार ददोरे	1	1
मुँह	मुँह में शुष्कता	1	1
अमाशय	भूख में कमी	10	8
	ठंडे पानी की प्यास में वृद्धि	1	1
	खाना खाने के बाद अधिजठर में मरोड़ वाला दर्द	1	1
	अधिजठर भाग में मरोड़ वाला दर्द < शाम को और सुबह के समय	1	1
उदर	उदर के भारीपन के साथ डकारें < खाना खाने के बाद, > डकार लेने के बाद	2	2
मलाशय	मल पतला, बदबूदार, दिन में 2–3 बार	1	1
मूत्रमार्ग	जलन के साथ मुहुर्मूत्रण	1	1
महिला जननांग	मासिक धर्म के दौरान उदर के नीचले भाग में चुभन वाला दर्द	1	1

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
श्वसन प्रणाली	गुदगुदाहट की अनुभूति, गले की खराश के साथ रात को सूखी खाँसी	5	3
पीठ	कटिवेदना < सुबह और शाम को, > आराम करने पर	1	1
त्वचा	कुछ पीपदार दाने	1	1

13. साइनोडोन डक्टीलोन

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

सिर	बहुत तेज सिर दर्द < सुबह, >पित्तदोषग्रस्त उल्टी से	4	2

14. यूफोर्बिया लेथीरिस

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30

सिर	माथे का भारीपन < सूर्य की गर्मी में निकलने पर	1	1
नाक	सुबह के समय नाक का अवरोधन	1	1
मुँह	मुँह का कड़वा स्वाद	1	1
मलाशय	मल त्याग की इच्छा न होना	2	2
श्वसन प्रणाली	सूखी अनियमित खाँसी < रात को	5	2
	सूखी खाँसी < हिलने ढुलने पर	2	2
	सफेद गाढ़े पदार्थ के साथ खखारना, सुबह के समय कफोत्सारण	1	1
छाती	छाती में जलन > ठंडे पेय पदार्थ पीने से	5	5
अग्रांग	बाएं पैर के पृश्ठीय भाग पर निश्क्रिय अल्सर	1	1
	पैरो का भोफ	2	2
नींद और स्वप्न	बेतुके स्वप्न, देर रात में	1	1
त्वचा	श्लेष्मा–फुंसी फूटन	3	1
	जलन, पपड़ी जमने और गाढ़े चिकने स्त्राव के साथ पादांगुति का चिरकालिक त्वचाशोथ जो सर्दियों में समाप्त हो जाता है	1	1
सार्वदेहिक	सिर में भारीपन, सुस्ती और आसानी से थकावट	1	1

15. ग्लीसीरहीजा ग्लैब्रा

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
सिर	माथे में चुभन वाला दर्द > नहाने के बाद	23	19
आँखें	दोनों आँखों में चुभन वाला दर्द, < सुबह के समय	6	3
	आखों का भारीपन	1	1
कान	गर्दन की मांसपेशिया सख्त हो जाने के साथ कान में चुभन वाला दर्द, < खाना खाने के दौरान, ठंडा पानी पीने के बाद, खुली हवा में	1	1
	कान में चुभन वाला दर्द < सुबह के समय	1	1
	कान में दर्द < ठंड में	1	1
नाक	छींकों के साथ पानीदार नासीय स्त्राव < सुबह, शाम, > चाय पीने के बाद	49	20
	छींके और उसके बाद नासीय स्त्राव, सुबह के समय, धूल में, मौसम में अचानक परिवर्तन हो जाने पर	22	9
	नज़ला – मुँह के सुखेपन के साथ पानीदार नासीय स्त्राव, < लेटे रहने पर, खुली हवा में	19	8
	रात को नाक का अवरोधन	15	5
	नथूनों के अवरोधन के साथ नाक से गाढ़ा	13	6
	अत्याधिक श्लेष्मा स्त्राव, < खुली हवा में, > मौसम में परिवर्तन होने पर, धूमपान से		
	नाक के सूखेपन के साथ पतले प्रवाही पानीदार स्त्राव के साथ नज़ला < सुबह के समय > नाक फूंकने से	9	3
	छींकों के साथ पतला पानीदार नासीय स्त्राव, < सुबह के समय, अचानक मौसम बदलने पर > खुली हवा में	8	2
	गाढ़ा सफेद नासीय स्त्राव < सुबह के समय	7	3
	रात को सूखापन महसूस करना	4	1
	सुबह के समय गाढ़ा सफेद पीला नासीय स्त्राव	1	1
	पानीदार नासीय स्त्राव < दिन के समय	1	1
गला	निगलने में कठिनाई के साथ अलिजिव्हा और गलतुण्डिका की लालिका तथा गले में दर्द < निगलने पर, > आराम करने पर	30	10
	गले में दुखन, < ठंडे पेय पदार्थों से, सुबह के समय	25	7
	गले में झुनझुनाहट की अनुभूति < ठंडा पानी पीने पर, गर्म पेय पदार्थ पीने पर	22	9

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
	गले में झनझनाहट और पीले रंग के कफोत्सारण के साथ खाँसी	18	10
	निकलने में कठिनाई के साथ बाँयी गलतुण्डिका की सूजन और दर्द के साथ गले में जलन, < सुबह के समय, >गर्म पेय पदार्थ लेने पर	3	1
	सूखी खाँसी के साथ गले मे जलन < सुबह के समय	1	1
अमाशय	मुँह के सूखेपन के साथ ठंडे पानी की प्यास में वृद्धि	8	2
	भूख में कमी	8	1
	खाँसने पर उल्टी	1	1
	अधिजठर भाग में चुभन वाला दर्द < सुबह, रात को, खाली पेट > खाना खा लेने पर	1	1
उदर	खट्टी डकारों के साथ उदर–वायु, < रात को	8	1
	नाभि के आस–पास उदर में विच्छेदक दर्द < खाने के बाद	6	3
मलाशय	बहुत जोर लगाने पर मल आना	8	4
	पतला मल, दिन में 2–3 बार	4	2
	उदर में घड़घड़ाहट के साथ पतला पानीदार मल < खाने के बाद	1	1
कंठ	आवाज भर्राई हुई, < बात करते हुए	21	9
श्वसन प्रणाली	अल्प, सफेद कफोत्सारण के साथ खाँसी < सुबह, रात को	16	9
	पीले कफोत्सारण के साथ खाँसी, < रात को	12	8
	सूखी खाँसी, < रात को सांस लेने में कठिनाई के साथ	3	3
	सफेद कफोत्सारण के साथ खाँसी < ठंडे मौसम में	3	1
	सूखी खाँसी, < दिन के समय	2	2
	सूखी खाँसी < सुबह शाम को	2	1
	सूखी खाँसी, गले में ख़राश के साथ < गर्म पेय पदार्थ पीने से >ठंडे पानी से	2	1
	सूखी खाँसी, < थकान से	1	1
	सफेद, पीले कफोत्सारण के साथ खाँसी, < रात को, आधी रात से पहले, लेट जाने पर	1	1
	सूखी खाँसी, < रात को, > पानी पीने पर	1	1
	सूखी खाँसी, < शाम को गले के सूखेपन के साथ	1	1
पीठ	लंबर भाग में चुभन वाला दर्द < चलने फिरने पर, > आराम करने पर	5	5

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
अग्रांग	पिण्डली की मांसपेशियों में दर्द < चलने फिरने पर > गर्मी से, दबाने से	8	3
	जांघों में चुभन वाला दर्द, < चलने पर > दबाने से	6	1
	पिण्डली की मांसपेशियों का भारीपन < लेटने पर, आराम करने पर	2	1
	हथेलियों और तलुओं में जलन, < चलने से	2	1
	टांगों में दर्द, < रात को, > आराम करने पर	1	1
	टांगों में चुभन वाला मन्द दर्द < चलने से	1	1
नींद	रात को नींद में व्यवधान	18	2
त्वचा	खुजली के साथ बाँहों, पीठ और टांगों पर फूटन जैसे दुखने वाले लाल दाने, इसके बाद रगड़ने पर जलन की अनुभूति, खून निकलना, < गर्मी के मौसम में	1	1
सार्वदेहिक	बेचैनी के साथ शरीर में दर्द	22	6
	कमजोरी	8	3
	आसानी से ठंड लग जाना	7	1
	पूरे शरीर में दर्द महसूस होना, < सुबह के समय > दबाने से	2	1
	उबकाई के साथ माथे में चुभन वाला दर्द और सामान्य कमजोरी, < सूर्य की रोशनी में, > आराम करने पर	1	1

16. होलारहेना एन्टीडाइसेनटेरीका

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

मस्तिष्क	विस्मृति	14	10
सिर	चक्कर आना	3	3
	– गिर पड़ने की अनुभूति के साथ < खड़े होने पर	1	1
	सिर में भारीपन के साथ	1	1
नाक	पानीदार नासीय स्त्राव, < सुबह के समय >गर्मी से	2	2
मुँह	दुखन के साथ जीभ के अग्र भाग पर अंछर < जीभ के स्पर्श से	9	7
	जीभ पर सफेद परत	8	4

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
	मुँह का कड़ुवा स्वाद	6	3
	नीचले होठ में दुखन के साथ जीभ के अग्र भाग पर अंछर	4	3
गला	गले में दर्द, < खाली निगलने पर	4	2
	गले की दुखन, < निगलने पर	1	1
अमाशय	भूख में कमी	12	12
	तेज प्यास	9	2
	उबकाई, < सुबह के समय	5	2
	उबकाई और उल्टी की प्रवृत्ति	4	1
	खट्टी डकारें, < खाने के बाद	4	1
	छाती में जलन के साथ अम्लता, < खाना खाने के बाद	2	1
	हृदय में जलन के साथ अम्लता, < खाना खाने के बाद	1	1
	अमाशय में दर्द के साथ उबकाई < सुबह के समय	1	1
उदर	अधिजठर भाग में उदरशूल < दबाने से	3	2
	नाभिय भाग के आस–पास कटु दर्द < खाना खाने के बाद	3	1
	नाभीय भाग में उदर का भारीपन महसूस करना	1	1
	खाना खाने के बाद डकारें	1	1
	पानीदार पतले मल के साथ पेट में उदर–शूल >लेटे रहने पर	1	1
	अधिजठर भाग में दर्द, श्लेष्मा के साथ अर्धठोस मल और खाना खाने के बाद मल त्याग की इच्छा	1	1
	बदबूदार डकारें	1	1
मलाशय	पतली, हरे या पीले रंग की बिना दर्द के मल के साथ अतिसार, दिन में 2–3 बार < चर्बीयुक्त भोजन के बाद	2	2
	श्लेष्मा मिश्रित पतला मल, दिन में 3–4 बार, < खाना खाने और पानी पीने के बाद	6	1
	मल कम, श्लेष्मा, बदबूदार	3	1
	मल पतला, झागदार, बदबूदार, सफेद श्लेष्मा	2	1
	मल दही जैसी गंध वाला, < सुबह के समय	1	1
	मल पतला, दिन में 2–3 बार, पीले रंग का, श्लेष्मा और कम खून मिश्रित	1	1
मूत्रमार्ग	पेशाब करने पर जलन	1	1
अग्रांग	जोड़ों में दर्द > खुली हवा में	3	3
	टांगों में चुभन वाला दर्द	1	1
	घुटने के जोड़ों में दर्द < शौच जाने के बाद	1	1

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
त्वचा	रगड़ने के बाद खून निकलने और खुजली के साथ चेहरे पर दुधिया रंग की फूटन	2	1
सार्वदेहिक	शरीर में दर्द, < थकावट के बाद	4	1

17. इक्थियोलम

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

सिर	सिर के अग्र भाग में हल्का दर्द	1	1
गला	गले में ख़राश	1	1
उदर	उदर में भारीपन के साथ डकारें	1	1
मलाशय	मल – कब्ज वाला, सख्त, बदबूदार	8	6
मूत्रमार्ग	मूत्रण बार–बार, < रात को	3	1
पुरुष जननांग	भ्रुक्र–जनन	1	1
पीठ	पीठ सख्त होने के साथ पीठ दर्द, < चलने फिरने पर, > आराम करने पर	1	1
नींद	रात को नींद में व्यवधान	2	2
	कब्ज	1	1
त्वचा	बिना खुजली के माथे पर बहुविध छोटे फूटन	7	5
	छालरोग	2	1
सार्वदेहिक	बेचैनी के साथ शरीर में दर्द	1	1

18. लैपिस एल्बस

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

नाक	गाढ़ा, सफेद नासीय स्त्राव, रात को नाक का अवरोधन	1	1
बाह्य गला	घेघा	7	5

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
मल	पानीदार मल	1	1
महिला जननांग	तिक्त प्रदर, < मासिक धर्म के बाद	1	1
श्वसन प्रणाली	सफेद कफोत्सारण के साथ खाँसी, < सुबह के समय	1	1
पीठ	ग्रीवा ग्रन्थियों का दृढ़ीकरण	75	59

19. मैग्नीशिया सल्फ्यूरिका

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

चक्कर	आँखों के सामने अंधेरा छा जाने के साथ चक्कर < खड़े होने पर	3	2
	चक्कर, < बिस्तर से उठने पर	3	2
सिर	माथे में भारीपन, > आँख बंद करने पर	9	9
नाक	नाक में श्लेष्मा के साथ छींके, नज़ला < खुली हवा में, > गर्मी में	28	24
चेहरा	गालों पर लाल पीपदार फूटन	7	6
अमाशय	भूख में वृद्धि	11	9
पीठ	पीठ में दर्द, < सीधी संस्थिति में (बैठे रहने या खड़े रहने पर), >सहारा देने पर	29	25
	पीठ में बहुत तेज दर्द, < बैठने पर	12	10
ज्वर	ठंड के साथ ज्वर, < दिन के समय में	9	8
पसीना	अत्याधिक पसीना, < थोड़ा सा परिश्रम करने पर	5	4
त्वचा	फूटन, सूखी, छोटी–छोटी, चुभने वाली गर्मी के साथ	12	2
	हाथों के अग्र भाग पर खुजली के साथ लाल रंग की पीपदार फूटन, > रगड़ने पर < रात को और बिस्तर की गर्मी में	3	1
	खुजली के साथ छालेदार फूटन > रगड़ने पर	3	1
	खुजली के साथ टांगों पर लाल रंग की फुंसीदार फूटन, < रात को	2	1
सार्वदेहिक	बढ़ी हुई प्यास, बढ़ी हुई भूख और बार–बार पेशाव जाने के साथ मुँह में सूखापन	5	1

20. मैंगीफेरा इंडिका

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
नाक	छींकों के साथ पतला पानीदार नासीय स्त्राव	2	1
मलाशय	खून वाले मल और पेचिश के साथ आमातिसार > मल त्याग के बाद	3	1
महिला जननांग	चमकदार लाल खून के साथ गर्भाशय शोथ < परिश्रम करने पर	2	1
श्वसन प्रणाली	गाढ़े सफेद कफोत्सारण के साथ खाँसी < सुबह के समय	1	1

21. माइगेल लेसियोडोरा

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 30

सिर	माथे में अक्सर कंपन वाला दर्द < शाम को	5	3
	कनपटी में अक्सर कंपन वाला दर्द < शाम को	2	1
नाक	अत्याधिक पतला पानीदार नासीय स्त्राव, > आराम करने पर	17	15
	छींकों के साथ अत्याधिक पानीदार नासीय स्त्राव < खुली हवा में, > आराम करने पर	3	2
चेहरा	चेहरे की मांसपेशियों का खिंचाव	2	2
मलाशय	श्लेष्मा से मिश्रित मल	5	4
	उदर भूल के साथ पतला मल	4	2
	सूखा, सख्त अत्प मल, कठिनाई के साथ मल आना	3	2
महिला जननांग	मासिक धर्म अनियमित, 2 महीने तक का विलंब	1	1
श्वसन प्रणाली	सूखी खाँसी, < रात को	3	2
पीठ	गर्दन की गुद्दी में चुभन वाला दर्द < आगे झुकने पर	2	1
अग्रांग	दोनों अग्रांगों पर जकड़न वाला दर्द > जोर से दबाने पर	9	7
त्वचा	तैलीय त्वचा	11	5

22. औसीमम कैनम

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : क्यू, 6, 30, 200

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
सिर	कनपटी के भाग में जकड़न वाला दर्द > दबाने से	5	5
	माथे में भारीपन < आगे झुकने से, < लेट जाने पर	2	1
	सिर दर्द, शिरोबिन्दु में दर्द < खड़े हाने पर > लेट जाने पर	1	1
नाक	एक बार में 3–4 छींकें	2	2
चेहरा	चेहरे पर खुजली, < सूर्य की गर्मी में	9	7
अमाशय	प्यास कम	1	1
उदर	पूरे उदर में भारीपन महसूस करना, > उदर–वायु निकल जाने पर	2	2
	उदर के भारीपन के साथ डकारें, < खाना खाने के बाद, > उदर–वायु निकल जाने पर	2	1
	उदर में चुभन वाला तेज दर्द	1	1
मूत्रमार्ग	मूत्रमार्ग में दर्द	1	1
	पेशाब करने के दौरान मूत्रमार्ग में जलन < गर्म पानी से धोने पर	3	1
	दाएँ गुरदे के भाग में चुभन वाला दर्द, तिर्यक ढंग से नीचे की तरफ फैलता है < चलने फिरने से	1	1
	बार–बार पेशाब जाना, पेशाब करने में कठिनाई के साथ अल्प पेशाब	1	1
मूत्रण	सफेद निक्षेप के साथ दुधिया रंग का पेशाब	1	1
श्वसन प्रणाली	भलेश्मल कफोत्सारण के साथ खाँसी < रात को और सुबह	1	1
	सूखी अनियमित खाँसी < रात को	1	1
पीठ	लम्बर भाग में दर्द, < चलने से	3	1
अग्रांग	गुल्फ संधि में सूजन और दर्द < चलने से	9	3

23. आक्सीट्रोपिस लम्बरटी

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 30

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
सिर	भारीपन के साथ माथे में मंद दर्द	3	1
	पूरे सिर में सिर फटने वाला तेज दर्द < सुबह, दिन के समय, शाम को, > दबाने से	2	1
	माथे में सिर फटने वाला तेज दर्द	1	1
कान	बिना स्त्राव के दाएँ कान में बहुत तेज दर्द < सर्दी में	1	1
मुँह	मुँह में कोई स्वाद नहीं, < प्रत्येक मासिक धर्म की अवधि और उसके दौरान	1	1
उदर	नाभीय भाग में आवेगी दर्द < मल त्याग से पहले	1	1
पुरुष जननांग	बेचैनी के साथ अण्डकोश में दर्द < ठंड से > आराम करने पर	4	2
पीठ	लम्बर भाग में चुभन वाला दर्द < चलने फिरने पर > आराम करने पर	3	2
अग्रांग	टांगों में दर्द, > लेटे रहने पर	3	2
	दाँयी कलाई के जोड़ पर तेज दर्द < हिलाने डुलाने पर > आराम करने पर	3	2
	सूजन के साथ घुटने के जोड़ों में चुभने वाला दर्द < हिलाने डुलाने पर	3	2
	सूजन के साथ घुटने और गुल्फ संधि में बहुत तेज दर्द < हिलाने डुलाने पर > आराम करने पर	2	1
नींद	रात को नींद में व्यवधान	2	1
सार्वदेहिक	बेचैनी	2	1

24. फाइलैन्थस निरूरी

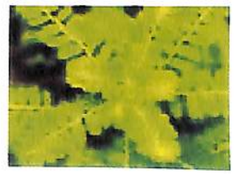

इस वर्ष कोई नया चिन्ह सत्यापित नहीं किया गया ।

25. पाइरस अमेरीकाना

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
सिर	शिरोवल्क पर लाल रंग के दर्द वाले फोड़े (खुजली के साथ)	8	2
	सिर के अग्रभाग में मंद चुभने वाला दर्द	3	2
	माथे में चुभन वाला दर्द < दबाने से	3	2
आँखें	उपशामक अश्रुधारा, तेज, दोनों आँखों में दर्द के साथ	5	3
मुँह	मुँह में सूखापन	2	2
	कड़वा स्वाद	2	1
गला	गले में दर्द महसूस करना और गलतुण्डिका में लालिमा, < ठंडे पानी से, > चाय पीने से	3	2
	गले में दुखन	2	2
अमाशय	छाती में जलन के साथ उबकाई	4	2
	भूख में कमी	2	1
उदर	नाभीय भाग में दर्द, < आगे झुकने पर, > उदरवायु निकलने पर	3	2
मल	मल सख्त, अल्प	3	2
	गुदाद्वार में खुजली	1	1
श्वसनी प्रणाली	जुकाम के साथ सूखी खाँसी < सुबह और रात को	5	3
	सूखी खाँसी < सुबह के समय	3	1
	गाढ़े, सफेद कफोत्सारण के साथ खाँसी	2	1

26. राउवोल्फीया सर्पेन्टीना

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30

मस्तिष्क	चिन्ता	2	1
चक्कर	आँखों के सामने अंधेरेपन के साथ चक्कर, < खड़े होने पर, चलने फिरने पर > बैठ जाने पर	5	5
सिर	सिर में दर्द, < रात को, सोने के बाद	18	14
	सिर में भारीपन	11	9

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
	सिरदर्द, < भारीपन की अनुभूति के साथ रात को, > लेटे रहने पर	5	3
	माथे में सिर फटने वाला दर्द < सुबह के समय > ठंडे पानी से, झुकने पर, हाथ से दबाने पर	5	3
कान	कान में घंटी बजने जैसी आवाज	2	1
नाक	नज़ला – छींकों के साथ पानीदार उपशामक स्त्राव, > चलने पर	38	30
उदर	निम्न उदर में अनियमित दर्द, < सुबह, > पेशाब करने के बाद	2	2
	खाना खाने के बाद, > उदर–वायु निकलने के बाद	3	2
	गैस बनना, < खाना खाने के बाद	1	1
पीठ	पीठ के निम्न भाग में बहुत तेज दर्द, < खड़े रहने पर, > दबाने पर, पीठ के बल लेटने पर	1	1
अग्रांग	घुटने के जोड़ों में दर्द, < बैठने और खड़े रहने पर	6	4
	टांगों में चुभन वाला दर्द, < चलने फिरने पर, > आराम करने पर	2	1
ज्वर	ठंड के साथ ज्वर और कमजोरी के साथ पीठ में दर्द > कुछ ओढ़ने से	12	9
त्वचा	जांघों पर फूटन, < रात को, खुजली के बाद जलन	10	1
	पूरे शरीर पर पित्ती (< शाम और रात को, > ठंडे पानी का अनुप्रयोग करने पर)	8	1
सार्वदेहिक	उनिन्दापन	3	2
	रात को बेचैनी	5	3

27. रिसिनस कौम्यूनिस

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : क्यू, 6, 30

सिर	सिर के बाँयी तरफ चुभन वाला दर्द > आराम करने पर, सोने के बाद	24	18
	पूरे सिर में भारीपन, < सुबह को	8	8
	सिर में चुभन वाला दर्द, कनपटी के दाँए भाग में दर्द < उल्टी करने पर	2	1

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
आँखें	आँखों में चुभन वाला दर्द, < सुबह के समय, > दबाने से	1	1
चेहरा	लाल, दर्द वाले, खुजली के साथ चेहरे पर मुहाँसे	9	5
मुँह	लार	14	9
	मुँह में दुखन, < खाते समय > ठंडे पानी के इस्तेमाल से	6	5
	मुँह का सुखापन	6	4
गला	गले में दर्द, > गर्म पेय पदार्थ पीने से	9	7
अमाशय	खाना खाते समय अधिजठर में दर्द	8	8
उदर	उदर में डकारें, < उदर खाली होने पर	4	2
मलाशय	अतिसार और उल्टी, < पानी पीने पर, खाना खाने पर – < बंद कमरे में, > खुली हवा में	6 2	3 1
त्वचा	खुजली के साथ छालेदार फूटन, < रगड़ने के बाद (< ठंडे पदार्थों का अनुप्रयोग करने पर)	4	3
सार्वदेहिक	बेचैनी	1	1

28. स्टेफाइलोकोसीनम

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 30, 200

चक्कर	सिर चकराना महसूस करना, < खड़े होने पर	3	2
	आँखों के सामने अंधेरा छा जाने के साथ चक्कर आना < अवस्थिति में अचानक परिवर्तन करने पर	3	2
सिर	सिरदर्द (उबकाई के साथ)	1	
	सिरदर्द, कनपटी भाग पर, < पढ़ते समय	2	1
	पश्चकपाल भाग में सिरदर्द, < सूर्य की रोशनी में	2	1
	बाल झड़ना	2	1
चेहरा	चेहरे पर दर्द वाले मुँहासे, दर्द > सोने के बाद	42	36
	चेहरे पर मुँहासे, दर्द वाले	8	4
	लाल चेहरा	4	2
	आँखों के नीचे काले गोल धब्बे	3	2
	चेहरे पर खुजली, < पसीना आने के बाद	2	1

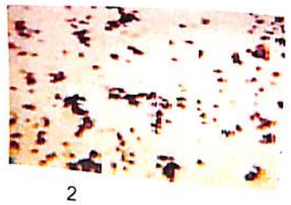

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
दांत	रात को दांत पीसना	2	2
गला	गले में दुखन, < सुबह के समय, खट्टा खाने के बाद	2	1
	बार–बार गलतुण्डिका होना	2	1
अमाशय	भूख बढ़ना, खाना खाने के थोड़ी देर बाद ही भूख महसूस होना	4	2
	उबकाई, < खाना खाने के बाद	2	1
उदर	उदर के भारीपन के साथ डकारें, < रात को, > उदर–वायु निकलने के बाद	8	5
	उदर में जकड़न वाला दर्द, नाभीय भाग में < मल त्याग से पहले	3	2
	पूरे उदर में भारीपन < खाना खाने के बाद	2	1
मलाशय	मल सूखा, सख्त, कठिनाई के साथ आना	7	5
मूत्राशय	रात को बिस्तर गीला कर देना	2	1
महिला जननांग	गाढ़ा, सफेद प्रदर, कोई खुजली नहीं	2	2
	मासिक धर्म समय से 5 दिन पहले	2	1
श्वसन प्रणाली	सूखी खाँसी, < शाम को, बात करने पर	5	3
पीठ	लंबर भाग में पीठ दर्द, < आगे और पीछे झुकने पर > अधिक देर तक खड़े रहने पर	4	2
पसीना	चेहरे पर पसीना, < परिश्रम करने पर	3	1
त्वचा	खुजली के बाद पानीदार स्त्राव और इसके बाद जलन, खुजली < रात को	1	1

29. ट्रिबुलस टेर्रेस्ट्रिस

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30

नाक	निरंतर उपशामक पानीदार स्त्राव	64	54
अमाशय	भूख में कमी	35	29
मल	मल पतला, पानीदार, सुबह के समय स्थिति बहुत बिगड़ी हुई, हरे रंग का मल	157	44
	मल–अल्प, उदर में भारीपन के साथ	6	4

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
प्रॉस्टेट ग्रन्थि	प्रॉस्टेट ग्रन्थि की अतिवृद्धि	1	1
मूत्रमार्ग	पेशाब करने में जलन, < सुबह के समय	284	174
	मूत्रण संबंधी जलन < सूर्य की गर्मी में,	3	1
	पेशाब करने से पहले और बाद में पेशाब में जलन और मूत्रकृच्छ	2	2
पीठ	पीठ में दर्द (लम्बर भाग में) < आगे झुकने पर	7	2
अग्रांग	बड़े जोड़ों, घुटनों और नितंब में दर्द > मालिस करने पर	12	10
त्वचा	जांघों में अंदर की तरफ खुजली, < रगड़ने के बाद जलन	5	3
	खुजली के साथ बगल में लाल पीपदार फूटन, < रात को, रगड़ने पर और खुली हवा में	2	1

30. टारेण्टुला क्यूबेन्सिस

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

मस्तिष्क	काम करने में अरूचि	12	8
सिर	सिर में चुभन वाला दर्द, < चलने से	15	13
	माथे में चुभन वाला दर्द, < पढ़ने से, शोर से > लेटे रहने से	2	1
	सिर के दाँयी तरफ चुभन वाला दर्द > रगड़ने से	1	1
नाक	छींक के साथ नज़ला < आगे झुकने पर, > लेटे रहने पर	13	8
चेहरा	दर्द और दुखन के साथ चेहरे पर मुँहासे < छूने के बाद	5	3
मुँह	होठों के अंदर की तरफ मुँह में, गालों पर और जीभ पर जलन वाले दर्द के साथ अंछर, < ब्रश करने पर और छूने से, > ठंडे पदार्थों का अनुप्रयोग करने पर	10	5
	जीभ की दुखन के साथ यदा कदा मुखपाक	2	1
उदर	श्रोणीय भाग में दाँयी तरफ दर्द < तेज दबाने से, > मल त्याग से	6	2
मलाशय	मल सख्त, कब्ज वाला	19	15
	मल	6	3
	असंतोषजनक	4	3
	मल अल्प	2	2
	गाँठदार, भेड की मींगन की तरह	2	1
मूत्रमार्ग	पेशाब करने में जलन	3	1
पीठ	लम्बर भाग में पीठ में दर्द < शाम को > आराम करने पर	3	1
अग्रांग	हाथों में भारीपन के साथ कंधों में दर्द, < चलने फिरने पर > आराम करने पर	2	1
	दाँयी टांग में दर्द, < चलने पर > दबाने पर	2	1
सार्वदेहिक	घबराहट और नब्ज तेज चलना	2	1

31. टीलिया अरेनिया

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 30, 200

मस्तिष्क	काम करने की अनिच्छा	11	9
	स्मरण भाक्ति – कमजोर	2	1
	पढ़ने के बाद याद रखने और याद करने में कठिनाई	1	1
सिर	पूरे सिर में चुभन वाला दर्द, > ठंडे पानी के अनुप्रयोग और दबाने से	14	10
	दर्द, माथे में भारीपन	9	3
	> दबाने से	6	2
	< सिर घुमाने से	1	1
	माथे में मन्द दर्द, < शाम को	3	2
	सिर के दाँयी तरफ चुभन वाला दर्द, > धीरे से रगड़ने से	1	1
नाक	छींक और खाँसी के साथ नज़ला	15	13
	नाक का अवरोधन, मुँह के जरिए सांस लेना पड़ता है	10	8
	नजला	2	1
मुँह	जीभ – सफेद पदार्थ जमा हुआ	1	1
गला	दोनों गलतुण्डिका फूले हुए < दाँयी तरफ	6	6
	दोनों गलतुण्डिका फूले हुए (निगलने में कठिनाई के साथ)	2	2

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
अमाशय	खट्टी उल्टी, < खाना खाने के बाद	1	1
मलाशय	मल अर्ध ठोस, अल्प, दिन में 2–3 बार	2	1
	मल सख्त, मल त्याग से पहले और मल त्याग के दौरान गुदाद्वार में जलन की अनुभूति	1	1
महिला जननांग	मल कठिनाई के साथ आना, दिन में दो बार	1	1
अग्रांग	गाढ़ा, सफेद, बदबूदार प्रदर < दिन में	1	1
ज्वर	कोहनी, कंधे के जोड़ों में चुभन वाला दर्द < हिलाने डुलाने से > आराम करने पर	2	1
	पिण्डली में जकड़न, < चलने फिरने से > आराम करने पर, दबाने से	2	1
	माथे में दर्द के साथ ज्वर, > दबाने से > शाम को	10	8
	बेचैनी के साथ	2	2
त्वचा	पूरे शरीर पर पित्ती, < गर्मी से, शाम को, मौसम में अचानक परिवर्तन हो जाने पर, > ठंडे पानी के अनुप्रयोग से	2	2
	दर्द के साथ शरीर के विभिन्न अंगों पर लाल पीपदार फूटन	21	15
	खुजली और जलन, रगड़ने के बाद पतले पानीदार तरल पदार्थ का रिसन < रात को, पसीने आने के बाद	3	2
	नहाने पर पित्तीदार ददोरे, खुजली के साथ	3	2
	खुजली के साथ जांघों के अंदर की तरफ पीपदार फूटन और उसके बाद जलन की अनुभूति, < रात को, < रगड़ने पर	2	1
सार्वदेहिक	शरीर पर गर्मी के ददोरे	1	1
	नींद की अनुभूति	1	1
		7	5

32. टर्मीनेलिया अर्जुना

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : क्यू, 6, 30

मस्तिष्क	अकेले रहने की इच्छा	10	6
सिर	बदन दर्द के साथ माथे और कनपटी में दर्द < पंखा करने से	18	16
	पश्चकपाल भाग में तेज दर्द > खुली हवा में	1	1

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
नाक	नज़ला पानीदार पतला छींक के साथ > सिरदर्द और बदनदर्द के साथ ठंडे कमरे में	211	211
मुँह	दर्द के साथ जीभ पर अंछर > मुँह में ठंडा पानी रखने पर	21	17
	मुँह का सूखापन	12	10
	मुँह का कड़वा स्वाद	5	2
	खट्टे स्वाद के साथ बढ़े हुए लार < रात को	1	1
गला	खखारने की प्रवृत्ति के साथ गले का छिला हुआ होना	1	1
उदर	उदर में मरोड़ वाला दर्द, > मल त्याग के बाद	8	6
श्वसन प्रणाली	सफेद अल्प कफोत्सारण के साथ खाँसी (चलने पर बेचैनी)	91	31
छाती	हृदय के भाग में दर्द, छाती में ऐंठन वाला दर्द	51	31
अग्रांग	चोट लगने के कारण दर्द, सूजन और त्वचा की इचीमोसिस	5	4
	दाँयी बाँह में दर्द, < बाँह ऊपर उठाने पर > दबाने से	1	1
सार्वदेहिक	चोट का कुप्रभाव	12	8
	कमजोरी	11	5
	चक्कर आने के साथ उच्च रक्तचाप, < चलने से	6	2

33. थिआ चिनेंसिस

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30, 200

चक्कर	सिर में चक्कर	10	6
सिर	माथे में दर्द, < ठंडे पानी से धोने पर	19	14
	यदा कदा माथे में चुभन वाला दर्द, < लेटे रहने पर	10	6
	मंद सिरदर्द	3	2
नाक	पानीदार स्त्राव और कंपन वाला सिरदर्द	21	16
	गाढ़े, पीले स्त्राव के साथ नज़ला < सुबह के समय	14	12
	नज़ला – सिरदर्द के साथ पतला पानीदार स्त्राव, सुबह के समय स्थिति अधिक खराब	113	73

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
मुँह	मुँह और गले में सूखापन	8	5
	बढ़ी हुई लार, < सुबह के समय	5	2
अमाशय	क्षुधा अभाव	24	19
	हाजमा कमजोर	8	5
	खट्टी डकारें, < खाना खाने के बाद	5	3
	> ठंडे पेय पदार्थ पीने से	255	113
उदर	अम्लता, खाना खाने के बाद स्थिति खराब, उबकाई के साथ	16	5
	उदर का भारीपन और भरा हुआ होना < शाम को	10	6
	उदर के नीचले भाग में चुभनवाला दर्द, < गर्म पेय पदार्थ पीने से	5	3
	अधिजठर भाग में अनियमित दर्द, < खाना खाने के बाद	5	3
	अधिजठर भाग में चुभन वाला दर्द, < खाना खाने के बाद, शाम को > लेटे रहने से	4	2
मलाशय	नरमी के साथ दाँये हाइपोकोंड्रियम भाग में दर्द < खाना खाने के बाद	2	1
महिला जननांग	कब्ज – मल त्याग की इच्छा नहीं	2	1
श्वसन प्रणाली	प्रदर, गाढ़ा और बदबूदार	8	4
छाती	श्लेष्मा कफोत्सारण के साथ खाँसी < लेटे रहने पर	2	2
अग्रांग	धड़कन तेज < परिश्रम से	2	2
	टांगों में चुभन वाला दर्द, < चलने पर	5	3
	लम्बर भाग में चुभन वाला दर्द < गर्मी के मौसम में	4	2
ज्वर	पिण्डली की मांसपेशियों में दर्द < दबाने से	3	2
	हाथों में चुभन वाला दर्द	2	1
सार्वदेहिक	क्षुधा अभाव के साथ ज्वर, < शाम को	9	5
	बदन दर्द के साथ ज्वर, < शाम को	2	1
	चिड़चिड़ेपन के साथ सामान्य कमजोरी बेचैनी < रात को	15	11
	बेचैनी के साथ बदन दर्द	14	12
	सामान्य कमजोरी और अस्वस्थता	5	3
		1	1

34. थेरीडियन

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 30

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
मस्तिष्क	झगड़ालू	1	1
चक्कर	आँखों के आगे अंधेरा छा जाने के साथ चक्कर आना < सिर इधर–उधर घुमाने से, बस में चलने से, लंबे समय तक खड़े रहने पर, बिस्तर से उठने पर	2	1
सिर	बातचीत करने में विमुखता के साथ पूरे सिर में कंपन वाला दर्द < दोपहर के बाद	19	15
	माथे में चुभन वाला दर्द, < शाम को	1	1
	बाल झड़ना	1	1
	माथे में कंपन वाला दर्द < खाँसते समय	1	1
आँखें	आँखों में दर्द के साथ अत्याधिक अश्रुधारा < सुबह के समय चुभन वाले दर्द और नीचली पलक में सूजन के साथ	32	21
दृष्टि	नजर का धुँधलापन, दूर की वस्तुएं देखने में कठिनाई	1	1
नाक	छींकों के साथ नाक से पतला पानीदार स्त्राव < गर्म पेय पदार्थ पीने से > नहाने के बाद, सुबह के समय स्थिति खराब	342	282
	सांस लेने में कठिनाई और नाक के अवरोधन के साथ अत्याधिक नासीय स्त्राव < सुबह के समय	4	4
मुँह	प्यास के साथ मुँह सूखा, < रात को	5	1
गला	गले में जकड़न वाला दर्द, < रात को	17	13
	छिलने जैसी अनुभूति के साथ गले में जलन, < खाना खाकर, रात को	3	2
अमाशय	भूख में कमी	1	1
	पैट्रोल की गंध के प्रति संवेदनशील, उससे उल्टी हो जाना	1	1
उदर	नाभीय भाग के आस–पास ऐंठन वाला दर्द, < खाना खाने के बाद	1	1
श्वसन प्रणाली	कफोत्सारण के साथ खाँसी > लेटे रहने पर	13	11
	सूखी खाँसी, बहुत तेज, अनियमित < ठंडे पानी से > सुबह के समय	2	2

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
	सूखी अनियमित खाँसी, > चाय पीने के बाद	1	1
	छाती में घरघराहट	1	1
	छाती में दर्द और भारीपन, < खाँसने पर	1	1
अग्रांग	एड़ियों में दरारें	1	1

35. टाइलोफोरा इंडिका

इस्तेमाल की गई पोटेंसी : 6, 30

नाक	गाढा, सफेद नासीय स्त्राव < सुबह के समय	5	3
	छींकों के साथ पतला नासीय स्त्राव	4	3
उदर	उदर के नीचले भाग में मन्द दर्द < मूत्रण के दौरान	17	15
	अधिजठर भाग में उदर में ऐंठन वाला दर्द, < खाना खाने के बाद, > दाँये निम्न उदर में दर्द के साथ उदर वायु निकल जाने पर	104	62
	हाइपोकोंड्रियम में चुभन वाला दर्द < खाना खाने के बाद, > खाली पेट	3	2
	डकारें, < खाना खाने के बाद	2	2
मलाशय	गुदाद्वार में खुजली, < धोने पर	19	19
	मलाशय में सूजन और दर्द, < मल त्याग के बाद, > ठंडे पानी का अनुप्रयोग करने पर	4	2
	कब्ज, सूखा सख्त मल, बांये निम्न उदर में दर्द के साथ	4	1
	गुदाद्वार में खुजली, < धोने पर	2	2
	मल असंतोशजनक, श्लेष्मा के साथ	1	1
	ऐनो में नासूर फिस्चुला	1	1
श्वसन प्रणाली	छाती में मंदाग्नि और दर्द, < प्रातःकाल	27	16
	मंदाग्नि के साथ छाती में जकड़न वाला दर्द	16	14
	दोनों फेफड़ों में घरघराहट	16	9
	श्वासहीनता, < मौसम में परिवर्तन और धूल से	13	7
	सफेद, अल्प, चिपकदार कफोत्सारण के साथ खाँसी, < धूल से, ठंड से, सुबह के समय	13	6
	निकालने में बहुत कठिनाई वाले पीले कफोत्सारण के साथ खाँसी < सुबह के समय	5	3
	गाढ़े, सफेद कफोत्सारण के साथ खाँसी < हंसते समय, रात को > लेटे रहने पर	2	2
	झागदार कफोत्सारण के साथ खाँसी, < प्रातःकाल	2	1

अंग	चिन्ह	औषधि रोगियों की संख्या	रोगमुक्त रोगियों की संख्या
छाती	छाती में जकड़न वाला दर्द < प्रातःकाल	15	11
	छाती में दर्द < खाँसने पर	8	4
	छाती में भारीपन महसूस करना	3	2
अग्रांग	हथेलियों और तलुओं में जलन < ठंडे पानी के अनुप्रयोग से	8	4
	घुटनों के जोड़ों में तेज दर्द, < सुबह के समय	3	2
सार्वदेहिक	ठंड लगने के प्रति अतिसंवेदनशील	16	9
	धड़कन तेज होना, < परिश्रम से	9	5

औषध प्रमाणन

3. औषध प्रमाणन

औषध प्रमाणन अथवा होम्योपैथिक रोगजनक परीक्षण (एच.पी.टी.) परिषद् का सबसे महत्वपूर्ण कार्यकलाप है । परिषद् ने एच.पी.टी. की एक योजना और डबल ब्लाइड तकनीक का एक संलेख तैयार किया है जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया गया है और एच.पी.टी. से चिन्ह प्राप्त करने की प्रक्रिया का मानकीकरण भी कर दिया गया है । परिषद् ने स्वदेशी मूल की औषधियों और उसके कार्यक्रम के अन्तर्गत आंशिक रूप से प्रमाणित की गई औषधियों का प्रमाणन करने पर जोर दिया है और अब तक ऐसी 71 औषधियों का प्रमाणन किया गया है तथा परिषद् के त्रैमासिक बुलेटिन में 52 औषधियां प्रकाशित की हैं ।

वर्ष 2005–06 के दौरान एक औषधि (कोड संख्या 82) का दीर्घ और चार औषधियों (कोड संख्या 81, 83, 84 और 85) का लघु प्रमाणन किया गया है जिनका विवरण निम्नलिखित है :

औषध प्रमाणन अनुसंधान इकाई, कोलकाता	:	एक औषध (कोड संख्या 82) का दीर्घ प्रमाणन तथा दो औषधियों (कोड संख्या 81 और 83) का लघु प्रमाणन पूरा कर लिया।
औषध प्रमाणन अनुसंधान,	:	दो औषधियों (कोड संख्या 81 और 83) का गाजियाबाद लघु प्रमाणन पूरा कर लिया।
औषध प्रमाणन अनुसंधान,	:	एक औषध (कोड संख्या 82) का दीर्घ प्रमाणन मिदनापुर तथा दो औषधियों (कोड संख्या 81 और 83) का लघु प्रमाणन पूरा कर लिया।
क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	:	क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.) के केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.) नोएडा में स्थानांतरण की प्रक्रिया के कारण प्रमाणन के लिए कोई औषधि नहीं ली जा सकी ।
होम्योपैथिक औषध अनुसंधान,	:	एक औषध (कोड संख्या 84) का लघु प्रमाणन लखनऊ पूरा कर लिया।

औषध मानकीकरण

4. औषध मानकीकरण

किसी औषधि का मानकीकरण उसकी गुणवत्ता, सुरक्षात्मकता और प्रभावोत्पादकता सुनिश्चित करता है । इसमें होम्योपैथिक औषधियों की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले और भेषजीय एकरूपता निर्धारित करने वाले कारक/उपाय शामिल होते हैं और इसमें स्रोत सामग्री की सही पहचान करना भी आवश्यक होता है । होम्योपैथिक औषधियों के मानक निर्धारित करने के लिए औषध संज्ञान संबंधी और भौतिक–रासायनिक अध्ययन किये जाते हैं ताकि औषधियों की विभिन्न गुणात्मक और मात्रात्मक विशेषताओं का अध्ययन किया जा सके।

इन औषध संज्ञान संबंधी अध्ययनों में वनस्पति–मूल की अपरिष्कृत औषधियों की बृहत् और सूक्ष्मदर्शनी विशेषताएं शामिल होती हैं । भौतिक– रासायनिक विश्लेषण से औषधि के भौतिक और रासायनिक घटक निर्धारित करने में सहायता मिलती है ।

इस समय परिषद् दो केन्द्रों, अर्थात औषध मानकीकरण इकाई, गाजियाबाद और औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद में औषध मानकीकरण का अध्ययन कर रही है ।

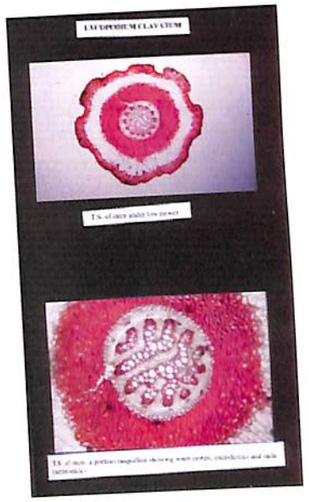

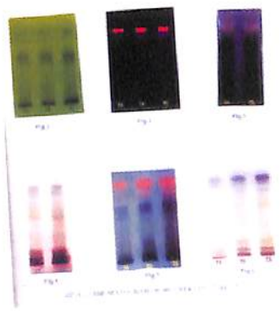

उपलब्धियां :

i. औषध मानकीकरण इकाई, गाजियाबाद

निम्नलिखित नौ औषधियों के औषध–संज्ञान संबंधी अध्ययन किये गये :

1. एसर नेगुंडो
2. एल्टरनेनथेरा सेसिलिस
3. लिओनुरस कार्डियाका
4. लाइकोपोडियम क्लेवेटम
5. मैलीसा ऑफिसिनैलिस
6. ओरीजा सैटाइवा
7. प्लमेरिया रूब्रा
8. सिम्फाईटम ऑफिसिनैलिस
9. बोरेहिवा डिफ्यूजा

ii. <u>औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद</u>

निम्नलिखित सात औषधियों के औषध–संज्ञान संबंधी अध्ययन किये गये :

1. एल्टरनेनथेरा सेसिलिस
2. बोरेहिवा डिफ्यूजा
3. कैरिका पपाया
4. यूकालीपटस कामालडलएलसिस
5. लाइकोपोडियम क्लेवेटम
6. पाइनस वालिचियाना
7. टर्मिनेलिया चेबुला

निम्नलिखित दस औषधियों के भौतिक–रायायनिक अध्ययन किये गये :

1. बैराइटा आयोडेटा
2. बोरेहिवा डिफ्यूजा
3. कैरिका पपाया
4. एकिनेशिया पर्प्यूरिया
5. यूकालीपटस कामालडलएलसिस
6. लाइकोपोडियम क्लेवेटम
7. ओरीजा सैटाइवा
8. पाइनस वालिचियाना
9. सिम्फाईटम ऑफिसिनैलिस
10. टर्मिनेलिया चेबुला

वाणिज्यिक नमूनों के साथ निम्नलिखित मदर टिंचरों का तुलनात्मक अध्ययन (भौतिक–रसायनिक पहलु) भी किया गया :

1. सिरेसस लोसीरेसस
2. नास्टरटियम ऑफिसिनैलिस

औषधीय पौधों का सर्वेक्षण और संग्रहण

5. औषधीय पौधों का सर्वेक्षण और संग्रहण

क. औषधीय पादपों की एक सर्वेक्षण और संग्रहण इकाई की स्थापना तमिलनाडु में ऊटी में 1979 में की गई थी जिसका कार्य होम्योपैथी में इस्तेमाल किए जाने वाले दक्षिणी भारत के स्वदेशी पादपों का सर्वेक्षण करना और अपरिष्कृत औषधीय नमूनों को एकत्र करना और उन संस्थानों और यूनिटों को भेजना है जहां औषध मानकीकरण अध्ययन किये जा रहे हैं । इकाई ने साहित्य के सर्वेक्षण, इन्डेक्स कार्डों को एकत्र और तैयार करने तथा उद्‌भिज–संग्रह का कार्य भी किया ।

इकाई की उपलब्धियां

1. चिकित्सीय पादपों के सर्वेक्षण व संग्रहण के लिए कोयम्बतूर और नीलगिरी जिले के 11 स्थानीय दौरे किए ।
2. 220 हर्बेरियम शीटें शामिल की गई और 317 नमूने संग्रहित किए गए ।
3. थोक में 26 कच्ची औषध संग्रहित की गई ।
4. औषध मानकीकरण इकाई, गाजियाबाद को 16 अपरिश्कृत औषध पादप सामग्रियों, औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद को 23 अपरिश्कृत औषध पादप सामग्रियों और मुख्यालय को एक कच्ची औषध पादक सामग्री की आपूर्ति की गई ।
5. दो अपरिश्कृत औषधियां अर्थात डिजीटेलिस परपूरयिा के पत्ते 20 कि.ग्रा. और सिनेरेरिया मेरिटिमा के पत्ते 12 कि.ग्रा. केरल होम्योपैथिक को.आपरेटिव फार्मेसी लिमिटेड, अलापूजहा, केरल को बेची गई ।
6. 20 हर्बेरियम भीटें सरकारी संग्रहालय ऊटी को बेची गई ।
7. कंदल मंध (टोडा गांव) पर लोक साहित्य संबंधी सूचना एकत्र की गई ।

वर्ष 2005–06 के दौरान औषध मानकीकरण अध्ययनों के लिए औषध प्रमाणन इकाइयों को निम्नलिखित पादपों की आपूर्ति की गई :

1. एसर नेगुंडो लिन्न
2. एग्रोपाइरोन रेपेंस लिन्न
3. एल्टरनेनथेरा सेसिलिस नीस
4. बोरेहिवा डिफ्यूजा लिन्न

5. कैरिका पपाया लिन्न
6. सिनकोना ऑफिसिनैलिस लिन्न
7. क्राइसेंथीमम पारथिनम एस.
8. एकिनेशिया पर्प्यूरिया लिन्न
9. आइरिस फ्लोरेनटिना लिन्न
10. मैट्रिकेरिया कैमोमिला लिन्न
11. मेलाल्यूका ल्यूकाडेन्ड्रान
12. मैलीसा ऑफिसिनैलिस लिन्न
13. ओरीजा सैटाइवा लिन्न
14. रियूम रापोनटीकम लिन्न
15. सेमीकारपस एनाकार्डियम लिन्न
16. स्ट्रेचनोस नक्स वोमिका लिन्न
17. सिम्फाईटम ऑफिसिनैल लिन्न
18. टर्मिनेलिया चेबुला रिटज.
19. ट्रिगोनेला फोइनम ग्रेइकम लिन्न
20. टाइलोफोरा इंडिका (बरम.ण्फ.) मेर.
21. लिओनुरस कार्डियाका लिन्न
22. मेलिलोटस ऑफिसिनैलिस लिन्न
23. सेम्परवाइवम टैक्टोरम लिन्न

ख. इकाई के पास औषधीय पादपों विशेश रूप से होम्योपैथी में इस्तेमाल किए जाने वाले विदेशज पादपों की खेती के लि
इमेराल्ड पोस्ट, जिला ऊटी, तमिलनाडु में एक अनुसंधान उद्यान है ।

होम्योपैथी में इस्तेमाल किए जाने वाले निम्नलिखित देशज औषधीय पादपों की खेती की गई:

1. अधाटोडा वासिका
2. कैसिया सोफेरा
3. सैंटिला एसाइटिका
4. सिटरस ओरनटियम
5. साइनोडोन डैक्टाइलोन
6. धतूरा मेटल
7. वेटिवेरिया जिजानिओडस

इनके अलावा, होम्योपैथी में इस्तेमाल किए जाने वाले निम्नलिखित विदेशज पादप भी अनुसंधान उद्यान में उगाए गए/उपलब्ध थे :

1. एचिलिया मेलिफालियम
2. अगावा अमेरिकाना
3. एग्रोपाइरोन रेपेंस
4. एंथोएग्जेनथम ओडोरेटम
5. एपियम ग्रैवियोलैन्स
6. आर्जेमोन ओक्रोल्यूका
7. ऐस्क्लेपियस क्यूरासाविका
8. एविना सैटाइवा
9. बोरेगो ऑफिसिनैलिस
10. बक्सस सेंपरविरेनस
11. कैलेण्डुला ऑफिसिनैलिस
12. केनोपोडियम एम्ब्रोसिओडस
13. क्राइसेंथीमम पारथिनम
14. सिनेरेरिया मेरिटिमा
15. कोचलेरिया आर्मोरेसिया
16. सिस्टिसस स्कोपैरियस
17. धतूरा आर्बोरिया
18. डिजिटैलिस पर्प्यूरिया
19. एकिनेशिया पर्प्यूरिया
20. इस्खोल्तसिया कैलीफोर्निया
21. एक्सोगोनियम पुरगा
22. फेगोपाइरम एस्कुलेनटम
23. फोनीकुलम बुल्गारे
24. फ्रागैरिया वेस्का
25. गैलिनसोगा परवीफ्लोरा
26. हेडेरा हेलिक्स
27. हाईपेरिकम परफोलेटम
28. लिओनुरस कार्डिआका
29. मेट्रिकेरिया कमोमिला
30. मेलीलोटस ऑफिसिनैलिस
31. मैलीसा ऑफिसिनैलिस
32. मैन्था पिपरेटा
33. ओइनोथरा वेनीस

34. ओरीगेनम मैजोराना
35. ओगीगेनम बुल्गारे
36. पोलीगोनम हाइड्रोपिपर
37. पोलीगोनम पंकटेटम
38. परूनस परसीका
39. पेट्रोसेलीनम क्रिसपम
40. रीयूम रहेपोन्टिकम
41. रोबीनिया सुडो–अकासिया
42. रोजा डैपैस्केना
43. रोजमेरीनस ऑफिसिनैलिस
44. रूटा चालेपेन्सिस
45. सैल्विया ऑफिसिनैलिस
46. सम्बूकस नाइग्रा
47. सैंटोलिना कामेइसापैरिसस
48. सेम्परवाइवम टैक्टोरम
49. सिलीबम मैरियानम
50. सोलेनम नाइग्रम
51. सिम्फाइटम ऑफिसिनैल
52. टरैक्सैकम ऑफिसिनैल
53. थाइमस बुल्गेरिस
54. ट्रिफोलियम प्रैटेन्स
55. ट्रिफोलियम रेपेन्स
56. ट्रेपैओलम मेजस
57. वर्बेस्कम थैपसस
58. वायोला ओडोरैटा

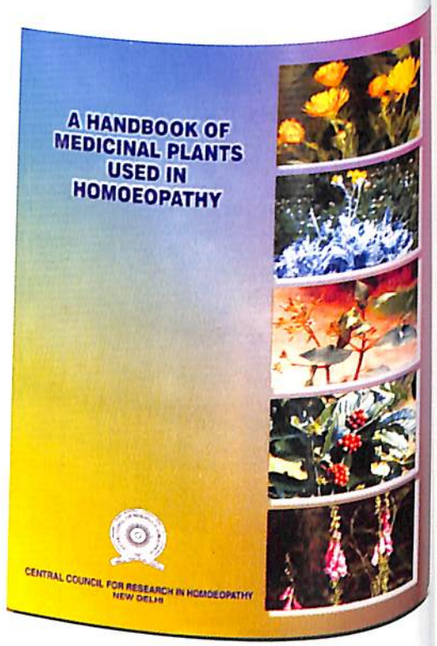

प्रकाशन

परिषद् ने वर्ष 2005–06 में "होम्योपैथी में इस्तेमाल किए जाने वाले औषधीय पादपों की हस्त–पुस्तिका" का प्रकाशन किया है । इस प्रकाशन का उद्देश्य, होम्योपैथी में इस्तेमाल किए जाने वाले 36 औषधीय पादपों के चित्रों के साथ–साथ उनकी वानस्पतिक नाम, पर्याय, परिवार, सामान्य नाम, विवरण, वितरण, इस्तेमाल किए जाने वाला भाग, इतिहास / प्राधिकार और होम्योपैथिक इस्तेमाल से संबंधित संक्षिप्त सूचना प्रदान करना है । यह पुस्तिका लोगों के एक ऐसे बड़े हिस्से के लिए उपयोगी है जो औषधि की होम्योपैथिक प्रणाली से जुड़े हुए हैं ।

सहयोगात्मक अनुसंधान अध्ययन

6. सहयोगात्मक अनुसंधान अध्ययन

(क) अंतराष्ट्रीय :

के.हो.अ.प. – केलीफोर्निया विश्वविद्यालय लॉस एंजल्स सहयोगात्मक अध्ययनः होम्योपैथिक चिकित्सकों और शिक्षकों द्वारा भारत में आदर्श एच.आई.वी. रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रम प्रदान करना ।

प्रस्तावना

परिषद् ने फरवरी, 2005 में केलीफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजल्स के साथ एक दो वर्षीय सहयोगात्मक अध्ययन आरंभ किया था । "होम्योपैथिक चिकित्सकों और शिक्षकों द्वारा भारत में आदर्श एच.आई.वी. रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रम प्रदान करना" शीर्षक वाले इस अध्ययन का वित्तपोषण विश्व एड्स फाउंडेशन करता है । यह अध्ययन प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देने की रूपात्मकता पर आधारित है जिसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

- एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्तियों में, शारीरिक और भावात्मक दोनों तरीके से एच.आई.वी. की रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन पर ध्यान केन्द्रित सांस्कृतिक रूप से सक्षम कार्यक्रमों के डिजाइन तैयार करने, उनका विकास करने और मूल्यांकन करने के लिए आई.एस.एम. चिकित्सकों और शिक्षकों में क्षमता तथा कौशल निर्माण करना ।
- ऐसे आदर्श कार्यक्रम का प्रदर्शन करना जिसे पूरे भारत में दोहराया जा सके ।

पद्धति

अध्ययन की पहुँच का विस्तार केवल होम्योपैथिक चिकित्सकों और शिक्षकों तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह विस्तार आयुर्वेदिक चिकित्सकों तक भी है । अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

- आई.एस.एम. और होम्योपैथिक स्वास्थ्य सुविधा प्रदायकों को, एच.आई.वी. संक्रमण वाले लोगों की देखभाल और एच. आई.वी. की रोकथाम में अन्य लोगों को शिक्षा देने की नई तकनीक प्रदान करना ।
- प्रदान की जाने वाली स्वास्थ्य संबंधी देखभाल सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए भ्रांतियों को दूर करना, गलतफहमियों में सुधार करना और डर को दूर करना ।
- रोकथाम संबंधी संदेश देने में विश्वास उत्पन्न करना ।

अध्ययन के एक भाग के रूप में एक आदर्श एच.आई.वी. प्रशिक्षण मोड्यूल तैयार किया जाएगा । प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करने की पद्धति के आधार पर 200 होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक चिकित्सकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा । प्रशिक्षण के तुरंत पहले और प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने के बाद प्रतिभागियों का मूल्यांकन किया जाएगा । तीसरा मूल्यांकन, प्रशिक्षण के तीन महीने बाद किया जाएगा और चौथा मूल्यांकन प्रशिक्षण के 6 महीने बाद किया जाएगा । एच.आई.वी./एड्स के प्रति ज्ञान और दृष्टिकोण, एच.आई.वी. के बारे में शिक्षा प्रदान करने और व्यावहारिक रूप से उसकी रोकथाम करने, उपलब्ध कराई जाने वाली सेवाओं/परामर्श के स्वरूप, आगे प्रशिक्षित किए जाने वाले प्रशिक्षणार्थियों की संख्या और प्रतिभागियों की विशिष्ट पृश्ठभूमि का मूल्यांकन करने के लिए, मूल्यांकन संबंधी साधनों का निर्माण तदनुसार किया जाता है ।

अध्ययन की स्थिति

चरण–*I* आयुष विभाग, परिवार एवं कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अनुमोदन के पश्चात, इस अध्ययन का चरण फरवरी 2005 में आरंभ किया गया था । चिकित्सकों और शिक्षकों का नामांकन करने के लिए दिल्ली और उसके आस-पास के होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक कालेजों की पहचान की गई थी । आदर्श हस्तक्षेप प्रशिक्षण कार्यक्रम, आवश्यकता के आधार पर तैयार किया गया है । प्रशिक्षण मोड्यूल एच.आई.वी./एड्स से संबंधित प्रमुख पहलुओं को कवर करता है । यह, एच.आई.वी. संक्रमण (एच.आई.वी. संक्रमण प्रक्रिया), एच.आई.वी. के संचरण, एच.आई.वी. की स्क्रीनिंग की रोकथाम और रोगनिदान, नैदानिक अभिव्यक्तियां, उपचार और चिन्ह नियंत्रण, एच.आई.वी. संक्रमण का प्रभाव (मनोवैज्ञानिक सामाजिक मुद्दे, कानूनी और नैतिकता के विचार, वित्तीय प्रभाव), व्यवहारजन्य परिवर्तन और प्रौढ़ शिक्षा आदि जैसे विषयों को कवर करता है । प्रतिभागियों को इस योग्य बनाने के लिए कि वे 15–20 होम्योपैथिक या आयुर्वेदिक चिकित्सकों या छात्रों का आगे प्रशिक्षण कार्यक्रम चला सकें, प्रौढ़ शिक्षा, पढ़ने और पढ़ाने में आने वाले अवरोध जैसे विषय भी शामिल किए गए हैं ।

अध्ययन के चरण–*II* में होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक चिकित्सकों और शिक्षकों का प्रशिक्षण है । जनवरी और फरवरी महीनों में, प्रशिक्षण–पूर्व मूल्यांकन और प्रशिक्षणोत्तर के बाद मूल्यांकन के साथ 20–25 के समूहों में आरंभिक प्रशिक्षणार्थियों के लिए चार एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं । अब तक 80 होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक चिकित्सक प्रशिक्षित किए जा चुके हैं । प्रतिभागियों के अगले मूल्यांकन, प्रशिक्षण के 3 महीने बाद और 6 महीने बाद किए जाएंगे ।

अध्ययन अभी चल रहा है ।

(ख) भारत में सहयोगात्मक अनुसंधान अध्ययन

परिषद् ने वर्ष 2005–06 के दौरान कुछ प्रतिष्ठित संस्थानों की अवसंरचना का लाभ उठाते हुए, अपनी प्रणाली प्रभावोत्पादकता का वैधीकरण करने के लिए उन संस्थानों के साथ निम्नलिखित गठबंधन/सहयोगात्मक अनुसंधान कार्यक्रम आरंभ किए हैं :

1. ए.एन.यू. फोटो ऱ्हेओग्राफी और मेडिकल एनालाइजर का इस्तेमाल करके शारीरिक मानदंडों होम्योपैथिक औषधियों का प्रभाव

हृदय गाति, श्वसन गति और रक्त प्रवाह की परिवर्तनशीलता के शारीरिक मानदंडों पर होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का वैधीकरण करने की दृष्टि से, भावा अणु अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित ए.एन.यू. फोटो ऱ्हेओग्राफी और मेडिकल एनालाइजर का इस्तेमाल करके एक वैज्ञानिक अध्ययन को, वैज्ञानिक सलाहकार समिति के उचित अनुमोदन से, अंतिम रूप दिया गया है । क्षेत्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, मुंबई में अध्ययन में भाग ले रहे डा. ए.एस. प्रांजपे, वरिष्ठ भौतिकशास्त्री, सॉलिड स्टेट फीजिक्स डिवीजन, बी.ए.आर.सी. और डा. जी.डी. जिन्दल, बायोमेडिकल इंस्ट्रुमेंटेशन अनुभाग, इलैक्ट्रानिक्स डिवीजन, बी.ए.आर.सी. के परामर्श से एक संलेख को भी अंतिम रूप दिया गया है । उपस्कर खरीद लिये गए हैं और अध्ययन फरवरी 2006 से आरंभ कर दिया गया है ।

2. प्रमस्तिष्कीय ज्वर के उपचार के लिए होम्योपैथिक औषधियों पर प्रभाव

प्रमस्तिष्कीय ज्वर द्वारा लाए गए परिवर्तनों को उलटने में, जानवरों के मॉडलों पर होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता का मूल्यांकन करने के लिए, डा. फखरूल इस्लाम, मेडिकल तत्व विज्ञान और विष विज्ञान विभाग, जामिया हमदर्द से एक प्रस्ताव प्राप्त हुआ था । यह संलेख, 8 और 9 अगस्त, 2005 को हुई परिषद् की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में रखा गया । समिति ने जामिया हमदर्द के सहयोग से अध्ययन आरंभ करने पर सहमति व्यक्त की । समझौता ज्ञापन पर

हस्ताक्षर किए गए और अध्ययन के लिए सहायता अनुदान प्रदान किया गया । अध्ययन आरंभ करने के लिए सभी प्रारंभिक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं ।

3. स्वस्थ वालंटियरों में सीरम मेलाटोनिन और कोर्टीजिल स्तरों पर अनिद्रा रोग में इस्तेमाल की जाने वाली होम्योपैथिक औषधियों का प्रभाव

"स्वस्थ वालंटियरों में सीरम मेलाटोनिन और कोर्टीजल स्तरों पर अनिद्रारोग में इस्तेमाल की जाने वाली होम्योपैथिक औषधियों का प्रभाव" विषय पर डा. बी. गीतांजली, प्रोफैसर, भेषज विज्ञान, जवाहर लाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (जे.आई.पी.एम.ई.आर.), पांडिचेरी से एक परियोजना का प्रस्ताव प्राप्त हुआ था । इसे दिनांक 8 और 9 अगस्त 2005 को हुई वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में रखा गया ।

समिति ने, जे.आई.पी.एम.ई.आर. और नैदानिक होम्योपैथिक अनुसंधान इकाई (टी), पांडिचेरी के वैज्ञानिकों के सहयोग से जे.आई.पी.एम.ई.आर. में अध्ययन आरंभ करने पर सहमति व्यक्त की । एक समझौता पर हस्ताक्षर कर दिए गए हैं । रिपोर्ट के अधीन वाली अवधि के दौरान अध्ययन आरंभ कर दिया गया था ।

4. प्रयोगात्मक जानवरों – एन्डोक्रीनोलोजीकल अध्ययनों में, निर्धारित की गई होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता और सुरक्षा मूल्यांकन

परिषद् ने, प्रो. उमा महेश्वरा रेड्डी, विभागाध्यक्ष, प्राणी विज्ञान विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले "प्रयोगात्मक जानवरों – एन्डोक्रीनोलोजीकल अध्ययनों में, निर्धारित की गई होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता और सुरक्षा मूल्यांकन" विषय पर एक अध्ययन को अंतिम रूप दे दिया है । परिषद् की वैज्ञानिक सलाहकार समिति द्वारा सहमति व्यक्त की गई है । परियोजना अध्ययन आरंभ कर दिया गया है । इस परियोजना में हैदराबाद के औषध मानकीकरण अध्ययन (होम्यो.) के वैज्ञानिक भी शामिल हैं ।

5. केन्द्रीय तंत्रिका प्रणाली और उनके सुरक्षा मूल्यांकन पर विभिन्न पोटेंसियों में होम्योपैथिक औषधियों का प्रभाव

परिषद् ने, हैदराबाद के औषध मानकीकरण अध्ययन (होम्यो.) के वैज्ञानिकों के सहयोग से, प्रो. उमा महेश्वरा रेड्डी, विभागाध्यक्ष, प्राणी विज्ञान विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा किए जाने वाले "केन्द्रीय तंत्रिका प्रणाली और उनके सुरक्षा मूल्यांकन पर विभिन्न पोटेंसियों (3 एक्स., 6 एक्स., 12 एक्स. और 30 सी.) में होम्योपैथिक औषधियों का प्रभाव" विषय पर एक अध्ययन को भी अंतिम रूप दे दिया है ।

6. होम्योपैथिक मौलिक अनुसंधान के क्षेत्र में निदान संबंधी उपकरणों के रूप में जी.डी. वी. कैमरा की उपयोगिता का अन्वेशण – एक आरंभिक अध्ययन

होम्योपैथिक औषधियों के क्रिया तंत्र को समझने के लिए, गैस डिफ्यूजन विजुअलाइजेशन (जी.डी.वी.) का इस्तेमाल करके मौलिक अनुसंधान करने की संभावना तलाशी जा रही है । शरीर विज्ञान और संबद्ध विज्ञान रक्षा संस्थान (डी.आई.पी.ए.एस.), नई दिल्ली के वैज्ञानिक "ई" डा. अशोक सल्हन ने अध्ययन में शामिल होने के लिए अपनी सहमति दे दी है । डी.आई.पी.ए.एस. के साथ सहयोगात्मक कार्य करने के प्रस्ताव का परिषद् की वैज्ञानिक सलाहकार समिति द्वारा अनुमोदन कर दिया गया है । अध्ययन के वर्ष 2006–07 में आरंभ कर दिए जाने की संभावना है ।

प्रकारबाह्य अनुसंधान अध्ययन

7. प्रकारबाह्य अनुसंधान योजना अध्ययन

दिसंबर, 2005 तक प्राकारबाह्य अनुसंधान (ई.एम.आर.) योजना का कार्यान्वयन और निगरानी, आयुष विभाग द्वारा की जाती थी । जनवरी, 2006 से ई.एम.आर. योजना को संभालने का निर्देश के.हो.अ.प. को दिया गया । आयुष विभाग द्वारा दैनिक राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित विज्ञापनों के माध्यम से नए अनुसंधान प्रस्ताव आमंत्रित किए गए । विभाग द्वारा कुछ पुराने प्रस्ताव भी परिषद् को भेजे गए । प्राप्त हुए कुल 66 प्रस्तावों की जांच, आयुष विभाग द्वारा (होम्योपैथी के लिए) गठित परियोजना मूल्यांकन समिति (पी.ई.सी.) द्वारा दिनांक 8 मार्च, 2006 को हुई अपनी बैठक में की गई ।

यथा समय, निगरानी के लिए ई.एम.आर. योजना के अंतर्गत आयुष विभाग द्वारा वित्तपोषित पुराने चल रहे अनुसंधान अध्ययनों की फाइलें भी परिषद् ने प्राप्त की । परिषद् ने, उपयोगिता प्रमाणपत्र और प्रगति रिपोर्टें प्रस्तुत करने के लिए विभाग के निर्देशों का अनुपालन करने हेतु प्रमुख अनुसंधाताओं के साथ किए गए पत्रव्यवहार और इन फाइलों की जांच की है ।

किए गए कार्य का संक्षिप्त सार निम्नलिखित सारणी में दिया गया है :

परिषद् द्वारा प्राप्त कुल प्रस्तावों की संख्या	अनुवर्ती कार्रवाई दिनांक 08.03.06 को हुई पहली बैठक में परियोजना मूल्यांकन समिति द्वारा अगली बैठक द्वारा विचार किए सिफारिश में ले जाए गए किए गए जाने वाले प्रस्ताव	परियोजना मूल्यांकन समिति	परियोजना मूल्यांकन समिति की
प्रत्यापन के लिए नए	12	8	5	4
नवीकरण	06	4	3	2
ई.एम.आर. अनुदान नए	48	27	7	21
कुल	66	39	15	27

परिषद् ने, परिषद् द्वारा आगे बढ़ाए गए नामांकित, आयुष विभाग द्वारा पहले ही वित्तपोषित, चल रहे 23 अध्ययनों की निगरानी भी आरंभ कर दी है ।

CHAPTER
EYE
AND
VISION
CHAPTER
EAR
AND
HEARING
CHAPTER
MOUTH
CHAPTER
THROAT
CHAPTER
TEETH
MIND
HOMOEOPATHY

प्रकाशन

8. **प्रकाशन (परिषद् के प्रलेखन अनुभाग द्वारा)**

(क) सी.सी.आर.एच. क्वार्टरली बुलेटिन

- सी.सी.आर.एच. क्वार्टरली बुलेटिन खण्ड 27, संख्या 2, 2005 जिसमें निम्नलिखित लेख थेः
  - होम्यो. सामग्रियों तथा पोटेंसियों की वैज्ञानिक जांच–परख ।
  - सिक्कल सैल एनिमिया में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता का मूल्यांकन ।
  - पाइरस अमेरीकना (के.हो.अ.प. द्वारा किया गया प्रमाणन का आंकड़ा संकलन) ।
  - बेसीलिनम (नैदानिक रूप से सत्यापित चिन्ह) ।
  - क्रिसान्थेमम सिनेरेरियाफोलियम ट्रेव. का भौतिक रसायन मानकीकरण ।
  - हेपाटाइटिस – बी का एक मामला ।
  - वैब सूचना – अस्थमा और होम्योपैथी : इंटरनैट पर खोज ।

- सी.सी.आर.एच. क्वार्टरली बुलेटिन खण्ड 27, संख्या 3, 2005 जिसमें निम्नलिखित लेख थेः
  - पोटेंसीयुक्त नक्स वोमिका के मादक जीवाणुपोश पदार्थ के परिवर्तित घोल की बनावट इसके मादक विरोधी प्रभाव का आधार है ।
  - अमीबा पेचिस पर औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान ।
  - कृत्रिम विश्लेशण द्वारा होम्योपैथी का अस्तित्व समाप्त नहीं किया जाएगा ।
  - टैरंटुला हिस्पानिका – एक पुनर्प्रमाणन ।
  - ईगल मार्मिलोस (नैदानिक रूप से सत्यापित चिन्ह) ।
  - एल्पीनिया गैलंगा एस.डब्ल्यू. इन का भेशजीय और भौतिक–रसायन मूल्यांकन ।
  - होम्योपैथिक उपचार के अंतर्गत एक एच.आई.वी. संक्रमित वाहक ।
  - वैब सूचना – रजोनिवृत्ति और होम्योपैथी : इंटरनैट पर खोज ।

- सी.सी.आर.एच. क्वार्टरली बुलेटिन खण्ड 27, संख्या 4, 2005 जिसमें निम्नलिखित लेख थेः
  - एक होम्योपैथिक औषधि आर्निका मोन्टाना द्वारा माइक में पराध्वनिक ध्वनि तरंगों और उनके प्रत्यावर्तनों में बार–बार अनावृत्ति के कोशिका विज्ञान संबंधी प्रभाव ।
  - मधुमेह मेलीटस पर औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान ।
  - ईगल फोलिया (नैदानिक रूप से सत्यापित चिन्ह) ।
  - औषधि की होम्योपैथिक प्रणाली में उपयोगी आर्थिक रूप से व्यवहार्य चिकित्सीय पादक ।
  - बहुविध फाइबरायड गर्भाशय का एक मामला ।
  - वैब सूचना – खंडित मनस्कता – एक मुख्य मानसिक समस्या और इंटरनैट पर होम्योपैथी खोज ।

(ख) सी.सी.आर.एच. समाचार संख्या 34, 35, 36

(ग) पुस्तकों का प्रकाशनः

मूल्य रहितः

- अनुसंधान पद्धति की कार्यवाही

समूल्य

- होम्योपैथी में इस्तेमाल किए जाने वाले चिकित्सीय पादपों की एक हस्त–पुस्तिका

(घ) हस्त पुस्तिकाओं का मुद्रणः

होम्योपैथी के विभिन्न पहलुओं पर निम्नलिखत 15 हस्त–पुस्तिकाओं का मुद्रण आम लोगों की जानकारी के लिए किया गया :

- बच्चों में एलर्जिक विकृतियां और होम्योपैथी ।
- बच्चों में आम बीमारियों के लिए होम्योपैथी ।
- हृदयाघात, आप इसे रोक सकते हैं ।
- तनाव का होम्योपैथिक नियंत्रण ।
- उच्चरक्तचाप : मौन हत्यारा ।
- होम्योपैथी : माता और बच्चे की देखभाल ।
- होम्योपैथी : मलेरिया की रोकथाम और उपचार ।
- होम्योपैथी : बार–बार पूछे जाने वाले प्रश्न ।
- ड्रग के कुप्रयोग में होम्योपैथी ।
- चोट लगने में होम्योपैथी ।
- लौह की कमी रक्तक्षीणता में होम्योपैथी ।
- होम्योपैथी के बारे में जानें ।
- डेंगू ।
- जपानी मस्तिष्क–शोथ ।
- मधुमेह मेलीटिस ।

9. प्रलेखन और पुस्तकालय

- सूचना सेवाएं
  - रेप्रोग्राफिक सेवा प्रदान करना ।
  - संदर्भ सेवा प्रदान करना ।
  - पाठकों को उनकी आवश्यकता की सूचना समय से प्राप्त करने में उनकी सहायता करना ।
- संदर्भिका सूचियां
  - करैन्ट हेल्थ लिटरेचर एवैयरनैस सर्विस (सी.एच.एल.ए.एस.) ।
- पुस्तकें

अभिगणित शीर्षकों की संख्या	
– विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रकाशन	343
– मानर्थ प्राप्त पुस्तकों की संख्या	118
– अधिप्राप्त की गई पुस्तकों की संख्या	95
दिनांक 31.03.2006 को यथास्थिति कुल पुस्तकें	130

- जर्नल — 8114

पूर्वक्रीत जर्नलों की संख्या	
– विदेशी	31
– भारतीय	05
– विश्व स्वास्थ्य संगठन की पत्रिकाएं	20
	06

विविध गतिविधियाँ

समितियों की बैठकें

दिनांक	बैठक	स्थान
3 जून, 2005	के.हो.अ.प. नई दिल्ली की स्थायी वित्त समिति की 41वीं बैठक	आयुष विभाग, नई दिल्ली
3 अगस्त, 2005	के.हो.अ.प. की नैतिकता समिति की पहली बैठक	परिषद् का मुख्यालय, नई दिल्ली
8–9 अगस्त, 2005	के.हो.अ.प. की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 40वीं बैठक	परिषद् का मुख्यालय, नई दिल्ली
7 सितंबर, 2005	के.हो.अ.प. की नैतिकता समिति की दूसरी बैठक	परिषद् का मुख्यालय, नई दिल्ली
13 सितंबर, 2005	के.हो.अ.प. नई दिल्ली की स्थायी वित्त समिति की 42वीं बैठक	आयुष विभाग, नई दिल्ली
22 सितंबर, 2005	के.हो.अ.प. के भाासी निकाय की 15वीं बैठक	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, निर्माण भवन, नई दिल्ली
1 फरवरी, 2006	के.हो.अ.प. की नैतिकता समिति की तीसरी बैठक	परिषद् का मुख्यालय, नई दिल्ली
15 फरवरी, 2006	के.हो.अ.प. की नैतिकता समिति की चौथी बैठक	परिषद् का मुख्यालय, नई दिल्ली

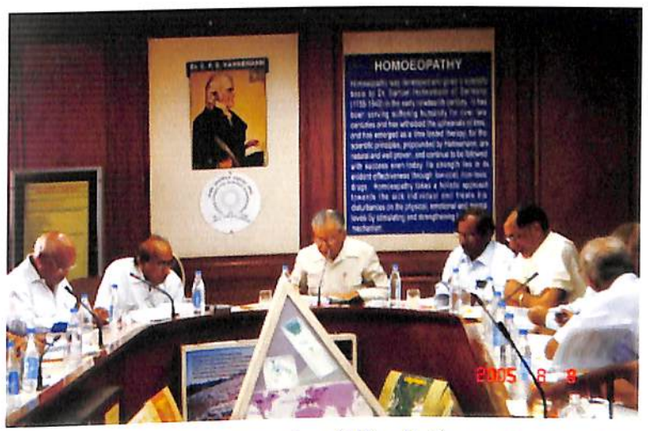

परिषद् की वैज्ञानिक परामर्श समिति की बैठक का एक दृश्य

कार्यशालाएं / संगोष्ठियां / अभिमुखीकरण कार्यक्रम

दिनांक	कार्यशालाएं / संगोष्ठियां / अभिमुखीकरण	आयोजनकर्ता
12–14 सितंबर, 2005	अवसादक घटना और खंडित मनस्कता पर अभिमुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली
15–17 सितंबर, 2005	सुसाध्य प्रॉस्टेट अतिवृद्धि और पुराने श्वसनी शोथ पर अभिमुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली
19–21 सितंबर, 2005	पुराने साइनुसाइटिस और रजोनिवृत्ति संबंधी कश्ट पर अभिमुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली
21–23 सितंबर, 2005	एच.आई.वी. / एड्स पर अभिमुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली
17–21 अक्तूबर, 2005	प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए अभिमुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली
22–24 फरवरी, 2006	"नैदानिक परीक्षणों – पद्धति और परिणाम मूल्यांकन" पर कार्यशाला (विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रायोजित)	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली

डॉ. बी. आनन्द सी. सहायक चिकित्सा अधीक्षक, राजीव गांधी कैंसर संस्थान और अनुसंधान केन्द्र, रोहिणी, नई दिल्ली, प्रयोगशाला तकनीशियन के अनुकूलन परिक्षण सत्र में व्याख्यान करते हुए

डॉ. (श्रीमती) नीति खंगर, वरिष्ठ विशेषज्ञ सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली, प्रयोगशाला तकनीशियन के अनुकूलन परिक्षण सत्र में व्याख्यान करते हुए

स्वास्थ्य मेले / प्रदर्शनियां

परिशद् ने वर्ष 2005–06 में निम्नलिखित स्वास्थ्य मेलों / प्रदर्शनियों में भाग लिया :

दिनांक	स्वास्थ्य मेले / प्रदर्शनियां	आयोजनकर्ता
31 मार्च–2 अप्रैल, 2005	राजकीय इंटर कालेज ग्राउंड राय बरेली (उ.प्र.) में परिवार कल्याण एवं स्वास्थ्य मेला	हो.औ.अनु. संस्थान, लखनऊ
7 अप्रैल, 2005	तिलक नगर, नई दिल्ली में संपूर्ण स्वास्थ्य परेड	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली
2–11 सितंबर, 2005	सैंट्रल कलकत्ता साइंस एण्ड कल्चर ऑर्गनाइजेशन फॉर यूथ द्वारा कोलकात्ता में आयोजित 9वीं राश्ट्रीय एक्सपो, 2005	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली
23–27 सितंबर, 2005	प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आरोग्य, 2005	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली
21–30 अक्तूबर, 2005	शिवाजी प्लेस, राजा गार्डन, नई दिल्ली में एम.टी.एन.एल. संपूर्ण स्वास्थ्य मेला	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली
11–13 नवंबर, 2005	पीपल्स प्लाजा, नेकलैस रोड, हैदराबाद में क्षेत्रीय आरोग्य, 2005	औ.मा.इ. (हो.), हैदराबाद
14–16 नवंबर, 2005	अरकोट नगर, वैल्लोर जिला, तमिलनाडु में मल्टीमीडिया अभियान	नै.अ.इ (होम्यो.), चैन्नई

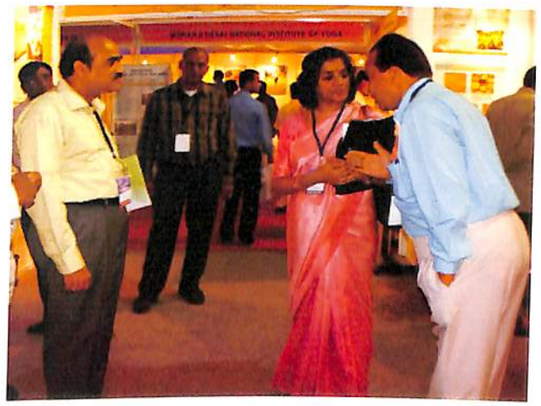

श्रीमति उमा पिल्लै, सचिव आयुष विभाग, हैदराबाद में आयोजित आरोग्य 2005 में परिषद् के पण्डाल का अवलोकन करते हुए।

14–27 नवंबर, 2005	प्रगति मैदान के भारत अंतराष्ट्रीय व्यापार मेला, 2005, नई दिल्ली	के.हो.अ.प. मुख्यालय, नई दिल्ली
24–27 दिसंबर, 2005	चन्द्रशेखर नायर स्टेडियम, तिरूअनन्तपुरम में क्षेत्रीय आरोग्य, 2005	के.अ.सं. (होम्यो.), कोट्टायम
28–31 दिसंबर, 2005	थंगा मलीगई, कल्याणमंडपन, टोंडाइपर पेट, चैन्नई में मल्टीमीडिया अभियान	नै.अ.इ. (होम्यो.), चैन्नई
5–8 जनवरी, 2006	डिफैंस ग्राउन्ड, एयर पोर्ट के सामने, चैन्नई में मल्टीमीडिया अभियान	नै.अ.इ. (होम्यो.), चैन्नई
12–16 जनवरी, 2006	मार्डन कालेज ग्राउंड, वाशी, नई मुंबई में संजीवनी, 2006	क्षे.अ.सं. (होम्यो.), मुंबई
11–13 फरवरी, 2006	श्री रामाकृश्णा मैट्रीकूलेशन हायर सैकेण्डरी, स्कूल, अरकोट तमिनलाडु में मल्टीमीडिया अभियान	नै.अ.इ. (होम्यो.), चैन्नई
26–28 फरवरी, 2006	चैन्नई व्यापार केन्द्र, चैन्नई में क्षेत्रीय आरोग्य, 2006	नै.अ.इ. (होम्यो.), चैन्नई
27 फरवरी, 2006	थिंडीवनम, तमिलनाडु में स्वास्थ्य मेला	नै.अ.इ. (होम्यो.), पांडिचेरी
4–6 मार्च, 2006	चेगापेट, चैन्नई में स्वास्थ्य मेला	नै.अ.इ. (होम्यो.), चैन्नई

डॉ. ए. रामाडोस माननीय स्वास्थ्य मंत्री होम्योपैथी में इस्तेमाल किए जाने वाले औषधीय पादपों की एक पुस्तिका खण्ड–1, का विमोचन करते हुए

के.हो.अ.प. के अधीनस्थ संस्थानों/इकाईयों की अनुसूची

1. केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो), सचिवोथामापुरम, कोट्टायम (केरला)–686 532. दूरभाष : 0481–2432238

2. होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), 2, नबीउल्ला रोड, सिटी रेलवे स्टेशन के निकट, (पुराना राजकीय मोहन होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज) लखनऊ (उ.प्र.)–226 010. दूरभाष : 0522–2301030

3. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), सी.एम.पी. होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, इरला नाका, विले पार्ले, मुम्बई (महाराष्ट्र)– 400056 दूरभाष : 022–26238565

4(क) क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो), सी.सी.आर.एच बिल्डिंग, मारचीकोटे लेन, लाबानिखिया चाक, पुरी (उड़ीसा)–752 001. दूरभाष : 06752–223371

4(ख) क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.) की विस्तार इकाई, डा. अभीन चन्द्रा होम्योपैथिक मेडिकल कालेज एवं अस्पताल, यूनिट–।।।, खारवेला नगर, भूवनेश्वर (उड़ीसा)–751 001 दूरभाष : 09437281072

5. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), नेहरू होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, बी–ब्लाक, डिफैंस कालोनी, नई दिल्ली–110 024. दूरभाष : 011–24330543

6. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), 13/210–ए, क्लब रोड, गुडिवाडा (आन्ध्र प्रदेश)–521 301. दूरभाष : 08674–243491

7. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), मकान नं. 2, टाइप–डी, लेन–1 सेक्टर–1, बी.सी.एस. के नीचे, न्यू शिमला–171 009. दूरभाष : 0177–2670450

8. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), खालीपाड़ा, ओडल बाकाड़ा, गुवाहाटी (असम)–781 019. दूरभाष : 0361–2476202

9. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), पैलेस कंपाउण्ड के सामने, इनडोर स्टेडियम, निकट श्री गोबिंदाजी मंदिर, इम्फाल (मणिपुर)–795 001. दूरभाष : 0385–2227417

10. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.) डा. मदन प्रताप खुटेटा राजस्थान होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, स्टेशन रोड, जयपुर (राजस्थान)–302006 दूरभाष : 0141–231763

11. नैदानिक अनुसंधान व महामारी सैल, 1, नीम रोज, जिन्सी चौराहा, हांगीराबाद, भोपाल (म.प्र.)–462 008 दूरभाष 0755–2578179

12. नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), एम.बी. 31, मिडल पॉइन्ट, महात्मा गांधी रोड, पोर्ट ब्लेयर (अण्डमान और निकोबार)–744 101. दूरभाष : 03192–233073

13. नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), हिन्दुस्तान सॉ मिल्स बिल्डिंग, बेलूर रोड, मिशन कम्पाउंड उडुपी (कर्नाटक)–576 101. दूरभाष : 0820–2521048

14. नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), बिल्डिंग नं. 663/10, कृष्णा कालोनी, गुडगांव (हरियाणा)–122 001 दूरभाष : 0124–2315438

15. नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), डोर नं. 6–1–61 ए, के.टी. रोड, तिरूपति (आ.प्र.)–517 507 दूरभाष : 0877–2230466

16. नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), नं.103/4, कलाक्षेत्र कालोनी, तीसवीं क्रास स्ट्रीट, (आर.बी.आई. स्टाफ क्वार्टरों के सामने), चैन्नई (तमिलनाडू)–600 090 दूरभाष : 044–24911821

17. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), क्वार्टर नं. 39, टाइप III, विवेक विहार, डाकघर आर.के. मिशन, जिला पपमपुर, ईटानगर (आन्ध्र प्रदेश)–791 113. दूरभाष : 0360–2245785

18. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), नेताजी सुभाष रोड, नेताजी कन्या स्कूल के निकट, सुभाषपल्ली, सिलीगुड़ी (पि चम बंगाल)–734 401. दूरभाष : 0353–2522202

19. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी) पहला क्रास, मंगलाक्ष्मी नगर, (नये बस स्टैंड के पीछे), पांडिचेरी–605 013. दूरभाष : 0413–2206879

20. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), वेंघुली रिपब्लिक रोड, ऐजवाल (मिजोरम)–796 001.
दूरभाष : 03832–2313839

21. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), बी–1073, हनुमान स्ट्रीट, भड़ौच (गुजरात)–392 001
दूरभाष : 02642–268603

22. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), मकान नं. 339, डंकन प्वांइट (डंकन तेनाली), पो.ओ. दीमापुर, मेन पोस्ट आफिस, दीमापुर (नागालैंड)–797 112.
दूरभाष : 03862–233802

23. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), ठाकुरपल्ली रोड़, केर चौउमुहानी, कृष्णानगर, डाकघर अगरतला, त्रिपुरा (पश्चिम)–799 001.
दूरभाष : 0381–2309877

24. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), सैम्फेल होटल के सामने निकट संग्राम भवन, डेवलमेंट क्षेत्र गंगटोक (सिक्किम)–737 101.
दूरभाष : 03592–220250

25. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), आरसंडे, बोरिया रोड, डाकघर बोरिया, रांची (झारखंड)–835 240.
दूरभाष : 0651–2450986

26. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), मार्फत श्री पी. बोस, टैम्पल रोड, शिलांग (मेघालय)–793 001
दूरभाष : 0364–250409

27. होम्योपैथी नैदानिक अनुसंधान इकाई (टी), आनन्द लॉज, गुरूद्वारा रोड, जगदलपुर, जिला बस्तर, (छत्तीसगढ़)–494 001.
दूरभाष : 07782–225290

28. औषध प्रमाणन अनुसंधान इकाई (होम्यो.), डी.एन. डे होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, 12 गोबिन्दा खटीक रोड़, कोलकाता (प.ब.)–700 046.
दूरभाष : 033–23295355

29. औषध प्रमाणन अनुसंधान इकाई (होम्यो.), 58, माडल टाउन (पश्चिम), गाजियाबाद (उ.प्र.)–201 001
दूरभाष : 0120–2862041

30. औषध प्रमाणन अनुसंधान इकाई (होम्यो.), मिदनापुर होम्यापैथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, मिदनापुर (प.ब.)–721 101.
दूरभाष : 03222–268861

31. (क) औषध मानकीकरण इकाई (होम्यो.), ओ.यू.बी. 32, कमरा संख्या 4, विक्रम पुरी, हबसीगुडा, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)–500 007.
दूरभाष : 040–27178188

31. (ख) नैदानिक अनुसंधान औषध मानकीकरण इकाई (एच) की विस्तार इकाई, प्रिसस दुरू शेहवार चिल्ड्रन्स एण्ड जनरल अस्पताल, पुरानी हवेली, हैदराबाद–500 002 (आ.प्र.)
दूरभाष : 040–27178188

32. औषध मानकीकरण इकाई (होम्यो.), मार्फत होम्योपैथिक भेषजीय प्रयोगशाला, केन्द्रीय सरकार कार्यालय परिसर, हापुड़ चुगी के पास, कमला नेहरू नगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)–201 002.
दूरभाष : 0120–2755718

33. नैदानिक सत्यापन इकाई (होम्यो.), टाट बाबा आश्रम, गोपेश्वर, वृंदावन (उ.प्र.)–281 121.
दूरभाष : 0565–2456911

34. नैदानिक सत्यापन इकाई (होम्यो.), 58 माडल टाउन (पश्चिम) गाजियाबाद (उ.प्र.)–201 001
दूरभाष : 0120–2862041

35. नैदानिक सत्यापन इकाई (होम्यो.), एन.सी.–150, गायत्री मंदिर मार्ग, पो.आ. लोहिया नगर, कंकर बाग, पटना (बिहार)–800 020.
दूरभाष : 0612–2360200

36. सर्वे ऑफ मेडिसिनल प्लांट्स एण्ड कलैक्शन यूनिट (होम्यो.), 112, राजकीय कला कॉलेज परिसर, उदगमण्डलम (तमिलनाडु)–643 002.
दूरभाष : 0423–2451308

37. होम्योपैथिक उपचार केन्द्र, कमरा संख्या 556 व 557, पांचवा तल, नई बिल्डिंग, सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली– 110 016
दूरभाष : 011–26197986

संकेताक्षर :

बीएआरसी	भावा एटोमिक रिसर्च सेन्टर
सीसीआरएच	सेन्ट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन होम्योपैथी
सीआरआई(एच)	सेन्ट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर होम्योपैथी
एचडीआरआई	होम्योपैथिक ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट
सीआरयू(एच)	क्लिनिकल रिसर्च यूनिट फॉर होम्योपैथी इन जनरल एरिया
सीआरयू(टी)	क्लिनिकल रिसर्च यूनिट इन ट्राइबल एरिया
सीवीयू	क्लिनिकल वैरीफिकेशन यूनिट
एचटीसी	होम्योपैथिक ट्रीटमेंट सेन्टर
डीपीआरयू	ड्रग प्रूविंग रिसर्च यूनिट
डीएसयू	ड्रग स्टेन्ड्राइजेशन यूनिट
जेडीवी	गैस डिफ्यूजन विजुअलाइजेशन
एचपीटी	होम्योपैथिक पैथोजैनेटिक ट्रायल
जेआईपीएमईआर	जवाहर लाल इंस्टीट्यूट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल एजूकेशन एण्ड रिसर्च
ओयू	ऊस्मानिया यूनिवर्सिटी डब्ल्यूएचओ वर्ल्ड हैल्थ ऑर्गनाइजेशन
आईएसएमएण्डएच	इन्डियन सिस्टम्स ऑफ मेडिसिन एण्ड होम्योपैथी
एनआईडीडीएम	नॉन इनसूलिन डिपेन्डेन्ट डाइबटिज मिलिटस
एफडीआई	फ्रीकवेन्सी, डयूरेशन एण्ड इनटेन्सिटी
एचआईवी	ह्यूमन इम्यून डेफिशिंयसी वायरस
एआईडीएस	एक्वायर्ड इम्यून डेफिशियंसी सिंड्राम
सीडीसी	सेन्टर फॉर डिजिज कन्ट्रोल
एआरसी	एड्स रिलेटड काम्पलैक्स
एमडीटी	मल्टी ड्रग थैरेपी
यूसीएलए	यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, लॉस एन्जलेस
सीएचएलएएस	करैन्ट हैल्थ लिटरेचर एवैयरनैस सर्विस

वित्तीय विवरण

वित्तीय विवरणों का फार्म (गैर–लाभकारी संगठन)
संगठन का नाम : केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
31 मार्च, 2006 को यथास्थिति तुलन–पत्र

(आंकड़े रुपयों में)

क्र0सं0	देयताएं	अनुसूची	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	पूंजीगत निधि	1	88,246,952.68	54,099,896.59
2.	चालू देयताएं	2	76,128.15	62,866.15
	जोड़		88,323,080.83	54,162,762.74
	पूर्णांकित		88,323,081.00	54,162,762.00

क्र0सं0	परिसंपत्तियां	अनुसूची	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	स्थिर परिसंपत्तियां	3	23,378,036.23	20,097,064.26
2.	चालू परिसंपत्तियां	4	64,945,044.60	34,065,698.48
	जोड़		88,323,080.83	54,162,762.74
	पूर्णांकित		88,323,081.00	54,162,762.00

(आंकड़े रुपयों में)

	अनुसूची – 1 पूंजीगत निधि (तुलन–पत्र के लिए)		धनराशि	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	अथ शेष		29,329,891.60		29,329,891.60
	जोड़िए : वर्ष के दौरान सृजित परिसंपत्तियां	5,146,633.00			
	जोड़िए : दान में प्राप्त बिल्डिंग (पुरी)	612,500.00	5,759,133.00		
			35,089,024.60	35,089,024.60	
2.	व्यय से अधिक हुई आय				
	अथ शेष		24,770,004.99		
	जोड़िए : व्यय से अधिक हुई आय		28,387,923.09	53,157,928.08	24,770,004.99
	जोड़			**88,246,952.08**	**54,099,896.59**

	अनुसूची – 2 चालू देयताएं	धनराशि	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	समूह बीमा योजना निधि			
	अथ शेष	58,265.15		
	जोडिए : वर्ष के दौरान	293,846.00		
		352,111.15		
	घटाइए : वर्ष के दौरान प्रदत्त	289,231.00	62,880.15	58,265.15
2.	बयाने की राशि			
	अथ शेष	800.00		
	जोडिए : वर्ष के दौरान प्राप्त	7,500.00	8300.00	800.00
3.	समूह बीमा योजना की किश्त			3,801.00
	अथ शेष	3,801.00		
	जोड़िए : वर्ष के दौरान प्राप्त	546,275.00		
		550,076.00		
	घटाइए : वर्ष के दौरान प्रदत्त	551,350.00		
	स्टाफ से वसूलीयोग्य	1,274.00		
4.	नई पेंशन योजना के प्रति कर्मचारियों का अंशदान		4,948.00	
	जोड़		**76,128.15**	**62,866.15**

वित्तीय विवरण (गैर–लाभकारी संगठन)
संगठन का नाम : केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
31 मार्च, 2006 को तुलन–पत्र का भाग बनने वाली अनुसूची

अनुसूची–3 स्थिर परिसंपत्तियां

(धनराशि रुपयों में)

क्र.सं.	विवरण	सकल ब्लॉक				मूल्य ह्रास				निवल ब्लाक	
		वर्ष के शुरु में लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान वृद्धि	वर्ष में दौरान कमी	वर्ष के अंत में लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के शुरु में	वर्ष के दौरान वृद्धि पर	वर्ष के दौरान कमी पर	वर्ष के अंत तक का जोड़	चालू वर्ष के शुरु में	पिछले वर्ष के अंत में
1.	नोएडा स्थित पट्टाधारित भूमि	1,762,114.00	----	----	1,762,114.00	----	---	---	---	1,762,114.00	1,762,114.00
2.	पुरी में दान में प्राप्त बिल्डिंग	633,816.00	612,500.00	---	1,246,316.00	342,245.00	14,578.50	---	356,824.30	889,491.70	291,570.20
3.	नोएडा और ऊटी में वाड़ और चारदीवारी	778,035.00	---	---	778,035.00	371,260.44	22,338.73	---	391,599.17	386,435.83	406,774.56
4.	कार्यालय उपस्कर	3,279,284.24	1,336,042.00	31,219.76	4,584,106.48	2,040,700.31	123,858.39	24,193.19	2,140,365.51	2,443,740.97	1,238,583.93
5.	वाहन	2,843,013.44	--	274,291.20	2,568,722.24	2,088,453.00	150,912.08	269,350.00	1,970,015.08	598,707.16	754,560.44
6.	फर्नीचर और फिक्सचर	7,712,505.38	763,657.00	188,286.31	8,287,876.07	3,981,598.19	373,090.72	164,969.45	4,189,719.46	4,098,156.61	3,730,907.19
7.	कम्प्यूटर और संबंधित सामान	7,727,620.80	1,100,440.00	---	8,828,060.80	3,206,512.70	452,110.81	---	3,658,623.51	5,169,437.29	4,521,108.10
8.	विद्युत संस्थापना	290,544.62	10,935.00	30,092.34	271,387.28	165,169.01	25,075.12	28,629.62	161,614.51	109,772.77	125,375.61
9.	पुस्तकालय के लिए पुस्तकें	1,813,904.11	143,863.00	---	1,957,767.11	1,142,150.24	33,587.69	---	1,175,737.93	782,029.18	671,753.87
10	नलकूप और जल पाइप	16,632.00	---	---	16,632.00	5,388.72	1,124.32	---	6,513.04	10,118.96	11,243.28
11.	अस्पताल के उपस्कर	15,577,131.06	1,791,696.00	34,503.03	17,334,324.03	9,427,599.96	1,229,906.22	33,814.93	10,623,691.25	6,710,632.78	6,149,531.10
12.	समूल्य प्रकाशन	433,541.98	--	16,143.00	417,398.98	---	---	---	---	417,398.98	433,541.98
	जोड़	**42,868,142.63**	**5,759,133.00**	**574,535.64**	**48,052,739.99**	**22,771,078.37**	**2,424,582.58**	**520,957.19**	**24,674,703.76**	**23,378,036.23**	**20,097,064.26**

(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–4 चालू परिसंपत्तियां			धनराशि	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	बैंक शेष				
	परिषद्		2,856,266.31		
	स्वास्थ्य मेला		58,571.00		
	केलीफोर्निया विश्वविद्यालय लॉस एंजल्स		1,956,670.00		
			4,871,507.31		
	अग्रदाय अग्रिम		164,889.00	5,036,396.31	5,523,712.19
2.	सरकारी कर्मयारियों को ऋण और अग्रिम				
	कम्प्यूटर अग्रिम		1,404,720.00		
	स्कूटर अग्रिम		513,938.00		
	कार अग्रिम		1,066,859.00		
	साइकिल अग्रिम		4,210.00		
	त्योहार अग्रिम		42,590.00		
	वेतन अग्रिम		114,480.00		
	पंखा अग्रिम		200.00		
	चिकित्सा अग्रिम		152,665.00		
	गर्म कपड़ा अग्रिम		1,050.00		
	बाढ़ अग्रिम		3,6000.00		
			3,304,312.00	3,304,312.00	3,591,211.00
3.	विभिन्न यूनिटों/संस्थानों को अन्य अग्रिम				
	आकस्मिक अग्रिम		52,022,901.29		
	यात्रा भत्ता अग्रिम		192,665.00		
	छुट्टी यात्रा रियायत अग्रिम		304,331.00		
			52,519,897.29	52,519,897.29	21,113,163.29
4.	पूर्व–प्रदत्त वेतन				
	अथ शेष		3,808,930.00		
	घटाइए : समायोजित किया गया		3,808,930.00		
			शून्य		
	जोड़िए : वर्ष के दौरान प्रदत्त	योजना	1,936,853.00		
		योजना भिन्न	2,108,530.00	4,045,383.00	3,808,930.00
5.	प्रतिभूति जमा				
	अथ शेष		28,544.00		
	जोड़िए : एच.पी.ई.बी. को वर्ष के दौरान प्रदत्त		9,100.00		
			37,644.00	37,644.00	
6.	समूह बीमा योजना की बाबत कर्मचारियों से वसूलीयोग्य घनराशि			1,274.00	
7.	एन.डी.एफ. के बारे में कर्मचारियों को देय राशि			138.00	138.00
	जोड़			**64,945,044.60**	**28,541,991.29**

वित्तीय विवरणों का फार्म (गैर–लाभकारी संगठन)
संगठन का नाम : केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
31 मार्च, 2006 को समाप्त अवधि/वर्ष का आय और व्यय लेखा

(आंकड़े रुपयों में)

आय		अनुसूची	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1. अनुदान/आर्थिक सहायता योजनागत	89,768,580.00			
पूर्वोत्तर क्षेत्र	1,000,000.00			
गैर–योजनागत	50,000,000.00			
जोड़	140,768,580.00	5		
घटाइए – पूंजीकृत	5,146,633.00			
	135,621,947.00		135,621,947.00	
विश्व स्वास्थ्य संगठन से प्राप्त अनुदान		5	90,563.00	
केलीफोर्निया विश्वविद्यालय लॉस एंजल्स		5	2,305,441.00	
से प्राप्त अनुदान			138,017,951.00	119,864,245.00
2. अर्जित ब्याज		6	656,226.32	631,785.81
3. अन्य आय		7	220,159.35	32,873.71
4. आय से अधिक हुआ व्यय				
जोड़			**1,38,894,336.67**	**120,528,904.52**
पूर्णांकित			**1,38,894,337.00**	**120,528,905.00**

व्यय		अनुसूची	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1. स्थापना व्यय **योजनागत**				
सामान्य क्षेत्र योजना	34,144,663.00	8 (क)		
विशेष संघटक योजना	5,131,429.00	8 (ख)		
जनजातीय क्षेत्र योजना	3,684,364.00	8 (ग)		
कुल योजनागत	42,960,456.00			
गैर–योजनागत	49,649,779.00	8 (घ)	92,610,235.00	86,659,929.00
2. अन्य प्रशासनिक व्यय **योजनागत**				
सामान्य क्षेत्र योजना	10,555,366.00	9 (क)		
विशेष संघटक योजना	431,113.00	9 (ख)		
जनजातीय क्षेत्र योजना	398,189.00	9 (ग)		
कुल योजनागत	11,384,668.00			
गैर–योजनागत	3,670,223.00	9 (घ)	15,054,891.00	12,327,896.00
रजत जयन्ती समारोह		10(क)		624,160.00
सी.सी.एच. जांच आयोग		10(ख)		1,275,238.00
स्वास्थ्य मेला				9,407,145.00
आरोग्य, 2004				147,035.00
के.वि.लॉस. एंजल्स		11	365,892.00	197,052.00
3. विश्व स्वास्थ्य संगठन से प्राप्त निधि से व्यय		12	50,813.00	920,808.00
4. मूल्यह्रास			2,424,582.58	2,203,525.24
5. नीलाम की गई मदों का मूल्यह्रास मूल्य				
घटाइए : प्राप्त धनराशि				
नीलाम की गई मदों पर हानि				70.50
6. व्यय से अधिक हुई आय			28,387,923.09	6,766,045.78
जोड़			**138,894,336.67**	**120,528,904.52**
पूर्णांकित			**138,894,337.00**	**120,528,905.00**
7. विशेष लेखा नीति		13		

(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–5 अनुदान/आर्थिक सहायता (आय और व्यय के लिए)				चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	केन्द्रीय सरकार से	योजनागत	89,768,580.00		
		पूर्वोत्तर क्षेत्र	1,000,000.00		
		गैर–योजनागत	50,000,000.00		
			140,768,580.00	140,768,580.00	124,047,035.00
2.	अंतर्राष्ट्रीय संगठन से	विश्व स्वास्थ्य संगठन		90,563.00	933,629.00
3.	केलीफोर्निया विश्वविद्यालय लॉस एंजल्स से			2,305,441.00	174,295.00
	जोड़			**143,164,584.00**	**125,154,959.00**

अनुसूची–6 अर्जित ब्याज (आय और व्यय के लिए)			चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	बचत बैंक खाते पर			
2.	ऋण पर	अनुसूचित बैंको में	510,694.32	467,704.85
		कर्मचारियों / स्टाफ से	145,532.00	164,080.96
	जोड़		**656,226.32**	**631,785.81**

(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–7 अन्य आय (आय और व्यय के लिए)			चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	वाहन की बिक्री पर आय (रु0 37061.00 (–) रु0 4941.20)		32,119.80	
2.	नीलाम की गई मदों पर आय (रु0 37245.00 (–) रु0 32494.25)		4,750.75	
3.	पौधों की बिक्री		11,000.00	10,400.00
4.	विविध प्राप्तियां			
	1. स्टाफ कार के इस्तेमाल के लिए	2,848.00		
	2. एल.एस. की बाबत आई एच बी ए एस से प्राप्त	5,818.00		
	3. पी.सी. की बाबत आई एच बी ए एस से प्राप्त	8,126.00		
	4. पहचान पत्र की लागत	60.00		
	5. पुराने वृक्षों की बिक्री (ऊटी)	9,500.00		
	6. पुराने वृक्षों की बिक्री (नोएडा)	10,100.00		
	7. पुराने वृक्षों की बिक्री (कोट्टायम)	650.00		
	8. शुल्क की वापसी	500.00		
	9. निविदा की बिक्री	3,450.00		
	10. प्राप्तियां (रु0 4141.80+317.00)	4,458.80		
	11. सा.भ.नि. लेखे से अंतरित पहचान न की गई धनराशि	88,372.00		
	12. शहरी विकास विभाग द्वारा लौटाई गई धनराशि	9,000.00		
	13 के.एस.एच. कंपनी (प्राइवेट) लिमिटेड द्वारा लौटाए गए ढुलाई और वाहन प्रभार	29,406.00		
	जोड़	172,288.80	172,288.80	22,473.71
	जोड़		220,159.35	32,873.71

सामान्य क्षेत्र योजना
(आय और व्यय के लिए) *(आंकड़े रुपयों में)*

अनुसूची–8 (क) स्थापना व्यय	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) वेतन और मजदूरी	21,828,451.00	22,240,137.00
ख) भत्ते और बोनस	10,739,462.00	9,863,872.00
ग) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. समयोपरि भत्ता	86,167.00	68,579.00
2. चिकित्सा प्रतिपूर्ति	562,331.00	268,200.00
3. छुट्टी यात्रा रियायत व्यय	811,020.00	268,693.00
4. केन्द्रीय सरकारी स्वास्थ्य योजना भुगतान	117,232.00	338,515.00
जोड़	34,144,663.00	33,047,996.00

विशेष संघटक योजना
(आय और व्यय के लिए) *(आंकड़े रुपयों में)*

अनुसूची–9 (ख) स्थापना व्यय	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) वेतन और मजदूरी	3,304,376.00	3,526,636.00
ख) भत्ते और बोनस	1,780,355.00	1,602,894.00
ग) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. समयोपरि भत्ता		860.00
2. चिकित्सा प्रतिपूर्ति	46,698.00	23,850.00
3. छुट्टी यात्रा रियायत व्यय		34,208.00
जोड़	5,131,429.00	5,188,743.00

जनजातीय क्षेत्र योजना
(आय और व्यय लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–8 (ग) स्थापना व्यय	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) वेतन और मजदूरी	2,413,265.00	2,174,164.00
ख) भत्ते और बोनस	1,219,338.00	1,017,802.00
ग) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. समयोपरि भत्ता	....	....
2. चिकित्सा प्रतिपूर्ति	1,976.00	335.00
3. छुट्टी यात्रा रियायत व्यय	49,785.00	89,847.00
जोड़	3,684,364.00	3,282,148.00

गैर–योजनागत
(आय और व्यय लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–8 (घ) स्थापना व्यय	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) वेतन और मजदूरी	28,332,865.00	26,722,200.00
ख) भत्ते और बोनस	13,000,719.00	11,066,013.00
ग) कर्मचारियों की सेवा–निवृति पर सेवान्त लाभों पर व्यय	7,500,000.00	7,000,000.00
घ) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. समयोपरि भत्ता	9,871.00	563.00
2. चिकित्सा प्रतिपूर्ति	149,393.00	87,468.00
3. छुट्टी यात्रा रियायत व्यय	377,751.00	264,798.00
4. के.स.स्वा.यो. अंशदान	279,180.00	....
जोड़	49,649,779.00	45,141,042.00

सामान्य क्षेत्र योजना
(आय और व्यय लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–9 (क) अन्य प्रशासनिक व्यय	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) ढुलाई और वाहन आवक	....	29,406.00
ख) बिजली और विद्युत	255,159.00	247,446.00
ग) जल प्रभार	7,739.00	22,275.00
घ) बीमा	13,381.00	25,468.00
ड.) मरम्मत और अनुरक्षण	855,733.00	987,956.00
च) किराया, महसूल और कर	129,585.00	225,560.00
छ) वाहन संचालन और अनुरक्षण	347,722.00	234,124.00
ज) डाक, टेलीफोन और संचार प्रभार	732,698.00	670,843.00
झ) मुद्रण और लेखन सामग्री	1,817,120.00	1,299,804.00
ञ) यात्रा और सवारी व्यय	1,294,021.00	1,536,697.00
ट) विदेशी दौरों पर यात्रा व्यय	166,018.00	....
ठ) आई.ई.सी कार्यक्रम पर यात्रा भत्ता व्यय	21,519.00	....
ड) संगोष्ठियों और कार्यशाला पर व्यय	1,137,367.00	580,937.00
ढ) अंशदान व्यय	73,161.00	78,035.00
ण) शुल्कों पर व्यय	47,110.00	23,960.00
त) लेखा–परीक्षा संबंधी पारिश्रमिक	65,680.00	141,150.00
थ) व्यावसायिक प्रभार	124,780.00	108,859.00
द) हिन्दी संसदीय समिति पर व्यय	67,546.00	....
ध) विज्ञापन और प्रचार पर व्यय	234,792.00	69,190.00
न) अन्य (स्पष्ट करें)		
1 बिना मूल्य के प्रकाशन	198,783.00	397,343.00
2. औषधि	612,599.00	306,831.00
3. भोजन	225,411.00	239,579.00
4. फुटकर	*613,753.00*	*679,692.00*
5. प्रमाणक और परामर्शदाता	*66,800.00*	*142,940.00*
6. पट्टा उपकर/किराया	*943,408.00*	....
7. विविध व्यय	*503,481.00*	*334,042.00*
जोड़	**10,555,366.00**	**8,382,137.00**

विशेष संधटक योजना
(आय और व्यय के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–9 (ख) अन्य प्रशासनिक व्यय	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) मालभाड़ा और ढुलाई	....	200.00
ख) बिजली और विद्युत	13,782.00	15,589.00
ग) जल प्रभार	2,925.00	4,415.00
घ) मरम्मत और अनुरक्षण	14,006.00	20,606.00
ड.) किराया, महसूल और कर	146,208.00	191,211.00
च) डाक, टेलीफोन और संचार प्रभार	40,380.00	44,313.00
छ) मुद्रण और लेखन सामग्री	71,986.00	77,625.00
ज) यात्रा और सवारी व्यय	24,234.00	115,431.00
झ) अंशदान व्यय	300.00	300.00
ञ) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. औषधि	79,714.00	57,705.00
2. फुटकर	19,324.00	14,338.00
3. विविध व्यय	18,254.00	28,647.00
जोड़	**431,113.00**	**580,380.00**

जनजातीय क्षेत्र योजना
(आय और व्यय लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–9 (ग) अन्य प्रशासनिक व्यय, आदि	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) विजली और विद्युत	12,115.00	16,179.00
ख) जल प्रभार	2,041.00	540.00
ग) मरम्मत और अनुरक्षण	3,795.00	4,484.00
घ) किराया, महसूल और कर	181,206.00	113,700.00
ड.) डाक, टेलीफोन और संचार प्रभार	28,298.00	28,512.00
च) मुद्रंण और लेखन सामग्री	42,552.00	23,025.00
छ) यात्रा और सवारी व्यय	61,211.00	22,256.00
ज) अंशदान व्यय	563.00	1,000.00
झ) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. औषधि	43,737.00	31,122.00
2. फुटकर	3,904.00	1,584.00
3. विविध व्यय	18,767.00	11,441.00
जोड़	**398,189.00**	**253,843.00**

गैर योजना–भिन्न
(आय और व्यय के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–9 (घ) अन्य प्रशासनिक व्यय, आदि	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) बिजली और विद्युत	223,040.00	146,000.00
ख) जल प्रभार	13,882.00	12,076.00
ग) बीमा	13,063.00	7,567.00
घ) मरम्मत और अनुरक्षण	538,180.00	320,066.00
ड.) किराया, महसूल और कर	645,495.00	556,405.00
च) वाहन संचालन और अनुरक्षण	212,252.00	180,039.00
छ) डाक, टेलीफोन और संचार प्रभार	266,141.00	239,105.00
ज) मुद्रण और लेखन सामग्री	359,153.00	241,106.00
झ) यात्रा और सवारी व्यय	504,792.00	681,545.00
ञ) अंशदान व्यय	..	275.00
ट) शुल्कों पर व्यय	..	7,749.00
ठ) व्यावसायिक प्रभार	..	79,279.00
ड) विज्ञान और प्रचार	2,400.00	..
ढ) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. पट्टा उपकर/किराया	45,872.00	
2. औषधि	174,517.00	122,361.00
3. भोजन	14,723.00	22,21600
4. फुटकर	165,145 00	102,344.00
5. प्रमाणक और सलाहकार	207,700.00	218,870 00
6. विविध व्यय	283,868.00	171,834.00
जोड़	**3,670,223.00**	**3,108,837.00**

(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–11 कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय लॉस एंजल्स निधि से अन्य व्यय	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1. कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय लॉस एंजल्स		
क) मानदेय	278,000.00	128,162.00
ख) जलपान व्यय	22,800.000	10,142.00
ग) वीडियो कवरेज प्रभार	..	4,500.00
घ) लेखन सामग्री	24,438.00	1,605.00
ड) यात्रा भत्ता और सवारी	32,527.00	47,010.00
च) विविध व्यय	6,327.00	5,633.00
छ) शुल्कों पर खर्च	1,500.00	..
ज) डाक व्यय	300.00	..
जोड़	**365,892.00**	**197,052.00**

विश्व स्वास्थ्य संगठन
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–12 विश्व स्वास्थ्य संगठन निधि से व्यय	आर.एम.	ईबीसीआरएच	जीडी	जोड़
1) विविध व्यय			3,375.00	3,375.00
2) मुद्रण और लेखन सामग्री			45,438.00	45,438.00
3) सचिवालयीय सहायता		2,000.00		2,000.00
जोड़		**2,000.00**	**48,813.00**	**50,813.00**

पिछले वर्ष की अग्रिम राशियों के समायोजन का विवरण

(आंकड़े रुपयों में)

क्र0 सं0	शीर्ष	सामान्य क्षेत्र योजना	विशेष संघटक योजना	जनजातीय क्षेत्र योजना	कुल योजना	गैर–योजनागत	बिलों के माध्यम से समायोजित	नकदी के माध्यम से प्राप्त	कुल समायोजन
1.	छुट्टी यात्रा रियायत	64,650.00	..	25,200.00	89,850.00	30,915.00	120,765.00	25,911.00	146,676.00
1.	चिकित्सा अग्रिम	47,133.00	..	12,939.00	60,072.00	..	60,072.00	13,828.00	73,900.00
1.	वेतन और मजदूरी	..	..	..	..	9,243.00	9,243.00	101,667.00	110,910.00
2.	बिजली और विद्युत	..	..	..	..	19,696.00	19,696.00	..	19,696.00
3.	मरम्मत और अनुरक्षण	284,206.00	..	..	284,206.00	224,500.00	508,706.00	..	508,706.00
4.	विज्ञापन और प्रचार	61,440.00	..	..	61,440.00	..	61,440.00	..	61,440.00
5.	वाहन संचालन और अनुरक्षण	..	..	..	..	5,921.00	5,921.00	..	5,921.00
6.	डाक और टेलीफोन	2,000.00	..	..	2,000.00	..	2,000.00	..	2,000.00
7.	मुद्रण और लेखन सामग्री	39,879.00	..	..	39,879.00	4,000.00	43,879.00	..	43,879.00
8.	विविध व्यय	7,194.00	5,977.00	..	13,171.00	17,180.00	30,351.00	..	30,351.00
9.	औषधि	4,664.00	2,000.00	..	6,664.00	11,785.00	18,449.00	..	18,449.00
10.	फुटकर	282,572.00	..	..	282,572.00	12,250.00	294,822.00	..	294,822.00
11.	रेफ्रीजरेटर	48,990.00	..	..	48,990.00	12,000.00	60,990.00	..	60,990.00
12.	फर्नीचर	50,400.00	..	..	50,400.00	31,094.00	81,494.00	..	81,494.00
13.	एयर कंडीशनर	46,000.00	..	..	46,000.00	..	46,000.00	..	46,000.00
14.	कम्प्यूटर	62,192.00	..	..	62,192.00	..	62,192.00	..	62,192.00
15.	कैबिनेट	55,225.00	..	..	55,225.00	111,712.00	166,937.00	..	166,937.00
16.	पंखा	..	..	..	..	3,750.00	3,750.00	..	3,750.00
17.	यू.पी.एस.	8,350.00	..	..	8,350.00	14,720.00	23,070.00	..	23,070.00
18.	प्रयोगशाला के उपस्कर	35,856.00	..	..	35,856.00	153,403.00	189,259.00	..	189,259.00
19.	फोटोकापियर मशीन	88,640.00	..	..	88,640.00	95,654.00	184,294.00	..	184,294.00
20.	फैक्स मशीन	22,552.00	..	..	22,552.00	..	22,552.00	..	22,552.00
21.	एच.एम./संगोष्ठी पर व्यय	5,000.00	..	..	5,000.00	..	5,000.00	..	5,000.00
	जोड़	1,105,160.00	7,977.00	..	1,113,137.00	726,908.00	1,840,045.00	101,667.00	1,941,712.00

अनुसूची – 13 महत्वपूर्ण लेखापालन नीतियां

1. लेखा पालन प्रथा :

वित्तीय विवरणों को ऐतिहासिक लागत परिपाटी के आधार पर तैयार किया जाता है ।

2. मालसूची मूल्यांकन :

भंडारों (मशीनरी और अतिरिक्त पुर्जों सहित) का मूल्यांकन लागत के आधार पर किया जाता है ।

3. स्थिर परिसंपत्तियां :

स्थिर परिसंपत्तियों का विवरण, अधिग्रहण से संबंधित आनुषंगिक और प्रत्यक्ष व्यय और करों सहित अधिग्रहण लागत के आधार पर दिया जाता है और लागत के आधार पर उन्हें पूंजीकृत किया जाता है ।

4. मूल्यह्रास :

निदेशक, केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् द्वारा यथा अभिनिश्चित और अनुमोदित दर पर 1978–79 से अधिग्रहीत परिसंपत्ति के मूल्यह्रास की व्यवस्था डब्ल्यू. डी.वी. आधार पर की जाती है । नीचे उल्लिखित परिसंपत्तियों के प्रत्येक ब्लॉक के सामने दर्शाए गए इस प्रकार हिसाब लगाए गए मूल्यह्रास को पूंजीगत निधि से घटाया गया है ।

1.	कार्यालय उपस्कर	10%
2.	विद्युत संस्थापन	20% और कांच के सामान पर 100%
3.	अस्पताल उपस्कर	20% और कांच के सामान पर 100%
4.	वाहन	20%
5.	फर्नीचर और फिक्सचर	10% और कांच के सामान पर 100%
6.	कम्प्यूटर और अन्य सामग्री	10%
7.	पुस्तकें	5%
8.	भवन	5%
9.	नलकूप और जल पाइप	10%

5. सरकारी अनुदान :

सरकारी अनुदानों का लेखापालन प्राप्ति के आधार पर किया जाता है ।

6. सेवा–निवृति लाभ :

सेवा–निवृति संबंधी लाभों को उस राशि से पूरा किया गया है जिसे डेबिट और क्रेडिट के द्वारा बजट अनुदान से पेंशन निधि खाते में अंतरित किया गया है ।

एक अलग खाता अर्थात पेंशन निधि खाता रखा जा रहा है । पेंशन निधि खाते का प्राप्ति और भुगतान लेखा तथा तुलन–पत्र परिषद् के वार्षिक लेखे के साथ संलग्न है ।

7. सामान्य भविष्य निधि :

परिषद् सामान्य भविष्य निधि नियम, 1960 के अनुसार अपने कर्मचारियों के लिए एक अलग सामान्य भविष्य निधि खाता रख रही है ।

सामान्य भविष्य निधि खाते का प्राप्ति और अदायगी लेखा तथा तुलन–पत्र परिषद् के वार्षिक लेखे के साथ संलग्न है ।

8. गृह निर्माण अग्रिम :

परिषद् अपने कर्मचारियों के लिए एग अलग गृह निर्माण अग्रिम खाता रख रही है ।

गृह निर्माण अग्रिम खाते का प्राप्ति और अदायगी लेखा तथा तुलन–पत्र परिषद् के वार्षिक लेखे के साथ संलग्न है ।

way in establish-
cal studies also
ereby prompting
patients form an
hasis on clinical
nce, viz. Filaria,
e country. From
undertaken at 1
Homoeopathic
Units (in Tribal
Standardization
I contains data
2005 and Au-

ept in cases

after no
ee years
of disease).

वित्तीय विवरणों का फार्म (गैर–लाभकारी संगठन)
संगठन का नाम : केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्, जनकपुरी, नई दिल्ली
31.03.2006 को समाप्त वर्ष की प्राप्तियां और अदायगियाँ

(आंकड़े रुपयों में)

क्र.सं.	प्राप्तियां		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	अथ शेष			
	क) बैंक में जमा	5,326,358.19		
	ख) विश्व स्वास्थ्य संगठन	18,821.00		
	ग) के.वि. लॉस एंजल्स	17,121.00		
	घ) अग्रदाय अग्रिम	161,412.00		
		5,523,712.19	5,523,712.19	13,300,970.67
2.	प्राप्त अनुदान			
	क) स्वा.एवं प.क.मंत्रालय, नई दिल्ली से			
	योजनागत			
	सामान्य क्षेत्र योजना	78,000,000.00		
	विशेष संघटक योजना	6,900,000.00		
	जनजातीय क्षेत्र योजना	5,100,000.00		
	पूर्वोत्तर क्षेत्र	1,000,000.00		
		91,000,000.00		
	घटाइए : मंत्रालय को लौटाया गया			
	सा.क्षे.प.	231,420.00		
		90,768,580.00		
	गैर–योजनागत	50,000,000.00		
		140,768,580.00	140,768,580.00	123,900,000.00
	आरोग्य, 2004 के लिए			147,035.00
	विश्व स्वास्थ्य संगठन		90,563.00	933,629..00
	केलीफोर्निया विश्वविद्यालय लॉस एंजलस		2,305,441.00	174,295.00

क्र.सं.	भुगतान		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	व्यय			
	क) स्थापना व्यय			
	योजनागत			
	सामान्य क्षेत्र योजना	34,221,477.00		
	विशेष संघटक योजना	5,081,789.00		
	जनजातीय क्षेत्र योजना	3,675,439.00		
		42,978,705.00		
	गैर–योजनागत	50,242,837.00		
		93,221,542.00	93,221,542.00	87,689,579.00
	ख) प्रशासनिक व्यय			
	योजनागत			
	सामान्य क्षेत्र योजना	42,626,348.00		
	विशेष संघटक योजना	431,136.00		
	जनजातीय क्षेत्र योजना	589,328.00		
		43,646,812.40		
	गैर–योजनागत	3,627,034.00		
		47,273,846.00	47,273,846.00	33,124,751.00
	स्वास्थ्य मेला		..	108,187.00
	स्वास्थ्य जागरूक माह मेला		..	7,300,053.00
	विश्व स्वास्थ्य संगठन (आर.एम.)		..	303,977.00
	विश्व स्वास्थ्य संगठन (जी.डी.)		48,813.00	127,845.00
	विश्व स्वास्थ्य संगठन (ई.बी.सी.आर.)		2,000.00	488,986.00
	आरोग्य, 2004		..	147,035.00
	केलीफोर्निया विश्वविद्यालय लॉस एंजल्स		365,892.00	188,699.00

क्र.सं.	प्राप्तियां		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
3.	प्राप्त ब्याज			
	क) बैंक जमा पर		510,694.32	467,704.85
	ख) ऋणों और अग्रिमों पर		145,532.99	164,080.96
4.	अन्य आय			
	क) विविध प्राप्तियां	172,288.00		22,473.71
	ख) नीलाम किए गए मदों से प्राप्ति	37,245.00	209,533.80	2,760.00
	ग) समूल्य प्रकाशनों की बिक्री		16,143.00	29,505.00
	घ) पौधों की बिक्री		11,000.00	10,400.00
	ड) पुराने वाहनों की बिक्री		37,061.00	..
5.	कोई अन्य प्राप्तियां			
	क) अग्रिम के प्रति नकद प्राप्तियां			
	i) यात्रा भत्ता अग्रिम		13,828.00	31,776.00
	ii) छुट्टी यात्रा रियायत अग्रिम		25,911.00	2,512.00
	iii) आकस्मिक अग्रिम		101,667.00	1,008,304.00
	iv) चिकित्सा अग्रिम		10,000.00	779.00
	ख) पूर्ण और अंतिम भुगतान के प्रति भारतीय जीवन बीमा निगम से प्राप्त		293,846.00	292,519.00
	ग) अग्रिमों के प्रति वसूलियां			
	i) त्योहार अग्रिम		237,920.00	256,650.00
	ii) स्कूटर अग्रिम		257,312.00	284,896.00
	iii) कार अग्रिम		253,752.00	306,502.00
	iv) साइकिल अग्रिम		2,830.00	1,200.00
	v) कम्प्यूटर अग्रिम बाढ़ अग्रिम		364,944.00	322,579.00
	vi) पंखा अग्रिम		1,600.00	1,200.00
	vii) वेतन अग्रिम की वसूली, पिछला वर्ष		1,06,322.00	164,971.00
	viii) बाढ़ अग्रिम की वसूली		1,400.00	..
	ix) गर्म कपड़ों से संबंधित वसूली		450.00	..
6.	डी.ए.वी.पी. से जमानत जमा का समायोजन			20,000.00
7.	बयाना राशि जमा (मैसर्स भारत भूषण एण्ड कंपनी)		7,500.00	..
8.	कर्मचारी अंशदान टायर–1 (नई पेंशन योजना)		4,948.00	

क्र.सं.	भुगतान		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
2.	स्थिर परिसंपत्तियों पर व्यय			
	योजनागत			
	सामान्य क्षेत्र योजना	2,696,017.00		
	विशेष संघटक योजना	2,497.00		
	जनजातीय क्षेत्र योजना	6,825.00		
		2,705,339.00		
	गैर–योजनागत	633,719.00		
	पूर्वोत्तर क्षेत्र	967,037.00		
		4,306,095.00	4,306,095.00	4,919,258.00
3.	अन्य अदायगियां			
	क) कर्मचारियों को ऋण और अग्रिम			
	i) साइकिल अग्रिम		5,500.00	
	ii) कार अग्रिम		..	480,000.00
	iii) स्कूटर अग्रिम		164,000.00	204,000.00
	iv) कम्प्यूटर अग्रिम		332,000.00	714,000.00
	v) पंखा अग्रिम		1,000.00	2,000.00
	ख) त्योहार अग्रिम		235,500.00	252,000.00
	ग) वसूलियों के प्रति की गई अदायगियां			
	i) आयकर		3,596,050.00	6,117,341.00
	ii) सामान्य भविष्य निधि		17,038,760.00	15,589,232.00
	iii) जी.आई.एस. प्रीमियम		551,350.00	533,000.00
	iv) वैयक्तिक भारतीय जीवन बीमा किस्त		116,758.00	108,674.00
	v) प्रतिनियुक्त कर्मचारियों की वसूलियां		90,720.00	149,445.00
	vi) पी एम एन आर एफ		37,289.00	161,786.00
	vii) बचत और उधार सोसाइटी		316,382.00	91,249.00
	viii) व्यक्तिगत ऋण		51,800.00	42,700.00
	ix) गृह निर्माण अग्रिम को अंतरित		76,952.00	28,000.00
	x) बाढ़ अग्रिम		5,000.00	..
	xi) तात्कालिक राहत		8,000.00	8,000.00
	xii) गर्म कपड़ों का अग्रिम		1,500.00	..
	घ) समूह बीमा योजना निधि की प्राप्ति के प्रति की गई अदायगी		289,231.00	285,710.00

9.	अन्य वसूलियां			4.	निम्नलिखित के पास जमानत जमा		
	i) आयकर	3,596,050.00	6,117,341.00		हिमाचल प्रदेश बिजली बोर्ड	9,100.00	
	ii) सामान्य भविष्य निधि अंशदान और अग्रिम	17,038,760.00	15,589,232.00				
	iii) कर्मचारियों की जी.आई.एस. प्रीमियम	546,275.00	546,050.00	5.	इति शेष		
	iv) स्टाफ का वैयक्तिक जीवन बीमा प्रीमियम	116,758.00	108,674.00		क) बैंक जमा		
					परिषद् का नियमित अनुदान	2,856,266.31	
	v) प्रतिनियुक्त कर्मचारियों से वसूलियां	90,720.00	149,445.00		विश्व स्वास्थ्य संगठन	58,571.00	
	vi) गृह निर्माण अग्रिम की वसूली	76,952.00	28,000.00		के.वि. लॉस एंजल्स	1,959,670.00	
	vii) व्यक्तिगत ऋण की वसूली	51,800.00	42,700.00			4,871,507.31	4,871,507.31 5,362,300.19
	viii) पी एम एन आर एफ	37,289.00	161,786.00				
	ix) बचत और उधार सोसाइटी	316,382.00	91,249.00		ख) अग्रदाय अग्रिम		
	x) तात्कालिक राहत	8,000.00	8,000.00		अथ शेष	161,412.00	
					जोडिए : अनुदान से स्वीकृत	12,000.00	
						173,412.00	
					घटाइए : समायोजित	8,523.00	
						164,889.00	164,889.00 161,412.00
	जोड़	173,181,476.31	164,689,219.19		जोड़		173,181,476.31 164,689,219.19
	अर्थात रु.	173,181,476.00	164,689,219.00		अर्थात रु.		173,181,476.00 164,689,219.00

सामान्य संघटक योजना
(प्राप्ति और अदायगी लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–स्थापना व्यय	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) वेतन और मजदूरी	*21,828,451.00*	*22,239,642.00*
ख) भत्ते और बोनस	*10,739,462.00*	*9,863,872.00*
ग) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. वेतन अग्रिम	..	61,384.00
2. चिकित्सा अग्रिम	10,000.00	..
3. समयोपरि भत्ता	86,167.00	68,579.00
4. चिकित्सा प्रतिपूर्ति	562,331.00	250,979.00
5. छुट्टी यात्रा रियायत व्यय	746,370.00	225,591.00
6. छुट्टी यात्रा रियायत अग्रिम	153,789.00	85,110.00
7. केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना अदायगी	117,232.00	338,515.00
जोड़	**34,243,802.00**	**33,133,672.00**
(–) पूर्व–प्रदत वेतन संबंधी समायोजन	1,427,076.00	1,297,531.00
		31,836,141.00
(+) वर्ष 2005–06 का पूर्व–प्रदत वेतन	1,404,751.00	1,427,076.00
जोड़	**34,221,477.00**	**33,263,217.00**

y in establish-
l studies also
eby prompting
tients form an
asis on clinical
e, viz. Filaria,
country. From
dertaken at 1
homoeopathic
Units (in Tribal
andardization
contains data
2005 and Au-

cept in cases

eafter no
ee years
of disease).

विशेष संघटक योजना
(प्राप्ति और अदायगी लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–स्थापना व्यय		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क)	वेतन और मजदूरी	3,304,376.00	3,526,636.00
ख)	भत्ते और बोनस	1,780,355.00	1,602,894.00
	1. वेतन अग्रिम	..	94,866.00
	2. छुट्टी यात्रा रियायत व्यय	..	34,208.00
	3. चिकित्सा प्रतिपूर्ति	22,563.00	24,145.00
	4. समयोपरि भत्ता	..	860.00
	5. चिकित्सा अग्रिम	..	27,000.00
	जोड़	**5,107,294.00**	**5,310,609.00**
	(–) पूर्व–प्रदत वेतन संबंधी समायोजन	335,991.00	269,093.00
	(+) वर्ष 2005–06 का पूर्व–प्रदत वेतन		5,041,516.00
		310,486.00	335,991.00
	जोड़	**5,081,789.00**	**5,377,507.00**

जनजातीय क्षेत्र योजना
(प्राप्ति और अदायगी लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–स्थापना व्यय		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क)	वेतन और मजदूरी	2,413,265.00	2,174,164.00
ख)	भत्ते और बोनस	1,219,338.00	1,017,802.00
ग)	अन्य (स्पष्ट करें)		
	2. चिकित्सा प्रतिपूर्ति	1,976.00	335.00
	3.. छुट्टी यात्रा रियायत व्यय	24,585.00	89,847.00
	4. छुट्टी यात्रा रियायत अग्रिम	..	25,200.00
	जोड़	**3,659,164.00**	**3,307,348.00**
	(–) पूर्व–प्रदत वेतन संबंधी समायोजन	205,341.00	196,663.00
	(+) वर्ष 2005–06 का पूर्व–प्रदत वेतन	221,616.00	3,110,685.00
			205,341.00
	जोड़	**3,675,439.00**	**3,316,026.00**

...y in establish-
studies also
by prompting
...ients form an
...sis on clinical
...e, viz. Filaria,
country. From
dertaken at 1
Homoeopathic
Units (in Tribal
andardization
contains data
2005 and Au-

...except in cases

...ereafter no
three years
...se of disease).

गैर–योजनागत
(प्राप्ति और अदायगी लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची–स्थापना व्यय		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क)	वेतन और मजदूरी	28,323,622.00	26,721,900.00
ख)	भत्ते और बोनस	13,000,719.00	11,066,013.00
ग)	कर्मचारियों की सेवा–निवृति और सेवान्त लाभों पर व्यय	7,500,000.00	7,000,000.00
घ)	अन्य (स्पष्ट करें)		
	1. समयोपरि भत्ता	9,871.00	563.00
	2. चिकित्सा प्रतिपूर्ति	149,393.00	87,468.00
	3. छुट्टी यात्रा रियायत व्यय	346,836.00	253,828.00
	4. छुट्टी यात्रा रियायत अग्रिम	145,942.00	40,966.00
	5. वेतन अग्रिम	79,466.00	133,567.00
	6. चिकित्सा अग्रिम	139,800.00	10,000.00
	7. केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना अंशदान	279,180.00	..
	जोड़	**49,974,829.00**	**45,314,305.00**
	(–) पूर्व–प्रदत वेतन संबंधी समायोजन	1,840,522.00	1,421,998.00
	(+) वर्ष 2005–06 का पूर्व–प्रदत वेतन	2,108,530.00	43,892,307 00
			1,840,522.00
	जोड़	**50,242,837.00**	**45,732,829.00**

सामान्य क्षेत्र योजना
(प्राप्ति और अदायगी लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची– अन्य प्रशासनिक व्यय, आदि		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क)	ढुलाई और वाहन प्रभार	..	29,406.00
ख)	बिजली और विद्युत	255,159.00	247,446.00
ग)	जल प्रभार	7,739.00	22,275.00
घ)	बीमा	13,381.00	25,468.00
ड.)	मरम्मत और अनुरक्षण	571,527.00	401,022.00
च)	किराया, महसूल और कर	129,585.00	225,560.00
छ)	वाहन संचालन और अनुरक्षण	347,722.00	229,637.00
ज)	डाक, टेलीफोन और संचार	730,698.00	668,843.00
झ)	मुद्रण और लेखन सामग्री	1,777,241.00	1,251,548.00
ञ)	यात्रा और सवारी व्यय	1,246,888.00	1,433,287.00
ट)	विदेशी दौरों पर यात्रा व्यय	166,018.00	..
ठ)	आई.ई.सी. कार्यक्रम के लिए यात्रा व्यय	21,519.00	..
ड)	संगोष्ठी और कार्यशाला व्यय	1,132,367.00	580,937.00
ढ)	अंशदान व्यय	73,161.00	78,035.00
ण)	शुल्कों पर व्यय	47,110.00	23,960.00
त)	लेखा–परीक्षा पारिश्रामिक	65,680.00	141,150.00
थ)	व्यावसायिक प्रभार	124,780.00	108,859.00
द)	विज्ञापन और प्रचार पर व्यय	173,352.00	69,190.00
ध)	हिन्दी संसदीय समिति पर व्यय	67,546.00	..
न)	अन्य (स्पष्ट करें)		
	1. ऊटी के लिए पट्टा उपकर / किराया	943,408.00	–
	2. बिना मूल्य के प्रकाशन	198,783.00	397,343.00

	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
3. औषधि	607,935.00	301,834.00
4. भोजन	225,411.00	239,579.00
5. फुटकर	331,181.00	659,236.00
6. प्रमाणक और परामर्शदाता	66,800.00	142,940.00
7. विविध व्यय	496,287.00	297,423.00
8. यात्रा भत्ता अग्रिम	91,125.00	41,900.00
9. आकस्मिक अग्रिम	1,482,765.00	18,792,423.00
सहयोगात्मक अध्ययन	1,731,180.00	..
नोएडा और कोट्टायम में पूंजीगत कार्य के लिए	29,500,000.00	..
जोड़	**42,626,348.00**	**26,409,301.00**

(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची– अन्य प्रशासनिक व्यय आदि	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) बिजली और विद्युत	13,782.00	15,589.00
ख) जल प्रभार	2,925.00	4,415.00
ग) मरम्मत और अनुरक्षण	14,006.00	19,106.00
घ) किराया, महसूल और कर	146,208.00	188,241.00
ड.) डाक, टेलीफोन और संचार	40,380.00	44,313.00
च) मुद्रण और लेखन सामग्री	71,986.00	77,625.00
छ) यात्रा और सवारी व्यय	24,234.00	115,431.00
ज) अंशदान व्यय	300.00	300.00
झ) शुल्कों पर व्यय	..	2,699.00
ञ) मालभाड़ा और ढुलाई	..	200.00
ट) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. औषधि	77,714.00	56,615.00
2. फुटकर	19,324.00	11,738.00
3. विविध व्यय	12,277.00	18,304.00
4. आकस्मिक अग्रिम	8,000.00	7,977.00
जोड़	**431,136.40**	**562,553.00**

जनजातीय क्षेत्र योजना
(प्राप्ति और अदायगी लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची– अन्य प्रशासनिक व्यय	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) बिजली और विद्युत	12,115.00	16,179.00
ख) जल प्रभार	2,041.00	540.00
ग) बीमा	..	..
घ) मरम्मत और अनुरक्षण	3,795.00	4,484.00
ङ.) किराया, महसूल और कर	181,206.00	113,700.00
च) वाहन संचालन और अनुरक्षण	..	..
छ) डाक, टेलीफोन और संचार प्रभार	28,298.00	28,512.00
ज) मुद्रण और लेखन सामग्री	42,552.00	23,025.00
झ) यात्रा और सवारी व्यय	48,272.00	22,256.00
ञ) अंशदान व्यय	563.00	1,000.00
ट) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. औषधि	43,737.00	31,122.00
2. फुटकर	3,904.00	1,584.00
3. विविध व्यय	18,767.00	11,441.00
4. यात्रा भत्ता अग्रिम	45,000.00	17,000.00
5. आकस्मिक व्यय	159,078.00	2,000.00
जोड़	**589,328.00**	**272,843.00**

गैर–योजनागत
(प्राप्ति और अदायगी लेखे के लिए)
(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची– अन्य प्रशासनिक व्यय, आदि	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) ढुलाई और वाहन आवक	..	..
ख) बिजली और विद्युत	203,344.00	128,000.00
ग) जल प्रभार	13,882.00	12,076.00
घ) बीमा	13,063.00	7,567.00
ङ.) मरम्मत और अनुरक्षण	313,680.00	196,003.00
च) किराया, महसूल और कर	645,495.00	554,396.00
छ) वाहन संचालन और अनुरक्षण	206,331.00	177,539.00
ज) डाक, टेलीफोन और संचार प्रभार	226,141.00	237,730.00
झ) मुद्रण और लेखन सामग्री	355,153.00	236,546.00
ञ) यात्रा और सवारी व्यय	504,792.00	644,506.00
ट) अंशदान व्यय	..	275.00
ठ) शुल्कों पर व्यय	..	7,749.00
ड) व्यावसायिक प्रभार	..	79,279.00
ढ) विज्ञापन और प्रचार पर व्यय	2,400.00	..
ण) अन्य (स्पष्ट करें)		
1. पट्टा उपकर / किराया	45,872.00	..
2. औषधि	162,732.00	120,560.00
3. भोजन	14,723.00	22,216.00
4. फुटकर	152,895.00	71,892.00
5. प्रमाणक और परामर्शदाता	207,700.00	218,870.00
6. विविध व्यय	266,688.00	149,247.00
7. यात्रा भत्ता अग्रिम	49,730.00	10,000.00
8. आकस्मिक अग्रिम	202,413.00	938,205.00
जोड़	**3,627,034.00**	**3,812,656.00**

(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची– के.वि. लॉस एंजल्स निधि से किए गए व्यय का विवरण	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1. के.वि. लॉस एंजल्स		
क) मानदेय	278,000.00	121,162.00
ख) यात्रा भत्ता	32,527.000	47,010.00
ग) जलपान प्रभार	22,800.00	10,142.00
घ) वीडियो कवरेज व्यय	..	4,500.00
ड.) लेखन सामग्री व्यय	24,438.00	1,335.00
च) विविध व्यय	6,327.00	4,550.00
छ) शुल्कों पर व्यय	1,500,00	..
ज) डाक पर व्यय	300,00	..
जोड़	**365,892.00**	**188,699.00**

(आंकड़े रुपयों में)

अनुसूची – विश्व स्वास्थ्य संगठन निधि से किए गए व्यय का विवरण				
	आर.एम.	ई.बी.सी.आर.एच.	जी.डी.	जोड़
क) बाहर के प्रतिभागियों के लिए यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	..	..	..	..
ख) बाहर के विशेषज्ञों के लिए यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	..	..	..	..
ग) प्रकाशन	..	..	..	..
घ) स्थानीय प्रतिभागियों के लिए दैनिक भत्ता	..	..	..	..
ड.) स्थानीय विशेषज्ञों के लिए दैनिक भत्ता	..	..	..	..
च) सचिवांलयी सहायता	..	2,000.00	..	2,000.00
छ) जलपान प्रभार	..	..	..	..
ज) मुद्रण और लेखन सामग्री	..	..	45,43800	45,43800
झ) विविध व्यय	..	..	3,375.00	3,375.00
जोड़	..	**2,000.00**	**48,813.00**	**50,813.00**

(आंकड़े रुपयों में)

वर्ष 2005–06 के दौरान सृजित परिसंपत्तियों का विवरण

क्र सं	शीर्ष	सामान्य क्षेत्र योजना	विशेष संघटक योजना	जनजातीय क्षेत्र योजना	कुल योजना	गैर–योजनागत	पूर्वोत्तर क्षेत्र	के.वि.लॉस एंजल्स
1.	अस्पताल संबंधी उपस्कर	1,539,460.00	..	..	1,539,460.00	216,380.00	..	..
2.	फर्नीचर और जुड़नार :							
	– कैबिनेट/रैक	28,054.00	..	..	28,054.00	20,375.00	..	..
	– मेज	90,730.00	..	1,250.00	91,980.00	100,034.00	..	..
	– लकड़ी के पार्टिशन	262,141.00	..	..	262,141.00	12,642.00	..	..
3.	कम्प्यूटर और संबंधित सामानः							
	– यू.पी.एस./वोल्टेज स्टेबिलाइज़र	93,912.00	..	..	93,912.00	39,388.00	36,000.00	..
	– कम्प्यूटर	53,872.00	..	..	53,872.00	33,996.00	289,600.00	..
	– प्रिंटर	7,900.00	..	..	7,900.00	33,684.00	62,560.00	..
	– सॉफ्टवेयर	316,966.00	..	..	316,966.00	47,300.00	..	..
4.	पुस्तकें	76,299.00	1,212.00	675.00	78,186.00	..	65,677.00	..
5.	कार्यालय के उपस्कर	132,063.00	..	..	132,063.00	87,750.00	..	..
	– फोटोकोपियर मशीन	94,620.00	..	..	94,620.00	..	448,616.00	..
	– कैमरा	..	..	..	..	20,990.00	..	..
	– वॉटर कूलर ..	..	..	..	15,730.00	..	..	..
	– रेफ्रीजरेटर ..	..	..	..	..	..		
	– रूम हीटर	..	..	..	..	2,450.00	..	..
	– फैक्स मशीन ..	..	..	..	..	64,584.00	..	..
	– साईकिल	..	..	2,000.00	2,000.00	..	..	..
6.	बिजली संस्थापन							
	– एयर कूलर ..	1,285.00	2,900.00	4,185.00	3,000.00	..	..	
	जोड़	2,696,017.00	2,497.00	6,825.00	2,705,339.00	633,719.00	967,037.00	..

सरकारी कर्मचारियों को दिए गए अग्रिमों का विवरण

(आंकड़े रुपयों में)

क्र0 सं0	शीर्ष	अथ शेष	वर्ष के दौरान स्वीकृत किए गए	जोड़	वर्ष के दौरान समायोजित किए गए	31.03.2006 को यथास्थिति बकाया शेष
1.	कम्प्यूटर अग्रिम	1,437,664.00	332,000.00	1,769,664.00	364,944.00	1,404,720.00
2.	स्कूटर अग्रिम	607,250.00	164,000.00	771,250.00	257,312.00	513,938.00
3.	कार अग्रिम	1,320,611.00	..	1,320,611.00	253,752.00	1,066,859.00
4.	साइकिल अग्रिम	1,540.00	5,500.00	7,040.00	2,830.00	4,210.00
5.	चिकित्सा अग्रिम	37,000.00	149,800.00	186,800.00	34,135.00	152,665.00
6.	त्योहार अग्रिम	45,010.00	235,500.00	280,510.00	237,920.00	42,590.00
7.	वेतन अग्रिम	141,336.00	326,859.00	468,195.00	353,715.00	114,480.00
8.	पंखा अग्रिम	800.00	1,000.00	1,800.00	1,600.00	200.00
9.	गर्म कपड़ों संबंधी अग्रिम	..	1,500.00	1,500.00	450.00	1,050.00
10.	बाढ़ अग्रिम	..	5,000.00	5,000.00	1,400.00	3,600.00
	जोड़	3,591,211.00	1,221,159.00	4,812,370.00	1,508,058.00	3,304,312.00

संगठन का नाम : केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद

सामान्य भविष्य निधि के खाते के संबंध में 31.03.2006 को समाप्त वर्ष का प्राप्ति और अदायगी लेखा

(आंकड़े रुपयों में)

क्र.स.	प्राप्तियां	चालू वर्ष	पिछला वर्ष	क्र.स	अदायगियां	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	अथ शेष बैंक जमा	633,976.73	844,054.61	1	i) वर्ष के दौरान सा.भ.नि. अग्रिमों और निकासियों की बाबत की गई अदायगियां	17,875,937.00	12,899,548.00
2.	i. सामान्य भविष्य निधि अंशदान की बाबत सामान्य खाते से अंतरित धनराशि	17,038,760.00	15,589,232.00		ii) सामान्य खाते में अंतरित अदावाकृत धनराशि	88,372.00	..
	ii. प्रो0 सी0 नायक के संबंध में डा0 ए.सी.एच. मैडिकल कॉलेज और अस्पताल, भुवनेश्वर से प्राप्त सामान्य भविष्य निधि की धनराशि	532,979.00	..	2	वर्ष के दौरान किया गया निवेश	34,000,000.00	31,500,000.00
	iii. श्री एच.सी. गुप्ता द्वारा जमा की गई धनराशि	198,000.00	..	3	इति शेष बैंक शेष	1,253,775.15	633,976.73
3.	वर्ष के दौरान परिपक्व हुई और भुनाई गई एस.टी.डी.आर. की धनराशि	28,500,000.00	20,400,000.00	4	श्री डी. ज्वालाचारी को किया गया अधिक भुगतान	..	90.00
4.	निवेश और जमा पर आय एस.टी.डी.आर. रु. 6,299,800.00 पर ब्याज बचत बैंक रु. 14478.42 खाते पर ब्याज	6,314,278.42	8,200,328.12				
5.	श्री डी. ज्वालाचारी को किए गए अधिक भुगतान को लौटाने की बाबत उनसे प्राप्त धनराशि	90.00	..				
	कुल जोड़	53,218,084.15	45,033,614.73		कुल जोड़	53,218,084.15	45,033,614.73

संगठन का नाम : केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

सामान्य भविष्य निधि खाते के संबंध में 31.03.2006 को यथास्थिति तुलन–पत्र

(आंकड़े रुपयों में)

क्र.स.	देयताएं	चालू वर्ष	पिछला वर्ष	क्र.स.	परिसंपतियां	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	**सामान्य भविष्य निधि पूंजी निधि**			1.	**निवेश खाता**		
	क) अथ शेष	80,218,094.40	71,612,521.40		क) अथ शेष	82,329,405.00	71,229,405.00
	ख) जोड़िए : सा.भ. निधि अंशदान	17,769,739.00	15,589,232.00		ख) घटाइए: वर्ष के दौरान परिपक्व हुई एस.टी.डी.आर. की धनराशि	28,500,000.00	20,400,000.00
	ग) जोड़िए : अंशदाताओं के सा.भ.नि. खातों पर अनुमत ब्याज	6,441,086.00	5,915,889.00			53,829,405.00	50,829,405.00
					ग) जोड़िए: वर्ष के दौरान खरीदी गई एस.टी.डी.आर. की धनराशि	34,000,000.00	31,500,000.00
	जोड़	104,428,919.40	93,117,642.40			**87,829,405.00**	**82,329,405.00**
	घ) घटाइए : निकासी			2.	**एस.टी.डी.आर. पर प्रोदभूत परंतु प्राप्त न हुए ब्याज की धनराशि**		
	i) निकासी 17,875,937.00				क) अथ शेष	6,689,156.34	8,795,717.17
	ii) सामान्य खाते 88,372.00				ख) जोड़िए: वर्ष के दौरान जमा धनराशि	6,147,932.54	6,061,105.17
	को अंतरित 17,964,309.00	17,964,309.00	12,899,548.00			12,837,088.88	14,856,822.34
	अदावाकृत धनराशि	**86,464,610.40**	**80,218,094.40**		घटाइए: वर्ष के दौरान प्राप्त	6,299,800.00	8,167,666-00
						6,537,288.88	**6,689,156.34**
2.	*प्रारक्षित और अधिशेष*			3.	*श्री डी. ज्वालाचारी से वसूल की जाने वाली धनराशि*		
	क) अथ शेष	9,434,533.67	9,256,655.38		अथ शेष 90.00		
	ख) बचत बैंक खाते पर प्राप्त ब्याज	14,478.42	32,662.12		घटाइए : वसूल की गई धनराशि 90.00	..	90.00
	ग) एस.टी.डी.आर. पर प्रोदभूत ब्याज	6,147,932.54	6,061,105.17				
		15,596,944-63	15,350,422.67	4.	**इति शेष**		
	घटाइए: सामान्य भविष्य निधि खाते पर अनुमत ब्याज	6,441,086.00	5,915,889.00		बचत शेष	1,253,775.15	633,976 73
		9,155,858.63	**9,434,533.67**				
	जोड़	**95,620,469.03**	**89,652,628.07**		कुल जोड़	**95,620,469.03**	**89,652,628.07**
	कुल जोड़ (पूर्णांकित)	**95,620,469.03**	**89,652,628.07**		कुल जोड़ (पूर्णांकित)	**95,620,469.03**	**89,652,628.07**

संगठन का नाम : केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद

पेंशन निधि खाते के संबंध में 31.03.2006 को समाप्त वर्ष का प्राप्ति और अदायगी लेखा

(आंकड़े रुपयों में)

क्र.स.	प्राप्तियां	चालू वर्ष	पिछला वर्ष	क्र.स.	अदायगी	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	अथ शेष बचत बैंक खाता संख्या 19806	1,348,395.54	920,612.48	1.	वर्ष के दौरान की गई पेंशन अदायगियां	3,338,542.00	3,080,776.00
2.	श्री शकील अहमद के संबंध में पेंशन अंशदान की बाबत प्राप्त धनराशि		50,032.00	2.	सेवा–निवृति उपदान, पेंशन के संराशित मूल्य की बाबत वर्ष के दौरान की गई अदायगियां	2,832,960.00	1,609,108.00 1,991,588.00
3.	बचत बैंक खाते पर ब्याज	35,816.46	59,223.06	3.	इति शेष बचत बैंक खाता संख्या 19806	2,712,710.00	1,348,395.54
4.	सामान्य खातें से पेंशन निधि खाते में अंतरित धनराशि	7,500,000.00	7,000,000.00				
	कुल जोड़	8,884,212.00	8,029,867.54		कुल जोड़	8,884,212.00	8,029,867.54

संगठन का नाम : केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद

पेंशन निधि खाते के संबंध में 31.03.2006 को यथास्थिति तुलन–पत्र

(आंकड़े रुपयों में)

क्र.स.	देयताएं	चालू वर्ष	पिछला वर्ष	क्र.स.	परिसंपत्तियां	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	**पेंशन निधि खाता**			1.	निवेश खाता		
	अथ शेष	1,348,359.54	920,612.48		क) अथ शेष	..	..
	जोड़िए–बचत बैंक खाते पर प्राप्त ब्याज की धनराशि	35,816.46	59,223.06		ख) जोड़िए–वर्ष के दौरान जमा धनराशि	..	..
	सामान्य खाते से अंतरित धनराशि	7,500,000.00	7,000,000.00				
	श्री शकील अहमद के संबंध में पेंशन अंशदान की बाबत आई.एच.बी.ए.एस. से प्राप्त धनराशि		50,032.00	2.	इति शेष	2,712,710.00	1,348,359.54
	जोड़	**8,884,212.00**	**8,029,867.54**				
	घटाइए–की गई अदायगियां						
	मृत्यु–व–सेवा निवृति उपदान, पेंशन का संराशित मूल्य और छुट्टी नकदीकरण	2,832,960.00	3,600,696.00				
	पेंशन अदायगियां	3,338,542.00	3,080,776.00				
	कुल जोड़	**2,712,710.00**	**1,348,359.54**		कुल जोड़	**2,712,710.00**	**1,348,359.54**

संगठन का नाम : केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

गृह निर्माण अग्रिम के संबंध में वर्ष 2005–2006 का प्राप्ति और अदायगी लेखा

(आंकड़े रुपयों में)

क्र.स.	प्राप्तियां	चालू वर्ष	पिछला वर्ष	क्र.स.	परिसंपत्तियां	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	अथ शेष सामान्य खाते से अंतरित धनराशि	660,845.63	1,000,000.00	1.	वर्ष के दौरान अदा किए गए गृह निर्माण अग्रिम 1. श्री ए.के. तिवारी रु0 2,54,280.00	2,54,280.00	4000,000.00
2.	बचत बैंक खाते पर प्राप्त ब्याज	17,878.16	32,845.63	2.	इति शेष	501,395.49	660,845.63
3.	सामान्य खाते से अंतरित गृह निर्माण अग्रिम की वसूलियां	76,952.00	28,000.00				
	योग	755,675.79	1,060,845.63		योग	755,675.79	1,060,845.63

संगठन का नाम : केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद

गृह निर्माण अग्रिम के संबंध में 31.03.2006 को यथास्थिति तुलन–पत्र

(आंकड़े रुपयों में)

क्र.स.	देयतायं	चालू वर्ष	पिछला वर्ष	क्र.स.	परिसंपत्तियां	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	पूंजीगत निधि गृह निर्माण लेखा अथ शेष	1,032,845.63	1,000,000.00	1.	स्टाफ से वसूलीयोग्य गृह निर्माण अग्रिम अथ शेष रु0 373,000.00 (+) वर्ष के दौरान प्रदत रु0 254,280.00 रु0 626,280.00 (–) वसूल किया रु0 76,952.00 रु0 549,328.00	549,328.00	372,000.00 660,845.63
2.	बचत बैंक खाते पर प्राप्त ब्याज	17,878.16	32,845.63	2.	इति शेष बैंक शेष	501,395.49	
	जोड़	1,050,723.79	1,032,845.63		जोड़	1,050,723.79	1,032,845.63

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् (के.हो.अ.प.), नई दिल्ली के वर्ष 2005–2006 के लेखाओं पर लेखा–परीक्षा रिपोर्ट

1. प्रस्तावना

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद (परिषद), जो भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त भारसी संगठन है, की स्थापना होम्योपैथी में अनुसंधान के आयोजन, समन्वय, विकास और संवर्धन के लिए सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860 के अंतर्गत, 30 मार्च, 1978 को की गई थी । इसका गठन भूतपूर्व केन्द्रीय भारतीय औशधि और होम्योपैथी अनुसंधान परिषद्(सी.सी.आर.आई.एम.एच.) जो एक स्वायत्त निकाय थी, के विघटन के बाद किया गया था । परिषद्का पूरा वित्तपोशण भारत सरकार द्वारा किया जाता है और यह दश में होम्योपैथी में सुनियोजित अनुसंधान करने वाला सर्वोपरि संगठन बनी हुई है ।

परिषद् के लेखाओं की लेखा–परीक्षा करने का काम नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कर्त्तव्य, भाक्तियां और सेवा की भार्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20(1) के अंतर्गत वर्ष 2003–04 से 2007–08 तक पांच वर्ष की अवधि के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक को सौंपा गया है ।

परिषद् का वित्तपोशण मुख्य रूप से भारत सरकार से प्राप्त होने वाले सहायता अनुदानों से किया जाता है । वर्ष 2005–06 के दौरान परिषद् को आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय से 14.10 करोड़ रूपये के अनुदान (9.10 करोड़ रूपये योजनागत के अंतर्गत और 5.00 करोड़ रूपये गैर–योजनागत के अंतर्गत) प्राप्त हुए । मंत्रालय ने पिछले वर्ष (2004–05) के 53.26 लाख रूपये (योजनागत 2.31 लाख रूपये और गैर–योजनागत 50.95 लाख रूपये) के अनुदान की खर्च न की गई शेष राशि का उपयोग करने की अनुमति प्रदान की थी ।

2. लेखाओं पर टिप्पणियां

2.1 तुलन–पत्र

देयताएं

2.1.1 खर्च न किए गए अनुदान

परिषद्के पास 31 मार्च, 2006 को यथास्थिति निम्नलिखित भीर्शों के अंतर्गत खर्च न किए गए कुल 48.72 लाख रूपये के अनुदान थे :

	(लाख रूपये में)
नियमित अनुदान	28.56
विश्व स्वास्थ्य संगठन	00.59
कैलीफोर्निया विश्वद्यिालय लॉस एंजल्स (यू.सी.एल.ए.)	19.57

परिषद्के लिए खर्च न किए गए इन अनुदानों को मंत्रालय/अन्य निकायों को लौटाना या तुलन–पत्र के देयताओं के भाग में स्पश्ट रूप से "वापसी योग्य" के रूप में दिखाना आवश्यक था । तथापि, तुलन–पत्र में खर्च न किए गए इन अनुदानों को न तो लौटाया गया ओर न ही "वापसी योग्य" के रूप में दिखाया गया ।

2.1.2 देयता की न्यूनोक्ति

परिषद्ने मार्च 2006 के लिए देय 40.45 लाख रूपये का वेतन चालू देयता भीर्श के अंतर्गत दर्शाने के बजाए पूर्व प्रदत्त के रूप में दर्शाया । इसका परिणाम यह हुआ कि खर्च से अधिक आय की अत्युक्ति ओर चालू देयता की निम्नोक्ति हो गई । इसके परिणामस्वरूप भुगतान और वेतनों की अत्युक्ति भी हो गई । "चालू परिसंपत्तियां" भीर्श के अंतर्गत बकाया वेतन को पूर्व प्रदत्त के रूप में दर्शाना उचित नहीं है ।

परिसंपत्तियां

2.1.3 बकाया अग्रिम

दिनांक 31 मार्च 2006 को यथास्थिति 5.20 करोड़ रूपये के अग्रिम बकाया थे (अनुसूची 4–चालू परिसंपत्तियां) । ग्रह विभिन्न अनुसंधान इकाइयों/संस्थानों को दिए गए थे और समायोजन के लिए लंबित थे । यह अग्रिम, जो 31 मार्च 2005 को

221.09 लाख रूपये के थे, बढ़कर 31 मार्च 2006 को 5.20 करोड़ रूपये के हो गए और इस प्रकार उनमें 248.80 प्रतिशत की वृद्धि हो गई । तथापि इन इतने अधिक बकाया अग्रिमों की पुष्टि संबंधित इकाइयों से प्राप्त नहीं की गई । इन बकाया अग्रिमों का वर्ष–वार विभाजन निम्नलिखित है :

अवधि	लाख रूपये में अग्रिम
31.02.2001 तक	6.00
2002–03	0.73
2003–04	0.12
2004–05	182.55
2005–06	330.83
कुल	**520.23**

2.1.4 निवश की अनुमोदित पद्धति का पालन न किया जाना

परिषद्ने वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित निवश की पद्धति का उल्लंघन करते हुए सामान्य भविष्य निधि/अंशदायी भविष्य निधि और पेंशन निधि शेष से संबंधित 9.05 करोड़ रूपये की पूरी धनराशि का, पिछले वर्षों 2003–04 और 2004–05 की लेखा–परीक्षा रिपोर्ट में दी गई टिप्पणियों के बावजूद, बैंकों में निवश कर दिया ।

2.1.5 मुख्य लेखे में "गृह निर्माण अग्रिम निधि" पेंशन निधि और सामान्य भविष्य निधि का भामिल न किया जाना

परिषद्ने 2005–06 अवधि के लिए अलग प्राप्ति और भुगतान लेखा और गृह निर्माण अग्रिम निधि के लिए 31 मार्च 2006 को यथास्थिति तुलन–पत्र तैयार किया है । तथापि, वर्ष 2004–05 की लेखा–परीक्षा रिपोर्ट के पैरा 2.2.3 में दी गई विशिश्ट लेखा–परीक्षा टिप्पणी के बावजूद इसने, परिषद्के मुख्य लेखे में इसका उचित प्रकटीकरण नहीं किया है ।

इसी प्रकार, परिषद् ने परिषद्के मुख्य लेखे में पेंशन निधि और सामान्य भविष्य निधि का कोई प्रकटीकरण नहीं किया है, हालांकि इसने इन निधियों के लिए लेखे के अलग सैट तैयार किए थे ।

3. सामान्य

3.1 निधियों का विपथन

परिषद् ने ऊटी अनुसंधान उद्यान के पट्टा किराया के भुगतान पर योजनागत निधियों से 9.43 लाख रूपये की धनराशि को उपयोग कर लिया । यह व्यय गैर–योजनागत निधियों पर तर्कसंगत प्रभार था । इसके परिणामस्वरूप गैर–योजनागत कार्यकलापों के लिए 9.43 लाख रूपये की योजनागत निधि का विपथन किया गया ।

3.2 वास्तविक सत्यापन नहीं किया गया

परिषद् ने 31 मार्च, 2006 को यथास्थिति तुलन–पत्र में 2.34 करोड़ रूपये मूल्य की परिसंपत्ति नहीं दर्शायी । तथापि, वर्ष 2005–06 के दौरान इन परिसंपत्तियों का वास्तविक सत्यापन नहीं किया गया । इसके अभाव में, तुलन–पत्र में दर्शायी गई परिशुद्धता का सत्यापन लेखा–परीक्षा में नहीं किया गया ।

लेखा–परीक्षा टिप्पणियों का निवल प्रभाव

पूर्ववर्ती पैराग्राफों में दी गई टिप्पणियों का निवल प्रभाव यह है कि परिषद् की परिसंपत्तियों और देयताओं दोनों की 40.45 लाख रूपये की अत्युक्ति की गई ।

ह/–
महानिदेशक लेखा–परीक्षा
केन्द्रीय राजस्व

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक :

लेखा–परीक्षा प्रमाणपत्र

मैनें 31 मार्च, 2006 को यथास्थिति केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्की संवद्ध तुलन–पत्र की और उस तारीख को समाप्त वर्ष के आय एवं व्यय लेखे, प्राप्ति एवं भुगतान लेखे की लेखा–परीक्षा की है । इन वित्तीय विवरणों को तैयार करने की जिम्मेदारी परिषद्के प्रबंधन की है । मेरी जिम्मेदारी मेरी लेखा–परीक्षा पर आधारित इन वित्तीय विवरणों पर अपनी राय व्यक्त करना है ।

मैनें अपनी लेखा–परीक्षा, भारत में आमतौर पर स्वीकार किए गए लेखा–परीक्षा के मानकों और लागू हाने वाले नियमों के अनुसार की है । इन मानकों में यह आवश्यक है कि मैं इस बारे में तर्कसंगत आश्वासन प्राप्त करने के लिए लेखा–परीक्षा की योजना बनाऊं और लेखा–परीक्षा करूं कि क्या वित्तीय विवरण, महत्वपूर्ण अययार्थ विवरणों से मुक्त हैं या नहीं । किसी लेखा–परीक्षा में, परीक्षण आधार पर, धनराशि का समर्थन करने वाले साक्ष्य की जांच और वित्तीय विवरणों में प्रकटीकरण भागिल होता है । मुझे विश्वास है कि मेरी लेखा–परीक्षा मेरी राय के लिए एक तर्कसंगत आधार प्रदान करती है ।

अपनी लेखा–परीक्षा के आधार पर मैं सूचित करता हूँ कि :

1. मैंने वह सभी सूचनाएं और स्पश्टीकरण प्राप्त कर लिये हैं जो मेरी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार हमारी लेखा–परीक्षा के उद्देश्य के लिए आवश्यक थे ।
2. इसके साथ संलग्न अलग लेखा–परीक्षा रिपोर्ट में दी गई टिपणियों की भार्त के अधीन, मैं सूचित करता हूँ कि इस रिपोर्ट से संबंधित तुलन–पत्र और आय एवं व्यय लेखे तथा प्राप्ति एवं भुगतान लेखे उचित ढंग से तैयार किए गए हैं और लेखा बहियों से मेल खाते हैं ।
3. मेरी राय में और मेरी सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार तथा मुझे दिए गए स्पश्टीकरणों के अनुसार :
   (i) लेखाओं में, लेखाओं के निर्धारित प्रपत्र के अंतर्गत अपेक्षित सूचना दी गई है,
   (ii) लेखाकरण नीतियों और उन पर दी गई टिप्पणियों के साथ पठित और इसके साथ संलग्न अलग लेखा–परीक्षा रिपोर्ट में उल्लिखित महत्वपूर्ण मामलों की भार्त के अधीन उक्त तुलन–पत्र, आय और व्यय लेखे / प्राप्ति और भुगतान लेखे सही और उचित तस्वीर पेश करते हैं ।
   (क) जहां तक यह 31 मार्च, 2006 को यथास्थिति केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्के व्यवसाय के तुलन–पत्र से संबंधित है, और
   (ख) जहां तक यह, उस तारीख को समाप्त वर्ष के लिए अधिशेश आय एवं व्यय लेखे से संबंधित है ।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक :

ह / –
महानिदेशक लेखा–परीक्षा
केन्द्रीय राजस्व

Annual Report 2005-06

English Version
अंग्रेजी रूपान्तर

CONTENTS

Subject	Page No.
Preface	1
Objectives	3
Administrative Report	7
- Organizational setup of CCRH	9
- Governing Body	10
- Standing Finance Committee	11
- Scientific Advisory Committee	12
- Sub-Committee for Drug standardization	12
- Sub-Committee for Clinical Research	13
- Sub-Committee for Homoeopathic Pathogenic Trial (Drug Proving)	13
- Representation of SC/ST in Council's Services	13
- Budget Provision	
Technical Report	19
• Clinical Research (Part I) & (Part II)	22
• Medical Relief in Natural Calamities/Epidemics	38
• Clinical Verification Research	70
• Drug Proving Research	75
• Drug Standardization	103
• Survey, Collection &Cultivation of Medicinal Plants	107
Collaborative studies	111
- International	117
- Research Studies in India	118
• Extramural Research Scheme	121
Publications	125
Documentation and Library	126
Micellaneous	129
- Meetings of Committees	130
- Workshops/Seminars/Orientation programmes	131
- Health Melas/Exhibitions	133
Institutes/Units under CCRH	135
Abbreviations	139
Accounts	

Preface

To streamline research in Homoeopathy, the need of planned and organized research was strongly felt by the Government of India. As a result, the Central Council for Research in Indian Medicines & Homoeopathy (CCRIMH) was established in 1969 to carry out researches in Ayurveda & Siddha, Unani Medicine, Yoga & Naturopathy and Homoeopathy. The Central Council for Research in Homoeopathy (CCRH) was formally constituted on 30th March 1978 as an autonomous organization of the Ministry of Health & Family Welfare. It was however in January 1979, that the Council started functioning as an independent organization.

The Central Council for Research in Homoeopathy is a premier organization engaged in research in Homoeopathy in the country. It carries out its objectives through a network of 37 Institutes and Units located in different parts of the country. These centres carry out research in various aspects of Homoeopathy. The principal areas of research are : Clinical Reasearch, Drug Proving, Clinical Verification, Drug Standardization and Survey, Collection & Cultivation of Medicinal Plants.

The Council has concluded Clinical Research work on 33 diseases assigned to its Institutes & Units in general & tribal areas. Under its Drug Proving programme, it has made some significant achievement in proving of new drugs, especially those of indigenous origin and concluded work on 71 drugs. It has also completed Pharmacological studies on 227 drugs; Physico-chemical studies on 205 drugs & Pharmacognostical studies on 124 drugs used in Homoeopathy under its Drug Standardisation Programme. The Clinical Verification of 55 drugs has been completed and the symptomatic data generated has been published for the benefit of profession.

The Council has so far published 27 volumes of CCRH Quarterly Bulletin, 36 issues of CCRH News, 24 Handouts/Folders on various diseases, 08 non-priced books & 23 priced Books besides Current Health Literature Awareness Service and Medico Abstracts for the benefit of the profession and common man and prepared two Video films, i.e. 'Magic of Tiny Globules' and 'Homoeopathy: Myths and Facts' for information of general public.

The actual expenditure of the Council in the year 2005-2006, was Rs. 905.55 lakhs under Plan and Rs. 550.03 lakhs under Non-Plan.

I am happy to present the Annual Report of the Council for the year 2005-06 highlighting its various activities and achievements during this period.

Prof. C. Nayak
Director

OBJECTIVES

The Central Council for Research in Homoeopathy was established on 30th March, 1978 under the Societies Registration Act XXI of 1860 with following main objectives:-

- To undertake any research or other programmes in Homoeopathy.
- To propagate knowledge and disseminate information pertaining to research in Homoeopathy.
- To undertake experimental measures in connection with causation, mode of spread, prevention and treatment of diseases.
- To initiate, aid, develop, coordinate scientific research in different aspects of Homoeopathy: Fundamental and Applied.
- To exchange information with other institutions, associations, societies interested in the objects similar to those of CCRH.

ADMINISTRATIVE REPORT

ORGANISATIONAL SETUP

The Council has a network of 37 Institutes/Units, including 11 Units in the tribal areas in the different parts of the country.

Central Research Institute	-	1	Kottayam (Kerala)
Homoeopathic Drug Research Institute	-	1	Lucknow (U.P.)
Regional Research Institutes	-	8	New Delhi, Puri (Orissa), Jaipur (Rajasthan), Mumbai (Maharashtra), Gudivada (Andhra Pradesh), Imphal (Manipur), Guwahati (Assam) Shimla (H.P.)
Clinical Research Units (H)	-	6	Bhopal (M.P.), Gurgaon (Haryana), Udupi (Karnataka), Port Blair (Andaman & Nicobar), Tirupathi (Andhra Pradesh), Chennai (Tamilnadu)
Clinical Research Units (Tribal areas)	-	11	Agartala (Tripura), Aizawl (Mizoram), Bharuch (Gujarat), Dimapur (Nagaland), Gangtok (Sikkim), Itanagar (Arunachal Pradesh), Jagdalpur (Chattissgarh), Pondicherry, Ranchi (Jharkhand), Shillong (Meghalaya), Siliguri (W.B.)
Drug Proving Research Units	-	3	Kolkata (W.B.), Midnapore (W.B.), Ghaziabad (U.P.)
Drug Standardisation Units	-	2	Ghaziabad (U.P.), Hyderabad (Andhra Pradesh)
Clinical Verification Units	-	3	Ghaziabad (U.P.), Patna (Bihar), Vrindavan (U.P.)
Survey of Medicinal Plants & Collection Unit	-	1	Udagamandalam (Tamilnadu)
Homoeopathic Treatment Centre (HTC)	-	1	Safdarjung Hospital (New Delhi)

****

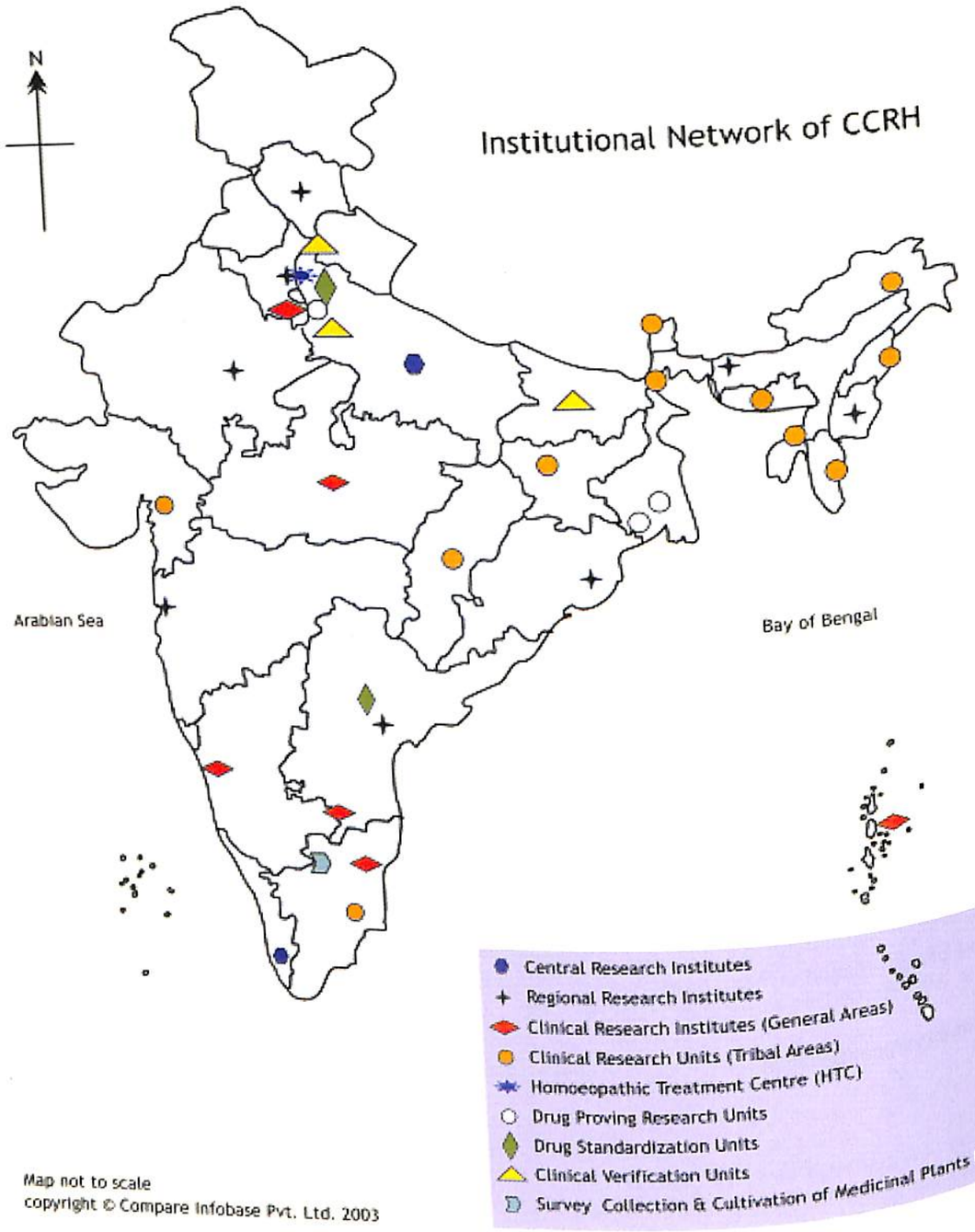

ERNING BODY

The Governing Body of the Council was reconstituted on 1st October 2003 for a period of three years. ominations to the Governing Body were made by the then Union Minister for Health & Family Welfare (in apacity as the President of the Central Council for Research in Homoeopathy, New Delhi exercising the rs conferred on her under Rule 19 of the Memorandum of Association and Rules, Regulations and Byelaws RH). The members of the reconstitued Governing Body are as under:

1.	Union Minister for Health & Family Welfare, Nirman Bhavan, New Delhi.	President
2.	Union Minister of State for Health & Family Welfare, Nirman Bhavan, New Delhi.	Vice-President-I (Official)
3.	Dr. Jugal Kishore, 86, Golf Links, New Delhi – 110 003	Vice President-II (Non-Official)
	OFFICIAL MEMBERS	Member
4.	Secretary (AYUSH), Deptt. of AYUSH, Red Cross Road, New Delhi.	Member
5.	Additional Secretary (FA) Ministry of Health & Family Welfare, Nirman Bhawan, New Delhi	Member
6.	Joint Secretary(AYUSH), Deptt. of AYUSH, Red Cross Road, New Delhi.	Member
	NON-OFFICIAL MEMBERS	
7.	Dr. Janardhan Reddy, Professor & Additional Director (Retd.) Govt. of Andhra Pradesh, H.No. 3-5-199/A 15, Street No. 5, Narayanaguda, SBH, Himayatnagar, Hyderabad.	Member
8.	Dr. B.N.Singh, Principal National Homoeopathic Medical College, 1, Viraj Khand, Gomti Nagar, Lucknow.	Member
9.	Dr. Kalyan Banerjee, I-1691, Chittaranjan Park, New Delhi-110019	Member
10.	Dr. V.K. Chauhan, B-6/8, Safdarjung Enclave, Near NCC Ofice, New Delhi-110029.	Member

11.	Dr. Arun B. Jadhava, Principal, Homoeopathic Medical College & Hospital, Bharti Vidhyapeeth, Katraj, Dhankawadi, Pune-411043.	Member
12.	Prof. M. Prabhakar, Ph. D., H. No. 6-4-361/26/A, Anjaneya Swamy Colony, Bholashpur, Secunderabad.	Member
13.	Prof. Y.K.Gupta, M.D., Head of the Dept. (Pharmacology) AIIMS, Ansari Nagar New Delhi.	Member
14.	Dr. V.G.R. Shastry, B-23 (D-II Type Flat), Moti Bag-1, New Delhi.	Member
15.	Director, National Institute of Homoeopathy, Block GE, Sector-III, Salt Lake City, Kolkata (W.B.)-700 106.	Member
16.	Director Central Council for Research in Homoeopathy, New Delhi.	Member-Secretary

The Governing Body manages the affairs of the Council, reviews the progress made and approves the new schemes / proposals recommended by the Scientific Advisory Committee / Standing Finance Committee and the budget of the Council.

STANDING FINANCE COMMITTEE

1.	Joint Secretary (AYUSH) Department of AYUSH, Ministry of Health & Family Welfare, Red Cross Road, New Delhi	Chairman
2.	Joint Secretary (FA) Ministry of Health & Family Welfare, Nirman Bhawan, New Delhi	Member
	Two Non-official members of the Governing Body nominated by thePresident of the Council:	Member
3.	Dr. Kalyan Banerjee, I-1691, Chittaranjan Park, New Delhi-110019	Member
4	Dr. Janardhan Reddy, Professor & Additional Director (Retd.) Govt. of Andhra Pradesh, H.No. 3-5-199/A 15, Street No. 5, Narayanaguda, SBH, Himayatnagar, Hyderabad.	Member
5.	Director, Central Council for Research in Homoeopathy, New Delhi.	Member-Secretary

ENTIFIC ADVISORY COMMITTEE

Tenure of the Scientific Advisory Committee of the Council, constituted by Hon'ble Minister for Health Family Welfare in his capacity as the President of the Governing Body of CCRH on13th August 2002 for a iod of three years, expired on 12th August, 2005. The members of the Scientific Advisory Committee were as ler:

1	Dr. Diwan Harish Chand, 1, Hanuman Road, New Delhi-110 001	Chairman Member
2	Dr. D.P. Rastogi, E-1/ B 7, Alaknanda Shopping Complex, New Delhi.	Member
3	Dr. V.K. Gupta, C-3 / 29, Rajouri Garden, New Delhi-110027	Member
4	Dr. V.K. Chauhan, Associate Professor, Nehru Homoeopathic Medical College and Hospital, B- Block, Defence Colony New Delhi.	Member
5	Dr. R.P. Patel, Hahnemann House, College Road, Kottayam, (Kerala)-686001	Member
6	Dr. Girish Gupta, Gaurang Clinic & Centre for Homoeopathic Research, B-1/16, Sector-A Kapoorthala, Aliganj, Lucknow, Uttar Pradesh.	Member
7	Dr. Kumar Dhawle, Mannesha, 2 8 5 - A, Fifth Road, Chembur, Mumbai-400 071.	Member
8	Dr. Janardhan Reddy, H.No. 3-5-199/A-15, Street No. 5, Narayanguda, SBH, Himayat Nagar Lane, Hyderabad (Andhra Pradesh).	Member-Secretary
9	Director, Central Council for Research in Homoeopathy, New Delhi.	

Special Committee for Drug Standardization

1	Dr. K.P. Muzumdar, 'Vivek', 105- TPS III, 14th Road Bandra, Mumbai-400 050.	Chairman
2	Dr. Meenati Nandi, Department of Pharmacology, National Institute of Homoeopathy, Sector-III , Salt lake City, Kolkata	Member
3	Dr. A.K. Basu, 22/1 (P 177) Ruby Park East , P.O. Haltu , Kolkata-700 078.	Member
4	Director, Central Institute of Medicinal & Aromatic Plants, P.O. CIMAP, Lucknow –226 015. or his representative	Member
5.	Director, Homoeopathic Pharmacopoeia Laboratory, CGO Complex, Hapur Chungi Road, Ghaziabad.	Member
6.	Dr. S.P. Singh, Adviser (Homoeo), Deptt. of AYUSH, Red Cross Building Red Cross Road, New Delhi.	Member
7.	Director, Central Council for Research in Homoeopathy, New Delhi.	Member-Secretary

Special Committee for Clinical Research

1	Dr. Diwan Harish Chand, 1, Hanuman Lane, New Delhi-110 001	Chairman
2	Dr. R.P. Patel, Hahnemann House, College Road, Kottayam (Kerala)-686 001	Member
3	Dr. Kumar Dhawle, Maneesha, 285-A, Fifth Road, Chembur, Mumbai–400 071	Member
4	Dr. V.T. Augustine, 401, Mandakini Enclave, Alaknanda, New Delhi–110 019.	Member
5	Dr. Eswara Das, Deputy Adviser (Homoeopathy) Deptt. of AYUSH, Red Cross Building Red Cross Road, New Delhi.	Member
6.	Director, Central Council for Research in Homoeopathy, New Delhi.	Member-Secretary

Special Committee for Homoeopathic Pathogenic Trial (Drug Proving)

1.	Dr. Jugal Kishore, 86, Golf Links, New Delhi – 110 003	Chairman
2.	Dr. V.K. Gupta, C-3/29, Rajouri Garden, New Delhi – 110 027	Member
3.	Dr. V.K. Khanna, Principal, Nehru Homoeopathic Medical College & Hospital, B-Block, Defence Colony, New Delhi – 110 024	Member
4.	Dr. S.K.Tiwari, Principal, Father Muller Homoeopathic Medical College, Kankanady, Mangalore – 575 002	Member
5.	Dr. Ashok Kumar Das, Professor, National Institute of Homoeopathy, Sector-III, Salt Lake City, Kolkata – 700 106	Member-Secretary
6.	Director, Central Council for Research in Homoeopathy, New Delhi.	

Representation of Scheduled Castes / Scheduled Tribes in the Council Services and Welfare measures for SC/ST:

The Council is following the orders and guidelines, issued from time to time by the Government of India in respect of reservation and representation of SC/ST in the services of the Council. The number of Sanctioned Posts, Filled Posts ,SC/ST and OBC employee's working in the Council as on 31.3.2006 was as under.

Group	Number of Sanctioned Post	No. of Filled	SC	ST	OBC
A	135	123	27	02	13
B	08	07	-	-	-
C	187	177	32	07	26
D	110	103	28	14	08

BUDGET

The following table shows the budget of the Council for the year 2005-06.

	B.E. 2005- 2006 (in lakhs)	R.E. 2005-2006 (in lakhs)	Actual Expenditure* (2005-2006) (in lakhs)
PLAN	1100.00	910.00	905.55
NON-PLAN	90.0	500.00	550.03
TOTAL	1590.00	1410.00	1455.58*

*Inclusive of utilization of receipts and adjustment of advances.

TECHNICAL REPORT

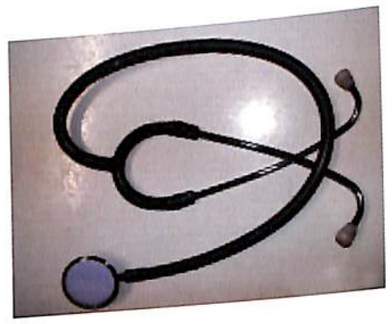

CLINICAL RESEARCH

1. Clinical research

Clinical research in Homoeopathy is complimentary to the drug proving and goes a long way in establishing clinical validity of the data collected during drug proving on healthy human beings. Clinical studies also facilitate assessment of therapeutic utility of drug substances in specific disease conditions thereby prompting their proper and optimum therapeutic use. In short, clinical studies on a targeted population of patients form an integral part of the development of therapeutic agents. The Council has, therefore, laid due emphasis on clinical evaluation of Homoeopathic medicines in certain disease conditions of National health importance, viz. Filaria, HIV/AIDS, Malaria, Cancer etc. and also in diseases that are common in different parts of the country. From October 2005, Clinical research studies, which include in both General & Tribal areas were undertaken at 1 Central Research Institute of Homoeopathy, 8 Regional Research Institutes of Homoeopathy, 1 Homoeopathic Drug Research Institute, 6 Clinical Research Units (in General areas) , 11 Clinical Research Units (in Tribal areas) and 1 Homoeopathic Treatment Centre in Safdarjung Hospital, New Delhi and in 2 Drug Standardization Units. The Annual Report for the year 2005-2006, therefore has been compiled in two parts. **Part I** contains data in respect of the following 23 clinical studies that were in progress in General Areas from April 2005 and August,2005

1. Behavioural disorders
2. Bronchitis
3. Cervicitis & Cervical Erosion
4. Communicable disease (Drug Resistant Tuberculosis)
5. Diabetes mellitus (NIDDM)
6. Diabetic Foot/ including Neuropathy
7. Epilepsy
8. Gastritis
9. Geriatric disorders
10. Giardiasis
11. HIV/AIDS
12. Intermittent fever
13. Irritable Bowel Syndrome
14. Leprosy
15. Leucoderma
16. Osteo arthritis
17. Paediatric problems
18. Periodontitis
19. Renal calculi
20. Sickle cell anaemia
21. Skin disorders (Scabies)
22. Tropical Eosinophilia
23. Upper Respiratory Tract Infection (URTI)

Criteria for the Assessment of Progress

The criteria adopted for clinical assessment of the progress of cases is as given below except in cases where specified otherwise.

• Cure	:	Complete removal of subjective and objective symptoms and thereafter no recurrence of complaints for a period varying from one week to three years depending on the nature of disease (acute/chronic/natural course of disease).
• Improvement - marked	:	Complete removal of subjective and objective symptoms.
- moderate	:	Complete removal of subjective symptoms and partial relief in objective symptoms
- mild	:	Partial relief in subjective and objective symptoms.

- No improvement : No response after treatment for a sufficient period.
- Worse : Aggravation of subjective and objective symptoms.
- Not reported : The patient does not report back after first,second or Third visit
- Dropped out : The patient does not fulfill the requirement of the project
  OR
  Attending physician does not want to keep the patient under study on valid reasons.
- Under observation : The condition of the patient keeps fluctuating.
  OR
  The patient reported at the fag end of the reporting year.

The positive gain of these findings is that Homoeopaths now have a smaller number of homoeopathic medicines with confirmed symptomatic indications to refer while dealing with patients. On the basis of outcome on the initial studies and identification of smaller group of Homoeopathic medicines in specific clinical conditions, the Council has undertaken 18 multicentric clinical studies to ascertain therapeutic utility of a smaller group of medicines on the Protocols developed in consultation with the experts in respective fields from All India Institute of Medical Sciences (AIIMS), Indian Council of Medical Research (ICMR), National Institute of Communicable Diseases (NICD), National AIDS Control Organization (NACO) and eminent homoeopathic Educators and Researchers.

Part II pertains to the research data of new studies obtained between October, 2005 and March, 2006. New studies were undertaken in October, 2005 on Protocols formulated in consultation with Expert Consultants from All India Institute of Medical Sciences (AIIMS), Indian Council of Medical Research (ICMR), National Institute of Communicable Diseases (NICD), National AIDS Control Organization (NACO) and eminent homoeopathic Educators and Researchers. There has been some inadvertent delay in starting the new clinical studies for reasons beyond control viz. identification and appointment of Consultants in respective disciplines and outsourcing of laboratory investigations as prescribed in the Protocol for each of the clinical studies. Proposals for these were approved by the Governing Body in its 15th Meeting held on 28 September, 2005 (approved Minutes were received in February, 2006). As such, appointment of Consultants and outsourcing of laboratory investigations could only be effected in March, 2006. Therefore, the data generated in the year under report and presented under Part II relates to screening of the subjects for enrolment in the clinical studies.

Clinical studies on the 18 new protocols have already been initiated and the protocol of Drug De-addiction is under preparation in consultation with Society of Youth for Promotional Mass (SYPM), a Delhi based Organization and collaborator in the study. The new studies are:

1. Open Clinical Trial to ascertain the role of homoeopathic therapy in the management of *Depressive Episode.*
2. To assess the feasibility of homoeopathic therapeutic intervention in *Schizophrenia*, an open clinical trial.
3. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in Simple and Mucopurulent *Chronic Bronchitis.*
4. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in *Chronic Sinusitis.*
5. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in *Benign Prostate Hyperplasia.*

6. A multicentric open clinical trial to ascertain the role of homoeopathic therapy in the management of Distress during climacteric (*Menopause*) Years.
7. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in *Furunculosis.*
8. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in the Management of *Gastroenteritis.*
9. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in the management of *Acute Tracheo-Bronchitis.*
10. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in *Urolithiasis.*
11. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in the management of *Acute Rhinitis in Children.*
12. A multicentric open clinical trial to ascertain the role of homoeopathic therapy in *Vitiligo.*
13. A multicentric clinical trial of Homoeopathic medicines in asymptomatic *HIV infection.*
14. A clinical trial of homoeopathic preparations of Cyclosporine, amyleum nitrosum, cocainum muriaticum, azathioprine and cortisone in *HIV infection.*
15. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in *Diabetic Distal Symmetric (primarily sensory) Polyneuropathy.*
16. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in *Tropical Eosinophilia.*
17. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in *Diabetic Foot Ulcer.*
18. A multicentric open clinical trial to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in the management of *Acute Diarrhoeal Disease in Children.*

PART-I

APRIL 2005 - AUGUST 2005

1. Behavioural disorders are fixed, less dependent upon the environment, and more difficult to treat. This project was assigned to Central Research Institute (H), Kottayam to evaluate the efficacy of Homoeopathic medicines.

i) Senile and pre-senile organic psychotic condition

Three cases including 01 new cases were studied. Two of these showed moderate improvment and 01 cases showed mild improvement.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Lycopodium 200	01	01
Pulsatilla 1M	01	01

ii) Schizophrenia

Sixty three cases (including 12 new) were studied. Seven of these showed marked improvement, 06 moderate improvement and 07 mild improvement. Two cases showed no improvement. Forty one cases were under observation.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arsenic album 200, 1M	01	01
Belladonna 200	06	03
Calcarea carbonicum 200,1M	04	03
Ignatia 1M	03	01
Lachesis 200, 1M	05	02
Natrum muriaticum 200	03	02
Nux vomica 30, 1M	13	06
Pulsatilla 200	02	01
Stramonium 200	05	02
Sulphur 200,1M	09	04

iii) Affective Psychosis

One hundred twenty six cases (including 43new) were studied. Thirty two (32) of these showed marked improvement, 26 moderate improvement and 21 mild improvement. Forteen cases showed no improvment. Twenty one cases were under observation and 12 cases did not report.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arsenic album 200,1M	07	03
Belladonna 200,1M	26	10
Gelsemium 200, 1M	04	03
Hyoscyamus 1M	06	03
Ignatia 200,1M	17	05
Lachesis 200	10	03
Natrum mur. 200	04	02
Nitric acid 200, 1M	10	03
Nux vomica 200,1M	09	06
Phosphorus 200,1M	20	07
Platina 200,1M	04	02
Pulsatilla 200,1M	23	08
Sulphur 200,1M	11	04

iv) Alcoholic Psychosis

Seven cases including (04 new) were studied. Three of these showed marked improvement, 01 moderate improvment and two mild improvement. One case was under observation.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Lycopodium 200	01	01
Nux vomica 200	02	01
Sulphur 200	02	02

v) Paranoid disorder

Seven cases (including 03 new) were studied. Three of these showed marked improvement, and 03 moderate improvement. One case was under observation.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Lachesis 200,1M	03	02
Phosphorus 200	01	01
Pulsatilla 200,1M	01	01
Sulphur 200,1M	01	01

vi) Psychosis with origin specific to childhood

Thirteen cases (including 06 new) were studied. Five of these showed marked improvement and 08 moderate improvement.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Calcarea carb. 200, 1M	03	02
Lycopodium 200	02	01
Phosphorus 200,1M	03	02

vii) Psychosomatic disorders

One hundred twenty three cases (including 28 new) were studied with various clinical problems and they have been found to be improved in varying degrees.

2. Bronchitis

The project: 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Bronchitis' was assigned to Clinical Research and Epidemic Cell, Bhopal and Regional Research Institute(H), Guwahati. Forty nine cases were studied. Nineteen of these showed marked improvement, 21 moderate improvement and 08 mild improvement. One case did not improve.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Aconite nap. 30	03	03
Bryonia alb. 30,200	03	03
Dulcamara 30	02	02
Arsenic iodatum 30	04	04
Rhus toxicodendron 30,200	12	12
Drosera 30,200	02	02
Spongia 30	07	07
Hepar sulph.30	02	02
Justicia adh. 30	03	03

In course of study it has been observed that FDI in subsequent attacks has been reduced and controlled effectively.

3. Cervicitis and Cervical Erosion

The project: 'To evaluate the action of homoeopathic medicines in Cervicitis and Cervical erosion' was assigned to Clinical Research units (H) Shimla and Drug Standardisation unit (Extension Unit), Hyderabad. Twenty cases (including 17 new cases) were studied. Three of these showed marked improvement, 03 moderate improvement and 04 mild improvement. Four cases did not report out and 06 cases were under observation.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Alumina 30,200	01	01
Kreosote 30,200	01	01
Lachesis 30	01	01
Natrum muriaticum 30,200	02	01
Nitric acid 30	01	01
Sepia 30,200	04	01
		02

5. Communicable diseases

The project: ' To find out the efficacy of Homoeopathic medicines in Communicable diseases was as signed to Clinical Research Unit (H) Tirupati.

Thirty four cases (22 new cases) were studied. Nineteen of these were cured, and 03 got moderate improvement. No recurrence was observed in 19 cases.

Status of 34 cases (22 new cases) studied e.g. Influenza - 16 , Dysentery- 04, Infective Gastro enteritis- 02.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms of the diseases stated below:-

Influenza

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arsenic album 30,200	05	04
Belladonna 30,200	03	03
Eupatorium perfoliatum 30,200	02	02
Gelsemium 30,200	02	01
Rhus tox. 30,200	04	03

Dysentery

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Aloe soc. 200	01	01
Merc. sol. 30,200	01	01
Nux vomica 30,200	02	02

Gastro-enteritis

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arsenic album 30,200	01	01
Carbo veg. 30,200	01	01

5. Diabetes mellitus (NIDDM)

Regional Research Institute(H), New Delhi, Clinical Research Units (H) at Chennai and Gurgaon were assigned the project: 'To evaluate the action of homoeopathic medicines in Diabetes mellitus'. Status of 25 cases studied; 06 markedly improved, 05 moderately improved, 11mildly improved and 03 not im proved.

The following medicines have been found useful in relieving the symptoms of Diabetes mellitus in varing degree for the number of cases given below against each medicine:

Uranium nit. 30	02
Calcarea carbonicum 200	01
Acid phos. 30,200	04
Phosphorus 30,200	02
Natrum mur. 30,200	02
Pulsatilla 30,200	04
Insulin 30,200	07

6. Diabetic Foot including Peripheral Neuropathy

The project: 'To evaluate the efficacy of Homoeopathic medicines in Diabetic foot including Peripheral Neuropathy' was assigned to Drug Standardisation unit, Hyderabad'. Fifty eight cases (including 08 new cases) were studied. Subjective and objective symptoms have been relieved during the course of study.

The following medicines have been found useful in relieving the symptoms of Diabetic Foot including Peripheral Neuropathy in varing degree for the number of cases given below against each medicine:

Arsenic album 6,30,200	05
Mercurius solubilis 30,200	04
Natrum muriatium 30	05

Phosphorus 30	04
Pulsatilla 30	05
Silicea 30	03
Sulphur 30,200	05

1.
pr
cir

7. Epilepsy

Central Research Institute (H), Kottayam was assigned the project: To evaluate the action of Homoeo pathic medicines in Epilepsy. Ninety one cases (including 09 new cases) were studied. Two of these showed marked improvement, 06 moderate improvement and 02 mild improvement. Two cases did not improve. Three cases did not report and 02 cases dropped out.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arnica mont. 200	01	01
Opium 30	01	01
Phosphorus 30	01	01
Sulphur 30	01	01

8. Gastritis

The project: 'To evaluate the action of homoeopathic medicine in Gastritis' was assigned to Regional Research Institute (H), Imphal. Twenty six cases were studied. Seven of these showed marked improve ment, 08 moderate improvement and 11 mild improvement.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Anacardium 30,200	03	03
Arsenic album 30,200	11	09
Nux vomica 30,200	15	12
Phosphorus 30	04	04

9. Geriatric disorders

The project: 'To evaluate the action of homoeopathic medicine in Geriatric disorders' was assigned to Clinical Research Unit (H), Gurgaon and Drug Standardisation Unit, Hyderabad. Sixty three cases (including 10 new) were studied. Two of these showed moderate improvement and 34 mild improve ment. Ten cases showed no improvement.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Avena sativa	01	01
Bryonia	29	19
Causticum	02	02
Abroma augusta	06	05
Alumina	01	01
Lachesis	01	01
Lycopodium	02	01
Natrum muriaticum	01	01
Nux vomica	01	01
Pulsatilla	01	01

10. Giardiasis

The project: 'To evaluate the action of homoeopathic drugs in Giardiasis' was assigned to Clinical Research unit(H), Port-Blair. Twenty eight cases (including 20 new) were studied. Twenty three of these showed marked improvement and 02 moderate improvement. Two cases did not report and one dropped out. No recurrence was observed in 23 cases.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Atista indica 30	10	08
China 30	07	07
Podophylum 30	08	07
Sulphur 30	03	03

11. HIV/AIDS

Aim: 'To clinically evaluate the role of Homoeopathic medicines in the management of HIV/AIDS'. This project was assigned to Regional Research Units (H), Mumbai, Gudivada, New Delhi & Imphal, Clincal Research Unit (H), Chennai and Homoeopathic Treatment Center, Safdarjung Hospital, New Delhi.

Mode of transmission of Disease	No. of patients New	Old
• Sexual contact		
- Heterosexual	86	148
- Homosexual	01	-
• Infected needles / syringes	-	07
• Contaminated blood / blood products	-	-
• Materno- foetal (including Breast milk)	02	11
• Undetermined	04	-

Stages as per CDC Classification (At entry)

Stage-1- Acute sero conversion	--	--
Stage-II- Asymptomatic sero positive	53	99
Stage-III- Persistent Generalized Lymphadenopathy	12	06
Stage-IV (a)- AIDS Related Complex	24	34
Stage-IV (b)- ARC or AIDS with neurological manifestation	--	
Stage-IV(c)- Opportunistic infections includes (AIDS)	02	06
Stage-IV (d)- Malignancy	--	
Stage-IV (e)- other conditions/Pediatrics		
Under observation		
Not reported		
Expired.	02	

Out of 263 cases (93 new and 170 old) studied, some cases were registered during the period of April 2005 to March 2006. As such it is difficult to ascertain their status at the time of reporting due to short period of follow up. During the course of study it is observed that following indicated medicines helped in relieving many signs and symptoms viz. cough, oral candidiasis, headache, backache, loss of weight, weakness, chronic diarrhoea, genital eruptions etc. that are frequently seen in HIV infected people.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arsenic album 30, 200	18	17
Calc. Carb. 200	02	02
China 30,200	02	01
Merc. Sol. 200	37	36
Natrum mur. 200	11	11
Pulsatilla 200	18	17
Rhus tox. 30,200	46	43
Sepia 1M	02	02
Sulphur 30,200	02	01
Tuberculinum 200	02	01
Thuja 30,200,1M	03	03
Bryonia 30,200	38	38
Belladonna 30,200	02	02
Nux vomica 30,200	17	17
Lycopodium 30,200	10	09
Acid. Phos. 30	07	07
Aloes 30,200	09	09
Nitric acid 30	05	05

12. Intermittent Fever

The project: 'To evaluate the action of homoeopathic medicines in Intermittent fever' was assigned to Homoeopathic Research Institute, Jaipur. Thirty three cases (including 21 new) were studied. Nineteen of these were cured, 08 showed marked improvement and 06 moderate improvement. No recurrence was observed in 15 cases.

The following indicated medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arsenic album 30	04	04
Belladonna 30	03	03
China ars. 30	04	04
Eupatorium perfoliatum 30	06	06
Rhus toxicodendron 30	07	07

13. Irritable Bowel Syndrome

The project: 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Irritable Bowel syndrome' was assigned to Clinical Research unit (H), Port Blair.

Twenty cases (including 15 new) were studied. Seven of these showed marked improvement, 09 moderate improvement and 02 mild improvement. Two cases did not report. No recurrence was observed in 08 cases.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arsenic album 200	01	01
China 200	01	01
Lycopodium 200	04	03
Nux vomica 200	05	04
Phosphorus 200	04	03
Sulphur 200	03	02
Argentum nitricum 200	04	03
Gelsemium 200	03	03

14. Leprosy

The project 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Leprosy' was assigned to Regional Research Institute, Puri & Clinical Research Unit, Chennai.

The drugs which were found effective are Merc. sol. 30,200, Merc.bin.iod 6, 200, Silicea 30, 6X, 200, Sulphur 30, 200, Avena sativa 30, Rhus tox. 200 and Hydrocoytle 6.

An open clinical trial on Leprosy was initiated at Regional Research Institute, Puri in October, 2003. The cases were collected through mobile clinical camps. During April 2005 to September 2005, 20 cases which showed (A+B) positive skin smear were under study at Regional Research Institute, Puri. These cases had post residual complaints after MDT (Multi drug therapy). Out of these 20 cases, 03 cases showed grade "O" response i.e. absence of anesthesia / deformity / eye problems, planter ulcer; 04 cases showed response of grade "I" i.e. presence of any of the symptoms but no visible damage; 04 cases showed response of grade "II" i.e. presence of any of the above with visible damage; 05 cases are still under observation. 01 case showed no improvement and 03 cases dropped out.

15. Leucoderma

The project 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Leucoderma', was assigned to Regional Research Institute, Gudivada during April 2005 to August 2005.
Status of 164 cases (09 new and 155 old) were studied; 26 cases static, 05 cured, 08 markedly improved, 11 moderately improved, 08 mildly improved, 52 cases not reported, 40 cases not significant, 06 cases dropped out, 02 cases worse, and 06 cases excluded.

During the course of study it was observed that following indicated medicines helped in relieving the signs and symptoms in subjects enrolled in the study.

Name of medicine with potency	*Total*	*Cured*	*Marked relief*	*Mod. relief*	*Mild relief*	*Not signifi-cant relief*	*Static*	*Worse*
Ars.alb. 200	32	02	02	02	02	17	05	02
Calc. carb 200	03	01	00	00	01	00	01	00
Merc.sol.200	05	00	00	00	00	03	02	00
Phosphorus 200	28	00	03	04	01	11	09	00
Silicea 1M	03	01	02	00	00	00	00	00
Sulphur 200	14	00	01	01	01	06	05	00

Appearance of repigmentation - 72
Checked progression - 26

The following associated complaints presented by many subjects improved during trial

Associated complaints	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Hypertension	13	10
Hypotension	49	09

37 cases were improved with single remedy; 09 cases were treated with more than one medicine; 28 cases were treated with more than one medicine & inter-current remedies in between.

16. Osteo-arthritis

The project: 'To find out the action of Homoeopathic medicines in Osteo-arthritis' was assigned to Central Research Institute (H), Kottayam and Regional Research Institute (H), Gudivada. Two hundred and thirteen cases (including 57 new) were studied. Eight seven of these showed marked improvement, 50 moderate improvement and 59 mild improvement. Seven cases did not report.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arnica 200	01	01
Bryonia 200	60	60
Calcarea carbonicum 30,200	06	01
Causticum 30,200	21	21
Lachesis 30,200	03	03
Lycopodium 30,200	03	03
Rhus toxicodendron 30,200,1M	113	106

17. Pediatric Problems

The project: 'To evaluate the efficacy of homoeopathic medicines in Pediatric problems' was assigned to Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow, Regional Research Institute, Shimla, Drug Standardisation Unit, Hyderabad, Clinical Research units (H) at Gurgaon, Patiala and Tirupati.

293 cases were registered, out of which 133 cases were of Diarrhoea; 140 cases of Acute Respiratory Infection; 20 cases belong to Dentition related problems; 244 cases were cured, 01 markedly improved, 01 case did not improve, 32 cases did not report and 15 dropped out. Recurrence with less intensity was observed in 60 cases.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Aegle marmelos 30	02	02
Aloes 30	43	39
Arsenic album 30,200	14	10
Belladonna 30,200	07	06
Bryonia 30,200	48	41
Chamomilla 30	23	17
Dulcamara 30	01	01
Ipecac. 30	03	03
Justicia adh. 30	14	12
Merc. Cor.6,30	09	01
Merc. Sol.30,200	02	02
Nux vomica 30,200	02	02
Podophyllum 30	01	01
Rhus tox. 30	01	01
Senega 6	05	05
Spongia 30	04	04
Sulphur 30	02	02

18. Periodontitis

The project: 'To evaluate the action of homoeopathic medicines in Periodontitis'was assigned to Regional Research Institute (H), New Delhi and Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow .

Status of 35 cases studied: 31 markedly improved, 02 cases did not report and 02 cases dropped out.

The following medicines helped in relieving the toothache, swelling and tendernessof gums after treatment.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Kreosote 30	06	05
Mercurius solubilis 30,200	27	23
Mezerium 30	01	01
Hecla lava 30	01	01

19. Renal Calculi

The project: 'To evaluate the action of Homoeopathic Medicines in Renal Calculi' was assigned to Regional Research Institute (H), Imphal. Twelve new cases were studied. Two cases showed marked improvement, 04 cases had moderate improvement and 06 cases reported mild improvement.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Cantharis 30	03	03
Lycopodium 200	02	02
Sarasparilla 30,200	03	03
Berberis vulg. 30,200	03	03

20. Sickle Cell Anaemia

Consequent upon merging of Clinical Research Unit (T), Sambalpur with Regional Research Institute, Puri, Council continued the programme at Regional Research Institute, Puri. The Scientific Advisory Committee of the Council , keeping in view the need of the local people, desired that a three days camp may be held every month at Sambalpur for patients suffering from *Sickle Cell Anaemia* (SCA). During the year under report, 44 cases which presented with laboratory evidence of SCA were treated in the Camp showed relief from signs and symptoms of the disease. Medicines that were found effective are: China 200, Avena sativa Q, Natrum muriaticum 200, Bryonia alba 200, Chelidonium majus 30 and Acid phosphoricum 200. All of these 44 cases are being followed up.

21. Skin Disorders (Scabies)

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic drugs in Skin Disorders' was assigned to Homoeo pathic Drug Research Insitute, Lucknow and Clinical Research Unit (H), Udupi. Seven new cases were enrolled. As the number of patients enrolled in the study were very small, no definitive observations could be made.

22. Tropical Eosinophilia

The clinical open trial on Tropical eosinophilia was initiated in October, 2003 at Regional Research Institute (H), Puri and Clinical Research Unit (H), Port Blair. Ninety six cases were studied. Out of these, 64 showed mild improvement, 31 moderate improvement and 01 marked improvement

A reduction in eosinophilia count was noticed after six months of treatment. No recurrence was observed in 21 cases.

The following medicines relieved the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arsenic album 30,200	12	11
Rhus tox. 30,200	41	35
Apis mellifica 30	09	08
Bryonia alba 30,200	15	10
Pulsatilla nig. 30,200	05	04
Natrum muriaticum 30	03	02
Allium cepa 30	04	01

23. Upper Respiratory Tract Infections

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Upper respiratory tract Infections' was assigned to Regional Research Institute (H), Guwahati and Clinical Research cum Epidemic Cell, Bhopal. Twelve cases were studied. Out of these 12 markedly improved.

The following medicines relieved the frequency, duration and Intensity of the complaints.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arsenic album 30,200	05	05
Justicea 30,200	02	02
Rhus tox.30	04	04
Dulcamara 30,200	01	01

B. Clinical research in tribal areas

The Council was running clinical research units at twelve tribal locations with the objective of clinically evaluation of the efficacy of homoeopathic medicines, in the following clinical conditions:-

S.No.	*Clinical conditions*	*Assigned Homoeopathic medicines*	*Location*
1	Respiratory infections	Ferrum phos., Bryonia alba, Phosphorus, infectionsIpecacuanha, Antimonium ars., Kali bich., Kali carbonicum, Antimonium tartaricum, Veratrum viride, Spongia tosta.	Pondicherry
2	Menstrual disorders /Menopausal syndrome	Pulsatilla, Oophorinum, Nux vomica, Nux moschata, Ustilago maydis, Zincum vale., Glonoinum, Crotalus cascavella, Mangifera indica, Conium mac., Sulphur, Psorinum, Murex purpurea, Graphites, Sanguinaria can., Cimicifuga racemosa, Thlaspi-bursa-pastoris, Tuberculinum, Belladonna, Kalium carb., Erigeron c., Magnesium phosphoricum, Saraca-indica, Castoreum c., Lac caninum, Viburnum opulus, Xanthium spinosum, Sabina, Lachesis mutus, Calcarea carbonica, Sepia, Amyl nitrosum.	Pondicherry Ranchi (Jharkhand)
3	Cholera /Gastro-enteritis	Cuprum met., Veratrum alb., Camphora, Arsenicum album, Aethusa cyn., Phosphorus, Tabacum, Cuprum ars.m, Jatropha, Natrum sulph., Bismuthum.	Siliguri (W. B.)
4	Hypertension	Belladonna, Rauwolfia ser., Strontium carb., Strontium iod., Sumbulus moschatus, Baryta muriatica, Glonoinum, Adrenalin, Boerhaavia diffusa, Gratiola, Plumbum metallicum, Aurum metallicum, Viscum album, Veratrum album.	Gangtok (Sikkim) Aizawl (Mizoram)
5	Oral disorders	Borax, Belladonna, Baptisia, Kali chloricum, Kali muriaticum, Nitric acid, Muriatic acid , Mercurius dulcis, Mercurius sol., Natrum mur., Phosphorus, Arsenicum alb., Cinnabaris, Silicea, Hydrastis, Hepar sulphuris calcareum, Arum-triphyllum, Cundurango.	Dimapur (Nagaland)
6	Fever	Gelsemium semp., Veratrum viride, China officinalis, Chininum arsenicosum, Apis mellifica, Arsenicum album, Baptisia tinctoria, Pyrogenium, Acidum muriaticum, Mercurius solubilis, Opium, Hyoscyamus niger, Glonoinum, Helleborus niger, Cuprum met., Camphora officinalis, Conium maculatum, Eupatorium perfoliatum, Aconitum napellus, Rhus toxicodendron, Bryonia alba, Belladonna, Phosphorus, Tuberculinum, Stramonium carb., Sulphur, Cicuta virosa, Borax.	Aizawl (Mizoram)

7	Marasmus	Abrotanum, Ammonium mur., Calcarea sil., Silicea, Borax, Kreosotum, Tuberculinum, Argentum nitricum, Calcarea carbonica, Calcarea phosphorica, Iodium, Natrum mur., Sanicula aqua, Aethusa cynapium.	Gangtok (Sikkim) Itanagar (Arunanchal P.)
8	Jaundice	Aesculus hipp., Bry. alb., Mercurius sol., Hydrocotyle asiatica, China officinalis, Boerhaavia diff., Carica pap., Podophyllum peltatum, Nux vom., Digitalis pur., Carduus marianus, Natrum sulphuricum, TNT, Chelidonium majus.	Shillong (Meghalaya) Siliguri (West Bengal) Aizawl (Mizoram) Jagadalpur (Chhattisgarh)
9	Para nasal sinusitis	Mercurius sol., Sticta pul., Mercurius biniodatus, Kali iodat., Nitricum acid., Kalium iodatum, Silicea, Natrum mur., Sulphur, Teucrium marum verum, Thuja occ., Arsenicum iodatum, Kalium sulphuricum, Lycopodium clavatum, Carcinosinum, Hepar sulphuris calcareum, Pulsatilla nigricans, Hydrastis canadensis, Kalium bichromicum.	Agartala (Tripura) Shillong (Meghalaya) Dimapur (Nagaland)
10	Scabies & Furunculosis	Sulphur, Mercurius sol., Selenium, Ars. alb., Carboneum sulph., Dulcamara, Causticum, Arnica mont., Silicea, Hepar sulph. calc., Kali sulph., Carbo veg., Lycopodium , Belladonna, Lachesis, Psorinum, Rhus tox., Anthracinum, Secale cor., Petroleum, Crotalus horridus, Phosphoricum acidum.	Agartala (Tripura) Jagdalpur (Chhattisgarh) Bharuch (Gujarat)

Achievements:

I. Respiratory Infections

The project: To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Respiratory Infections was assigned to Clinical Research Unit (T), Pondichery. Three hundred forty two new cases were enrolled. Of these, Thirty nine cases were cured, 35 cases showed marked improvement, 42 had moderate improvement and 83 had mild improvement. Fifty two cases did not improve. Six cases dropped out from study.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Antimonium crud. 6,30,200,1M	30	15
Antimonium tart 6,30,200,1M	34	23
Bryonia alb. 6,30,200,1M	31	17
Ferrum phos. 6,30,200	27	19
Ipecac 6,30,200,1M	48	33
Kali bich. 6,30,200	51	23
Kali carb. 6,30,200,1M	15	08
Phosphorus 6,30,200	27	14
Spongia 6,30,200	34	23
Veratrum vin. 6,30,200	26	15

II. Menstrual disorders/ Menopausal syndrome

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Menstrual disorders/Menopausal Syndrome' was assigned to Clinical Research Units (T) at Pondichery and Ranchi. Two hunderd and eighty six cases were enrolled. Two cases of these were cured. Fifty two cases showed marked improvement, 62 had moderate improvement and 77 reported mild improvement. Twenty four cases did not improve. Fifty six cases cases did not report and 08 cases were dropped out from study.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Amyl nitrosum 6,30,200,1M	16	13
Belladonna 6,30,200	13	08
Calc. carb.6,30,200,1M	44	25
Cimicifuga 30,200,1M	16	11
Conium mac. 6,30,200	19	11
Erigeron 6,30,200,1M	01	01
Glonoine 6,30,200,1M	06	05
Graphites 6,30,200,1M	14	10
Kali carb. 6,30,200,1M	15	08
Lachesis 6,30,200,1M	20	12
Mag phos. 6,30,200	20	15
Murex 6,30,200,1M	02	01
Nux moschata	03	02
Nux vomica	09	05
Oophorinum 6,30,200,1M	01	01
Pulsatilla 6,30,200,1M	30	13
Psorinum 6,30,200	02	01
Sabina 6,30,200	06	03
Sanguinaria can. 6,30,200,1M	04	03
Sepia 6,30,200,1M	16	09
Sulphur 6,30,200	02	02
Thalaspi bursa p. 6,30	02	01
Tuberculinum 6,30,200,1M	13	12
Ustilago maydis 6,30	01	01

III. Cholera/Gastro- enteritis

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Cholera/Gastro-entritis' was assigned to Clinical Research Unit (T), Siliguri. One hundred twenty six cases were enrolled.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Veratrum alb. 30,200,1M	41	33
Ars.alb. 30,200	37	32
Phosphorus 30,200	08	04
Nat.sulph. 30,200	20	14
Bismuth 30,200	12	06
Aethusa 30,200	08	05

IV. Hypertension:

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Hypertension' was assigned to Clinical Research Units (T) at Gangtok and Aizawl. One hundred seventeen cases were enrolled. Sixty four of these showed marked improvement, 14 moderate improvement and 16 mild improvement. Fourteen cases did not improve and 04 cases were worse after treatment. Four cases did not report and 05 cases were dropped out from study.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Glonoine 200	34	25
Belladonna 200	28	20
Aurum met. 200	32	20
Baryta mur. 200	23	16

V. Oral disorders:

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Oral disorders' was assigned to Clinical Research Unit (T), Dimapur. Due to insufficient cases registered, data could not be reflected here.

VI. Fever (Intermittent / Remittent / Dengue / Japanese Encephalitis):

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Fever' was assigned to Clinical Research Unit (T) Aizawl. Due to insufficient cases registered, data could not be reflected here.

VII. Marasmus:

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Maramus' was assigned to Clinical Research Units (T) at Gangtok and Itanagar. Due to insufficient cases registered ,data could not be reflected here.

VIII. Jaundice:

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Jaundice' was assigned to Clinical Research Units (T) at Shillong, Siliguri, Aizawl and Jagdalpur. One hundred forty five cases were enrolled.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Chelidonium Q,30,200	53	42
Carduus mar. 30,200,1M	03	02
Nux vomica 30,200,1M	32	25
China officinalis 30,200,1M	16	12
Merc.sol. 30,200,1M	29	23
Bryonia album 30,200,1M	15	12
Natrum sulph. 30,200,1M	24	15

IX. Para nasal sinusitis:

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Para nasal sinusitis' was assigned to Clinical Research Units (T) at Agartala, Shillong and Dimapur. Thirteen cases were enrolled. Two of these showed marked improvement, 08 moderate improvement and 03 mild improvement.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Ars.iod. 30,200	06	06
Hydrastis can. 200	01	01
Kali bichrome 30,200	01	01
Natrum mur. 30,200	01	01
Nitric acid 30,200	01	01
Sulphur 200	01	01
Teucreum m. verum 30	01	01
Thuja occ. 200	01	01

X. Scabies & Furunculosis:

The project, 'To evaluate the action of Homoeopathic medicines in Scabies & Furunculosis' was assigned to Clinical Research Units (T) at Agaratala, Jagdalpur and Bharuch. Forty four cases were enrolled. Twenty four of these showed marked improvement, 12 moderate improvement and 05 mild improvement. Three cases did not report.

The following medicines helped in relieving the signs and symptoms.

Name of medicine with potencies	*Number of cases*	
	Prescribed	*Found effective*
Arnica montana 30	04	04
Hepar sulph 30	07	06
Merc.sol. 30,200	23	21
Rhus tox. 30	04	04
Sulphur 200	06	06

1.
pr
cir

PART-II
(OCTOBER, 2005-MARCH, 2006)

I. To Ascertain the Role of Homoeopathic Therapy in the Management of Depressive Episode

Introduction

The term depression is used to describe an emotional state, a syndrome, and a group of specific disorders. When seen as part of a syndrome or disorder, depression has autonomic, visceral, emotional, perceptual, cognitive , and behavior manifestations, as a non-pathological, ubiquitous mood state lasting for hours to days and sometimes even longer. Feelings of depression are synonymous with feeling sad, blue mood, down in the dumps, unhappy and miserable. A depressed mood is common and appropriate after a disappointment or a loss.

Depressive disorder is characterized by recurrent episodes of depression as specified in depressive episode, moderate or severe, without any history of independent episodes of mood elevation and over activity that fulfills the criteria of mania. However, this term can still be used if there is evidence of brief episodes of mild mood elevation and over-activity which fulfills the criteria of hypomania immediately after a depressive episode (sometimes precipitated by treatment of depression). An open study on behavioural disorders was undertaken to find out the most useful homoeopathic medicines, their clinical indications and most useful potencies, by the Council at Central Research Institute, Kottayam in 1991. Some case studies indicated that homoeopathic medicines can successfully be used in the treatment of depressive disorders. Work outside the Council indicates that deep-acting constitutional medicines are more useful in the management of this condition. Opinions differ on strategy to prevent subsequent relapses of depression. The Council has, in order to consolidate the gains of the earlier studies, undertaken a clinical trial to ascertain and evaluate the therapeutic role of Homoeopathic medicines in the clinical management of depression.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 100 (50 cases per annum)

Duration of the Study : 3 years + 2 months
(2 years for the enrolment + 1 year for the follow-up)

Objectives

Primary

To ascertain the role of homoeopathic therapy in the management of Depressive Episode with regard to Clinical Global improvement (CGI) and changes in the symptom complex of Hamilton Depression Rating Scale (HDRS).

Secondary

i. To ascertain the role of Homoeopathic medicine and to establish verified characteristic symptoms of medicine useful in the recovery of Depressive Episode
ii. To determine the most useful strategy for management of the different intensity of depressive episode.
iii. To check the progression to bipolar disorder..
iv. To prevent the relapse.

Study Site Central Research Institute, Kottayam

Methodology

The subjects enrolled in the study were drawn from the patients reported in the OPD of the Institute and who fulfilled the terms of Inclusion criteria laid down in the Protocol. Eligibility was ascertained by a Psychiatrist using standard criteria (ICD 10) and instruments Hamilton Depression Rating Scale (HDRS). There was 1 week "run-in" period and subject(s) who showed spontaneous improvement was/were withdrawn from the study. The symptoms presented by individual subjects were repertorized and appropriate medicine was prescribed after consultatiing Materia Medica. The Homoeopathic medicine(s) were prescribed on the basis of homoeopathic principle of similimum. Subjects enrolled in the study were followed up regularly as specified in the protocol.

Medicines Tried

The selection of the medicine was made by repertorising the presenting signs and symptoms of the individual case. The first prescription was that of the medicine that fetched highest value on repertorisation of the individual's presenting signs and symptoms. Individual subject's characteristic mental/emotional and physical attributes and concomitant(s), if any, were also taken into account for selection of medicine.

Results

During the period under report 11 cases were screened. All fulfilled the inclusion criteria and were enrolled in the study.

The following homoeopathic medicines, which were used during the trial elicited varying response from different subjects.

Medicine and potency	*Prescribed to*	*Number of cases Found effective in Providing Relief*		
		Marked	*Moderate*	*Mild*
Lachesis 200	2	0	0	1
Lycopodium 30	1	0	0	1
Natrum mur. 1M	2	0	0	1
Nux vomica 1M	1	0	0	1
Phosphorus 200	1	0	0	0
Platina 1M	1	0	0	1
Pulsatilla 200	1	0	0	0
Sepia 1M.10M	2	0	0	0
Sulphur 1M	1	0	0	0
Total	**12***	**0**	**0**	**5**

* One of the subjects received more than one medicine during the period under report.

Characteristic/clinical symptoms of the medicines verified during the study :

Lycopodium - Apprehensive, confused thoughts. Sadness in the morning when awakened. Time passes too slowly, Forgetful, Discouraged, fear of death, H/o sexual abuse in childhood. Desires sweet.

Natrum mur. - Bad effects of long continued grief, sadness & depressed, Indifference to relations, Headache on exposure to sun. Desires to lie down. Frightful dreams. Sadness on little incident. Weeping tendency. Startling during sleep. Occasional outbursts of anger.

Lachesis - Restless and uneasy. Does not want to attend the work. Talks repetitive. Slowness of activities. Difficult swallowing. Talkative, Subjects change from one to another, sad and despondent.

Sulphur - Aversion to mental work. Slowness of activities. Weakness. Inclination to lie down.

Platina - Irresistible desire to kill. Desire to kill her child by drowning. Suicidal disposition. Prostration in morning. Mental symptoms associated with suppressed menses.

Pulsatilla - Desires company, dull and sluggishness Lack of initiative. Sad and depressed. Slowness of activities. Delusion as if strange persons are her relatives.

Phosphorus - Easily tired, fearfulness. Oversensitive to external impressions. Restlessness, tendency to wander, Indifference.

Nux vomica - Time passes too slowly. Little ailments affects them greatly. Disposed to reproach on others. Loss of confidence, dull and depressed. Suicidal thoughts. Frightful dreams. Sense of fullness in chest.

Sepia - Indifference to relations, obstinate. Paranoid delusions. Weeping.

Observations

The disorder under study is recurrent in nature. There was a little reduction in HDRS and CGI in 02 subjects. It is, however, too early to make a definitive observation on this assessment alone.

II. A multicentric open Clinical Trial to Ascertain the Role of Homoeopathic Therapy in the Management of Distress during Climacteric (menopausal) years

Introduction

Nearly all women past child bearing age suffer from discomforting clinical manifestations immediately before and after cessation of menstruation (Menopause). Menopause is defined as the permanent cessation of menses for 1 year and is physiologically correlated with the decline in estrogen secretion resulting from the loss of follicular function. The years immediately preceding and the decades afterward, however, are of far greater clinical significance. No organized research study in menopausal and peri-menopausal disorders appears to have been conducted. The Council has also not undertaken any research study in this disorder. Therefore, a clinical study to conclusively ascertain the role of homoeopathic therapy in the management of sign and symptoms associated with distress during climacteric years was undertaken in 2005-06.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 400 (35 cases per year at each Centre)

Duration of the Study : 3 years (2 years for enrollment + 1 year follow-up) + 2 months for compilation of final report

Objectives

Primary

To ascertain the role of Homoeopathic therapy in the Management of Distress during Climacteric (menopausal) years .

Secondary

1. To assess the effect of indicated homoeopathic medicines on the level of the hormone FSH.
2. To see changes in Lipid profile
3. To see the changes in Bone density

Study Sites

Study was conducted at the following sites:

1. Regional Research Institute, Shimla
2. Drug Standardization Unit, Hyderabad
3. Clinical Research Unit, Ranchi
4. Clinical Research Unit, Pondicherry
5. Clinical Research Unit, Chennai.
6. Clinical Research Unit, Udupi

Methodology

The subjects enrolled in the study were drawn from the patients registered in the OPD of the Institute and Units and who fulfilled the terms of Inclusion criteria laid down in the Protocol. The symptoms presented by individual subjects were repertorized and appropriate medicine was prescribed after consulting Materia Medica. The Homoeopathic medicine(s) were prescribed on the basis of homoeopathic principle of similimum. Subjects enrolled were followed up regularly as specified in the protocol.

Medicines Tried

The selection of the medicine was made through repertorization of the presenting signs and symptoms of the individual case. The first prescription was of the medicine that held highest value on repertorisation of the presenting signs and symptoms of the disease and guided by the characteristic mental/emotional and physical attributes of the individual subjects and concomitant(s), if any.

Results

During the period under report 69 cases were screened for inclusion in the study. Twenty nine (29) of these, who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. There was varying response of individual subjects to different homoeopathic medicines used during the study.

Medicine and potency	*Prescribed to*	*Number of cases Found effective in Providing Relief*		
		Marked	*Moderate*	*Mild*
Crotalus horridus 30	01	0	0	1
Kreosote 30	01	0	0	1
Lachesis 30	01	0	0	1

Two of these cases experiences marked improvement, 01 moderate improvement, 08 mild improvement, 04 experienced no improvement, 03 did not report regularly. Four subjects dropped out of the study and 07 cases were under observation at the time of reporting.

Characteristic/clinical symptoms of the medicines verified during the study :

Crotalus horridus 30 - Hot flushes, anxiety, palpitation

Kreosote 30 - Hot flushes, leucorrhoea, dragging sensation in perineum

Lachesis 30 - Hot flushes and anxiety

Observations

When homoeopathic medicines Crotalus horridus 30, Kreosote 30, Lachesis 30, Nitric acid 30 were prescribed in Menopausal women, lot of improvement was noticed in the symptoms e.g. hot flushes, anxiety, palpitation, leucorrhoea etc.

III To assess the feasibility and advantage of Homoeopathic Therapeutic Intervention in Patients with Schizophrenia resistant to Conventional Medical Treatment. To ascertain the role of Homoeopathic Therapy in the fresh cases not on any other orm of treatment.

Introduction

Schizophrenia manifests in a multitude of signs and symptoms involving thought, perception, emotion, movement and behavior. These manifestations combine in various ways creating considerable diversity among patients but the cumulative effect of the illness is always severe and usually long lasting. The Council has been conducting clinical evaluation of Homoeopathic medicines in Behavioural disorders at Kottayam since 1984. Seven hundred forty three (743) cases of Schizophrenia were studied by 2002. An improvement rate of varying degree (mild to marked) was observed in 66% of cases. Though the study was an open trial, with no strict parameters of assessment, the clinical response rate was encouraging, which suggested positive role of Homoeopathy in the management of Schizophrenia. Due to lack of standardization of the study, the role of Homoeopathic therapy in Schizophrenia could not be ascertained conclusively. Therefore, the current study was planned on a detailed scientific protocol with definite outcome parameters, which are accepted internationally. Attempt is made to diagnose the cases in accordance with criteria prescribed under ICD 10 classification and to follow them as per guidelines in the protocol.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 300 (50 cases per year at each Centre)

Duration of the Study : 2 years (2 years for the enrollment + 1 year for the follow-up) + 2 months for compilation of final report

Objectives

Primary

- To assess the feasibility of Homoeopathic therapeutic intervention in 'Schizophrenia':
- To ascertain the role of homoeopathic therapy in the fresh cases not on any other form of treatment

Secondary

- To evaluate the Homoeopathic treatment in the Psychotropic drug resistant cases of Schizophrenia (i.e. no improvement more than 50%).
- To identify the prominent indications of the remedies commonly useful in the acute exacerbations.
- To check the recurrence of episodes.

Study Site

Central Research Institute, Kottayam

Methodology

The subjects enrolled in the study were drawn from amongst the patients reporting in the OPD of the Institute and who fulfilled the Inclusion criteria laid down in the Protocol. Eligibility was ascertained by a Psychiatrist using standard criteria (ICD 10) and instrument Brief Psychiatric Rating Scale (BPRS). The Homoeopathic medicine(s) were prescribed on the basis of homoeopathic principle of similimum. The symptoms presented by individual subjects were repertorized and appropriate medicine was prescribed after consulting homoeopathic Materia Medica. Subjects enrolled in the study were followed up regularly as specified in the protocol.

Medicines Tried

Selection of the medicine was made on the basis of presenting signs and symptoms, characteristic mental/emotional and physical attributes of the individual subject.

Results

During the period under report 19 cases were screened for inclusion in the study. Sixteen (16) of these who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. There was varying response to the different homoeopathic medicines used during the study, which is tabulated below.

Medicine and potency	*Prescribed to**	*Number of cases Found effective in Providing Relief*		
		Marked	*Moderate*	*Mild*
Arsenic album 30, 200, 1M	2	0	0	1
Belladonna 200,1M	3	0	0	2
Lycopodium 200	2	0	0	1
Nux vomica 30,200,1M	4	0	0	2
Phosphorus 30,200,1M	3	0	0	1
Stramonium 30,200,1M	4	0	0	3
Sulphur 30,200,1M	7	0	0	3

* Some of the subjects, depending on their clinical presentation received more than one medicine

Characteristic/clinical symptoms of the medicines verified during the study :

Arsenic album - Restlessness, delusion of persecution, disoriented, loquacity, spitting, irrelevant talk, gestures makes, indifferent, irritable, aversion to bath, laughing, grandious talk, anxiety, sleeplessness.

Belladonna - Laughing, grinding of teeth, weeping, muttering, sleeplessness, aversion company, fear of elephant, fear of black people, childish behaviour, death desires, wants to be naked, sadness, perspiration on nose.

Lycopodium - Restlessness, wandering, sleeplessness, auditory hallucination, fear of noise, constipation, hiding, smoking desire, fear of thunderstorm.

Nux. Vomica - Delusion of hearing, visual hallucination, aversion company, laughing, craving for smoking, delusions, sleeplessness.

Phosphorus - Fear of black people, disorientation, laughing, auditory hallucination, lazy, anger, ailments from fright, fear of dogs, wandering, religious, memory weak, laughing, staring look, absentminded.

Stramonium - Religious affection, abusive, anger, visual hallucination, collection of papers and washing desire, company aversion, confusion of mind, praying, delusion of communication with God, despair, disobedient, gestures make, desire to kill, laughing, irrelevant talk, muttering, restlessness.

Sulphur - Dullness, withdrawn, less communicative, sleeplessness, aversion to work, weeping, increased appetite, increased thirst, despair, laughing, thinking, perspiration profuse, concentration difficult.

Observations

The subjects enrolled in the study have been followed up for 6 months only, a very short period for making a definitive observation. However, reduction in the CGI (Clinical Global Impression Scale) was observed in 3 cases.

IV. A multicentric open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in the Management of Acute Rhinitis in Children

Introduction

Infections of the upper respiratory tract include some of the most common infectious disease encountered by physicians and other primary-care providers. Pharyngitis, laryngitis, rhinitis, sinusitis, otitis externa and otitis media account for millions of visits to physicians annually. Although these infections are usually mild enough to be treated on an outpatient basis, the primary-care physician must be able to recognize their serious complications, such as peritonsillar abscess from pharyngitis, subperiosteal abscess from frontal sinusitis, and temporal-bone osteomyelitis from invasive otitis externa. The physician must also identify potentially life-threatening infections of the head and neck, such as epiglotitis, Ludwig's angina and rhinocerebral mucormycosis. A study was hence planned to ascertain the role of Homoeopathic therapy in the management of signs and symptoms associated with Acute Rhinitis in Children.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 500 (50 cases per year at each Centre)

Duration of Study : 2 years + 2 months for compilation of final report

Objectives

Primary

To determine therapeutic efficacy of following 13 homoeopathic medicines in Acute Rhinitis in Children.

1. Aconite
2. Belladonna
3. Carbo vegetabilis
4. Calcarea carbonica
5. Chamomilla
6. Dulcamara
7. Elaps
8. Hepar sulphuricum
9. Kali bichromicum
10. Mercurius solubilis
11. Nux vomica
12. Pulsatilla
13. Sulphur

Secondary

- To ascertain and verify characteristic symptoms of medicines used.
- To ascertain additional/ clinical symptoms, if any, in respect of homoeopathic medicine(s) used during the study.
- To assess the degree of intensity of symptoms amenable to Homoeopathic treatment.
- To assess the role of Homoeopathic treatment in controlling progression of disease.

Study Sites

Study sites

1. Central Research Institute, Kottayam
2. Regional Research Institute, Imphal
3. Regional Research Institute, Shimla
4. Clinical Research Unit, Gurgaon
5. Clinical Research Unit, Port blair

Methodology

The subjects enrolled in the study were drawn from amongst the patients registered in the OPDs and who fulfilled the inclusion criteria. Homoeopathic medicine(s) used during the study were selected from amongst the medicines under trials and were prescribed in accordance with the Homoeopathic principle of Similimum. Those subjects who did not qualify for any of the medicines under trail were not enrolled in the study, but were treated in the OPD as any other patients. It being acute disease, subjects were followed up for a week and outcome assessment was made thereafter.

Medicines Tried

Selection of the medicine was made out of the medicines selected for clinical trial. The first prescription was of the medicine that showed the highest value on repertorisation of the presenting signs and symptoms of the disease. The selection was further guided by the characteristic mental/emotional and physical attributes of the patient and concomitant(s), if any.

Results

During the period under report 52 cases were screened for inclusion in the study. Twenty four (24) of these who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. There was varying response to the different homoeopathic medicines used during the study, which is tabulated below.

Medicine and potency	*Prescribed to*	*Number of cases Found effective in Providing Relief*		
		Marked	*Moderate*	*Mild*
Belladonna 6	02	01	01	00
Mercurius solubilis 6	02	01	00	00
Nux vomica 6	04	01	01	02
Pulsatilla 6	02	02	00	00

Characteristic/clinical symptoms of the medicinesverified during the study :

Belladonna - Nasal discharge, yellow in colour. Irritation in throat and eyes. Fever. Congestion in nasal mucosa. Conjunctival congestion.

Mercurius solubilis - Running nose. Sneezing. Watery nasal discharge. Nasal obstruction with discharge. Irritation in nose, throat, eyes with congestion in nasal mucosa.

Nux vomica - Sneezing. Running nose. Discharge watery/yellow. Irritation in nose, throat and eyes. Nasal obstruction with discharge. Congestion in nasal mucosa.

Pulsatilla - Watery/yellow nasal discharge. Irritation in nose, throat and eyes. Nasal obstruction with discharge. Congestion in nasal mucosa.

Observations

The results showed that homoeopathic medicines helped in relieving signs and symptoms of acute rhinitis in children as evident from the favourable shift from the Baseline score. Also, there was no incidence of any complication usually seen in children with recurrent rhinitis, in the subjects enrolled in the study.

V. A multicentric open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in Benign Prostatic Hyperplasia (BHP)

Introduction

The enlargement of prostate is one of the diseases that affect the old male and if untreated, handicaps him for the rest of his life. From 40 years of age the prostate increases in volume by 2.4 cm cube per year on average. The process begins in the periurethral (central) zone of the prostate and involves both glandular and stromal tissue to a variable degree. Associated symptoms are common from 60 years, and some 50% of men over 80 years of age will have lower urinary tract symptoms associated with benign prostatic hyperplasia (BPH). The risk of progression or complications is uncertain. However, in men with symptomatic disease, it is clear that progression is not inevitable and that some people with BHP experience spontaneous improvement or resolution of their symptoms.

A review of the available information indicate that there has been no significant research carried out to ascertain the role of homoeopathic therapy in the management of BHP. Further, the existing records of homoeopathic treatment of BHP, as reported in homoeopathic therapeutic books and Repertories needs scientific validation. As such, the Council has undertaken a study to ascertain role of homoeopathic medicines in the management of BHP in 2005-06.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 600 (50 cases per year at each Centre)

Duration of the Study : 3 years (2 years of enrolment + 1 year for follow up) + 2 months for compilation of final report

Objectives

Primary

To determine therapeutic efficacy of the following 20 homoeopathic medicines in Benign Prostatic Hyperplasia.

1. Apis mellifica
2. Argentum nitricum
3. Baryta carbonicum
4. Calcarea carbonica
5. Chimaphilla
6. Conium maculatum
7. Digitalis purpurea
8. Hyoscyamus
9. Lycopodium clavatum
10. Medorrhinum
11. Mercurius solubilis
12. Nitric acidum
13. Pareira brava
14. Phosphorus
15. Pulsatilla
16. Selenium
17. Silicea
18. Staphysagria
19. Sulphur
20. Thuja occidentalis

Secondary

- To determine and verify characteristic symptoms of medicine(s) used.
- To check the progression of Disease.

Study Sites

The Study was being carried out at the following sites:

1. Regional Research Institute, New Delhi
2. Regional Research Institute, Gudivada
3. Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow
4. Clinical Research cum Epidemic Cell, Bhopal
5. Clinical Research Unit, Siliguri
6. Clinical Research Unit, Tirupati

Methodology

The subjects enrolled in the study were drawn from the patients reported in the OPD of the Institute and who fulfilled the terms of Inclusion criteria laid down in the Protocol. The symptoms presented by individual subjects were repertorized and appropriate medicine was prescribed after consultatiing Materia Medica. The Homoeopathic medicine(s) were prescribed on the basis of homoeopathic principle of similimum. Subjects enrolled in the study were followed up regularly as specified in the protocol.

If any subject(s) did not qualify to receive one of the predefined medicines, he was not enrolled in the study, but treated in the OPD with any other indicated medicine.

Medicines Tried

Selection of the medicine was made out of the 20 medicines selected for clinical trial. The first prescription was of that medicine, which derived highest value on repertorisation of the presenting signs and symptoms of the disease and its selection was further guided the characteristic mental/emotional and physical attributes of the patient and concomitant(s), if any.

Results

During the period under report 142 cases were screened for inclusion in the study, three (03) of these who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. There was varying response to the different homoeopathic medicines used during the study, which is tabulated below.

Medicine and potency	*Prescribed to*	*Number of cases Found effective in Providing Relief*		
		Marked	*Moderate*	*Mild*
Lycopodium 30	03	--	03	--

Observations

No definitive observation could possibly be made, as the time of follow up of cases under study was very short and the natural history of BHP spread over years. Definitive observations would be made only after a sufficient number of cases are enrolled in the study.

VI. A Multicentric Open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in Chronic Sinusitis

Introduction

Sinusitis refers to an inflammatory condition involving the four-paired structures surrounding the nasal cavities. Sinuses are divided into anterior group (maxillary, anterior ethmoid and frontal sinuses; and a posterior

V. A multicentric open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in Benign Prostatic Hyperplasia (BHP)

Introduction

The enlargement of prostate is one of the diseases that affect the old male and if untreated, handicaps him for the rest of his life. From 40 years of age the prostate increases in volume by 2.4 cm cube per year on average. The process begins in the periurethral (central) zone of the prostate and involves both glandular and stromal tissue to a variable degree. Associated symptoms are common from 60 years, and some 50% of men over 80 years of age will have lower urinary tract symptoms associated with benign prostatic hyperplasia (BPH). The risk of progression or complications is uncertain. However, in men with symptomatic disease, it is clear that progression is not inevitable and that some people with BHP experience spontaneous improvement or resolution of their symptoms.

A review of the available information indicate that there has been no significant research carried out to ascertain the role of homoeopathic therapy in the management of BHP. Further, the existing records of homoeopathic treatment of BHP, as reported in homoeopathic therapeutic books and Repertories needs scientific validation. As such, the Council has undertaken a study to ascertain role of homoeopathic medicines in the management of BHP in 2005-06.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 600 (50 cases per year at each Centre)

Duration of the Study : 3 years (2 years of enrolment + 1 year for follow up) + 2 months for compilation of final report

Objectives

Primary

To determine therapeutic efficacy of the following 20 homoeopathic medicines in Benign Prostatic Hyperplasia.

1. Apis mellifica
2. Argentum nitricum
3. Baryta carbonicum
4. Calcarea carbonica
5. Chimaphilla
6. Conium maculatum
7. Digitalis purpurea
8. Hyoscyamus
9. Lycopodium clavatum
10. Medorrhinum
11. Mercurius solubilis
12. Nitric acidum
13. Pareira brava
14. Phosphorus
15. Pulsatilla
16. Selenium
17. Silicea
18. Staphysagria
19. Sulphur
20. Thuja occidentalis

Secondary

- To determine and verify characteristic symptoms of medicine(s) used.
- To check the progression of Disease.

Study Sites

The Study was being carried out at the following sites:

1. Regional Research Institute, New Delhi
2. Regional Research Institute, Gudivada
3. Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow
4. Clinical Research cum Epidemic Cell, Bhopal
5. Clinical Research Unit, Siliguri
6. Clinical Research Unit, Tirupati

Methodology

The subjects enrolled in the study were drawn from the patients reported in the OPD of the Institute and who fulfilled the terms of Inclusion criteria laid down in the Protocol. The symptoms presented by individual subjects were repertorized and appropriate medicine was prescribed after consultatiing Materia Medica. The Homoeopathic medicine(s) were prescribed on the basis of homoeopathic principle of similimum. Subjects enrolled in the study were followed up regularly as specified in the protocol.

If any subject(s) did not qualify to receive one of the predefined medicines, he was not enrolled in the study, but treated in the OPD with any other indicated medicine.

Medicines Tried

Selection of the medicine was made out of the 20 medicines selected for clinical trial. The first prescription was of that medicine, which derived highest value on repertorisation of the presenting signs and symptoms of the disease and its selection was further guided the characteristic mental/emotional and physical attributes of the patient and concomitant(s), if any.

Results

During the period under report 142 cases were screened for inclusion in the study, three (03) of these who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. There was varying response to the different homoeopathic medicines used during the study, which is tabulated below.

Medicine and potency	*Prescribed to*	*Number of cases Found effective in Providing Relief*		
		Marked	*Moderate*	*Mild*
Lycopodium 30	03	--	03	--

Observations

No definitive observation could possibly be made, as the time of follow up of cases under study was very short and the natural history of BHP spread over years. Definitive observations would be made only after a sufficient number of cases are enrolled in the study.

VI. A Multicentric Open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in Chronic Sinusitis

Introduction

Sinusitis refers to an inflammatory condition involving the four-paired structures surrounding the nasal cavities. Sinuses are divided into anterior group (maxillary, anterior ethmoid and frontal sinuses; and a posterior

group (posterior ethmoid and sphenoid sinuses. Although most cases of sinusitis involve more than one sinus maxillary sinus is most commonly involved, followed in frequency by ethmoid, frontal and sphenoid Sinuses in that order.

Acute sinusitis is defined as sinusitis of less than four weeks' duration Chronic sinusitis is characterized by symptoms of sinus inflammation lasting for more than 12 weeks. The illness is most commonly associated with either bacteria or fungi, and clinical cure in most cases is very difficult. Many patients have undergone treatment with repeated courses of antibacterial agents and multiple sinus surgeries, increasing their risk of colonization with antibiotic - resistant pathogens and of surgical complications. Patients often suffer significant morbidity over many years .Modern medicine acknowledges there is no complete recovery in Chronic Sinusitis and therefore radical surgery is the alternative.

Central Council for Research in Homoeopathy has carried out studies in Sinusitis (open trial) at four centers Gangtok (1991-2003), Vijayawada (1988-2003), Chennai (1988-2003) and Shimla (1985-1999). One thousand eight hundred and sixty nine (1869) cases were enrolled in the study and were analyzed for effectiveness of Homoeopathy. An improvement rate (in varying degrees) of 55% was reported on conclusion of the study. Cases were followed up both with constitutional, totality and pathological basis. However, no predefined protocol or parameters for objective evaluation were followed, there was no uniformity in results obtained from different Centres. Therefore, the studies offered no definitive conclusion. However, the subjective improvement in 55% of cases suggested a positive role of homoeopathic therapy in the management of sinusitis. Therefore, a multicentric clinical trial was undertaken with all universally adopted parameters for the assessment of outcome.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 500 (40 cases per year at each Centre)

Duration of the Study : 3 years (2 years of enrolment + 1 year for follow up) + 2 months for compilation of final report

Objectives

Primary

To determine therapeutic efficacy of following 17 homoeopathic medicines in Chronic Sinusitis.

1. Arsenic album
2. Calcarea carbonica
3. Cuprum mettalicum
4. Hepar sul. calcareum
5. Hydrastis
6. Kali bichromicum
7. Kali chlor.
8. Kali iod.
9. Kreosote
10. Lycopodium
11. Mercurius solubilis
12. Nux vomica
13. Phosphorus
14. Pulsatilla
15. Sanguinaria
16. Silicea
17. Thuja occ.

Secondary

- To ascertain the role of Homoeopathic medicine and to establish verified characteristic symptoms of medicine used.
- To assess the role of homoeopathic medicines in reversing the pathological changes due to Chronic Sinusitis.

- Determine the most useful strategy for management of the differing intensity.
- To prevent the relapse.

Study Sites

The following Institutes/Units have been selected for carrying out the research study keeping in view the adequacy of the manpower, facilities of Lab investigations and the willingness of the research personnel at the institute:

1. Regional Research Institute(H), Shimla
2. Regional Research Institute(H), Jaipur
3. Clinical Research Unit(H), Udupi
4. Clinical Research Unit(T), Agartala
5. Clinical Research Unit (T), Gangtok
6. Clinical Research Unit (T), Shillong

Methodology

The subjects enrolled in the study were drawn from the patients reported in the OPD of the Institute and who fulfilled the terms of Inclusion criteria laid down in the Protocol. The symptoms presented by individual subjects were repertorized and appropriate medicine from amongst the medicines under trial was prescribed after consulting homoeopathic materia medica. Homoeopathic medicine(s) were prescribed on the basis of principle of similimum. Subjects enrolled in the study were followed up regularly as specified in the protocol. Subjects which did not qualify to receive any of the medicines under trial were not included in the study, but treated like any other patient in the OPD.

Medicines Tried

Selection of the medicine was made out of the 17 medicines selected for clinical trial. The first prescription was of the medicine that derived highest value on repertorisation of the presenting signs and symptoms of the disease and its selection was further guided characteristic mental/emotional and physical attributes of the patient and concomitant(s), if any. The selection of the medicine was finalized in consultation with homoeopathic materia medica.

Results

During the period under report 172 cases were screened for inclusion in the study. Fourteen (14) of these who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. There was varying response to the different homoeopathic medicines used during the study, which is tabulated below.

Medicine and potency	*Prescribed to*	*Number of cases Found effective in Providing Relief*		
		Marked	*Moderate*	*Mild*
Kali bichromicum 30	05	05	--	--
Silicea 30	04	02	01	--
Lycopodium clavatum 30	02	02	--	--
Mercurius solubilis 30	01	01	--	--

Characteristic/clinical symptoms of the medicines verified :

Kali bich.- Obstruction of nose. Pain sinuses. Discharges from nose. Post nasal dripping. Cough with expectoration. Halitosis. Anosmia. Epixtaxis. General hot sensation.

Silicea - Obstruction of nose. Pain sinuses. Discharges from nose. Post nasal dripping. Cough with expectoration. Halitosis. Anosmia.

Lycopodium - Obstruction of nose. Pain sinuses. Discharges from nose. Post nasal dropping. Cough with expectoration. Halitosis. Anosmia. Flatulence. Eructations.

Merc. sol. - Obstruction of nose. Pain sinuses. Discharges from nose. Post nasal dripping. Cough with expectoration. Halitosis. Anosmia. Excessive salivation.

Observations

The results showed that homoeopathic medicines used during the study helped in relieving signs and symptoms of Chronic Sinusitis. Also, there was no incidence of any complication associated with chronic sinusitis. As number of subjects studies is too small and the time of follow up too short, no definitive observation could be made.

VII A Multicentric Open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in Diabetic Distal Symmetric (primarily sensory) Polyneuropathy

Introduction

Diabetes mellitus is a very common metabolic syndrome world-wide. Although Diabetes can be kept under control, the complications of Diabetes are the major cause of morbidity and mortality in uncontrolled subjects. Diabetic neuropathy is relatively early and common complication of Diabetes. Its prevalence is related to the duration of diabetes and the degree of metabolic control. It is almost always present in Diabetics aged 40 years or more and who have been diagnosed for at least 20 years. Some reports suggest that diabetic neuropathy is not effectively managed by conventional drugs even in patients whose diabetes remains under control.

Available information in homoeopathic literature indicate that no significant work has been done to elicit the efficacy of homoeopathic medicines in Diabetic Peripheral Neuropathy so far. There are some references of treatment of diabetic peripheral neuropathy with homoeopathic medicines, but the results need reproduction for validation. The Council, therefore, undertook a multicentric clinical study to ascertain the role of pre selected medicine (reported to be useful in diabetes and its complications) homoeopathic therapy 2005-06.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 500 (50 cases per year at each Centre)
** margin for drops outs has also been taken into account.*

Duration of the Study : 4 years (2 years for study + 1 year for follow up + 1 year for checking relapse)+ 2 months for compilation of final report

Objectives

Primary

To determine therapeutic efficacy of following 14 homoeopathic medicines in Chronic phase and 08 in Acute phase of Diabetic Distal Symmetric Polyneuropathy.

Chronic phase

1. Sulphur
2. Lycopodium
3. Rhus tox
4. Nux vomica
5. Phosphoric acid
6. Phosphorus
7. Arsenicum album
8. Conium mac
9. Cocculus
10. Opium
11. Rhododendron
12. Platina
13. Graphites
14. Stramonium

Acute phase

1. Sulphur
2. Chamomilla
3. Kali carb
4. Lycopodium
5. Rhus tox
6. Opium
7. Plumbum
8. Calcarea carb.

Secondary

- To determine and verify characteristic symptoms of medicine(s) used.
- To check the progression of Disease.

a) Following clinical findings will also be considered in the study:
b) Control of blood sugar levels
c) Changes in symptoms and signs of neuropathy
Changes in symptoms and signs of occlusive arterial disease

Study sites

The following Institutes/Units have been selected for carrying out the research study keeping in view the adequacy of the manpower, facilities of Lab investigations and the willingness of the research personnel at the institute:

1.
2.
3. Drug Standardisation Unit, Hyderabad
4. Regional Research Institute, Guwahati
Clinical Research Unit, Tirupati
Clinical Research Unit, Pondicherry

Methodology

The subjects enrolled in the study were drawn from the patients registered in the OPD of the respective Institute and Units and who fulfilled the Inclusion criteria prescribed in the Protocol. The symptoms presented by individual subjects were repertorized and appropriate medicine was prescribed after consulting homoeopathic materia medica. The Homoeopathic medicine(s) were prescribed on the basis of homoeopathic principle of similimum. Subjects enrolled in the study were followed up regularly as specified in the protocol. Subjects which did not qualify to receive any of the medicines under trial were not included in the study, but treated like any other patient in the OPD.

Medicines Tried

Phase. Selection of the medicine was made out of the 14 medicines selected for chronic phas and 8 for acute

Results

During the period under report 86 cases were screened for inclusion in the study. Twenty five (25) of these who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. There was varying response to the different homoeopathic medicines used during the study, which is tabulated below.

Medicine and potency	*Prescribed to*	*Number of cases Found effective in Providing Relief*		
		Marked	*Moderate*	*Mild*
Acid Phosphoricum 30	03	00	01	02
Arsenic album 30	01	00	00	01
Conium 30	01	00	00	01
Graphites 30	01	00	01	00
Lycopodium clavatum 30	05	01	02	02
Nux vomica 30	04	01	02	01
Phosphorus 30	02	01	01	01

Characteristic clinical symptoms of the medicinesverified during the study :

Acid Phos.30 - Diabetes mellitus; weakness; mental fatigue.

Ars. Alb.30 - Diabetes mellitus; mentally restless; physically weak.

Conium 30 - Diabetes mellitus; premature senility.

Graphites 30 - Diabetes mellitus; itching of the skin.

Lycopodium 30 - Diabetes mellitus; evening aggravation; loss of memory.

Nux vomica 30 - Diabetes mellitus; arthritis; leucorrhoea.

Phosphorus 30 - Diabetes mellitus; pains worse during heat; with excessive thirst.

Observations

The results showed that homoeopathic medicines used during the study helped in relieving signs and symptoms of diabetic neuropathy. As study has just began and the number of subjects enrolled is small and follow up insufficient, no definitive observation could possibly be made.

VIII. A Multicentric Open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in the Management of Acute Diarrhoeal Disease in Children

Introduction

An estimated four million children die each year from diarrhea and resultant dehydration worldwide and many more suffer malnutrition and delayed growth as a result of diarrhoea. Diarrhea is defined as either an increase in stool frequency or a decrease in stool consistency. Although most cases of Diarrhea in children are caused by viral, bacterial, and parasitic pathogens, yet no specific pathogen is usually identified in over 50 % of the children with diarrhoeal disease. Homoeopathic medicines have been reported to be highly effective in diseases of children.. However, no organized studies to ascertain their definitive role in the management of children's diseases are reported to have been conducted. The Council has undertaken clinical trials of

homoeopathic medicines in pediatric disorders, including diarrhea (Sept 2003- March 2004). The results indicated a positive role of homoeopathic therapy in the management of diarrhea in children, but the number of subjects enrolled in the study was not significantly large to facilitate a definitive conclusion. It prompted a multicentric study in diarrhoeal disease of children.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 300 (50 cases per year at each study)

Duration of the Study : 2 years + 2 months for compilation of final report

Objectives

Primary

To determine therapeutic efficacy of the following homoeopathic medicine(s) in acute diarrhoeal disease in Children.

1.
2. Aethusa cynapium
3. Calcarea sulphurica
4. Calcarea carbonica
5. Chamomilla
6. Magnesia muriaticum
7. Mercurius sol.
8. Psorinum
9. Ipecacuanha
10. Rheum
11. Silicea
12. Stramonium
13. Sulphur
14. Phosphorus
    Podophyllum

Secondary

i. To determine and verify characteristic symptoms of medicine[s] used.
ii. To ascertain additional clinical symptoms, if any, in respect of homoeopathic medicine(s) used during the study.

Study sites

The study is being conducted at the following sites:

i. Drug Standardization Unit (Ext.), Hyderabad
ii. Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow
iii. Clinical Research Unit, Gurgaon

Methodology

The subjects were drawn from amongst the patients reporting at OPDs and who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. Homoeopathic medicine(s) were prescribed in accordance with the Homoeopathic principle of Similimum from amongst the medicines under trail. Subjects who did not qualify to receive any of the predefined medicines wre not enrolled in the study, but treated like other patients in the OPD. It being acute disease, subjects were followed up for a week and outcome assessment was made thereafter.

Observations

During the period under report only 01 case was screened in accordance with the terms of the Protocol and enrolled in the study. It is too early to offer any definitive observations.

IX. A Multicentric Open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in the Management of Acute Tracheobronchitis

Introduction

Acute tracheobronchitis often follows acute Coryza. It starts with irritating unproductive cough accompanied by retrosternal discomfort, tightness in the chest and, if bronchi is involved , wheezing and breathlessness do occr. Sputum is initially scanty or mucoid. After a day or so sputum becomes mucopurulent, more copious and often blood stained. Acute bronchial infection may be associated with pyrexia (38-390 C) and a leucocytosis.

The Council had undertaken a clinical study at its research units at Jeypore and Gangtok. Six hundred eleven (611) cases were enrolled. Of these 434 cases responded favourably to homoeopathic therapy. Since the study was undertaken to ascertain the role of homoeopathic therapy in the management of bronchitis, only signs and symptoms ascribed to the medicines tried could be verified. No objective evaluation could be made.

In order to consolidate the gains of the earlier study and also to ascertain the definitive role supported by objective evidence, a new multicentric study with a uniform protocol was undertaken in 2005-06.

Number of Subjects to be Enrolled in the Study : 150 cases (25 cases per annum at each Centre)

Duration of Study : 2 years & 2 months (2 years of enrollment including followup & 2 months for compilation of report)

Objectives

Primary

To determine therapeutic efficacy of the following homoeopathic medicine(s) in acute tracheo-bronchitis.

1. Phosphorus
2. Arsenicum album
3. Pulsatilla
4. Bryonia
5. Lycopodium clavatum
6. Nux-vomica
7. Ipecac.
8. Kali carb.
9. Silicea
10. Aconite nap.
11. Natrum mur.
12. Spongia
13. Squilla
14. Stannum met.

Secondary

- To determine and verify characteristic symptoms of medicine(s) used;
- To ascertain additional/ clinical symptoms, if any, in respect of homoeopathic medicine(s) under trial, and
- To ascertain whether homoeopathic medicine(s) used during the study has/have any specific relationship with any particular season or thermal changes.

Study Sites

1. Clinical Research Unit, Ranchi
2. Clinical Research Unit, Siliguri
3. Regional Research Institute, Shimla

Methodology

The subjects were drawn from amongst the patients reporting at OPDs and who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. Homoeopathic medicine(s) were prescribed in accordance with the Homoeopathic principle of Similimum from amongst the medicines under trail. Subjects who did not qualify to receive any of the predefined medicines wre not enrolled in the study, but treated like other patients in the OPD. It being acute disease, subjects were followed up for a week and outcome assessment was made thereafter.

Results

During the period under report 79 patients who reported at the OPD of the concerned Units were screened for the study. Of these, 10 fulfilled the inclusion criteria and were enrolled in the study. One of these showed mild improvement and 9 were still under onservation at the time of reporting.

Arsenicum album and Belladonna were the two medicines which have so far been used.

Observations

No definitive observation could be made as the number of subjects studies so far is very small

X

A multicentric open clinical trial To evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in Diabetic Foot Ulcer

Introduction

Diabetes mellitus is a leading cause of non-traumatic lower extremity amputation. Foot ulcers and infections are a major source of morbidity in individuals suffering from diabetes mellitus.

The causation of lower extremity complications or diabetic foot forms a complex syndrome and involves interaction of several pathogenetic factors i.e. neuropathy, abnormal foot mechanisms, peripheral vascular disease, poor wound healing and increased tendency towards infections.

The risk factors associated with the development of lower extremity complication are male sex, diabetes of more than 10 years duration, abnormal structure of foot e.g. bone abnormality, callus formation, thickened nails, peripheral vascular disease, smoking and poor glycemic control.

The Council had undertaken a clinical study in diabetes mellitus (1997-2003). One hundred cases (53 male and 47 female) with diabetes mellitus were enrolled. Cephalandra Indica (Mother tincture) was clinically tried to ascertain its role in the control of blood glucose level. Ninety two (92) of these subjects manifested varying improvement from moderate to marked, both in clinical presentation and also blood glucose level.

A collaborative study with Princess Duru Shehvar Children Hospital at Hyderabad was undertaken at DSU Extension Unit located at the said Hospital was undertaken to find out the efficacy of homoeopathic medicines in the management of diabetic foot ulcer in August, 2003. Fifty (50) subjects diagnosed with the condition were enrolled in the study. The results showed a positive role of homoeopathic therapy in the management of diabetic foot ulcer.

To verify the results, a multicentric study has been undertaken at RRI, Gudiwada (AP) and DSU, HYDRABAD Extension Unit functioning at Princess Duru Shehvar Children Hospital, Hyderabad. The study aims at assessing the role of homoeopathic medicines in lowering the morbidity related to diabetic foot ulcers and reduction in need for surgical intervention.

Number of Subjects to be Enrolled in the Study : 200 cases (50 cases per year at each center)

Duration of study : 3 years (2 years for the study + 1 years for the follow-up + 1 month for the preparation of the report)

Objectives

Primary

To determine therapeutic efficacy of the following homoeopathic medicine(s) in diabetic foot ulcer.

1. Sulphur
2. Phosphoric acid
3. Silicea
4. Opium
5. Lycopodium
6. Mercurius sol.
7. Arsenic album
8. Pulsatilla
9. Lachesis
10. Chamomilla
11. Phosphorus
12. Graphites
13. Calcarea carb
14. Natrum mur
15. Sec cor.
16. Oleander
17. Rhus. tox.
18. Stramonium
19. Sepia
20. Nux vomica

Secondary

- To establish verified characteristic symptoms of medicines used.
- To ascertain additional/ clinical symptoms, if any, in respect of homoeopathic medicine(s) used during the study.

Study Sites

1. Drug Standardisation Unit (Ext).Hyderabad (site code-DS 01,E).
2. Regional Research Institute, Gudivada. (site code-RI 08).

Methodology

The selection of the drugs to trial has been arrived at by repertorising the symptoms of diabetic foot ulcer. The repertorisation was done using the Complete Repertory as the reference book. Considering the fact that the study pertains to the diabetic foot ulcer, the drugs given in the first grade (3 points) followed by those in the second grade (2 points) mentioned against the rubrics' non healing ulcers,' and ' ulcer on lower extremity' in the Complete Repertory were short-listed. To further minimize the variables, the specific prescribing symptoms of each of these drugs were also worked out after repertorisation of all the relevant rubrics.

Subjects who did not qualify to receive any of the predefined medicines were not enrolled in the study, but treated like other patients in the OPD.

Photographs of the ulcerated limb from same angle and same distance giving clear view of size, shape and extent of ulcer will be before, during and after treatment will be taken.

Results

During the period under report 3 subjects were screened. All 3 fulfilled the inclusioin criteria and were included in the study.

None of the three have shown any improvement in their condition by the time of reporting.

The medicines, which have been used so far are: Calcarea carb. and Lachesis in potencies varying from 30 to 200.

XI

A Multicentric open Clinical Trial to evolve a group of efficacious Homoeopathic Medicines in Simple and Mucopurulent Chronic Bronchitis

Introduction

Chronic bronchitis is a condition associated with excessive tracheobronchial mucus production sufficient to cause cough with expectoration for at least 3 months of the year for more than 2 consecutive years. Simple Chronic bronchitis describes a condition characterized by mucoid sputum production. Chronic mucopurulent bronchitis is characterized by persistent or recurrent purulence of sputum in the absence of localized suppurative diseases such as bronchiectasis.

The clinical presentation varies in severity from simple chronic bronchitis without disability to the severely disabled state with chronic respiratory failure. Despite well-planned management, the patient with predominant bronchitis may experience many episodes of respiratory failure from which recovery is frequent with proper therapy.

The Council had undertaken a study to see the effect of homoeopathic medicine on patients with chronic bronchitis. The results showed that homoeopathic medicines were useful in the clinical management of chronic bronchitis. The observation made were, however, about subjective improvement as emphasis was on to evolve a group of homoeopathic medicines which are useful in the management of chronic bronchitis, and were not based on laboratory evaluation.

The results prompted a detailed study with identified medicines and universally adopted parameters for the assessment of outcome.

Number of Subjects to be Enrolled in the Study : 1050 cases (75 cases per year at each Center)

Duration of Study : 4 years and 1month (2 years for the study + 2 years for the follow-up + 1month for the preparation of the report)

Objectives

Primary

The determine therapeutic efficacy of the following homoeopathic medicines in the management of Chronic Bronchitis.

1. Stannum metallicum
2. Hepar sulphuricum
3. Arsenicum album
4. Ipecacuanha
5. Phosphorus
6. Bryonia alba.
7. Lycopodium clavatum
8. Causticum
9. Pulsatilla nigricum
10. Antimonium tartaricum
11. Calcarea carbonica
12. Carbo veg.
13. Sulphur
14. Silicea
15. Dulcamara
16. Spongia tosta
17. Drosera rotundifolia
18. Cinchona officinalis

Secondary

- To determine and verify characteristic symptoms of medicine(s) used.
- To ascertain whether homoeopathic medicine(s) used during the study has/have any specific relationship with any particular season or thermal changes.
- To assess the role of homoeopathic medicines in reversing the pathological changes due to Chronic Bronchitis.
- Determine the most useful strategy for management of the differing intensity.
- To check the progression to complications.
- To prevent the relapse.

Study Sites

The study is being carried out at the following Institutes and Units.

1. Regional Research Institute, Guwahati
2. Regional Research Institute, Puri
3. Regional Research Institute, New Delhi
4. Central Research Institute, Kottayam
5. Clinical Research Unit, Chennai
6. Clinical Research Unit, Pondicherry
7. Clinical Research Unit, Tirupati

Methodology

The selection of the medicine from amongst the pre-selected medicines for trial was made by repertorising the signs and symptoms of Chronic Bronchitis. Repertorisation was made using the Complete Repertory as the reference book. Considering the fact that the study pertains to chronic bronchitis, the medicines in the first grade (3 points) followed by those in the second grade (2 points) mentioned against the rubric Chronic cough in the Complete Repertory were short-listed.

Results

A total of 180 subjects were screened. Of these 180 subjects, 43 fulfilled the inclusion criteria and were enrolled in the study. The response to the trial medicines is in the following Table.

Outcome	*Number of Subjects*
Cured	0
Marked improvement	02
Moderate improvement	15
Mild improvement	16
Static	10
No improvement	0
Worse	0
TOTAL	43

Homoeopathic Medicines Used

Sl.No.	*Medicine and Potency (ies)*	*Number of Subjects Prescribed to*	*Relief experienced by*
1.	Arsenicum album.6, 30,200,1M	22	
2.	Calcarea carbonica 30	01	18
3.	Phosporus 30	11	01
4.	Sulphur 30 ,200	01	11
5.	Antim tartaricum 6	01	01
			00
6.	Hepar sulphuricum 6	02	01
7	Pulsatilla nigricans 6	02	00
8	Stannum mettalicum 6	01	01
9	Spongia tosta 6	01	01
10	Silicea 6	01	01
	Total	**43**	**35**

XII A Multicentric Open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in Tropical Eosinophilia

Introduction

Tropical Eosinophilia is a syndrome often allergic in nature, characterized by hyper eosinophilia of 20 to 90 percent, paroxysms of dry hacking cough with parasitic infection and dyspnoea. Current evidence suggests that hypersensitivity to nonhuman and sometimes human nematodes results in their destruction in the tissues, especially the lungs, where their remnants stimulate a focal reaction. Tropical eosinophilia is an inclusive term for a condition of high eosinophilia associated with loss of weight, pulmonary symptoms sometimes resembling asthma or tuberculosis, and with characteristic radiographic pulmonary changes. There is a great increase in absolute numbers of eosinophils. The erythrocyte sedimentation rate (ESR) is increased.

It is characterized by a generalized tissue reaction with predominating pulmonary manifestations. The presence of cough, breathlessness, wheeze, marked increase in peripheral eosinophilia, and eosinophilic pulmonary infiltrates all indicate an underlying hypersensitivity reaction. Studies conducted elsewhere strongly suggest afilarial infection as an important underlying cause for hypersensitivity reaction in people with tropical eosinophilia.

The Council had conducted a clinical study in Filariasis at its Research Centres in Puri and Gudiwada (1984-2005). The results showed that homoeopathic therapy can be successfully used to treat some of the complications associated with Filarial infection.

A multicentric clinical study in Tropical Eosinophilia, irrespective of etiology, was undertaken by the Council at four of its Research Centres in 2005-06.

Number of Subjects to be Enrolled in the Study : 600 (50 cases per year at each center)

Duration Of Study : 4 years + 2 months (3 years for the study + 1 year for the follow-up + 2 month for the preparation of the final report).

Methodology

It is an open clinical trial. The selection of the 24 medicines has been arrived at by repertorising the signs and symptoms of Tropical Eosinophilia. The repertorisation was done using the complete repertory as the reference book.. Considering the fact that the study pertains to the tropical eosinophilia, the medicines in first grade followed by those in the second grade mentioned against the rubrics, dry paroxysmal cough < at night" and mucopurulent sputum in the complete repertory were short-listed for trial.

Objectives

Primary

The determine therapeutic efficacy of the following homoeopathic medicines in Tropical Eosinophilia.

1. Kali carbonica
2. Sepia
3. Lycopodium clavatum
4. Hyoscyamus
5. Silicea
6. Ferrum phos.

7. Calcarea carbonica
8. Carbo vegetabilis
9. Phosphorus
10. Sulphur
11. Cinchona officinalis (China)
12. Lachesis
13. Conium maculatum
14. Natrum muriaticum
15. Amonium carbonicum
16. Nitricum acidum
17. Causticum
18. Mercurius solubilis
19. Iodium
20. Pulsatilla nigricans

Secondary

- To identify homoeopathic medicines useful in the management of chronic bronchitis and ascertain and verify their characteristic symptoms
- To ascertain additional and/or clinical symptoms, if any, in respect of homoeopathic medicine(s) used during the study

Study Sites

1. Regional Research Institute, Puri
2. Regional Research Institute, Gudivada
3. Clinical Research Unit, Port Blair

Results

A total of 78 subjects were screened. All fulfilled the inclusion criteria and were enrolled in the study.

Outcome	*Number of Subjects*
Cured	0
Marked improvement	27
Moderate improvement	25
Mild improvement	19
No improvement	07
Worse	0
Not reported	0
Dropped out	0
Under Observation	0
TOTAL	**78**

Homoeopathic Medicines Used

Sl.No.	*Medicine and Potency (ies)*	*Number of Subjects Prescribed to*	*Relief experienced by*
1.	Arsenicum album	07	
2.	Arsenicum iodatum	03	03
3.	Becillinum	07	02
4.	Calcarea carbonicum	11	03
5.	Hepar sulphuricum	06	05
6.	Ipecacuanha	07	02
7.	Natrum sulphuricum	06	04
8.	Phosphorus	11	03
9.	Silicea	10	04
10.	Sulphur	10	04
			04
	TOTAL	**78**	**34**

XIII A Multicentric Open Clinical Trial to Ascertain the Role of Homoeopathic Therapy in Urolithiasis

Introduction

Stones in the urinary tract are hard stone like masses that form anywhere in the urinary tract and may cause pain, bleeding, obstruction of urine flow, or an infection.

About 80 percent of the stones are composed of calcium; the remainder of various substances, including urine acid, cystine, and struvite. Struvite stones - a mixture of magnesium, ammonium, and phosphate - are also called infection stones, because they form only in infected urine.

Stones less than 0.5 cm diameter usually pass spontaneously and can be left. Stone greater that 1 cm diameter usually require intervention. Persistent pain, frequent bouts of severe pain, or anuria, are indication for further therapy. Intervention is also required if a stone is not moving though causing only partial obstruction in the absence of infection.

Nephrolithiasis is a common disorder with an annual incidence of 0.1% to 0.4%.The peak age of onset is from ages 20 to 30, and males are 3-4 times more affected than female. Rates of stone formation may be affected by genetic, nutritional, and environmental factors.

Homoeopathic medicines traditionally have been reported to be highly efficacious assisting in passage of calculi with minimum discomfort or in expelling the stone. A study to determine the efficacy of Homoeopathic therapy in Urolithiasis was, therefore, planned and undertaken by the Council in 2005-06.

Number of Subjects : 240 cases (20 per year per Centre)

Duration of Study : 2 years for enrollment + 1 year *follow up* + 2 months for the preparation of final report

Methodology

The subjects for the study were drawn from the patients reporting at the OPDs and who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. Individual cases were repertorised using Complete Repertory. The homoeopathic medicine from amongst the trial medicines, whose symptomatology matched with the presenting signs and symptoms of the disease and also characteristic, both mental/emotional and physical attributed of the individual subject, was used as a first prescription. Any subject whose symptomatology did not match any of the trial medicines was not included in the study, but was treated like any other patients in the OPD.

Objectives

Primary

To determine therapeutic efficacy of the following medicines in Urolithiasis.

1. Cantharis
2. Belladonna
3. Apis mellifica
4. Lycopodium clavatum
5. Pulsatilla nigricans
6. Sulphur
7. Nux vomica
8. Argentum nitricum
9. Mercurius solublis
10. Causticum
11. Kreosote
12. Nitricum acidum

13. Arnica montana
14. Mercurius corrosive
15. Terebinthina

Secondary

- To establish verified characteristic symptoms of medicines used.
- To ascertain additional/clinical symptoms, if any, in respect of Homoeopathic medicine(s) used during the study.
- To ascertain whether Homoeopathic medicine facilitate expulsion/dissolution of Urolithiasis.
- To ascertain role of Homoeopathic therapy in acute renal colic.

Study sites

1. Central Research Institute, Kottayam
2. Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow
3. Regional Research Institute, Gudivada
4. Clinical Research Unit, Dimapur (Nagaland)
5. Regional Research Institute, Jaipur

Observations

Since project was assigned late so no case could be registered.

XIV. A Multicentric Open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in the Management of Gastroenteritis

Introduction

Diarrhoeal disease is a major public health problem in developing countries. An estimated 1.3 billion episodes of diarrhoea occur each years and 3.2 million children under the age of 5 years die of Diarrhoea. The term diarrhoeal disease is considered only a convenient expression for a group of diseases in which the predominant symptom is Diarrhoea. The Government of India launched the National Diarrhoea Control Programme in 1980 (6th Five year plan) to bring down diarrhoea related mortality through promotion of oral rehydration therapy. Most diarrhoeal disease is caused by one or more pathogen and usually the first clinical manifestation of gastroenteritis.

Homoeopathic therapy has been successfully used in epidemic of cholera which ravaged part of Great Britain in 1854 and is reported to be useful in gastroenteritis. The present study was undertaken in 2005-06 to study the effects of homeopathic medicines in the treatment and management of Gastroenteritis, as also to evolve a group of definitively efficacious Homoeopathic medicines in treatment of acute gastroenteritis.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 300 (50 cases per year at each study site)

Duration of the study : 2 years + 2 months for compilation of final report

Objectives

Primary

To determine therapeutic efficacy of following Homoeopathic medicine(s) in Gastroenteritis.

1. Agaricus muscaris
2. Arsenic album
3. Antim crud.
4. Antim tart.

Apis mel.
Argentum nitricum
Bryonia album
Calccarea carbonicum
Carbo veg.
Chammomilla
China officinalis
Cuprum metallicum
Dulcamara
Ferrum metallicum
Ipecac.
Iris versicolor
Lycopodium clavatum
Nux-vomica
Pulsatilla nigricans
Silicea
Sulphur
Veratrum album

Secondary

To determine and verify characteristic symptoms of medicine(s) used.
To ascertain additional/ clinical symptoms, if any, in respect of homoeopathic medicine(s) used during the study.
To ascertain whether homoeopathic medicine(s) used during the study has/have any specific relationship with any particular season or thermal changes.

Study sites

i.
ii. Regional Research Institute (H), Jaipur
iii. Clinical Research Unit (T), Bharuch
Clinical Research Unit (T), Aizawl

Methodology

The subjects for the study were drawn from the patients reporting at the OPDs and who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. Individual cases were repertorised using Complete Repertory. The homoeopathic medicine from amongst the trial medicines, whose symptomatology matched with the presenting signs and symptoms of the disease and also characteristic, both mental/emotional and physical attributed of the individual subject, was used for the first prescription. Any subject whose symptomatology did not match any of the trial medicines was not included in the study, but was treated like any other patients in the OPD.

Results

During the period under report 41 subjects were screened for inclusion in the study. Thirty (30) of these, who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. There was varying response of different subjects to the different homoeopathic medicines. Eighteen (18) of these 30 cases showed marked improvement, 8 experienced moderate improvement and 2 had mild improvement in their condition. Two of the cases had a very short period of follow up. As such they are not reported.

Medicines Used

Sl.No.	*Medicine and Potencies*	*Number of Suibjects Prescribed to*	*Relief Experienced by*
1.	Antimonium crudum 6,30,200	7	7
2.	Mercurius solubilis 6,30,200	5	5
3.	Nux vomica 6,30,200	3	2
4.	Sulphur 6,30,200	4	1
5.	Arsenicum album 6,30,200	5	1
	TOTAL	**30**	**16**

Observations

As the study is in initial stage, no definitive observations were made.

XV. A Multicentric Open Clinical Trial to Evolve a Group of Efficacious Homoeopathic Medicines in the Management of Furunculosis

Introduction

Furunculosis is a common skin infection caused by Staphylococcus aureus. Homoeopathic medicines are reported to be useful in a number of skin infections, including furunculosis. However, no planned clinical study to determine the role of homoeopathic therapy in Furunculosis is reported. The present study was undertaken in 2005-06 to ascertain therapeutic role of Homoeopathy in the treatment of Furunculosis and to evolve a group of efficacious homoeopathic medicines in this infection.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 400 (50 cases per year at each study site)

Duration of the study : 2 years + 2 months for compilation of final report

Objectives

Primary
To determine therapeutic efficacy of following Homoeopathic medicine(s) in "Furunculosis"

1. Antim crud
2. Arnica montana
3. Arsenic album
4. Berberis vulgaris
5. Calcarea carbonicum
6. Calcarea phosphoricum
7. Hepar Sulphur
8. Sulphur

Secondary
- To determine and verify characteristic symptoms of medicine(s) used.
- To check the progression of Disease.

Study site

The study is being conducted at the following sites:
i. Clinical Research Unit, Itanagar
ii. Clinical Research Unit, Jagdalpur
iii. Clinical Research Unit (T), Bharuch
iv. Clinical Research Unit (T), Aizawal

Methodology

The subjects for the study were drawn from the patients reporting at the OPDs and who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. Individual cases were repertorised using Complete Repertory. The homoeopathic medicine from amongst the trial medicines, whose symptomatology matched with the presenting signs and symptoms of the disease and also characteristic, both mental/emotional and physical attributed of the individual subject, was used for the first prescription. Any subject whose symptomatology did not match any of the trial medicines was not included in the study, but was treated like any other patients in the OPD.

Results

During the period under report 58 cases were screened for inclusion in the study. Forty nine (49) of these cases, who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study.

Forty seven (47) of the 49 cases experienced marked improvement, 1 showed moderately improvement and 1 had mildly improvement.

Homoeopathic Medicines Used

Sl.No.	*Medicines Used Medicine and Potencies*	*Number of Suibjects Prescribed to*	*Relief Experienced by*
1.	Hepar sulph. 6, 30,200,1M	22	21
2.	Sulphur 6, 30,200,1M	09	09
3.	Silicea 6, 30,200,1M	04	04
4.	Nat. mur 6, 30,200,1M	02	02
5.	Calc. carb 6, 30,200,1M	02	02
6.	Belladonna 6, 30,200,1M	01	01
7.	Arnica 6, 30,200,1M	01	01
8.	Sepia 6, 30,200,1M	01	01
9.	Others	07	06
	TOTAL	**49**	**47**

XVI. A Multicentric Open Clinical Trial to Ascertain the Role of Homoeopathic Therapy in Vitiligo

Introduction

The present study is aimed at finding out Homoeopathic medicines helpful in the treatment of vitiligo, a common skin condition.

Number of Subjects to be enrolled in the Study : 500 (65 cases per year at each study site)

Duration of the study : 3 years + 2 months for compilation of final report (2 years for the study + 1 year for the follow-up)

Objectives

Primary
To determine therapeutic efficacy of Homoeopathic medicine(s) selected on the basis of Homoeopathic Principles (Individualistic presenting symptoms and signs) and to ascertain the role of homoeopathic therapy in the management of Vitiligo.

Secondary

- To identify Homoeopathic medicines useful in Management of Vitiligo and to verify their characteristic symptoms.
- To ascertain additional/ clinical symptoms, if any, in respect of homoeopathic medicine(s) used during the study.

Study site

i. Clinical Research Unit, Chennai
ii. Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow
iii. Regional Research Institute, Puri
iv. Regional Research Institute, Gudivada

Methodology

The subjects for the study were drawn from the patients reporting at the OPDs of the respective study Centres and who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. Homoeopathic medicine(s) were prescribed in accordance with the Homoeopathic principle of Similimum. It being chronic disease, subjects were followed up for a year and outcome assessment was made thereafter.

Results

During the period under report 80 cases were screened for inclusion in the study. Six (6) of these fulfilled Out of those Six (06) cases, who fulfilled the inclusion criteria were enrolled in the study. The response/ detailed assessment of the different homoeopathic medicines could not be prepared due to paucity of cases used during the study.
Status of 06 cases studied; 03 Mildly improved and 03 Not Improved.

Homoeopathic Medicines Used

Medicines Used *Sl.No.Medicine and Potencies*	*Number of Suibjects* *Prescribed to*	*Relief Experienced by*
1. Ars. Sulph. Flavum 30	2	
2. Nat. mur 200	4	1
TOTAL	**6**	2 **3**

Observation

The study is in the initial stage. As such, no definitive observation could possibly be made.

XVII A Multicentric Clinical Trial of Homoeopathic Medicines in Asymptomatic HIV Infection

Introduction

Global pandemic of HIV/AIDS has come a long way since first cases of a strange form of immunodeficiency, now known as AIDS, were reported in the USA in 1981. UNAIDS estimates that 40 million HIV infections, including around 18.5 million women and 3 million children under 15 years of age, had already occurred in the world by the end of 2003. More than 3 million people have already died of AIDS related illnesses since the onset of pandemic. Whereas new HIV infections in USA and Europe have almost reached a plateau and declining at a slow rate in Africa, the progressive increase in new HIV infections in South and South-east Asia has just begun. UNAIDS estimates that there were around 6 million HIV infected people in South and South-East Asia at the end of 2003. The National AIDS Control Organization (NACO), India estimates that over 5.13 million HIV infections had already occurred in the country by the end of 2004 (first HIV infection and AIDS case were reported in 1986 from Chennai and Mumbai respectively). Although estimates made by NACO indicate that there is a decline in new HIV infections as there has been a 0.03 million cases in the year 2004 (5.1 million in 2003 to 5.13 million in 2004). A total of 28000 new infections have occurred in India, as compared to 520,000 new infections in 2003. This may be reassuring, but the situation continues to be grim, as cumulative effect is bound to be felt for some years from now.

A majority of the individuals infected by HIV are currently passing through asymptomatic phase and would develop clinically active HIV disease in the coming years.

Despite concerted efforts, no curative and safe treatment of HIV/AIDS is available as yet. There has been revision of Guidelines for antiretroviral therapy during the last 3-4 years. Whereas the earlier consideration was to, hit early and hit hard' irrespective of CD4 cell count, now it is advocated to delay the therapy as long as possible to avoid toxic adverse effects of the therapy. Antiretroviral therapy is now prescribed to people with HIV who have CD4 cell count = 200/cu.mm or a little higher in cases who manifest aids related illness (es). There is a debate to further lower the CD4 cell counts warranting antiretroviral therapy.

In view of the importance being accorded to the containment of HIV/AIDS pandemic the world over, all resources in the field of medicine need to be pooled and utilized. The Central Council for Research in Homoeopathy undertook a pilot research study in 1989 to ascertain whether homoeopathic medicines do have a role in the treatment of HIV infection.

The study was undertaken at the Regional Research Institute of Homoeopathy, Mumbai (May, 1989) and Clinical Research Unit of Homoeopathy, Chennai (October, 1991) with the following objective- "to evaluate role of homoeopathic therapy in HIV infection".

The results were positive and prompted a randomized placebo controlled study at Mumbai (1995-97). One hundred (100) cases were enrolled in the two concurrently run studies. The results indicated that homoeopathic therapy has a positive role to play in early symptomatic HIV infection (British Homeopathic Journal (1999).

Another study conducted by the Council suggested that a judicious mix of homoeopathic therapy, psychological counseling, isotonic and breathing exercises, meditation and natural dietary supplements, may help in the management of HIV infected individuals (A Journey to Dialogue-HIV/AIDS and Traditional Medicine, New Delhi, 9-10 November, 2000).

The Council, in consideration of the fact that established anti-retroviral therapy is not prescribed to asymptomatic HIV infected people who have 200/cu.mm or more CD4 cell count, undertook a multicentric clinical trial of homoeopathic therapy in asymptomatic HIV infection with subjects who have 250/cu.mm or more CD4 cell count and who are passing through asymptomatic phase of infection.

Objectives

Primary
To ascertain therapeutic role of homoeopathic medicine in checking or delaying the progression of HIV infection.

Secondary

- To clinically evaluate the action of homoeopathic medicines on immune system through shift in CD4/CD8 Count.
- To ascertain whether HIV viral load volume changes are relative to change in CD4/CD8 Count, under homoeopathic therapy.
- To ascertain changes in physiological functions and quality of life under homoeopathic therapy.

Number of subjects to be enrolled in the study : 600 cases (preferably 100 cases at each Centre)

Duration of Study : 3 years (Enrolment of patients to be made in the first 18 months and each subject with would be followed up for 18 months)

Medical Relief in Natural Calamities/Epidemics

Medical Relief Camp at Mumbai

Medical Relief Camps were organized for flood affected people in and around Mumbai at 20 locations from 4th August to 30th August, 2005. These were organised by Regional Research Institute (Homoeopathy), Mumbai, in collaboration with CMP Homoeopathic Medical College & Hospital, Mumbai. Ten thousand eight hundred and seventy one patients were treated in these camps.

Cases of Fever, Skin infection, GIT infection and Respiratory diseases along with emotional problems were seen.

Medicines found effective in different ailments were Ars. alb., China sulph., Malaria off.,Acon.nap., Cina, Mag. phos., Crotalus, Medo., Aloes, Alfa-Alfa, Croton tig., Crysorobinum, Dulcamara, Echinasia, Eup. per., Nux vom., Podo., Puls., Ant. tart., Arnica, Bacillinum, Gels., Graph., Bry., Kali mur., Staph., Ruta, Rhus tox., Sepia, Silicea, Lyco., Lob.inf. , Lach., Chelidonium, Cantharis, Carbo veg., Hep. sulph., Pyrogen.

Epidemic of Japanese Encephalitis

An Epidemic of Japanese Encephalitis was reported in the Gorakhpur & Maharajganj districts of Uttar Pradesh in September-October, 2005. Two teams of Homoeopathic Drug Research Iinstitute, Lucknow visited these areas. Belladonna 200 was found to be the "Genus Epidemicus" on the basis of following signs andsymptoms found in 30 cases admitted in the local Hospital:

1. Violent Headache
2. High grade fever with chill & rigor
3. Rigidity of muscles, especiallyof neck
4. Vomiting
5. Involuntary passage of urine
6. Tonic & clonic movement of muscles
7. Convulsion
8. Unconsciousness
9. Coma
10 Vomiting along with diarrhoea were found in some cases during the beginning of the disease. These were followed by constipation, paralysis, stupor, sore throat, oral canadiasis, prostration, sunken features, pale face, anorexia, impaired appetite and thirst etc.

Homoeopathic prophylactic medicine Belladonna 200 (One dose twice daily for three days) was distributed to the affected population as per following details:

Gorakhpur

Population covered in 27 villages	-	172900
Population covered in 42 schools	-	31526
Total	-	204426

Maharajganj

Population covered in 23 villages	-	106748
Population covered in 41schools	-	15241
Total	-	121989

Schedule Follow up (after completion of incubation period) at Gorakhpur

Population covered in 15 villages	-	90900
Population covered in 23 schools	-	16983
Total	-	107883

No. of cases found affected by Japanese encephalitis after distribution of Homoeopathic prophylactic

Villages	No. of cases
Gahira	01
Bhathat	01
Total:	**02**

Schedule Follow up (after completion of incubation period) of villages & schools at Maharajganj

Population covered in 14 villages	-	59560
Population covered in 29 schools	-	12767
Total	-	**72327**

Random follow up (within incubation period) done:

Population covered in 10 schools	-	2315
Population covered in 6 villages	-	26500
Total	-	**28815**

No. of cases found affected by Japanese encephalitis after distribution of Homoeopathic prophylactic

Gorakhpur	-	02
Maharajganj	-	01

Medical Team of CCRH Attending to a patient of Japanese encephalitis

CLINICAL VERIFICATION

Clinical Verification

Clinical Verification is the process of evaluating the clinical applicability of proved drugs and drugs with fragmented data (partially proved drugs). This process also guides to obtain reliable indications for therapeutic application. Council has proved many drugs of Indian origin, which have been taken up in Clinical verification programme. 35 such drugs are allotted to Institutes / Units engaged in Clinical Verification Research for clinical trials.

Institutes/Units engaged in Clinical Verification Research	Drugs assigned
1. Homoeopathic Drug Research Institute (H), Lucknow. 2. Regional Research Institute of Homoeopathy, New Delhi. 3. Regional Research Institute of Homoeopathy, Shimla. 4. Clinical Verification Unit (H), Patna. 5. Clinical Verification Unit (H), Ghaziabad. 6. Clinical Verification Unit (H), Vrindaban.	1. Acalypha indica 2. Acid butyricum 3. Alfalfa 4. Aranea diadema 5. Aranea scinencia 6. Arsenicum bromatum 7. Azadirachta indica 8. Bellis perennis 9. Calotropis gigantea 10. Cassia fistula 11. Chromo. kali sulph 12. Curcuma longa 13. Cynodon dactylon 14. Euphorbia lathyris 15. Glycyrrhiza glabra 16. Holarrhena antidysenterica 17. Ichthyolum 18. Lapis albus 19. Magnesia sulphurica 20. Mangifera indica 21. Mygale lasiodora 22. Ocimum cannum 23. Oxytropis lamberti 24. Phyllanthus niruri 25. Pyrus americana 26 Rauwolfia serpentina 27. Ricinus communis 28. Staphylococcinum 29. Tribulus terrestris 30. Tarentula cubensis 31. Tela aranea 32. Terminalia arjuna 33. Thea chinensis 34. Theridion 35. Tylophora indica

Source of Literature of these drugs

The subjects were drawn for enrolment under the study from General OPDs of the Centres where study was undertaken. Drug pathogenesis is composed of the signs and symptoms obtained during the proving conducted by the Council and signs and symptoms already included under respective drugs in the following source books:

1. The Dictionary of Practical Materia Medica' by Dr. John Henry Clarke
2. 'The Guiding Symptoms of our Materia Medica' by Dr. C. Hering
3. 'The Encyclopedia of Pure Materia Medica' by T.F. Allen.
4. 'Pocket Mannual of Homoeopathic Materia Medica & Repertory' by William Boericke
5. Drugs of Hindoosthan by Dr. S.C. Ghose
6. Any other source

Achievements during the year 2005-06

A total number of 15,649 cases (New Research cases-7,157 and follow up cases-8492) in different Units/ Institutes, undertaking this programme, were registered to clinically verify the pathogenesis of above said 35 drugs, during this year.

Signs and symptoms reported to have disappeared/relieved under assigned Homoeopathic Medicine(s)

The symptoms, which have been verified under each drug, are mentioned in the tabulated form. Only those symptoms have been mentioned which were verified during this year. Old symptoms verified during the previous years have not been included.

Symptoms mentioned in bracket are those observed only during the course of clinical verification study, but not found in the literature.

1. ACALYPHA INDICA

Potency used : 6, 30 , 200

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Vertigo	Vertigo and giddiness, < on lying down	15	11
Nose	•Watery nasal discharge	16	10
	•Watery nasal discharge with sneezing, < morning	15	4
	•Sneezing after bathing	7	1
Mouth	Bleeding gums	2	1
Stomach	Indigestion with sour eructations and heaviness in epigastrium, burning and discomfort in heart, < midnight, > after evacuation	10	6
Rectum	•Stool - loose, preceded by pain in abdomen < evening	7	5
	•Stool hard, passes with difficulty	6	2
Bladder	Urine frequency increased	6	1
Female genitalia	Leucorrhoea ropy, < by movement	11	10
Respiratory	•Cough with thick yellow expectoration, < morning, > night	19	14
system	•Dry cough with feverish feeling, < at night, > by drinking cold water	24	14
	•Cough, > taking cold water	11	4
	•Cough with yellow expectoration, < morning, night	7	1
	•Cough with salty expectoration, < morning, night	6	2
Chest	Aching pain in chest, < after coughing	5	1
Back	Aching pain in lumbar region, < motion, > by rest	6	2
Extremities	•Pain in Rt. Shoulder joint, < movement	2	2
	•Aching pain in back, < motion	1	1

2. ACID BUTYRICUM

Potency Used : 30

Mind	Fag like sensation in mind,< evening	4	4
Head	Flushes of heat from head, > by cold water application	14	10
Eye	•Stinging pain Lt. eye, > cold application,	1	1
	•Bursting pain in Lt. eye with headache, > cold water	1	1
Face	Red macular eruptions all over the face	21	15
Stomach	•Sour eructation with increased thirst	5	3
	•Sour eructation with increased appetite	4	2
	•Appetite poor	3	2
Abdomen	Flatulence with bad smell,< night	3	2
Back	Backache, < on walking	2	1
Perspiration	Offensive sweat of feet	2	1
Generalities	•Weakness, < in morning,> by continuous movement	6	6
	•Flushes of heat from whole body, < by heat, > by cold bathing	2	1

3. ALFALFA

Potency Used : 6, 30, 200

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Vertigo	Vertigo, giddiness and palpitation of heart	2	2
Throat	Hoarseness and irritability in throat, > hot drinks	1	1
Stomach	•Nausea in empty stomach	1	1
	•Excessive thirst	4	4
	•Appetite poor	4	1
Abdomen	Flatulence with heaviness of abdomen, < after eating	2	1
Rectum	•Burning in anus	5	4
	•Stool hard and scanty, passes with difficulty	1	1
Bladder	Urine, frequent, < at night	1	1
Respiratory system	Dry cough, < at night.	1	1
Back	Acute cramping pain in neck, < in morning	17	11
Fever	Fever, < in morning	7	7
Generalities	•Tired feeling, < on walking	12	10
	•Lethargic feeling	9	7
	•Dullness & drowsiness	1	1

4. ARANEA DIADEMA

Potency Used : 6, 30, 200

Mind	Aversion to talk	5	3
Vertigo	Vertigo with empty feeling in head	8	8
Head	•Dull aching pain with heaviness, < least noise	4	4
	•Throbbing pain in head	3	3
	•Hammering in occipital region, < evening	1	1
Nose	•Epistaxis, < in sun heat, (> by cold water)	6	2
	•Eruptions inside the nose with pain while touching	6	2
		1	1
Mouth	•Bad taste in the morning	4	3
	•Metallic taste	4	2

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Teeth	Pain in teeth, < at night, lying down	5	5
Stomach	Nausea, < morning	1	1
Abdomen	Pain in umbilical region, < after meal	1	1
Rectum	Stool loose with white mucus and dryness of mouth	3	3
Male genitalia	•Seminal emission at night with amorous dream, every 3 - 7d	40	10
	•Increased sexual desire, < at night	6	1
	•Premature ejaculation	2	2
Female genitalia	Leucorrhoea, viscous	4	3
Extremities	•Aching pain in calf muscles,< in evening	5	3
	•Aching pain in calf muscles with laziness, > lying down, > rest, pressure	1	1
	•Pain in Os. Calcanium, < morning, during first movement, Rt. Side	1	1
	•Sensation of swelling of soles with numbness	1	1
Fever	•Fever with chill.	31	22
	•Fever with frontal headache	30	22
	•Fever, < morning	8	1
	•Fever with bursting pain in frontal region, < morning till noon	4	3
Sleep	Sleep disturbed at night	2	1

5. ARANAEA SCINENCIA

Potency Used : 6, 30

Head	Dull pain in frontal region with heaviness, < sun heat.	1	1
Mouth	Bitter taste of mouth	1	1
Stomach	Appetite poor	1	1
Abdomen	•Dull aching pain in upper abdomen, < after eating,> by slight pressure	1	1
	•Flatulence with heaviness of whole abdomen, < after eating, > by passing flatus	1	1
Generalities	Feeling of weakness	1	1

6. ARSENICUM BROMATUM

Potency Used : 6, 30

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Nose	•Coryza with watery nasal discharge, (< in morning)	6	2
	•Watery acrid discharge from both nostrils; < cold drinks, cold air	6	2
	•Coryza with bland watery discharge	4	1
Face	Oily face	3	3
Throat	Itching sensation in throat, > after taking water	10	2
Abdomen	Flatulence with heaviness of whole abdomen, < after eating, > by passing flatus	1	1
Rectum	•Stool - constipation	3	2
	•Burning pain anus after stool	5	4
	•Pain in rectum, < after stool with burning in anus	3	3
		2	1
Fever	Fever with chill, < after noon	3	1
Skin	Red pimples on the whole body with itching, < by heat, > by cold water	3	1

7. AZADIRACHTA INDICA

Potency Used : 6, 30, 200

Mind	Anxiety, apprehensive of some evil, with palpitation	1	1
Head	•Macular, pustular eruptions on scalp	27	23
	•Dull aching pain in fore head,> by pressure	3	3
Ear	Hissing sound in ears,< morning	3	3
Nose	Sneezing, < open air, > warm room	44	38
Mouth	Dryness of mouth, < at night, in sleep	2	2
Abdomen	Flatulence, heaviness in abdomen, > by eructation	2	1
Rectum	•Stool - urge after eating	48	42
	•Stool loose with frothy mucus and pain in abdomen during stool	1	1
Respiratory system	•Cough with thick yellow expectoration, < morning, evening	4	2
	•Cough with congestion in chest	2	2

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Extremities	•Pain in knee joints, < on movement	12	6
	•Pain in left shoulder, joint, < by bending the hand	1	1

8. BELLIS PERENNIS

Potency Used : 6, 30

Head	•Throbbing headache with drowsiness, < in evening	29	25
	•Aching pain in back of head,> by lying down	1	1
Nose	Severe sneezing with dribbling of water, < morning, > afternoon	31	28
Face	Acne on face	5	4
Throat	Pain in throat, < by swallowing water	1	1
Rectum	Loose stool with mucus	4	1
Back	•Lumbar pain with stiffness of back, < exertion, > by pressure	2	2
	•Sprain with soreness in back	1	1
	•Chronic internal injury on back due to falling	1	1
	•Soreness in pelvic region off and on	1	1
	•Bruised pain in pelvic region, < walking, urination	1	1
	•Aching pain in lumbar region, < movement, > rest	1	1
Extremities	•Writer's cramp	2	2
	•Aching pain and soreness in popliteal region and knee joints, on rising from sitting position	1	1
	•Aching pain in knee joints, < walking	1	1
Skin	•Painful boil like eruptions all over the body	28	26
	•Multiple boils on feet and hips and other parts of body with itching and thick, white discharge	20	5
	•Boils all over the body with pain	3	2
	•Multiple boils on head oozing thick pus and blood, itching off and on	1	1
	•Red eruptions on face. Rt. side, with itching off and on, no discharge	1	1

9. CALOTROPIS GIGANTEA

Potency Used : Q, 6, 30, 200

Head	Pain in forehead, > by pressure	1	1
Nose	•Coryza with white mucoid nasal discharge and frequent sneezing, < on rising from bed, evening, > in day time	1	1
	•Frequent white nasal discharge	1	1

Location	Symptoms	No. of patients prescribed	No. of patients relieved
Throat	Soreness of throat, < morning after rising from bed	16	14
Stomach	Thirsty but takes a little at a time	13	11
Rectum	Hard stool, passes flatus instead of stool	2	2
Male genitalia	Red rashes under the prepuce with itching and pain, < during and after the micturition	1	1
Fever	Pain in extremities with fever	1	1
Skin	•Itching in groin, between thighs, scratching followed by oozing of watery fluid, < in warmth	5	2
	•Small eruptions all over body with itching and oozing watery discharge, < in warmth, > after scratching	8	2

10. CASSIA FISTULA

Potency Used : 30, 200

Mind	Aversion to talk	12	9
Head	Bursting pain in head	11	8
Eyes	•Burning in eyes, < by warmth, > by cold washing	13	6
	•Itching and burning sensation in eyes with pain, < in morning,> cold washing	1	1
Nose	•Sneezing frequently with watery discharge from nose and eyes, < in morning	18	12
	•Sneezing with obstruction of nose, < in morning	1	1
Throat	•Tendency to hawk	3	3
	•Sensation of lump in throat	2	2
Stomach	•Appetite - diminished	21	17
	•Pain in stomach, < by taking cold water	5	3
	•Sensation of emptiness in epigastrium, < after meal	3	1
Abdomen	Indigestion with heaviness and distension of abdomen	1	1
Rectum	Urging for stool	3	3
Generalities	•Malaise; feels very weak & tired	8	8
	•Restlessness	10	8

11. CHROMO KALI SULPH

No new symptom verified during this year

12. CURCUMA LONGA

Potency Used : 6, 30

Location	Symptoms	No. of patients prescribed	No. of patients relieved
Vertigo	Vertigo lying down	4	4
Head	Headache, throbbing in temporal region, < in evening	9	7
Eyes	Redness of eyes with itching	1	1
Face	Barber's itch, papulo-vesicular rash on cheeks & chin, red coloured	1	1
Mouth	Dryness of mouth	1	1
Stomach	•Appetite - diminished	10	8
	•Thirst increased for cold water	1	1
	•Griping pain in epigastrium, after taking food	1	1
	•Griping pain in epigastric region, < evening and morning	1	1
Abdomen	Flatulence with heaviness of abdomen, < after meals, > passing flatus	2	2
Rectum	Stool loose, offensive, 2-3 times in a day	1	1
Urethra	Burning micturition	1	1
Female genitalia	Aching pain in lower abdomen during menses	1	1
Respiratory system	Tickling sensation, dry cough at night with irritation of throat	5	3
Back	Lumbago, < in morning, evening, > rest	1	1
Skin	A few suppurative rash	1	1

13. CYNODON DACTYLON

Potency Used : 6, 30, 200

Head	Headache bursting, morning, > by bilious colour vomiting	4	2

14. EUPHORBIA LATHYRIS

Potency Used : 6, 30

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Head	Heaviness of forehead, < exposure to sun heat	1	1
Nose	Blockage of nose in the morning	1	1
Mouth	Bitter taste of mouth	1	1
Rectum	No desire for stool	2	2
Respiratory system	•Dry spasmodic cough (< in the night)	5	2
	•Dry cough, < by motion	2	2
	•Hawking of white thick, expectoration in the morning	1	1
Chest	Burning in chest by cold drinks	5	5
Extremities	•Ulcer indolent over the dorsum of left foot	1	1
	•Oedema of feet	2	2
Sleep & dreams	Absurd dreams, late at night	1	1
Skin	•Maculo-papular eruptions	3	1
	•Chronic dermatitis of toes with inflammation,crust formation and oozing of thick sticky discharge which disappears in winter	1	1
Generalities	Heaviness of head, lethargy and easy tiredness	1	1

15. GLYCYRRHIZA GLABRA

Potency Used : 6

Head	Aching pain in forehead, > after bathing	23	19
Eyes	•Aching pain in both eyes, < morning	6	3
	•Heaviness of eyes	1	1
Ears	•Aching pain in ear with stiffness of neck muscles, < during eating, after taking cold water, in open air	1	1
	•Aching pain in ear, < morning	1	1
	•Pain in ear, < cold	1	1
Nose	•Nasal discharge watery with sneezing, < morning, evening, > after taking tea	49	20
	•Sneezing followed by nasal discharge, < morning, dust, sudden change of weather	22	9

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
	•Coryza – watery nasal discharge with dryness of mouth, < lying down, in open air	19	8
	•Nose blocked at night	15	5
	•Thick profuse mucus discharge from nose with blockage of nostrils, < open air, > by change of weather, smoking	13	6
	•Coryza with thin, fluent watery discharge with dryness of nose, < morning, > by blowing nose	9	3
	•Nasal discharge, thin watery with sneezing,< morning, sudden change of weather, > in open air	8	2
	•Thick white nasal discharge, < morning	7	3
	•Feels dryness at night	4	1
	•Nasal discharge thick, white, yellow in the morning	1	1
	•Nasal discharge watery, < day time	1	1
Throat	•Redness of uvula and tonsils with difficulty in swallowing and pain in throat, < by swallowing, > rest	30	10
	•Sore throat, < cold drinks, morning	25	7
	•Tingling sensation in throat, < taking cold water, > hot drinks	22	9
	•Tickling in throat and cough with yellowish expectoration	18	10
	•Irritation in throat with pain and swelling of left tonsil with difficulty in swallowing, < morning, > by hot drinks	3	1
	•Irritation in throat with dry cough, < morning	1	1
Stomach	• Increased thirst for cold water with dryness of mouth	8	2
	•Appetite poor	8	1
	•Vomiting on coughing	1	1
	•Aching pain in epigastric region, < morning, night, empty stomach, > taking food	1	1
Abdomen	•Flatulence with sour eructation, < at night	8	1
	•Cutting pain in abdomen around navel, < after eating	6	3
Rectum	•Stool passes with great straining	8	4
	•Stool loose, 2-3 times in a day	4	2
	•Stool loose, watery with rumbling in abdomen, < after eating	1	1
Larynx	Voice husky, < talking	21	9
Respiratory system	•Cough with scanty white expectoration, < morning, night	16	9
	•Cough with yellow expectoration, < at night	12	8
	•Dry cough, < at night with difficulty in respiration	3	3

Location	Symptoms	No. of patients prescribed	No. of patients relieved
	•Cough with white expectoration, < cold season	3	1
	•Dry cough, < day time	2	2
	•Dry cough, < morning, evening	2	1
	•Dry cough with irritation in throat, < hot drinks, > by cold water	2	1
	•Dry cough, < exertion	1	1
	•Cough with white, yellow expectoration, < morning	1	1
	•Dry cough with soreness of chest, < at night, before midnight, lying down	1	1
	•Dry cough, < at night, > taking water	1	1
	•Dry cough, < evening with dryness of throat	1	1
Back	Aching pain in lumbar region, < movement, > rest	5	5
Extremities	•Pain in calf muscles, < by motion, > by heat, pressure	8	3
	•Aching pain in thighs, < walking, > by pressure	6	1
	•Heaviness of calf muscles, < by lying down , rest	2	1
	•Burning in palms and soles, < by walking	2	1
	•Pain in legs, < at night, > rest	1	1
	•Dull aching pain in legs, < walking	1	1
Sleep	Sleep disturbed at night	18	2
Skin	Red prickly heat like eruptions on arms back and legs with itching followed by burning sensation blood oozes on scratching, < summer season	1	1
Generalities	•Body ache with restlessness	22	6
	•Weakness	8	3
	•Catches cold easily	7	1
	•Feels pain in whole body, < morning, > by pressure	2	1
	•Aching pain in forehead with nausea & general weakness, < sunlight, > rest	1	1

16. HOLARRHENA ANTIDYSENTERICA

Potency Used : 6, 30, 200

Mind	Forgetfulness	14	10
Vertigo	•Vertigo	3	3
	- with feeling of falling. < on standing	1	1
	- with heaviness of head	1	1
Nose	Watery nasal discharge, < morning, > by warmth	2	2

Location	Symptoms	No. of patients prescribed	No. of patients relieved
Mouth	•Aphthae on tip of tongue with soreness, < touch of teeth	9	7
	•Tongue white coated	8	4
	•Bitter taste in mouth	6	3
	•Aphthae on tip of tongue with soreness lower lip, < chewing food	4	3
Throat	•Pain in throat, < empty swallowing	4	2
	•Soreness of throat, < on swallowing.	1	1
Stomach	•Loss of appetite	12	12
	•Profuse thirst	9	2
	•Nausea, < in morning.	5	2
	•Nausea and vomiting tendency	4	1
	•Sour eructation, < after meals	4	1
	•Acidity with burning in chest, < after eating	2	1
	•Acidity with heart burn, < after eating	1	1
	•Nausea with pain in stomach, < morning	1	1
Abdomen	•Colic pain in epigastric region, < by pressure	3	2
	•Cutting pain in around navel region, < after eating	3	1
	•Feel heaviness of abdomen in umbilical region	1	1
	•Flatulence after taking food	1	1
	•Colic in abdomen with loose watery stool, > by lying down	1	1
	•Pain in epigastric region, stool semi – solid with mucus and urging for stool after taking food	1	1
	•Flatulence with offensive smell	1	1
Rectum	•Diarrhoea with loose stool, greenish or yellow, painless, 2-3 times a day, < after the fatty food	2	2
	•Stool loose, mixed with mucus, 3-4 times a day, < after eating, drinking	6	1
	•Stool scanty, mucoid, offensive	3	1
	•Stool loose, foamy, offensive, white mucus	2	1
	•Stool sour smelling like curd, < morning	1	1
	•Stool loose, 2-3 times in a day, yellowish, mixed with mucus & less blood	1	1
Urethra	Burning urination	1	1
Extremities	•Pain in joints, > open air	3	3
	•Aching pain in legs	1	1
	•Pain in knee joint, < motion.	1	1
Skin	Milky eruptions on face with itching and oozing of blood after scratching, < hot climate, > winter season	2	1
Generalities	Bodyache, < after exertion	4	1

17. ICHTHYOLUM

Potency Used : 6, 30, 200

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Head	Dull frontal headache	1	1
Throat	Irritation in throat	1	1
Abdomen	Flatulence with heaviness in abdomen	1	1
Rectum	Stool – constipated, hard, offensive	8	6
Urethra	Urine frequent, < at night	3	1
Male genitalia	Spermatorrhoea	1	1
Back	Backache with stiffness, < movement, > rest	1	1
Sleep	•Disturbed sleep •Constipation	2 1	2 1
Skin	•Multiple small eruptions on forehead without itching •Psoriasis	7	5
Generalities	Bodyache with restlessness	2	1

18. LAPIS ALBA

Potency Used : 6, 30, 200

Nose	Nasal discharge thick, white,nose blocked at night	1	1
Ext.-throat	Goitre	7	5
Stool	Stool watery	1	1
Female genitalia	Leucorrhoea acrid , <after menses	1	1
Respiratory system	Cough with white expectoration, < morning	1	1
Back	Induration of Cervical glands	75	59

19. MAGNESIA SULPHURICUM

Potency Used : 6, 30, 200

Vertigo	•Vertigo with darkness before eyes, < standing •Vertigo, < rising from bed	3	2
Head	Heaviness in forehead, > by closing eyes	3	2
		9	9

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Nose	Coryza, sneezing with mucous in the nose, < open air, > warmth	28	24
Face	Red papular eruptions on cheeks	7	6
Stomach	Appetite increased	11	9
Back	•Backache, < erect posture (sitting or walking), > by support	29	25
	•Tearing pain in the back, < by sitting	12	10
Fever	Fever with chill, < day time	9	8
Perspiration	Profuse perspiration, < by slight exertion	5	4
Skin	•Eruptions, dry, small with prickly heat	12	2
	•Red papular eruption with itching on dorsum of hands, > scratching, < at night and in warmth of bed	3	1
	•Vesicular eruptions with itching, > scratching	3	1
	•Miliary reddish eruptions on legs with itching,< night	2	1
Generalities	Dryness of mouth with increased thirst, increased appetite and frequent urine	5	1

20. MANGIFERA INDICA

Potency Used : 6, 30

Nose	Thin watery nasal discharge with sneezing	2	1
Rectum > after stool	Dysentery with bloody stool and tenesmus,	3	1
Female genitalia	Metrorrhagia with bright red blood, < by exertion	2	1
Respiratory system	Cough with thick white expectation, < morning	1	1

21. MYGALE LASIDORA

Potency Used : 30

Head	•Throbbing pain in forehead off and on, < evening	5	3
	•Throbbing pain in the temple off and on, < evening	2	1

Location	Symptoms	No. of patients prescribed	No. of patients relieved
Nose	•Profuse thin, watery nasal discharge, > by rest	17	15
	•Profuse, watery nasal discharge with sneezing, < in open air, > by rest	3	2
Face	Twitching of the fascial muscle	2	2
Rectum	•Stool mixed with mucus.	5	4
	•Loose stool with pain in abdomen	4	2
	•Dry, hard, scanty stool passes with difficulty	3	2
Female genitalia	Menses irregular, late up to 2 months	1	1
Respiratory system	Dry cough, < at night	3	2
Back	Aching pain in nape of neck, < by bending backward	2	1
Extremities	Cramping pain in both the extremities, > by hard pressure	9	7
Skin	Oily skin	11	5

22. OCIMUM CANUM

Potency Used : Q, 6, 30, 200

Head	•Cramping pain in temporal region, > by pressure	5	5
	•Heaviness in forehead, < bending forward, > lying down	2	1
	•Headache, pain in vertex, < by standing, > by lying down	1	1
Nose	3-4 sneezing at a time	2	2
Face	Itching on face, < heat of sun	9	7
Stomach	Thirst poor	1	1
Abdomen	•Feels heaviness of whole abdomen, > by passing flatus	2	2
	•Flatulence with heaviness of abdomen, < after eating, > passing flatus	2	1
	•Severe colicky pain in abdomen	1	1
Urethra	•Pain in urethra	1	1
	•Burning in urethra during urination, < by washing with hot water	3	2
	•Stitching pain in Rt. Renal region, radiates obliquely downward, < movement	1	1
	•Frequent urination, scanty with difficulty in urination	1	1
Urine	Urine milky with white casts	1	1
Respiratory system	•Cough with yellow mucoid expectoration, < at night and morning	1	1
	•Dry spasmodic cough, < at night	1	1
Back	Back pain in lumbar region, < walking	3	1
Extremities	Swelling and pain in ankle joints (< by walking)	9	3

23. OXYTROPIS LAMBERTI

Potency Used : 30

Head	•Dull pain in forehead with heaviness	3	1
	•Bursting pain in whole head, < morning, day time, evening, > by pressure	2	1
	•Bursting pain in forehead	1	1
Ear	Tearing pain in rt. ear with no discharge, < cold	1	1
Mouth	No taste in mouth, < during and at each menstrual period	1	1
Abdomen	Paroxysmal pain in umbilical region, < before stool	1	1
Male genitalia	Pain in testicles with restlessness, < by cold, > rest	4	2
Back	Aching pain in lumbar region, < movement, > by rest	3	2
Extremities	•Pain in legs, > by lying down	3	2
	•Sharp pain in rt. wrist joint, < movement, > rest	3	2
	•Aching pain in knee joints with swelling, < movement	3	2
	•Tearing pain in knee and ankle joints with swelling, < movement, > by rest	2	1
Sleep	Sleep disturbed at night	2	1
Generalities	Restlessness	2	1

24. PHYLLANTHUS NIRURI

No new symptom verified this year

25. PYRUS AMERICANA

Potency Used : 6, 30, 200

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Head	•Red painful boils on scalp (with itching)	8	2
	•Dull aching pain in frontal region	3	2
	•Aching pain in forehead, < by pressure	3	2
Eyes	Lachrymation bland, profuse, both eyes, with pain	5	3
Mouth	•Dryness of mouth	2	2
	•Sour and bitter taste	2	1
Throat	•Feels pain in throat and redness of tonsils, < cold water, > by taking tea	3	2
	•Soreness in throat	2	2
Stomach	•Nausea with burning in chest	4	2
	•Poor appetite	2	1
Abdomen	Pain in umbilical region,< bending forward, > passing flatus	3	2
Rectum	•Stool hard, scanty	3	2
	•Itching in rectum	1	1
Respiratory system	•Dry cough with cold, < morning and night	5	3
	•Dry cough, < in morning	3	1
	•Cough with thick, whitish expectoration	2	1

26. RAUWOLFIA SERPENTINA

Potency Used : Q, 6, 30

Mind	Anxiety	2	1
Vertigo	Vertigo with darkness before eyes, < standing, movement, > by sitting	5	5
Head	•Pain in head, < at night, after sleep	18	14
	•Heaviness in head	11	9
	•Headache, <at night with feeling of heaviness, > lying down	5	3
	•Bursting pain in forehead, < morning, > by cold water, bending, pressing with hand	5	3
Ear	Ringing sound in ear	2	1
Nose	Coryza – watery bland discharge with sneezing, > on walking	38	30

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Abdomen	•Spasmodic pain in lower abdomen, < morning, > after passing urine	2	2
	•Flatulence with heaviness of whole abdomen, < after eating, > by passing flatus	3	2
	•Gas formation, < after meals	1	1
Back	Tearing pain in low back, < sitting, > pressing, lying on back	1	1
Extremities	•Pain in knee joints, < sitting and standing	6	4
	•Aching pain in legs, < movement, > by rest	2	1
Fever	Fever with chill and pain in back with weakness, > by covering	12	9
Skin	•Eruptions on thighs, < night, itching followed by burning	10	1
	•Urticaria on whole body (< evening and night, > cold application)	8	1
Generalities	•Drowsiness	3	2
	•Restlessness at night	5	3

27. RICINUS COMMUNIS

Potency Used : Q, 6, 30

Head	•Bursting pain in left side of head, > by rest, after sleep	24	18
	•Heaviness in whole head, < morning	8	8
	•Bruising pain in head, in rt. temporal region, < vomiting	2	1
Eyes	Aching pain in eyes, < morning, > by pressure	1	1
Face	Acne on face, red painful, with itching	9	5
Mouth	•Salivation	14	9
	•Soreness in mouth, < while eating, > by cold water	6	5
	•Dryness of mouth	6	4
Throat	Pain in throat, > by warm drinks	9	7
Stomach	Pain in epigastrium while eating	8	8
Abdomen	Flatulence in abdomen, < empty stomach	4	2
Rectum	Diarrhoea and vomiting, < by drinking water, by taking food	6	3
	- < in closed room, > in open air	2	1
Skin	Vesicular eruption with itching, < after scratching (> cold application)	4	3
Generalities	Restlessness	1	1

28. STAPHYLOCOCCINUM

Potency Used : 30, 200

Location	Symptoms	No. of patients prescribed	No. of patients relieved
Vertigo	•Feels giddiness, < standing	3	2
	•Vertigo with darkness before eyes, < sudden change of posture	3	2
Head	•Headache (with nausea)	1	1
	•Headache, on vertex region, < studying	2	1
	•Headache in occipital region, < sun light	2	1
	•Hair falling	2	1
Face	•Painful acne on face, pain > after sleep	42	36
	•Acne on face, painful	8	4
	•Reddish face	4	2
	•Blackish ring under eyes	3	2
	•Itching on face, < after sweating	2	1
Teeth	Grinding teeth at night	2	2
Throat	•Sore throat, < morning, sour food	2	1
	•Recurrent tonsillitis	2	1
Stomach	•Appetite increased, hungry soon after meals	4	2
	•Nausea, < after meal	2	1
Abdomen	•Flatulence with heaviness of abdomen, < at night, > by passing flatus	8	5
	•Griping pain in abdomen in umbilical region, < before stool	3	2
	•Heaviness in whole abdomen, < after eating	2	1
Rectum	Stool dry, hard passes with difficulty	7	5
Bladder	Bed wetting at night	2	1
Female genitalia	•Leucorrhoea thick, white, no itching	2	2
	•Menses early by 5 days	2	1
Respiratory system	Dry cough, < evening, talking	5	3
Back	Backache in lumbar region, < bending backward and forward, > long standing	4	2
Perspiration	Perspiration on face, < exertion	3	1
Skin	Watery discharge after itching followed by burning, itching, < night	1	1

29. TRIBULUS TERRESTRIS

Potency Used : 6, 30

Location	Symptoms	No. of patients prescribed	No. of patients relieved
Nose	Constant bland watery discharge	64	54
Stomach	Appetite diminished	35	29
Stool	•Stool loose, watery, worse in morning. Green in colour	157	44
	•Stool-scanty, with heaviness of abdomen	6	4
Prostate gland	Prostate gland enlarged	1	1
Urethra	•Burning urination, < in morning	284	174
	•Burning micturition, < sun light, before and after urine	3	1
	•Dysuria and burning in urine, < during and after the micturition	2	2
Back	Pain in back (lumbar region), < bending forward	7	2
Extremities	Pain in big joints, knees and hip, > by massage	12	10
Skin	•Itching inside the thigh, < scratching followed by burning	5	3
	•Red papular eruptions inside the arm pit with itching,< at night, scratching and open air	2	1

30. TARENTULA CUBENSIS

Potency Used : 6, 30, 200

Mind	Disinclination to work	12	8
Head	•Bursting pain in head, < walking	15	13
	•Bursting frontal headache, < reading, noise, > lying down	2	1
	•Pain (bursting) in right side of head, > by rubbing	1	1
Nose	Coryza with sneezing, < bending forward, > by lying	13	8
Face	Acne on face with pain and soreness, < after touch	5	3
Mouth	•Aphthae with burning pain in mouth inside the lips, cheek and tongue,< brushing and touching, > cold application	10	5
	•Stomatitis off and on with soreness of tongue	2	1
Abdomen	Pain in right iliac region, < by hard pressure, > by passage of stool	6	2

Location	Symptoms	No. of patients prescribed	No. of patients relieved
Rectum	Stool – hard, constipated	19	15
Stool	•Unsatisfactory	6	3
	•Stool, scantly	4	3
	•Knotty like sheep's dung	2	2
Urethra	Burning urination	2	1
Back	Backache in lumbar region, < evening, > by rest	3	1
Extremities	•Pain in shoulders with heaviness of hands, < by movement, > by rest	3	1
	•Pain in rt. leg, < walking, > by pressure	2	1
Generalities	Nervousness and palpitation	2	1

31. TELA ARANEA

Potency Used : 30, 200

Mind	•No desire to work	11	9
	•Memory – weak	2	1
	•Difficult to retain and recollect after study	1	1
Head	•Bursting pain in whole head, > cold application and pressure	14	10
	•Pain, heaviness in forehead by pressure, < by rolling the head	9	3
	•Dull frontal headache, < evening	6	2
	•Bursting pain in right side the head, > by gentle rubbing	1	1
		3	2
		1	1
Nose	•Coryza with sneezing & cough	15	13
	•Blockage of nose, has to breathe through mouth	10	8
	•Coryza	2	1
Mouth	Tongue – white coated	1	1
Throat	•Both tonsils inflammed < right side	6	6
	•Both tonsils inflammed (with pain in swallowing).	2	2
Stomach	Sour vomiting, < after meal	1	1
Rectum	•Stool semisolid, scanty 2-3 time in a day	2	1
	•Stool hard, burning sensation in anus during and after stool	1	1
	•Stool passes with difficulty, twice in a day	1	1
Female genitalia	Leucorrhoea thick, white, offensive, < day time	1	1
Extremities	•Aching pain in elbow, shoulder joints, < movement, > by rest	2	1
	•Cramps in calves, < movement > by rest, pressure	2	1

Location	Symptoms	No. of patients prescribed	No. of patients relieved
Fever	•Fever with frontal headache, > by pressure < in evening.	10	8
	with restlessness	2	2
		2	2
Skin	•Urticaria all over body, < warmth, evening, sudden change of weather, > by cold application	21	15
	•Red papular eruptions on various parts of body with pain	3	2
	•Itching and burning after scratching oozing thin, watery fluid, < at night, sweating	3	2
	•Urticarial rashes on bathing, with itching	2	1
	•Papular eruption on anterior surface of thighs with itching followed by burning sensation, < at night, > by scratching	1	1
Generalities	•Flushes of heat over body	1	1
	•Feels sleepy	7	5

32. TERMINALIA ARJUNA

Potency Used : Q, 6, 30

Mind	Desire to be alone	10	6
Head	•Pain in forehead & vertex with bodyache, < fanning	18	16
	•Pressing pain in occipital region, > in open air	1	1
Nose	Coryza watery, thin with sneezing > in cool room with headache and bodyache	211	211
Mouth	•Aphthae over tongue with pain, > holding cold water in the mouth	21	17
	•Dryness of mouth	12	10
	•Bitter taste in mouth	5	2
	•Salivation increased with sour taste, < night	1	1
Throat	Rawness of throat with tendency to hawk	1	1
Abdomen	Griping pain in abdomen, > passing stool	8	6
Respiratory system	Cough with white, scanty expectoration (breathlessness on walking)	91	31
Chest	Pain in cardiac region, jerking pain in chest	51	31
Extremities	•Injuries cause pain, swelling and ecchymosis of skin	5	4
	•Pain in rt. arm, < on raising the arm, > by pressure.	1	1
Generalities	•Bed effects of injury	12	8
	•Weakness	11	5
	•Hypertension with vertigo, < by walking	6	2

33. THEA CHINENSIS

Potency Used : 6, 30, 200

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Vertigo	Giddiness	10	6
Head	•Aching in forehead, < washing with cold water	19	14
	•Aching pain in forehead off and on, < by lying down	10	6
	•Dull headache	3	2
Nose	•Coryza with watery discharge and throbbing headache, < morning	21	16
	•Coryza with thick, yellow discharge, < in morning	14	12
	•Coryza – thin watery discharge with headache, worse in morning	113	73
Mouth	•Dryness of mouth and throat	8	5
	•Salivation increased, < in morning	5	2
Stomach	•Anorexia	24	19
	•Appetite poor	8	5
	•Sour eructation, < after eating, > by cold drinks	5	3
	•Acidity, worse after meal, with nausea	255	113
Abdomen	•Heaviness and fullness of abdomen, < in evening	16	5
	•Pricking pain in lower abdomen, < by hot drinks	10	6
	•Spasmodic pain in epigastric region, < after eating	5	3
	•Aching pain in epigastric region, < after eating, evening, > by lying	5	3
	•Pain in rt. hypochondrium with tenderness, < after meals	4	2
Rectum	Constipation –no desire for stool	2	1
Female genitalia	Leucorrhoea, thick and offensive	2	1
Respiratory system	Cough with mucoid expectoration, < lying down.	8	4
Chest	Palpitation, < exertion	2	2
Extremities	•Aching pain in legs, < walking	5	3
	•Aching pain in lumbar region, < summer season	4	2
	•Pain in calf muscles, < by pressure	3	2
	•Aching pain in hands	2	1
Fever	•Fever with anorexia, < in the evening	9	5
	•Fever with bodyache, < evening	2	1

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Generalities	•General weakness with irritability	15	11
	•Restlessness, < at night	14	12
	•Bodyache with restlessness	5	3
	•Generalized weakness and malaise	1	1

34. THERIDION

Potency Used : 30

Mind	Quarrelsome	1	1
Vertigo	Vertigo with darkness before eyes, < movement of head, traveling in bus, long standing, rising from bed	2	1
Head	•Throbbing pain in whole head with aversion to talk, < afternoon	19	15
	•Aching pain in forehead, < evening	1	1
	•Falling of hair	1	1
	•Throbbing pain in forehead, < while coughing	1	1
Eyes	Profuse lachrymation with pain in eyes, < in morning with stitching pain and swelling of lower lid	32	21
Vision	Haziness of vision, difficulty in seeing distant objects	1	1
Nose	•Thin watery discharge from nose with sneezing,< after warm drinks, > after bathing, worse in morning	342	282
	•Profuse nasal discharge with difficulty in breathing and obstruction of nose, < in morning	4	4
Mouth	Mouth dry with thirst, < at night	5	1
Throat	•Stitching pain in throat, < at night	17	13
	•Irritation in throat with splinter like sensation, < taking food, night	3	2
Stomach	•Appetite poor	1	1
	•Sensitive to smell of petrol causes vomiting	1	1
Abdomen	Gripping pain around umbilical region, < after eating	1	1
Respiratory system	•Cough with expectoration, > by lying down	13	11
	•Cough dry, violent, spasmodic, < cold water > morning	2	2
	•Dry spasmodic cough, > by taking tea	1	1
	•Wheezing in chest	1	1
	•Pain in chest and heaviness, < coughing	1	1
Extremities	Crack on the heels	1	1

35. TYLOPHORA INDICA

Potency Used : 6, 30

Location	*Symptoms*	*No. of patients prescribed*	*No. of patients relieved*
Nose	•Thick, white nasal discharge, < in the morning	5	3
	•Thin nasal discharge with sneezing	4	3
Abdomen	•Dull pain in lower abdomen, < during micturition	17	15
	•Griping pain in abdomen in epigastric region, < after meals, > after passing flatus with pain in right lower abdomen	104	62
	•Cutting pain in hypochondrium, < after eating, > empty stomach	3	2
	•Flatulence, < after meals	2	2
Rectum	•Itching in anus, < washing	19	19
	•Swelling and pain in rectum, pain, < by passing stool, > by cold application	4	2
	•Constipation, dry, hard stool with pain in left lower abdomen	4	1
	•Itching in anus, < by washing	2	2
	•Stool unsatisfactory, with mucus	1	1
	•Fistula in ano	1	1
Respiratory system	•Dyspnoea and pain in chest, < early in the morning	27	16
	•Constricting pain in chest with dyspnoea Wheezing both lungs	16	14
	•Breathlessness, < change of weather and dust	16	9
	•Cough with white, scanty, sticky expectoration, < dust, cold, morning	13	7
	•Cough with yellow expectoration, very difficulty to expel, < morning	13	6
	•Cough with thick, white expectoration, < laughing, night, > lying down	5	3
	•Cough with frothy expectoration, < early in the morning	2	2
Chest	•Constricting pain in chest, < early in the morning	2	1
	•Pain in chest, < coughing	15	11
	•Feels heaviness in chest	8	4
Extremities	•Burning in palms and soles, < by cold application	3	2
	•Aching pain in knee joints, < morning	8	4
Generalities	•Susceptible to catch cold	3	2
	•Palpitation, < exertion	16	9
		9	5

Drug Proving

Drug Proving or Homoeopathic Pathogenetic Trial (HPT) is the most important activity of the Council. The Council has developed a plan and protocol of double blind technique for HPTs, which has also been accepted internationally and the process of symptom extraction from HPTs has also been standardized. The Council has laid emphasis on conducting proving of drugs of indigenous origin and those, which have had fragmentary proving under its programme and so far 71 drugs have been proved and 52 drugs have been published in Council's Quarterly Bulletins.

During the year 2005-06 one long (Code No. 82) and four short (code no. 81, 83, 84 & 85) drugs have been proved as per the details:

Drug Proving Research Unit, Kolkata	:	Completed long proving of one drug (Code No. 82) and short proving of two drugs (Code Nos. 81 & 83).
Drug Proving Research Unit, Ghaziabad	:	Completed short proving of two drugs (Code No.81 & 83).
Drug Proving Research Unit, Midnapore	:	Completed long proving of one drug (Code No. 82) and short proving of two drugs (Code Nos. 81 & 85).
Regional Research Institute, New Delhi	:	No drug could be taken up for proving due to shifting process of RRI(H) to CRI(H), Noida.
Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow	:	Completed short proving of one drug (Code No. 84).

DRUG STANDARDISATION

Drug Standardisation

Drug Standardization ensures quality, safety and efficacy of a drug. It encompasses a number of parameters which define the quality of Homoeopathic Medicines, pharmaceutical uniformity and the source materials need to be exactly identified. For drawing standards of Homoeopathic Drugs, the studies conducted are Pharmacognostical and Physico-chemical, in order to study the various qualitative and quantitative characteristics of the drugs.

The Pharmacognostic studies include the macro and microscopical characteristics of raw drugs of vegetable origin. The Physico-chemical analysis helps to determine the physical and chemical constants of the drug.

At present the Council is undertaking drug standardization studies at two centers viz. Drug Standardization Unit, Ghaziabad and Drug Standardization Unit, Hyderabad.

Achievements:

i. Drug Standardization Unit, Ghaziabad

Pharmacognostic studies of following nine drugs were carried out:

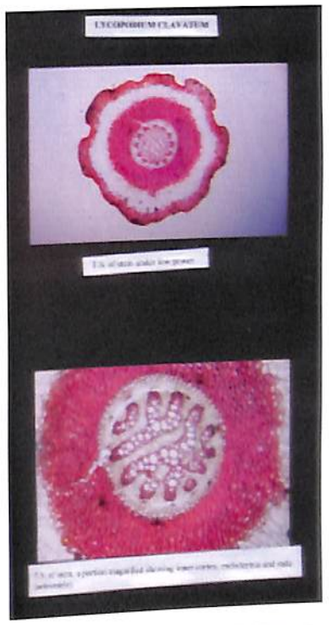

1. Acer negundo
2. Alternanthera sessilis
3. Leonurus cardiaca
4. Lycopodium clavatum
5. Melissa officinalis
6. Oryza sativa
7. Plumeria rubra
8. Symphytum officinalis
9. Boerhaavia diffusa

ii. Drug Standardization Unit, Hyderabad.

Pharmacognostic studies of the following seven drugs were carried out:

1. Alternanthera sessilis
2. Boerhaavia diffusa
3. Carica papaya
4. Eucalyptus camaldulensis
5. Lycopodium clavatum
6. Pinus wallichiana
7. Terminalia chebula

Physico-chemical studies of following ten drugs were carried out:

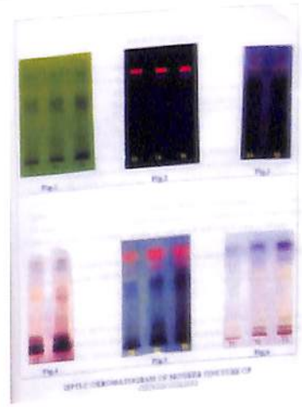

1. Baryta iodata
2. Boerhaavia diffusa
3. Carica papaya
4. Echinacea purpurea
5. Eucalyptus camaldulensis
6. Lycopodium clavatum
7. Oryza sativa
8. Pinus wallichiana
9. Symphytum officinalis
10. Terminalia chebula

Comparative study of following mother tinctures (Physico-chemical aspects) with commercial samples was also carried out:

1. Cerasus laurocerasus
2. Nasturtium officinalis

SURVEY COLLECTION & CULTIVATION OF MEDICI-NAL PLANTS

SURVEY COLLECTION & CULTIVATION OF MEDICINAL PLANTS

A. A Survey of Medicinal Plants and Collection Unit was established at Ooty in TamilNadu in 1979 to conduct survey of medicinal plants used in Homoeopathy from South India, collect raw drug samples for supply to the Units where drug standardization studies are being conducted. The Unit also carried out literature survey, collection and preparation of index cards and herbariums etc.

Achievement of Unit

1. Conducted 11 local tours to Coimbatore & Nilgiri Distt. for survey cum collection of medicinal plants.
2. 220 Herbarium sheets were incorporated and 317 specimens collected.
3. 26 Raw drugs in bulk were collected.
4. Supplied sixteen raw drug plant materials to DSU, Ghaziabad, twenty-three raw drug plant materials to DSU, Hyderabad and one raw drug plant material to Hqrs.
5. Two raw drugs viz. Digitalis purpurea leaves 20 Kg. and Cineraria maritima leaves 12 Kg. were sold to the Kerala Homoeopathic Co-op. Pharmacy Ltd., Alappuzzha, Kerala.
6. 20 Herbarium sheets were sold to Govt. Meseum, Ooty.
7. Collected folkflore information on Kandal Mandh (Toda Village).

Following Plants were supplied to the DSUs for drug standardisation studies during the year 2005-06:

1. Acer negundo Linn.
2. Agropyron repens Linn.
3. Alternanthera sessilis Nees
4. Boerhaavia diffusa Linn.
5. Carica papaya Linn.
6. Cinchona officinalis Linn.
7. Chrysanthemum parthenium Pers.
8. Echinacea purpurea Linn.
9. Iris florentina Linn.
10. Matricaria chamomilla Linn.
11. Melaleuca leucadendron Linn.
12. Melissa officinalis Linn.
13. Oryza sativa Linn.
14. Rheum rhaponticum Linn.
15. Semecarpus anacardium Linn.
16. Strychnos nux-vomica Linn.
17. Symphytum officinale linn.
18. Terminalia chebula Retz.
19. Trigonella foenum graecum Linn.
20. Tylophora indica (Burm.f.) Merr.
21. Leonurus cardiaca Linn.
22. Melilotus officinalis Linn.
23. Sempervivum tectorum Linn.

B. The Unit has a Research Garden for cultivation of medicinal plants especially exotic plants used in Homoeopathy at Emerald Post, Distt. Ooty, Tamil Nadu.

The following indigenous medicinal plants used in Homoeopathy were cultivated :

1. Adhatoda vasica
2. Cassia sophera

3. Centella asiatica
4. Citrus aurantium
5. Cynodon dactylon
6. Datura metel
7. Vetiveria zizanioides

Besides , the following exotic plants used in Homoeopathy were grown / available in the Research Garden:

1 Achillea millefolium
2 Agave americana
3 Agropyron repens
4 Anthoxanthum odoratum
5 Apium graveolens
6 Argemone ochroleuca
7 Asclepias curassavica
8 Avena sativa
9 Borago officinalis
10 Buxus sempervirens
11 Calendula officinalis
12 Chenopodium ambrosioides
13 Chrysanthemum parthenium
14 Cineraria maritima
15 Cochlearia armoracia
16 Cytisus scoparius
17 Datura arborea
18 Digitalis purpurea
19 Echinacea purpurea
20 Eschscholtzia californica
21 Exogonium purga
22 Fagopyrum esculentum
23 Foeniculum vulgare
24 Fragaria vesca
25 Galinsoga parviflora
26 Hedera helix
27 Hypericum perforatum
28 Leonurus cardiaca
29 Matricaria chamomilla
30 Melilotus officinalis
31 Melissa officinalis
32 Mentha piperita
33 Oenothera biennis
34 Origanum majorana
35 Origanum vulgare
36 Polygonum hydropiper
37 Polygonum punctatum
38 Prunus persica
39 Petroselinum crispum
40 Rheum rhaponticum
41 Robinia pseudo-acacia
42 Rosa damascena
43 Rosmarinus officinalis
44 Ruta chalepensis
45 Salvia officinalis
46 Sambucus nigra
47 Santolina chamaecyparissus
48 Sempervivum tectorum
49 Silybum marianum
50 Solanum nigrum
51 Symphytum officinale
52 Taraxacum officinale
53 Thymus vulgaris
54 Trifolium pratense
55 Trifolium repens
56 Tropaeolum majus
57 Verbascum thapsus
58 Viola odorata

Publication

The Council has published **"A Hand Book of Medicinal Plants used in the Homoeopathy Vol. 1"** in the year 2005-06. This publication aims at providing concise information viz. botanical name, synonyms, family, common names, description, distribution, part used, history/authority and homoeopathic uses along with pictures of 316 medicinal plants used in Homoeopathy. The book is useful to large section of people who are adherents to Homoeopathic Systems of Medicine.

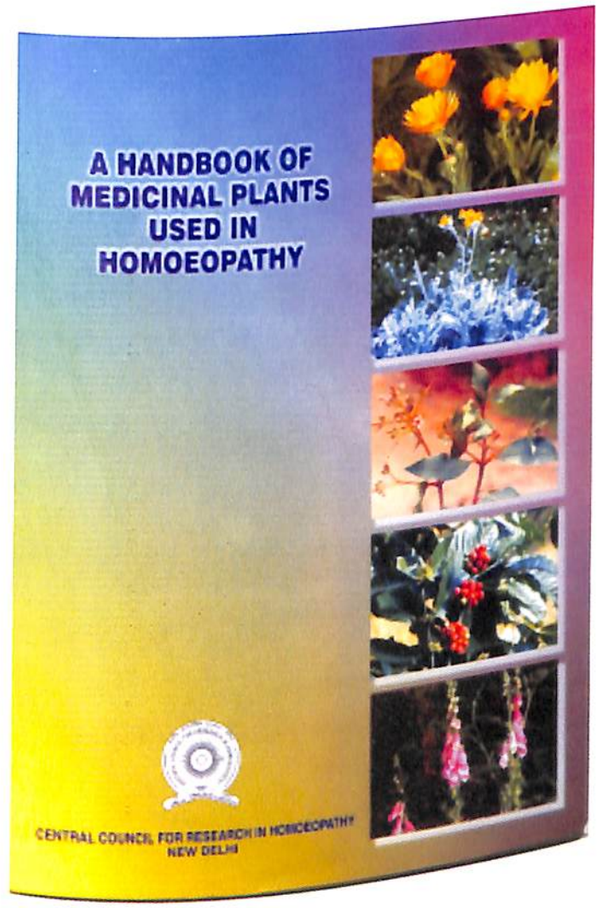

COLLABORATIVE RESEARCH STUDIES

COLLABORATIVE RESEARCH STUDIES:

a) International:

CCRH-UCLA Collaborative Study: Delivery of Model HIV Prevention and Health Promotion Programs in India by Homoeopathic Physicians & Educators

Introduction:

The Council undertook a two year collaborative study with University of California Los Angeles in February 2005. World AIDS Foundation funds this study entitled 'Delivery of Model HIV Prevention and Health Promotion Programs in India by Homoeopathy Physicians and Educators'. The study is based on the Train the Trainer modality with an objective to:

- Build capacity and skills among ISM practitioners and educators in design, development and evaluation of a culturally competent programs focused on HIV prevention and on health promotion, both physical and emotional, in HIV positive persons
- Demonstrate the delivery of a model program which can be replicated throughout India

Methodology:

The study enlarges the out-reach not only of Homoeopathic practitioners and educators but of Ayurvedic practitioners as well. The study aims to:

- Provide ISM and Homoeopathy health care providers with innovative techniques to educate others in prevention and care for people with HIV infection
- Dispel myths, correcting misunderstandings and allaying fears to improve quality of health care services provided
- Confidence build up in delivering prevention messages

As a part of the study, a model HIV training module would be developed. 200 Homoeopathic and Ayurvedic physicians would be provided training on the Train-the Trainer methodology. Assessments of the participants would be done immediately before the training and after receiving the training. The third assessment would be done 3 months after training and the 4th assessment would be done 6 months after training. Assessment instruments are build accordingly to assess the Knowledge and attitudes towards HIV/AIDS, Delivery of HIV education and prevention in their practice, Nature of Counseling/services provided, Number of trainees trained further and background characteristics of the participants.

Status of study:

Phase I of the study was initiated following the approval from the Department of AYUSH, Ministry of Health and Family Welfare, Government of India in February 2005. The Homoeopathic and Ayurvedic colleges in and around Delhi were identified to enroll practitioners and Educators. Model intervention training program has been developed as per the need. The Training module covers major aspects related to HIV/AIDS. It covers topics such as HIV infection (HIV infection process, Transmission of HIV, Prevention of HIV Screening and diagnosis, clinical manifestations, treatment and symptom control, Impact of HIV infection (psychosocial issues, legal issues, ethical considerations, financial impacts), behavior change and adult learning, etc. To equip the participants to conduct further training of 15-20 Ayuvedic or Homoeopathic practitioners or students, topics such as Adult learning, Barriers to teaching and learning are also included.

Phase II of the study involved training of Homoeopathic and Ayurvedic Practitioners and Educators. Four one-day training programs of initial trainees in groups of 20-25 along with pre-training assessment and post-training assessment have been conducted in the months of January and February. 80 Homoeopathic and Ayurvedic physicians have been trained so far. The next assessments of the participants would be conducted in 3 months post training and 6 months post training.

The study is in progress.

b) Collaborative Research Studies in India :

The Council also took up the following tie up/collaborative research programmes with some reputed Institutes to validate the efficacy of our system availing of their infrastructure during the year 2005-06.

1. **Effects of Homoeopathic medicines on physiological parameters using ANU Photo Rheography and Medical Analyzer**

In order to validate the effects of Homoeopathic medicines on physiological parameters of Heart Rate, Respiration Rate and Blood flow variability, a scientific study using ANU Photo Rheography and Medical Analyzer developed by Bhava Atomic Research Centre was finalized with due approval of SAC. A protocol was also finalized in consultation with Dr. A.S. Paranjape, Sr. Physicist, Solid State Physics Division, BARC and Dr. G.D. Jindal, Biomedical Instrumentation Section, Electronics Division, BARC who are taking part in the study at the Regional Research Institute of Homoeopathy, Mumbai. Equipment were been procured and study started w.e.f. Feb. 2006.

2. **Study on Homoeopathic Medicines for the treatment of Cerebral Ischaemia.**

In order to evaluate the efficacy of Homoeopathic medicines in reversing the changes brought upon by cerebral ischaemia, on animal models, a proposal was received from Dr. Fakhrul Islam, Department of Medical Elementology and Toxicology, Jamia Hamdard. The protocol was placed in the SAC meeting of the Council held on 8th & 9th August 2005. The Committee agreed to take up the study in association with Jamia Hamdard. MoU was signed and grant-in-aid for the study was released. All preliminaries are completed for initiation of the study.

3. **Effect of Homoeopathic Drugs used in Insomnia on Serum melatonin and Cortisol levels in Healthy volunteers**

A project proposal was received from Dr. B. Gitanjali, Professor of Pharmacology, Jawahar Lal Institute of Post-Graduate Medical Education and Research (JIPMER), Pondicherry on "Effect of Homoeopathic Drugs used in Insomnia on Serum melatonin and Cortisol levels in Healthy volunteers". It was placed before the SAC meeting held on 8th & 9th August 2005.

The Committee agreed to take up the study at JIPMER, with the involvement of the scientists of JIPMER and those of Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy, Pondicherry. A MoU has been signed. The study was initiated during the period under report.

4. **Efficacy and safety evaluation of assigned Homoeopathic drugs in experimental Animals - Endocrinological Studies**

Council has finalized a study on "Efficacy and safety evaluation of assigned Homoeopathic drugs in experimental Animals - Endocrinological Studies" by Prof. Uma Maheshwara Reddy, HOD, Deptt. of Zoology, Osmania University. The proposal has been agreed to by SAC of the Council. Project study has also been started. The scientists of the Drug Standardisation studies (Homoeo.) of Hyderabad are also involved in this project.

5. **Effects of Homoeopathic drugs in different potencies on Central Nervous System and their safety evaluation**

Council has also finalized a study on "Effects of Homoeopathic drugs in different potencies (3x, 6x, 12x and 30c) on Central Nervous System and their safety evaluation" by Prof. Uma Maheshwara Reddy, HOD, Deptt. of Zoology, Osmania University (OU), Hyderabad, with the involvment of the scientists of the Drug Standardisation studies (Homoeo.) of Hyderabad.

6. **Exploration of the utility of GDV camera as a diagnostic instrument in the areas of Homoeopathic fundamental research- A pilot study**

Fundamental research for understanding the mechanism of action of homoeopathic medicines is being explored by use of Gas Diffusion Visualization (GDV). Dr. Ashok Salhan, Scientist-E of Defence Institute of Physiology and Allied Sciences (DIPAS), New Delhi has consented to be involved in the study. The proposal of collaborative work with DIPAS was approved by SAC of the Council. The Study is expected to start in the year 2006-07.

EXTRA MURAL RESEARCH STUDIES

Extra Mural Research Studies

Till December 2005, implementation & monitoring of the Extra Mural Research (EMR) Scheme was carried out by the Department of AYUSH. CCRH was directed to take up the EMR scheme w.e.f. January 2006. New research proposals were invited through the advertisement published in national dailies by the Department of AYUSH. Some old proposals were also referred to this Council by the Department. A total of 66 proposals received by the Council were examined by the Project Evaluation Committee (PEC) constituted by the Department of AYUSH (for Homoeopathy) in its meeting held on 8th March 2006.

In the due course, Council has also received files of old ongoing research studies funded by the Department of AYUSH under EMR scheme for monitoring. Council has examined these files and correspondence made with Principal Investigators for complying with instructions of Department for submitting the utilization certificates and progress reports.

Brief summary of the work done is stated in the following table :

Total no. of proposals received by Council			Follow up action		
			Considered by PEC in the first Meeting on 08.03.06	Recommended by PEC	Proposals to be taken up in the next PEC meeting
•For Accreditation	-New	12	8	5	4
•EMR Grant	-Renewal	6	4	3	2
TOTAL	New	48	27	7	21
		66	39	15	27

The Council has also started monitoring of 23 ongoing studies already funded by the Deptt. of AYUSH pursued nominated by the Council.

PUBLICATIONS

Publications (by the Documentation section of the Council)

a) CCRH Quarterly Bulletin

- CCRH Quarterly Bulletin Vol. 27, No. 2, 2005 , containing following articles:
  - Scientific Investigation of Homoeo materials and potencies
  - Evaluation of Efficacy of Homoeopathic Medicines in Sickle Cell Anaemia
  - Pyrus americana (A compiled data of Proving conducted by CCRH)
  - Bacillinum (Clinically verified Symptoms)
  - Physico-Chemical Standardization of Chrysanthemum cinerariaefolium Trev.
  - A Case of Hepatitis - B
  - Web Information - Asthma & Homoeopathy: Search on Internet
- CCRH Quarterly Bulletin Vol. 27, No. 3, 2005 , containing following articles:
  - Altered solution structure of alcoholic medium of potentized Nux vomica underlies its antialcoholic effect
  - Drug oriented Clinical Research on Amoebic dysentery
  - Homoeopathy will not end by pseudo-analysis
  - Tarantula hispanica-a reproving
  - Aegle marmelos (Clinical verified Symptoms)
  - Pharmacognostic & Physico-chemical evaluation of Alpinia galanga Sw.in
  - A HIV infected carrier under Homoeopathic treatment
  - Web Information - Menopause & Homoeopathy: Search on Internet
- CCRH Quarterly Bulletin Vol. 27, No. 4, 2005 , containing following articles:
  - The cytogenetic effects of repeated exposure to ultrasonic sound waves in mice and their alterations by a homoeopathic drug, Arnica montana
  - Drug oriented Clinical Research on Diabetes mellitus
  - Aegle folia (Clinically verified symptoms)
  - Economically viable medicinal plants useful in the Homoeopathic system of Medicine
  - A case of Multiple Fibroid Uterus
  - Web Information - Schizophrenia - A major mental problem & homoeopathy search on Internet

b) CCRH News No. 34,35,36

c)

Publications of Books :-

Non-priced:-

- Proceeding of Research Methodology

Priced:-

- A Hand Book of Medicinal Plants used in Homoeopathy

d) Printing of Handouts

The following 15 handouts on various aspects of Homoeopathy were printed for the appraisal of the common man:

- Allergic disorders in Children and Homoeopathy
- Homoeopathy for Common ailments in Children
- Heart attack, You can prevent it

- Homoeopathic Management of Stress
- Hypertension : Silent Killer
- Homoeopathy-Mother and Child Care
- Homoeopathy- Prevention & Treatment of Malaria
- Homoeopathy-Frequently Asked Questions
- Homoeopathy in Drug Abuse
- Homoeopathy in Injuries
- Homoeopathy in Iron Deficiency Anaemia
- Know about Homoeopathy
- Dengue
- Japanese Encephalitis
- Diabetes mellitus

Documentation & Library

- Information Services

  - Providing reprographic service
  - Providing reference service
  - Helping readers in getting their required information in time

- Bibliographic lists

  - Current Health Literature Awareness Service (CHLAS) 4

- Books

Number of titles accessioned	
- WHO Publications	343
- Number of books received as Complementary	118
- Number of books procured	95
Total books as on 31.03.05	130

- Journals 8114

Number of Journals subscribed	
- Foreign	31
- Indian	05
- WHO periodicals	20
	06

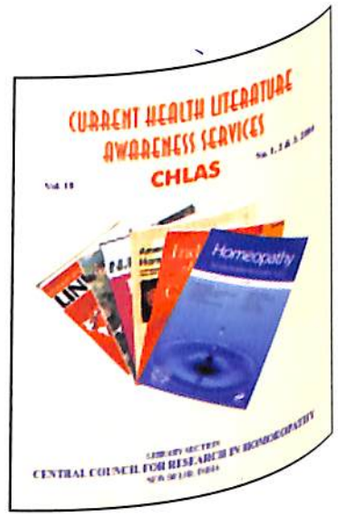

MISCELLANEOUS ACTIVITIES

Meetings of Committees

Date	*Meeting*	*Venue*
3rd June, 2005	41st meeting of Standing Finance Committee of CCRH. New Delhi	Deptt. of AYUSH, New Delhi
3rd August, 2005	1st Ethical Committee meeting of CCRH.	Council's Hqrs. New Delhi
8-9th August, 2005	40th meeting of the Scientific Advisory Committee of CCRH.	Council's Hqrs. New Delhi
7th September, 2005	2nd Ethical Committee meeting of CCRH.	Council's Hqrs. New Delhi
13th September, 2005	42nd meeting of the Standing Finance Committee of CCRH.	Deptt. of AYUSH, New Delhi.
28th September, 2005	15th meeting of the Governing Body of CCRH.	Ministry of Health & Family Welfare, Nirman Bhawan New Delhi.
1st February, 2006	3rd Ethical Committee meeting of CCRH.	Council's Hqrs. New Delhi
15th February, 2006	4th Ethical Committee meeting of CCRH.	Council's Hqrs. New Delhi

A view of Scientific Advisory Committee Meeting

Workshops/Seminars/Orientation Programmes

Date	*Workshops/Seminars/Orientation Programmes*	*Organised by*
12-14th Sept., 2005	Orientation Training Programme on Depressive episode & Schizophrenia.	CCRH Hqrs., New Delhi
15-17th Sept., 2005	Orientation Training Programme on Benign Prostratic Hyperplasia and Chronic Bronchitis.	CCRH Hqrs., New Delhi.
19-21st Sept., 2005	Orientation Training Programme on Chronic Sinusitis and Menopause Distress.	CCRH Hqrs., New Delhi.
21-23rd Sept., 2005	Orientation Training Programme on HIV/AIDS.	CCRH Hqrs., New Delhi.
17-21st Oct., 2005	Orientation Training Programme for Laboratory Technician.	CCRH Hqrs., New Delhi.
22-24th Feb., 2006	Workshop on "Clinical Trials - Methodology & Outcome Evaluation" (sponsored by WHO)	CCRH Hqrs., New Delhi

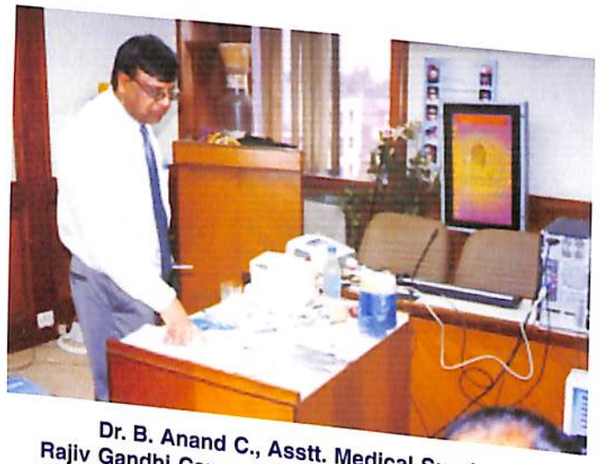

Dr. B. Anand C., Asstt. Medical Supdt., Rajiv Gandhi Cancer Institute & Research Centre, Rohini delivering a lecture in Orientation Training Programme for Laboratory Technicians

Dr. (Mrs.) Niti Khungar, Senior Specialist, Safdarjung Hospital, New Delhi delivering a lecture in Orientation Training Programme for Laboratory Technicians

Health Melas/Exhibitions

The Council participated in following Health Melas/Exhibitions in 2004-05:

Date	*Health Melas/Exhibitions*	*Organised by*
31st march-2nd April 2005	Parivar Kalyan Avum Swasthya Mela at Govt. Inter College Ground, Rai Barelly(U.P.)	HDRI, Lucknow
7th April, 2005	Perfect Health Parade at Tilak Nagar, New Delhi.	CCRH/Hqrs., New Delhi
2-11th September, 2005	9th National Expo, 2005 at Kolkata organized by Central Calcutta Science & Culture Organisation for Youth.	CCRH/Hqrs., New Delhi.
23-27th September, 2005	Arogya, 2005 at Pragati Maidan, New Delhi.	CCRH/Hqrs., New Delhi.
21-30th October, 2005	MTNL Perfect Health Mela at Shivaji Place, Raja Garden, New Delhi.	CCRH/Hqrs., New Delhi.
11-13th November, 2005	Regional Arogya, 2005 at Peoples Plaza, Necklace Road, Hyderabad.	DSU(H), Hyderabad.
14-16th November, 2005	Multimedia Campaign at Arcot Town, Vellore Distt.	CRU(H), Chennai Tamil Nadu.
14-27th November, 2005	India International Trade Fair, 2005 at Pragati Maidan, New Delhi.	CCRH/Hqrs., New Delhi.

Smt. Uma Pillai, Secretary, Deptt. of AYUSH visiting the stall of CCRH in Arogya 2005, at Hyderabad

24-27th December, 2005	Regional Arogya, 2005 at Chandrashekhar Nair Stadium Thiruvanthapuram.	CRI(H), Kottayam
28-31st December, 2005	Multimedia Campaign at Thanga Maligai, Kalyanamandapam,, Tondaiar pet, Chennai.	CRU(H), Chennai
5-8th January, 2006	Multimedia Campaign at Defence Ground, Opp. Air Port, Chennai.	CRU(H), Chennai
12-16th January, 2006	Sanjivani, 2006 at Modern College Ground, Vashi, New Mumbai.	RRI(H), Mumbai.
11-13th February, 2006	Multimedia Campaign at Sri Ramakrishna Matriculation Hr. Sec. School, Arcot, T.N.	CRU(H), Chennai
26-28th February, 2006	Regional Arogya, 2006 at Chennai Trade Centre, Chennai.	CRU(H), Chennai.
27th February, 2006	Health Mela at Thindivanam, Tamil Nadu.	CRU(T), Pondicherry.
4-6th March, 2006	Health Mela at Chegapet, Chennai.	CRU(H), Chennai.

Dr. A. Ramadoss, Hon'ble Union Minister for Health & Family Welfare releasing the council's publication : 'A Handbook of Medicinal Plants used in Homoeopathy - Vol 1' during inauguration of Arogya 2006, at Chennai

LIST OF INSTITUTES / UNITS UNDER CCRH

01. Central Research Institute(H),
Sachivothamapuram,
KOTTAYAM (KERALA)–686 532.
Tel: 0481-2432238

02. Homoeopathic Drug Research Institute,
2, Nabiullah Road,
Near City Railway Station,
(Old.Govt.MohanHomoeopathic
Medical College),
LUCKNOW (U.P.)-226 018.
Tel: 0522-2301030

03. Regional Research Institute(H),
CMP Homoeopathic Medical
College & Hospital,
Irla Naka, Ville Parle,
MUMBAI (MAHARASHTRA)-400 056.
Tel: 022-26238565

04(a) Regional Research Institute(H),
CCRH Building, Marchi Kote Lane,
Labanikhia Chaak,
PURI (ORISSA)-752 001.
Tel: 06752-223371

04(b) Extension Unit of Regional Research
Institute(H), Puri at
Dr. Abhin Chandra Homoeopathic
Medical College & Hospital, Unit-III,
Kharvela Nagar,
BHUBANESWAR (ORISSA) -751 001
Tel: 09437281072

05. Regional Research Institute(H),
Nehru Homoeopathic Medical
College & Hospital,
B-Block, Defence Colony,
NEW DELHI-110 024.
Tel: 011-24330543

06. Regional Research Institute(H),
13/210-A,Club Road,
GUDIVADA
(ANDHRA PRADESH)-521 301.
Tel: 08674-243491

07. Regional Research Institute (H),
House No. 2, Type-D, Lane-1,
Sector-1, Below B.C.S.,
NEW SHIMLA
(HIMACHAL PRADESH)-171 009.
Tel: 0177-2670450

08. Regional Research Institute(H),
Khalipara, Odel Bakara,
GUWAHATI (ASSAM) - 781 019.
Tel: 0361-2476202

09. Regional Research Institute(H),
Opp. Palce Compound, Indoor Stadium
Near Shri Govinda Jee Temple,
IMPHAL (MANIPUR)-795 001.
Tel: 0385-2227417

10. Regional Research Institute(H)
Dr. Madan Pratap Khuteta
Rajasthan Homoeopathic Medical
College & Hospital, Station Road,
JAIPUR (RAJASTHAN)–302 006.
Tel: 0141-231763

11. Clinical Research-cum-Epidemic Cell,
1, Neem Rose, Zinsi Chauraha,
JAHANGIRABAD (BHOPAL)-462 008.
Tel: 0755-2578179

12. Clinical Research Unit(H),
M.B.31, Middle Point,
Mahatama Gandhi Road,
PORT BLAIR (A&N)-744 101.
Tel: 03192-233073

13. Clinical Research Unit(H),
Hindustan Saw Mills Bld.Bailoor
Road, Mission Comp.
UDUPI (KARNATAKA)–576 101.
Tel: 0820-2521048

14. Clinical Research Unit(H),
Building No. 663/10, Krishna Colony,
GURGAON (HARYANA)-122 001.
Tel: 0124-2315438

15. Clinical Research Unit(H),
Door No.6-1-61A, K.T. Road,
TIRUPATI (ANDHRA PRADESH)-517 507.
Tel: 0877-2230466

16. Clinical Research Unit(H),
No.103/4, Kalakshetra Colony,
30th Cross Street,
(Opp. R.B.I. Staff Quarters),
CHENNAI (TAMILNADU)-600 090.
Tel: 044-24911821

17. Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy,
Qr. No.39 Type-III,Vivek Vihar,
P.O. R.K. Mission, Distt. Papumpur,
ITANAGAR
(ARUNACHAL PRADESH)-791 113.
Tel: 0360-2245785

18. Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy,
Netaji Subhash Road,
Near Netaji Girls School, Subhashpally,
SILIGURI (WEST BENGAL)-734 401.
Tel: 0353-2522202

19. Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy,
Ist Cross, Mangalakshmi Nagar,
(Behind New Bus Stand)
PONDICHERRY-605 013.
Tel: 0413-2206879

20. Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy,
Venghuli Republic Road,
AIZWAL (MIZORAM)-796 001.
Tel: 03832-2313839

21. Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy,
B-1073, Hanuman Street,
BHARUCH (GUJARAT)-392 001.
Tel: 02642-268603

22. Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy,
House No. 339, Duncan Point (Duncan
Tinali), P.O. Dimapur Main Post Office,
DIMAPUR (NAGALAND)-797 112.
Tel: 03862-233802

23. Clinical Research Unit (T) for Homoeopathy,
Thakurpalli Road, Ker Chowmuhani,
Krishnanagar, P.O. Agartala,
TRIPURA (WEST) - 799 001.
Tel: 0381-2309877

24. Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy,
In front of Samphel Hotel,
Near Sangram Bhawan, Development Area,
GANGTOK (SIKKIM)-737 101.
Tel: 03592-220250

25. Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy,
Arsunday, Boreya Road, P.O. Boreya,
RANCHI (JHARKHAND)-835 240.
Tel: 0651-2450986

26. Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy,
C/o Shri P. Bose, Temple Road,
SHILLONG (MEGHALAYA) - 793 001.
Tel: 0364-2504091

27. Clinical Research Unit(T) for Homoeopathy,
Near to Anand Lodge, Gurudwara Road,
Jagdalpur, Distt. Baster
(CHATTISGARH)-494 001.
Tel: 07782-225290

Drug Proving Research Unit(H),
D.N. De Homoeopathic Medical
College and Hospital,
12, Gobinda Khatick Road,
KOLKATA (WEST BENGAL) - 700 046
Tel: 033-23295355

Drug Proving Research Unit(H),
58, Model Town (West)
GHAZIABAD (U.P.)-201001.
Tel: 0120-2862041

30. Drug Proving Research Unit(H),
Midnapore Homoeopathic Medical
College and Hospital,
MIDNAPORE (WEST BENGAL)-721 101.
Tel: 03222-268861

31(a) Drug Standardisation Unit(H),
O.U.B. 32, Room No.4,
Vikram Puri, Habsiguda,
HYDERABAD
(ANDHRA PRADESH)-500 007.
Tel: 040-27178188

31(b) Ext. Unit for Clinical Research
Under Drug Standardization Unit (H),
Princess Durru Shehvar Children's &
General Hospital, Purani Haveli,
HYDERABAD
(ANDHRA PRADESH)-500 002
Tel: 040-27178188

32. Drug Standardisation Unit(H),
C/o Homoeopathic Pharmacopoeia
Laboratory, C.G.O. Complex,
Near Hapur Chungi,
Kamla Nehru Nagar,
GHAZIABAD (U.P.)-201 002.
Tel: 0120-2755718

33. Clinical Verification Unit(H),
Tat Baba Ashram, Gopeshwar,
VRINDABAN (U.P.)-281 121.
Tel: 0565-2456911

34. Clinical Verification Unit(H),
58, Model Town (West)
GHAZIABAD (U.P.)-201001.
Tel: 0120-2862041

35. Clinical Verification Unit(H),
NC-150,Gyatri Mandir Marg,
P.O. Lohia Nagar, Kankar Bagh,
PATNA (BIHAR)-800 020.
Tel: 0612-2360200

36. Survey of Medicinal Plants
and Collection Unit(H),
112 Govt. Arts College, Campus,
UDHAGAMANDALAM
(TAMILNADU)-643 002.
Tel: 0423-2451308

37. Homoeopathic Treatment Center,
Room No. 556 & 557, 5th Floor,
New Building, Safdarjung Hospital,
NEW DELHI - 110 016.
Tel: 011-26197986

Abbreviations:

BARC	Bhava Atomic Research Centre
CCRH	Central Council for Research in Homoeopathy
CRI(H)	Central Research Institute for Homoeopathy
HDRI	Homoeopathic Drug Research Institute
CRU(H)	Clinical Research Unit for Homoeopathy in general area
CRU(T)	Clinical Research Unit in tribal area
CVU	Clinical Verification Unit
HTC	Homoeopathic Treatment Centre
DPRU	Drug Proving Research Unit
DSU	Drug Standardisation Unit
GDV	Gas Diffusion Visualization
HPT	Homoeopathic Pathogenetic Trial
JIPMER	Jawahar Lal Institute of Post-Graduate Medical Education and Research
OU	Osmania University
WHO	World Health Organisation
ISM&H	Indian Systems of Medicine and Homoeopathy
NIDDM	Non Insulin Dependent Diabetes mellitis
FDI	Frquency, duration & Intensity
HIV	Human Immune deficiency Virus
AIDS	Acquired Immune Deficiency Syndrome
CDC	Center for Disease Control
ARC	AIDS Related Complex
MDT	Multi drug therapy
UCLA	University of California, Los Angeles
CHLAS	Current Health Literature Awareness Service

FINANCIAL STATEMENT

FORM OF FINANCIAL STATEMENTS (NON-PROFIT ORGANISATIONS)
Name of Entity : Central Council for Research in Homoeopathy, New Delhi

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2006

(Figure in Rupees)

Sl No	*Liabilities*	*Schedule*	*Current year*	*Previous year*
1	*Capital Fund*	1	88,246,952.68	54,099,896.59
2	Current Liabilities	2	76,128.15	62,866.15
	TOTAL		**88,323,080.83**	**54,162,762.74**
	Rounded off		**88,323,081.00**	**54,162,762.00**

Sl No	Assets	Schedule	Current year	Previous year
1	Fixed Assets	3	23,378,036.23	20,097,064.26
2	Current Assets	4	64,945,044.60	34,065,698.48
	TOTAL		**88,323,080.83**	**54,162,762.74**
	Rounded off		**88,323,081.00**	**54,162,762.00**

(Figure in Rupees)

SCHEDULE 1 CAPITAL FUND (for Balance Sheet)			Amount	Current year	Previous year
1	Opening Balance		29,329,891.60		
	Add: Assets Created during the year	5,146,633.00			29,329,891.60
	Add: Donated Building (Puri)	612,500.00	5,759,133.00		
			35,089,024.60	35,089,024.00	
2	Excess of Income Over Expenditure				
	Opening Balance		24770004.99		
	Add: Excess of Income over Expenditure		28387923.09	53,157,928.08	24,770,004.99
	TOTAL			88,246,952.08	54,099,896.59

SCHEDULE - 2- CURRENT LIABILITIES		Amount	Current year	Previous year
1	GIS FUND			
	Opening Balance	58,265.15		
	Add: During the year	293,846.00		
		352,111.15		
	Less: Paid during the year	289,231.00	62,880.15	58,265.15
2	EARNEST MONEY			
	Opening Balance	800.00		800.00
	Add: Received during the year	7,500.00	8,300.00	
3	G.I.S. Premium			
	Opening Balance	3,801.00		3,801.00
	Add: During the year	546,275.00		
		550,076.00		
	Less: Paid during the year	551,350.00		
	Recoverable from the Staff	1,274.00		
4	Employees Contribution towards New Pension Scheme		4,948.00	
	TOTAL		76,128.15	62,866.15

SCHEDULE FORMING PART OF BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH 2006

SCHEDULE - 3 FIXED ASSETS

(Amount in Rupees)

S. No.	Particulars	GROSS BLOCK				DEPRECIATION				NET BLOCK	
		Cost/Valuation as at beginning of the year	Addition during the year	Deduction during the year	Cost/Valuation at the year end	As at the beginning of the year	On addition during the year	On deduction during the year	Total up to the year end	As at the current year	As at the previous year end
1	Leasehold land at NOIDA	1,762,114 00	-	-	1,762,114 00	-	-	-	-	1,762,114 00	1,762,114 00
2	Donated Bldg at Puri	633,816 00	612,500 00	-	1,246,316 00	342,245 80	14,578 50	-	356,824 30	889,491 70	291,570 20
3	Fencing & Boundary Wall at NOIDA & Ooty	778,035 00	-	-	778,035 00	371,260 44	20,338 73	-	391,599 17	386,435 83	406,774 56
4	Office Equip	3,279,284 24	1,336,042 00	31,219 76	4,584,106 48	2,040,700 31	123,858 39	24,193 19	2,140,365 51	2,443,740 97	1,238,583 93
5	Vehicle	2,843,013 44		274,291 20	2,568,722 24	2,088,453 00	150,912 08	269,350 00	1,970,015 08	598,707 16	754,560 44
6	Furniture & Fixture	7,712,505 38	763,657 00	188,286 31	8,287,876 07	3,981,598 19	373,090 72	164,969 45	4,189,719 46	4,098,156 61	3,730,907 19
7	Computer & Peripheral	7,727,620 80	1,100,440 00	-	8,828,060 80	3,206,512 70	452,110 81	-	3,658,623 51	5,169,437 29	4,521,108 10
8	Elect. Install	290,544 62	10,935 00	30,092 34	271,387 28	165,169 01	25,075 12	28,629 62	161,614 51	109,772 77	125,375 61
9	Library Books	1,813,904 11	143,863 00	-	1,957,767 11	1,142,150 24	33,587 69	-	1,175,737 93	782,029 18	671,753 87
10	Tubewell & Water Pipe	16,632 00	-	-	16,632 00	5,388 72	1,124 32	-	6,513 04	10,118 96	11,243 28
11	Hospital Equip.	15,577,131 06	1,791,696 00	34,503 03	17,334,324 03	9,427,599 96	1,229,906 22	33,814 93	10,623,691 25	6,710,632 78	6,149,531 10
12	Priced Pub.	433,541 98	-	16,143 00	417,398 98	-				417,398 98	433,541 98
	TOTAL	42,868,142 63	5,759,133 00	574,535 64	48,052,739 99	22,771,078 37	2,424,582 58	520,957 19	24,674,703 76	23,378,036 23	20,097,064 26

(Figure in Rupees)

SCHEDULE - 4 CURRENT ASSETS	Amount	Current year	Previous year
1 **Bank Balance**			
Council's	2,856,266.31		
W.H.O.	58,571.00		
U.C.L.A.	1,956,670.00		
	4,871,507.31		
Imprest Advance	164,889.00	5,036,396.31	5,523,712.19
2 **Loan & Advances to Government Servants**			
Computer Advance	1,404,720.00		
Scooter Advaance	513,938.00		
Car Advance	1,066,859.00		
Cycle Advance	4,210.00		
Festival Advance	42,590.00		
Pay Advance	114,480.00		
Fan Advance	200.00		
Medical Advance	152,665.00		
Warm Cloth Advance	1,050.00		
Flood Advance	3,600.00		
	3,304,312.00	3,304,312.00	3,591,211.00
3 **Other Advances to various Units/Institutes**			
Contingent Advance	52,022,901.29		
T.A. Advance	192,665.00		
L.T.C. Advance	304,331.00		
	52,519,897.29	52,519,897.29	21,113,163.29
4 **Pre - Paid Salary**			
Opening Balance	3,808,930.00		
Less: Adjusted	3,808,930.00		
	Nil		
Add : Paid during the year			
PLAN	1,936,853.00		
NON-PLAN	2,108,530.00	4,045,383.00	3,808,930.00
5 *Security Deposit*			28,544.00
Opening Balance	28,544.00		
Add: Paid during the year to H.P.E.B.	9,100.00		
	37,644.00	37,644.00	
6 *Amount recoverable from Staff on account of G.I.S.*		1,274.00	
7 Amount due to staff on account of N.D.F.		138.00	138.00
TOTAL		**64,945,044.60**	**28,541,991.29**

FORM OF FINANCIAL STATEMENTS (NON-PROFIT ORGANISATIONS)
Name of Entity: Ceentral Council for Research in Homoeopathy, New Delhi.

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE PERIOD/YEAR ENDED 31st March, 2006.

(Figure in Rupees)

	INCOME			SCHEDULE	Current year	Previous year
1	Grants/Subsidies	Plan	89,768,580.00			
		N.E. Region	1,000,000.00			
		Non-Plan	50,000,000.00			
		Total	140,768,580.00	5		
		Less Capitalised	5,146,633.00			
			135,621,947.00		135,621,947.00	
		Grant from W.H.O.		5	90,563.00	
		Grant from U.C.L.A.		5	2,305,441.00	
					138,017,951.00	119,864,245.00
2	Interest Earned			6	656,226.32	631,785.81
3	Other Income			7	220,159.35	32,873.71
4	Excess of Expenditure over Income					
			Total		138,894,336.67	120,528,904.52
			Rounded off		138,894,337.00	120,528,905.00

	EXPENDITURE			Schedule	Current year	Previous year
1	Establishment Expenditure	PLAN				
		General Area Plan	34,144,663.00	8(A)		
		Spl. Comp. Plan	5,131,429.00	8(B)		
		Tribal Area Plan	3,684,364.00	8©		
		Total Plan	42,960,456.00			
		Non-Plan	49,649,779.00	8(D)	92,610,235.00	86,659,929.00
2	Other Administrative Exp..	PLAN				
		General Area Plan	10,555,366.00	9(A)		
		Spl. Comp. Plan	431,113.00	9(B)		
		Tribal Area Plan	398,189.00	9©		
		Total Plan	11,384,668.00			
		Non-Plan	3,670,223.00	9(D)	15,054,891.00	12,327,896.00
		Silver Jub.Celebrat.		10(A)		624,160.00
		CCH Inq. Comm.		10(B)		1,275,238.00
		Swasthya Mela				9,407,145.00
		Arogya, 2004				147,035.00
		U.C.L.A.		11	365,892.00	197,052.00
3	Expenditure made out of WHO Fund			12	50,813.00	920,808.00
4	Depreciation				2,424,582.58	2,203,525.24
5	Depreciated Value of Items auctioned					
	Less: Amount received					
	Loss on Items auctioned					70.50
5	Excess of Income over Expenditure				28,387,923.09	6,766,045.78
			Total		138,894,336.67	120,528,904.52
			Rounded off		138,894,337.00	120,528,905.00
6	Significant Accounts Policy			13		

SCHEDULE - 5 GRANTS/SUBSIDIES (for I & E)				(Figure in Rupees) Current year	Previous year
1	Central Government	Plan	89,768,580.00		
		N.E. Region	1,000,000.00		
		Non-Plan	50,000,000.00		
			140,768,580.00	140,768,580.00	124,047,035.00
2	International Organisation	W.H.O.		90,563.00	933,629.00
3	U.C.L.A.			2,305,441.00	174,295.00
	TOTAL			**143,164,584.00**	**125,154,959.00**

SCHEDULE - 6 INTEREST EARNED (for I & E)			Current year	Previous year
1	On Saving Account With Schedule Bank		510,694.32	467,704.85
2	On loan from Employees		145,532.00	164,080.96
	TOTAL		**656,226.32**	**631,785.81**

SCHEDULE - 7 OTHER INCOME (for I & E)				(Figure in Rupees) Current year	Previous year
1	Income on sale of Vehicle (Rs. 37061.00 (-) Rs. 4941.20)			32,119.80	
2	Income on auctioned items (Rs. 37245.00 (-) Rs. 32494.25)			4,750.75	
3	Sale of Plants			11,000.00	10,400.00
4	Misc. Receipts				
1	For use of Staff Car	2,848.00			
2	Received from IHBAS on account of L.S.	5,818.00			
3	Received from IHBAS on account of P.C.	8,126.00			
4	Cost of I. Card	60.00			
5	Sale of Old Tree (Ooty)	9,500.00			
6	Sale of Old Tree (NOIDA)	10,100.00			
7	Sale of Old Tree (Kottayam)	650.00			
8	Refund of Fees	500.00			
9	Sale of Tender Form	3,450.00			
10	Receipts (Rs. 4141.80 + 317.00)	4,458.80			
11	Unidentified amount transferred from GPF A/c.	88,372.00			
12	Amount refunded by the Deptt. of Urban & Development	9,000.00			
13	Cartage & Carriage Charges refunded by K.S.H.Co. (P) Ltd.	29,406.00			
	Total	172,288.80	172,288.80	22,473.71	
	TOTAL			**220,159.35**	**32,873.71**

GAP

SCHEDULE - 8 (A) ESTABLISHMENT EXPENSES (for I & E A/c.) (Figure in Rupees)		Current year	Previous year
a)	Salaries & Wages	21,828,451.00	22,240,137.00
b)	Allowances & Bonus	10,739,462.00	9,863,872.00
c)	Others (Specify)		
1	Over Time Allowance	86,167.00	68,579.00
2	Medical Reimbursement	562,331.00	268,200.00
3	L.T.C. Expenses	811,020.00	268,693.00
4	CGHS Payment	117,232.00	338,515.00
TOTAL		34,144,663.00	33,047,996.00

SCP

SCHEDULE 8(B) - ESTABLISHMENT EXPENSES (for I & E A/c.) (Figure in Rupees)		Current year	Previous year
a)	Salaries & Wages	3,304,376.00	3,526,636.00
b)	Allowances & Bonus	1,780,355.00	1,602,894.00
	Others (Specify)		
1	Over Time Allowqnce		860.00
2	Medical reimbursement	46,698.00	24,145.00
3	L.T.C. Expenses		34,208.00
TOTAL		5,131,429.00	5,188,743.00

TAP
(for I & E A/c.)
(Figure in Rupees)

SCHEDULE 8© - ESTABLISHMENT EXPENSES			Current year	Previous year
a)	Salaries & Wages		2,413,265.00	2,174,164.00
b)	Allowances & Bonus		1,219,338.00	1,017,802.00
c)	Others (Specify)			
	1	Over Time Allowance	-	
	2	Medical Reimbursement	1,976.00	335.00
	3	L.T.C. Expenses	49,785.00	89,847.00
TOTAL			3,684,364.00	3,282,148.00

NON-PLAN
(for I & E A/c.)
(Figure in Rupees)

SCHEDULE - 8(D) - ESTABLISHMENT EXPENSES			Current year	Previous year
a)	Salaries and Wages		28,332,865.00	26,722,200.00
b)	Allowances & Bonus		13,000,719.00	11,066,013.00
c)	Expenses on Employee's Retirement Terminal Benefits		7,500,000.00	7,000,000.00
e)	Others (Specify)			
d)	1	Over Time Allowance	9,871.00	563.00
	2	Medical Reimbursement	149,393.00	87,468.00
	3	L.T.C. Expenses	377,751.00	264,798.00
	4	C.G.H.S. Contribution	279,180.00	
TOTAL			49,649,779.00	45,141,042.00

GAP
(for I & E A/c.)
(Figure in Rupees)

SCHEDULE 9 (A) - OTHER ADMINISTRATIVE EXPENSES		Current year	Previous year
a)	Cartage & Carriage Inward	-	29,406.00
b)	Electricity & Power	255,159.00	247,446.00
c)	Water Charges	7,739.00	22,275.00
d)	Insurance	13,381.00	25,468.00
e)	Repair & Maintenance	855,733.00	987,956.00
f)	Rent, Rates & Taxes	129,585.00	225,560.00
g)	Vehicle Running & Maintenance	347,722.00	234,124.00
h)	Postage, Telephone & Communication Charges	732,698.00	670,843.00
i)	Printing & Stationery	1,817,120.00	1,299,804.00
j)	Travelling & Conveyance Expenses	1,294,021.00	1,536,697.00
k)	Foreign Tour Travel Expenses	166,018.00	
l)	TA Expenses on I.E.C. Programme	21,519.00	
m)	Expenses on Seminar and Workshops	1,137,367.00	580,937.00
n)	Subscription Expenses	73,161.00	78,035.00
o)	Expenses on Fees	47,110.00	23,960.00
p)	Audit Remuneration	65,680.00	141,150.00
q)	Professional Charges	124,780.00	108,859.00
r)	Expenditure on Hindi Parliamentary Committee	67,546.00	
s)	Expenditure on Asdvertisement & Publicity	234,792.00	69,190.00
t)	Others (Specify)		
	1 Non-Priced Publication	198,783.00	397,343.00
	2 Medicine	612,599.00	306,831.00
	3 Diet	225,411.00	239,579.00
	4 Sundries	613,753.00	679,692.00
	5 Provers & Consultants	66,800.00	142,940.00
	6 Lease Cess/Rent	943,408.00	
	7 Miscelleneous Expenditure	503,481.00	334,042.00
	TOTAL:	**10,555,366.00**	**8,382,137.00**

SCP
(for I & E A/c.)
(Figure in Rupees)

SCHEDULE 9 (B) - OTHER ADMINISTRATIVE EXPENSES		Current year	Previous year
a)	Freight & Cartage	-	200.00
b)	Electricity & Power	13,782.00	15,589.00
c)	Water Charges	2,925.00	4,415.00
d)	Repair & Maintenance	14,006.00	20,606.00
e)	Rent, Rates & Taxes	146,208.00	191,211.00
f)	Postage, Telephone & Communication Charges	40,380.00	44,313.00
g)	Printing & Stationery	71,986.00	77,625.00
h)	Travelling & Conveyance Expenses	24,234.00	115,431.00
i)	Subscription Expenses	300.00	300.00
j)	Others (Specify)		
	1 Medicine	79,714.00	57,705.00
	2 Sundries	19,324.00	14,338.00
	3 Miscelleneous Expenditure	18,254.00	38,647.00
	TOTAL:	**431,113.00**	**580,380.00**

TAP

SCHEDULE 9 (C) - OTHER ADMINISTRATIVE EXPENSES		(for I & E A/c.) Current year	(Figure in Rupees) Previous year
a)	Electricity & Power	12,115.00	16,179.00
b)	Water Charges	2,041.00	540.00
c)	Repair & Maintenance	3,795.00	4,484.00
d)	Rent, Rates & Taxes	181,206.00	113,700.00
e)	Postage, Telephone & Communication Charges	28,298.00	28,512.00
f)	Printing & Stationery	42,552.00	23,025.00
g)	Travelling & Conveyance Expenses	61,211.00	22,256.00
h)	Subscription Expenses	563.00	1,000.00
i)	Others (Specify)		
1	Medicine	43,737.00	31,122.00
2	Sundries	3,904.00	1,584.00
3	Miscelleneous Expenditure	18,767.00	11,441.00
	TOTAL:	**398,189.00**	**253,843.00**

NON-PLAN

SCHEDULE 9 (D) - OTHER ADMINISTRATIVE EXPENSES		(for I & E A/c.) Current year	(Figure in Rupees) Previous year
a)	Electricity & Power	223,040.00	146,000.00
b)	Water Charges	13,882.00	12,076.00
c)	Insurance	13,063.00	7,567.00
d)	Repair & Maintenance	538,180.00	320,066.00
e)	Rent, Rates & Taxes	645,495.00	556,405.00
f)	Vehicle Running & Maintenance	212,252.00	180,039.00
g)	Postage, Telephone & Communication Charges	266,141.00	239,105.00
h)	Printing & Stationery	359,153.00	241,106.00
i)	Travelling & Conveyance Expenses	504,792.00	681,545.00
j)	Subscription Expenses		275.00
k)	Expenses on Fees		7,749.00
l)	Professional Charges		79,279.00
m)	Expenses on Advt. & Publicity	2,400.00	
n)	Others (Specify)		
1	Lease Cess/Rent	45,872.00	
2	Medicine	174,517.00	122,361.00
3	Diet	14,723.00	22,216.00
4	Sundries	165,145.00	102,344.00
5	Provers & Consultants	207,700.00	218,870.00
5	Miscelleneous Expenditure	283,868.00	171,834.00
	TOTAL:	**3,670,223.00**	**3,108,837.00**

SCHEDULE 11 - OTHER EXPENSES OUT OF U.C.L.A. FUND

(Figure in Rupees)

			Current year	Previous year
1	UCLA			
	a)	Honorarium		
	b)	Refreshment Charges	278,000.00	128,162.00
	c)	Video Coverage Charges	22,800.00	10,142.00
	d)	Stationary		4,500.00
	e)	TA & Conveyance	24,438.00	1,605.00
	f)	Miscelleneous Expenditure	32,527.00	47,010.00
	g)	Expenses on Fees	6,327.00	5,633.00
	h)	Postage Expenditure	1,500.00	
			300.00	
		TOTAL	**365,892.00**	**197,052.00**

SCHEDULE 12 - EXPENDITURE OUT OF WHO FUND

W.H.O.
(Figure in Rupees)

		R.M	EBCRH	G.D.	TOTAL
1	Miscelleneous Expenses				
2	Printing & Stationery			3,375.00	3,375.00
3	Secy. Assistance			45,438.00	45,438.00
			2,000.00		2,000.00
	TOTAL		**2,000.00**	**48,813.00**	**50,813.00**

STATEMENT OF LAST YEAR ADVANCES ADJUSTMENT

(Figure in Rupees)

S. No.	Head	General Area Plan	Spl. Comp. Plan	Tribal Area Plan	TOTAL PLAN	Non-Plan	Adjusted through Bills	Recd. through Cash	Total Adjustment
1	LTC Expenses	64,650.00		25,200.00	89,850.00	30,915.00	120,765.00	25,911.00	146,676.00
1	T.A. & Conveyance	47,133.00		12,939.00	60,072.00		60,072.00	13,828.00	73,900.00
1	Medical Advance		24,135.00		24,135.00		24,135.00	10,000.00	34,135.00
1	Salary & Wages					9,243.00	9,243.00	101,667.00	110,910.00
2	Electricity & Power					19,696.00	19,696.00		19,696.00
3	Repair & Maintenance	284,206.00			284,206.00	224,500.00	508,706.00		508,706.00
4	Advt. & Publicity	61,440.00			61,440.00		61,440.00		61,440.00
5	Vehicle Running & Maint.					5,921.00	5,921.00		5,921.00
6	Postage & Telephone	2,000.00			2,000.00		2,000.00		2,000.00
7	Printing & Stationery	39,879.00			39,879.00	4,000.00	43,879.00		43,879.00
8	Miscelleneous Exp.	7,194.00	5,977.00		13,171.00	17,180.00	30,351.00		30,351.00
9	Medicine	4,664.00	2,000.00		6,664.00	11,785.00	18,449.00		18,449.00
10	Sundries	282,572.00			282,572.00	12,250.00	294,822.00		294,822.00
11	Referigerator	48,990.00			48,990.00	12,000.00	60,990.00		60,990.00
13	Furniture	50,400.00			50,400.00	31,094.00	81,494.00		81,494.00
14	Air Conditioner	46,000.00			46,000.00		46,000.00		46,000.00
15	Computer	62,192.00			62,192.00		62,192.00		62,192.00
16	Cabinet	55,225.00			55,225.00	111,712.00	166,937.00		166,937.00
17	Fan					3,750.00	3,750.00		3,750.00
18	U.P.S.	8,350.00			8,350.00	14,720.00	23,070.00		23,070.00
19	Lab. Equipments	35,856.00			35,856.00	153,403.00	189,259.00		189,259.00
20	Photocopier Machine	88,640.00			88,640.00	95,654.00	184,294.00		184,294.00
21	Fax Machine	22,552.00			22,552.00		22,552.00		22,552.00
22	Exp. On HM/Seminar	5,000.00			5,000.00		5,000.00		5,000.00
	TOTAL	**1,105,160.00**	**7,977.00**		**1,113,137.00**	**726,908.00**	**1,840,045.00**	**101,667.00**	**1,941,712.00**

SCHEDULE - 13 SIGNIFICANT ACCOUNTING POLICIES

1 **Accounting Convention:**

The financial statement are prepared on the basis of historical cost convention

2 **Inventory Valuation**

Stores (Including machinery and spares) are valued at cost.

3 **Fixed Assets :**

Fixed assets are stated at cost of acquisition inclusive of taxes, incidental and direct expenses ralated to acquisition and are capitalized at cost.

4 **Depreciation**

Depreciation is provided on assets on WDV of Assets acquired w.e.f. 1978-79 onwards at the rate as ascertained and approved by the Director, C.C.R.H. Mentioned below against each block of assets the depreciation so worked-out have been deducted from the Capital fund.

1	Office Equipment	10%
2	Electrical Installation	20% and 100% on Glassware
3	Hospital Equipment	20% and 100% on Glassware
4	Vehicle	20%
5	Furniture & Fixture	10% and 100% on Glassware
6	Computer & Peripherals	10%
7	Books	5%
8	Building	5%
9	Tubewell and Waterpipe	10%

5 *Government Grants*

Government grants are accounted on realization basis.

6 ***Retirement Benefits***

Retirement benefits have been met out from the amount transferred from the Budgetted grants by Debit & Credit to the Pension Fund Account.

A Separate aqccount viz. Pension Fund Account is being maintained. Receipts and Payment Account and Balance Sheet of Pension Fund Account is attached with the Annual Accounts of the Council.

7 **General Provident Fund**

The Council is maintaining a separate General Provident Fund Account for its employees as per G.P.F. Rule, 1960.

The Receipt and Payment Account and the Balance Sheet for the General Provident Fund Account is attached with the Annual Account of the Council.

8 **House Building Advance**

The Council is maintaining a separate House Building Advance account for its employees

The Receipt and Payment account and the Balance Sheet for the House Building Advance Account is attached with the Annual Account of the Council.

FORM OF FINANCIAL STATEMENTS (NON-PROFIT ORGANISATIONS)

Name of Entity..... C.C.R.H., Janak Puri, New Delhi.

RECEIPTS AND PAYMENTS FOR THE YEAR ENDED 31.03.2006

(Figure in Rupees)

RECEIPTS		Current Year	Previous year	PAYMENTS		Current year	Previous year
1 Opening Balance				1 Expenses			
a) Bank Balance	5,326,358.19			a) Establishment Expenses			
b) W.H.O.	18,821.00			PLAN			
c) UCLA	17,121.00			GAP	34,221,477.00		
d) Imprest Advance	161,412.00			SCP	5,081,789.00		
	5,523,712.19	5,523,712.19	13,300,970.67	TAP	3,675,439.00		
2 Grants received					42,978,705.00		
a) From M.H.F.W., New Delhi				NON-PLAN	50,242,837.00		
PLAN					93,221,542.00	93,221,542.00	87,689,579.00
GAP	78,000,000.00			b) Administrative Expenses			
SCP	6,900,000.00			PLAN			
TAP	5,100,000.00			GAP	42,626,348.00		
N.E. Region	1,000,000.00			SCP	431,136.00		
	91,000,000.00			TAP.	589,328.00		
Less: Refunded to Ministry(GAP)	231,420.00				43,646,812.00		
	90,768,580.00			NON-PLAN	3,627,034.00		
NON-PLAN	50,000,000.00				47,273,846.00	47,273,846.00	33,124,751.00
	140,768,580.00	140,768,580.00	123,900,000.00				
For Arogya, 2004			147,035.00	Swasthya Mela		-	108,187.00
				Swasthya Jagrook Mah Mela		-	7,300,053.00
W.H.O		90,563.00	933,629.00				
				WHO	(RM)	-	303,977.00
U.C.L.A.		2,305,441.00	174,295.00	WHO	(GD)	48,813.00	127,845.00
				WHO	(EBCR)	2,000.00	488,986.00
3 Interest Received				Arogya, 2004		-	147,035.00
a) On Bank Deposit		510,694.32	467,704.85	U.C.L.A.		365,892.00	188,699.00
b) On Loan & Advances		145,532.00	164,080.96				

4 Other Income				2 Expenditure on Fixed Assets			
a) Misc. Receipts	172,268.80		22,473.71	PLAN			
b) Receipt of auctioned item	37,245.00	209,533.60	2,760.00	GAP	2,696,017.00		
c) Sale of Priced Publication		16,143.00	29,505.00	SCP	2,497.00		
d) Sale of Plants		11,000.00	10,400.00	TAP	6,825.00		
e) Sale of Old Vehicle		37,061.00	-		2,705,339.00		
				NON-PLAN	633,719.00		
5 Any other Receipts				N.E. Region	967,037.00		
a) Cash receipts against Adv.					4,306,095.00	4,306,095.00	4,919,258.00
I TA Advance		13,828.00	31,776.00				
II LTC Advance		25,911.00	2,512.00	3 Other Payments			
III Contingent Advance		101,667.00	1,008,304.00	a) Loans & Advances to Staff			
v Medical Adv		10,000.00	779.00	I Cycle Advance		5,500.00	
				II Car Advance		-	480,000.00
b) Received from L.I.C. of India				III Scooter Advance		164,000.00	204,000.00
towards full & final payment		293,846.00	292,519.00	IV Computer Advance		332,000.00	714,000.00
				V Fan Advance		1,000.00	2,000.00
c) Recoveries against Advances							
I Festival Advance		237,920.00	256,650.00	b) Festival Advance		235,500.00	252,000.00
II Scooter Advance		257,312.00	284,896.00				
III Car Advance		253,752.00	306,502.00	c) Payment made against recoveries			
IV Cycle Advance		2,830.00	1,200.00	I Income Tax		3,596,050.00	6,117,341.00
V Computer Advance		364,944.00	322,579.00	II GPF		17,038,760.00	15,589,232.00
VI Fan Adv.		1,600.00	1,200.00	III GIS Premium		551,350.00	533,000.00
VII Pay Advance Rec. PIY		106,322.00	164,971.00	IV Individual LIC Prem.		116,758.00	108,674.00
VIII Flood Advance Rec.		1,400.00		V Deputationist Rec.		90,720.00	149,445.00
IX Warm Cloth Adv. Rec.		450.00		VI PMNRF		37,289.00	161,786.00
				VII T & Credit Soc.		316,382.00	91,249.00
6 Security Adj. From D.A.V.P.			20,000.00	VIII Personal Loan		51,800.00	42,700.00
				IX Tfd. To HBA Fund		76,952.00	28,000.00

7		Earnest Money Deposit (M/s Bharat Bhushan & Co.)	7,500.00	-	x	Flood Advance	5,000.00	-
8		Employee Contribution Tier - I (New Pension Scheme)	4,948.00	-	xi	Immediate Relief	8,000.00	8,000.00
9		**Other Recoveries**			xii	Warm Cloth Advance	1,500.00	-
	I.	Income Tax	3,596,050.00	6,117,341.00				
	ii.	GPF Subs. & Adv.	17,038,760.00	15,589,232.00	d)	**Payment made against receipt of G.I. Scheme fund**	289,231.00	285,710.00
	iii.	GIS Premium of Staff	546,275.00	546,050.00				
	iv	Individual LIC premium of Staff	116,758.00	108,674.00	4	**Security Deposit to Himachal Pradesh Elect. Board**	9,100.00	-
	v.	Deputationist's recoveries	90,720.00	149,445.00				
	vi	Rec. of H.B. Advance	76,952.00	28,000.00	5	**Closing Balance**		
	vii.	Personal Loan Rec.	51,800.00	42,700.00	a)	Bank Balance		
	viii	PMNRF	37,289.00	161,786.00		Council's		
	ix.	T & C.S. Society	316,382.00	91,249.00		Regular Grant	2,856,266.31	
	x	Immediate Relief	8,000.00	8,000.00		W.H.O.	58,571.00	
						U.C.L.A.	1,956,670.00	
							4,871,507.31	4,871,507.31 5,362,300.19
					b)	**Imprest Advance.**		
						Opening Balance	161,412.00	
						Add Granted	12,000.00	
							173,412.00	
						Less Adjusted	8,523.00	
							164,889.00	164,889.00 161,412.00
TOTAL			173,181,476.31	164,689,219.19	TOTAL			173,181,476.31 164,689,219.19
Say Rs.			173,181,476.00	164,689,219.00	Say Rs.			173,181,476.00 164,689,219.00

SCHEDULE - ESTABLISHMENT EXPENSES

(for R & P A/c)
(Figure in Rupees)

		Current Year	Previous year
a)	Salaries & Wages	21,828,451.00	22,239,642.00
b)	Allowances & Bonus	10,739,462.00	9,863,872.00
c)	Other (Specify)		
1	Pay advance		61,384.00
2	Medical Advance	10,000.00	
3	Over Time Allowance	86,167.00	68,579.00
4	Medical Reimbursement	562,331.00	250,979.00
5	L.T.C. Expenses	746,370.00	225,591.00
6	L.T.C. Advance	153,789.00	85,110.00
7	CGHS Payment	117,232.00	338,515.00
	Total	**34,243,802.00**	**33,133,672.00**
	(-) Pre-Paid Salary Adjustment	1,427,076.00	1,297,531.00
	(+) Pre-paid salary of the year 2005-06	1,404,751.00	31,836,141.00 1,427,076.00
	TOTAL	**34,221,477.00**	**33,263,217.00**

SCP
(for R & P A/c.)
(Figure in Rupees)

SCHEDULE - ESTABLISHMENT EXPENSES			Current year	Previous year
a)	Salary & Wages		3,304,376.00	3,526,636.00
b)	Allowances & Bonus		1,780,355.00	1,602,894.00
	1	Pay Advance		94,866.00
	2	L.T.C. Expenses	22,563.00	34,208.00
	3	Medical Reimbursement		24,145.00
	4	Over Time Allowance		860.00
	5	Medical Advance		27,000.00
		Total	**5,107,294.00**	**5,310,609.00**
		(-) Pre-Paid Salary adjustment	335,991.00	269,093.00
		(+) Pre-Paid salary of the year 2005-06	310,486.00	5,041,516.00
				335,991.00
TOTAL			**5,081,789.00**	**5,377,507.00**

(for R & P A/c.)
(Figure in Rupees)

SCHEDULE - ESTABLISHMENT EXPENSES			Current year	Previous year
a)	Salary & Wages		2,413,265.00	2,174,164.00
b)	Allowances & Bonus		1,219,338.00	1,017,802.00
c)	Others (Specify)			
	2	Medical Reimbursement	1,976.00	335.00
	3	L.T.C. Expenses	24,585.00	89,847.00
	4	L.T.C. Advance		25,200.00
		Total	**3,659,164.00**	**3,307,348.00**
		(-) Pre-paid salary adjustment	205,341.00	196,663.00
				3,110,685.00
		(+) Pre-Paid salary of the year 2005-06	221,616.00	205,341.00
TOTAL			**3,675,439.00**	**3,316,026.00**

NON-PLAN
(for R & P A/c.)
(Figure in Rupees)

SCHEDULE - ESTABLISHMENT EXPENSES		Current year	Previous year
a)	Salaries & Wages	28,323,622.00	26,721,900.00
b)	Allowances & Bonus	13,000,719.00	11,066,013.00
c)	Expenses on Employees Retirement & Terminal Benefits	7,500,000.00	7,000,000.00
e)	Others (Specify)		
1	Over Time Allowance	9,871.00	563.00
2	Medical Reimbursement	149,393.00	87,468.00
3	L.T.C. Expenses	346,836.00	253,828.00
4	L.T.C. Advance	145,942.00	40,966.00
5	Pay Advance	79,466.00	133,567.00
6	Medical Advance	139,800.00	10,000.00
7	C.G.H.S. Contribution	279,180.00	
	Total	**49,974,829.00**	**45,314,305.00**
	(-) Pre-paid salary adjustment	1,840,522.00	1,421,998.00
			43,892,307.00
	(+) Pre-paid salary of the year 2005-06	2,108,530.00	1,840,522.00
	TOTAL	**50,242,837.00**	**45,732,829.00**

SCHEDULE - OTHER ADMINISTRATIVE EXPENSES ETC.		Current year	Previous year
a)	Cartage & Carriage Inwards		29,406.00
b)	Electricity & Power	255,159.00	247,446.00
c)	Water Charges	7,739.00	22,275.00
d)	Insurance	13,381.00	25,468.00
e)	Repair & Maintenance	571,527.00	401,022.00
f)	Rent, Rates & Taxes	129,585.00	225,560.00
g)	Vehicle Running & Maintenance	347,722.00	229,637.00
h)	Postage, Telephone & Communication Charges	730,698.00	668,843.00
I)	Printing & Stationery	1,777,241.00	1,251,548.00
j)	Travelling & Conveyance Expenses	1,246,888.00	1,433,287.00
k)	Foreign Tour Travel Expenses	166,018.00	
l)	TA Expenses for I.E.C. Programme	21,519.00	
m)	Expenses on Seminar & Workshops	1,132,367.00	580,937.00
n)	Subscription Expenses	73,161.00	78,035.00
o)	Expenses on Fees	47,110.00	23,960.00
p)	Audit Remuneration	65,680.00	141,150.00
q)	Professional Charges	124,780.00	108,859.00
r)	Expenses on Advertisement and Publicity	173,352.00	69,190.00
s)	Expenditure on Hindi Parliamentary Committee	67,546.00	
t)	Others (Specify)		
1	Lease Cess/Rent for Ooty	943,408.00	
2	Non-Priced Publication	198,783.00	397,343.00
3	Medicine	607,935.00	301,834.00
4	Diet	225,411.00	239,579.00
5	Sundries	331,181.00	659,236.00
6	Provers & Consultants	66,800.00	142,940.00
7	Miscelleneous Expenses	496,287.00	297,423.00
8	T.A. Advance	91,125.00	41,900.00
9	Contingent Advance	1,482,765.00	18,792,423.00
	Collaborative Study	1,731,180.00	
	For Capital work at NOIDA & Kottayam	29,500,000.00	
	TOTAL	**42,626,348.00**	**26,409,301.00**

SCP
(for R & P A/c)
(Figure in Rupees)

SCHEDULE - OTHER ADMINISTRATIVE EXPENSES ETC.			Current year	Previous year
a)	Electricity & Power		13,782.00	15,589.00
b)	Water charges		2,925.00	4,415.00
c)	Repair & Maintenance		14,006.00	19,106.00
d)	Rent, Rates & Taxes		146,208.00	188,241.00
e)	Postage, Telephone & Communication Charges		40,380.00	44,313.00
f)	Printing & Stationery		71,986.00	77,625.00
g)	Travelling & Conveyance Expenses		24,234.00	115,431.00
h)	Subscription Expenses		300.00	300.00
i)	Expenses on Fees			2,699.00
j)	Freight & Cartage			200.00
k)	Others (Specify)			
	1	Medicine	77,714.00	56,615.00
	2	Sundries	19,324.00	11,738.00
	3	Miscelleneous Expenses	12,277.00	18,304.00
	4	Contingent Advance	8,000.00	7,977.00
TOTAL			**431,136.00**	**562,553.00**

SCHEDULE - OTHER ADMINISTRATIVE EXPENSES			Current year	Previous year
a)	Electricity & Power		12,115.00	16,179.00
b)	Water Chjarges		2,041.00	540.00
c)	Insurance			
d)	Repair & Maintenance		3,795.00	4,484.00
e)	Rent, Rates & Taxes		181,206.00	113,700.00
f)	Vehicle Running & Maintenance			
g)	Postage Telephone & Communication Charges		28,298.00	28,512.00
h)	Printing & Stationery		42,552.00	23,025.00
I)	Travelling & Conveyance Expenses		48,272.00	22,256.00
j)	Subscription Expenses		563.00	1,000.00
k)	Others (Specify)			
	1	Medicine	43,737.00	31,122.00
	2	Sundries	3,904.00	1,584.00
	3	Miscelleneous Expenses	18,767.00	11,441.00
	4	T.A. Advance	45,000.00	17,000.00
	5	Contingent Advance	159,078.00	2,000.00
TOTAL			**589,328.00**	**272,843.00**

NON-PLAN
(for R & P A/c.)
(Figure in Rupees)

SCHEDULE - OTHER ADMINISTRATIVE EXPENSES ETC.		Current year	Previous year
a)	Cartage & Carriage Inward		
b)	Electricity & Power	203,344.00	128,000.00
c)	Water Charges	13,882.00	12,076.00
d)	Insurance	13,063.00	7,567.00
e)	Repair & Maintenance	313,680.00	196,003.00
f)	Rent, Rates & Taxes	645,495.00	554,396.00
g)	Vehicle Running & Maintenance	206,331.00	177,539.00
h)	Postage, Telephone & Communication Charges	266,141.00	237,730.00
i)	Printing & Stationery	355,153.00	236,546.00
j)	Travelling & Conveyance Expenses	504,792.00	644,506.00
k)	Subscription Expenses		275.00
l)	Expenses on Fees		7,749.00
m)	Professional Charges		79,279.00
n)	Expenses on Advertisement & Publicity	2,400.00	
o)	Others (Specify)		
1	Lease Cess/Rent	45,872.00	
2	Medicine	162,732.00	120,560.00
3	Diet	14,723.00	22,216.00
4	Sundries	152,895.00	71,892.00
5	Provers & Consultants	207,700.00	218,870.00
6	Miscelleneous Expenses	266,688.00	149,247.00
7	T.A. Advance	49,730.00	10,000.00
8	Contingent Advance	202,413.00	938,205.00
	TOTAL	3,627,034.00	3,812,656.00

(Figure in Rupees)

SCHEDULE - EXPENDITURE STATEMENT OUT OF UCLA FUND		*Current year*	*Previous year*
1	*UCLA*		
a)	Honorariuym	278,000.00	121,162.00
b)	T.A. & Conveyance	32,527.00	47,010.00
c)	Refreshment Charges	22,800.00	10,142.00
d)	Video Coverage Expenditure		4,500.00
e)	Expenditure on Stationary	24,438.00	1,335.00
f)	Miscelleneous Expenditure	6,327.00	4,550.00
g)	Expenditure on Fees	1,500.00	
h)	Expenditure on Postage	300.00	
	TOTAL	365,892.00	188,699.00

SCHEDULE - EXPENDITURE STATEMENT OUT OF W.H.O. FUND

(Figure in Rupees)

		R.M.	EBCRH	G.D.	TOTAL
a)	TA/DA for outstation participants				
b)	TA/DA for outstation experts				
c)	Publication				
d)	DA for local participants				
e)	DA for local experts				
f)	Secy. Assistance				
g)	Refreshment Charges		2,000.00		2,000.00
h)	Printing & Stationery				
I)	Miscelleneous Expenses			45,438.00	45,438.00
				3,375.00	3,375.00
	TOTAL		2,000.00	48,813.00	50,813.00

STATEMENT OF ASSETS CREATED DURING THE YEAR 2005-2006

(Figure in Rupees)

S. No	Head	General Area Plan	Spl. Comp. Plan	Tribal Area Plan	Total Plan	Non-Plan	N.E. Region	UCLA
1	Hospital Equipment	1,539,460.00			1,539,460.00	216,380.00		
2	Furniture & Fixture							
	Cabinet/Racks	28,054.00			28,054.00	20,375.00		
	Table	90,730.00		1,250.00	91,980.00	100,034.00		
	Wooden Partition	262,141.00			262,141.00	12,642.00		
3	Computer & Peripharials							
	UPS/Voltage Stabilizer	93,912.00			93,912.00	39,388.00	36,000.00	
	Computer	53,872.00			53,872.00	33,996.00	289,600.00	
	Printer	7,900.00			7,900.00	33,684.00	62,560.00	
	Software	316,966.00			316,966.00	47,300.00		
4	Books	76,299.00	1,212.00	675.00	78,186.00		65,677.00	
5	Office Equipments							
	Photocopier Machine	132,063.00			132,063.00	87,750.00		
	Camera	94,620.00			94,620.00		448,616.00	
	Water Cooler					20,990.00		
	Referigerator					15,730.00		
	Room Heater							
	Fax Machine					2,450.00		
	Cycle						64,584.00	
6	Elect. Installation			2,000.00	2,000.00			
	Air Cooler			1,285.00	2,900.00	4,185.00		
							3,000.00	
	TOTAL	2,696,017.00	2,497.00	6,825.00	2,705,339.00	633,719.00	967,037.00	

STATEMENT OF ADVANCES TO GOVERNMENT SERVANTS

(Fig. in Rupees)

S. No.	Head	Opening Balance	Granted during the year	TOTAL	Adjusted during the year	Balance outstanding as on 31.03.2006
1	Computer Advance	1,437,664.00	332,000.00	1,769,664.00	364,944.00	1,404,720.00
2	Scooter Advance	607,250.00	164,000.00	771,250.00	257,312.00	513,938.00
3	Car Advance	1,320,611.00		1,320,611.00	253,752.00	1,066,859.00
4	Cycle Advance	1,540.00	5,500.00	7,040.00	2,830.00	4,210.00
5	Medical Advance	37,000.00	149,800.00	186,800.00	34,135.00	152,665.00
6	Festival Advance	45,010.00	235,500.00	280,510.00	237,920.00	42,590.00
7	Pay Advance	141,336.00	326,859.00	468,195.00	353,715.00	114,480.00
8	Fan Advance	800.00	1,000.00	1,800.00	1,600.00	200.00
9	Warm Cloth Advance		1,500.00	1,500.00	450.00	1,050.00
10	Flood Advance		5,000.00	5,000.00	1,400.00	3,600.00
	TOTAL	**3,591,211.00**	**1,221,159.00**	**4,812,370.00**	**1,508,058.00**	**3,304,312.00**

NAME OF ENTITY : CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

Receipt & Payment Account for the year ended 31.03.2006 in respect of General Provident Fund Account

(Figure in Rupees)

S. No.	RECEIPTS	Current year	Previous year
1	Opening Balance Bank Balance	633,976.73	844,054.61
2 i)	Amount transferred from General Account on account of GPF Subs.	17,038,760.00	15,589,232.00
ii)	Amount of G.P.F.Received from Dr. A.C.H.M.C & Hosp., Bhubaneshwar in r/o Prof. C. Nayak	532,979.00	Nil
iii)	Amount deposited by Shri H.C. Gupta	198,000.00	Nil
3	Amount of STDRs matured and encashed during the year	28,500,000.00	20,400,000.00
4	Income on Investment and Deposits Int. on STDRs 6299800.00 Int. on SB A/c. 14478.42	6,314,278.42	8,200,328.12
5	Amount received from Shri D. Jwalacharry on account of refund of excess payment made to him	90.00	Nil
	GRAND TOTAL	53,218,084.15	45,033,614.73

S. No.	PAYMENTS	Current year	Previous year
1	Payment on account of GPF i) Advance & withdrawals made during the year	17,875,937.00	12,899,548.00
	ii) Unclaimed amount transferred to Gen. A/C.	88,372.00	Nil
2	Investment made during the year	34,000,000.00	31,500,000.00
3	Closing Balance Bank Balance	1,253,775.15	633,976.73
4	Excess payment made to Shri D. Jwalacharry	Nil	90.00
	GRAND TOTAL	53,218,084.15	45,033,614.73

NAME OF ENTITY : CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

Balance Sheet as on 31.03.2006 in respect of General Provident Fund Account

(Figure in Rupees)

S. No.	LIABILITIES	Current year	Previous year
1	**GPF Capital Fund**		
a)	Opening Balance	80,218,094.40	71,612,521.40
b)	ADD: GPF Subscription	17,769,739.00	15,589,232.00
c)	ADD: Interest allowed on GPF A/C of the subs.	6,441,086.00	5,915,889.00
	TOTAL	104,428,919.40	93,117,642.40
d)	**LESS: Withdrawal**		
i)	Withdrawal 17875937.00		
ii)	Unclaimed amount transferred to Gen. A/c 88372.00		
	17,964,309.00	17,964,309.00	12,899,548.00
		86,464,610.40	**80,218,094.40**
2	**Reserve & Surplus**		
a)	Opening Balance	9,434,533.67	9,256,655.38
b)	Interest recd on SB A/C.	14,478.42	32,662.12
c)	Int. accrued on STDRs	6,147,932.54	6,061,105.17
		15,596,944.63	15,350,422.67
	LESS: Interest allowed on G.P.F. A/C	6,441,086.00	5,915,889.00
		9,155,858.63	**9,434,533.67**
	TOTAL	95,620,469.03	89,652,628.07
	GRAND TOTAL (Rounded off)	95,620,469.00	89,652,628.00

S. No.	ASSETS	Current year	Previous year
1	**Investment account**		
a)	Opening Balance	82,329,405.00	71,229,405.00
b)	LESS: amount of STDRs matured during the year	28,500,000.00	20,400,000.00
		53,829,405.00	50,829,405.00
c)	ADD: amount of STDRs purchased during the year	34,000,000.00	31,500,000.00
		87,829,405.00	**82,329,405.00**
2	**Amount of interest accrued on STDRs but not received**		
a)	Opening Balance	6,689,156.34	8,795,717.17
b)	Add: during the year	6,147,932.54	6,061,105.17
		12,837,088.88	14,856,822.34
	LESS: Received during the year	6,299,800.00	8,167,666.00
		6,537,288.88	**6,689,156.34**
3	**Amount to be recovered from Shri D. Jwalacharry**		
	Opening Balance 90.00		
	Less: Recovered 90.00	-	90.00
4	**Closing Balance**		
	Bank Balance	1,253,775.15	633,976.73
	TOTAL	95,620,469.03	89,652,628.07
	GRAND TOTAL (Rounded off)	95,620,469.00	89,652,628.00

NAME OF ENTITY : CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

Receipt & Payment Account for the year ended 31.03.2006 in respect of Pension Fund Account

(Figure In Rupees)

S. No.	RECEIPT	Current year	Previous year
1	Opening Balance Saving Bank Account No. 19806	1,348,395.54	920,612.48
2	Amount received on account of Pension Contribution in respect of Shri Shakil Ahmed	-	50,032.00
3	Interest on Saving Bank Account	35,816.46	59,223.06
4	Amount transferred from General Account to Pension Fund Account	7,500,000.00	7,000,000.00
	GRAND TOTAL	8,884,212.00	8,029,867.54

S. No.	PAYMENT	Current year	Previous year
1	Pension Payment made during the year	3,338,542.00	3,080,776.00
2	Payment made during the year on account of Retirement Gratuity and Comm. Value of Pension	2,832,960.00	1,609,108.00 1,991,588.00
3	Colsing Balance Saving Bank Account No. 19806	2,712,710.00	1,348,395.54
	GRAND TOTAL	8,884,212.00	8,029,867.54

NAME OF ENTITY : CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

Balance Sheet as on 31.03.2006 in respect of Pension Fund Account

(Figure In Rupees)

S. No.	LIABILITIES	Current year	Previous year	S. No.	ASSETS	Current year	Previous year
1	Pension Fund Account			1	Investment		
	Opening Balance	1,348,395.54	920,612.48		a) Opening Balance	-	-
	ADD: Amount of Interest received on S.B. A/c.	35,816.46	59,223.06		b) Add amount during the year	-	-
	Amount transferred from General Account	7,500,000.00	7,000,000.00	2	Closing Balance	2,712,710.00	1,348,395.54
	Amount received from IHBAS on account of Pension Contribution in respect of Shri Shakil Ahmed	-	50,032.00				
	TOTAL	**8,884,212.00**	**8,029,867.54**				
	LESS: Payment made DCRG, Comm. Value of Pension & Leave encashment	2,832,960.00	3,600,696.00				
	Pension Payments	3,338,542.00	3,080,776.00				
	GRAND TOTAL	**2,712,710.00**	**1,348,395.54**		**GRAND TOTAL**	**2,712,710.00**	**1,348,395.54**

NAME OF ENTITY : CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCCH IN HOMOEOPATHY

Receipt & Payment Account for the year 2005-2006 in respect of House Building Advance

(Figure In Rupees)

S. No.	RECEIPTS	Current year	Previous year	S. No.	PAYMENTS	Current year	Previous year
1	Opening Balance			1	House Building Advance Paid during the year		
	Amount transferred from General Account	660,845.63	1,000,000.00	1	Shri A.K. Tiwari Rs. 2,54,280.00	254.280.00	400.000.00
2	Interest received on Saving Bank Account	17,878.16	32,845.63	2	Closing Balance	501,395.79	660.845.63
3	Recoveries of H.B.A. transferred from General Account	76,952.00	28,000.00				
	TOTAL	**755,675.79**	**1,060,845.63**		**TOTAL**	**755,675.79**	**1,060,845.63**

Balance Sheet as on 31.03.2006 in respect of House Building Advance

S. No.	LIABILITIES	Current year	Previous year	S. No.	ASSETS	Current year	Previous year
1	Capital Fund House Building Account Opening Balance	1,032,845.63	1,000,000.00	1	HBA Recoverable from Staff Opening Bal. Rs. 373000.00		372,000.00
2	Interest received on S.B. Account	17,878.16	32,845.63		(+) Paid during the year Rs. 254280.00		
					Rs. 626280.00		
					(-) Recovered Rs. 76952.00	549,328.00	660,845.63
					Rs. 549328.00		
				2	Closing Balance Bank Balance	501395.79	
	TOTAL	**1,050,723.79**	**1,032,845.63**		**TOTAL**	**1,050,723.79**	**1,032,845.63**

Audit Report on the accounts of the Central Council for Research in Homoeopathy (CCRH), New Delhi for the year 2005-06.

Introduction

The Central Council for Research in Homoeopathy (Council), an autonomous organization under the Department of Ayurveda, Yoga, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Ministry of Health & Family Welfare, Government of India was set-up on 30 March 1978 under the Societies' Registration Act, 1860 for formulation, coordination, development and promotion of research in Homoeopathy. It was formed after dissolution of the erstwhile Central Council of Research in Indian Medicine and Homoeopathy (CCRIMH). The Council is fully financed by the Government of India and remains a premier organization engaged in organised research in homoeopathy in the country.

The audit of accounts of the Council has been entrusted to the Comptroller and Auditor General of India under Section 20(1) of the Comptroller and Auditor General's (Duties, Powers and Conditions of Service) Act, 1971 for a period of five years from 2003-04 to 2007-08.

The Council is mainly financed by grants-in-aid from the Government of India. During the year 2005-06, the Council had received grants of Rs. 14.10 crore (Rs. 9.10 crore under 'Plan' and Rs. 5.00 crore under 'Non-Plan') from the Department of AYUSH, Ministry of Health & Family Welfare. The Ministry had given permission to the Council to utilize the unspent balance of Rs. 53.26 lakh (Plan: Rs. 2.31 lakh and Non-Plan: Rs. 50.95 lakh under 'Plan) of previous year's (2004-05) grants.

2. Comments on accounts

2.1 Balance Sheet

Liabilities

2.1.1. Unspent grants

The Council had unspent grants aggregating Rs. 48.72 lakh as on 31st March, 2006 under the following heads:-

(Rs. in Lack)

Regular Grants	
World Health Organisation	28.56
University of California andLos Angeles(UCLA)	00.59
	19.57

The Council was required to either refund the unspent grant to the ministry/other bodies or show these unspent grants on the 'Liabilities' side of the Balance Sheet distinctly as 'returnable'. However, unspent grants were neither refunded nor shown as 'returnable' in the Balance Sheet.

2.1.2. Understatement of liability

The Council had depicted salary of Rs. 40.45 lakh due for March 2006, as prepaid salary instead of showing it under the head current liabilities. This has resulted in over statement of excess of Income over expenditure and understatement of current liabilities. This has also resulted in overstatement of payment and prepaid salaries. Exhibition of outstanding salary as prepaid salary under the head current assets is not proper.

Assets

2.1.3 Outstanding Advances

Advance of Rs. 5.20 crore were outstanding as on 31st March, 2006 [Schedule 4 – Current Assets]. These were given to various Research Units/Institutes and were pending for adjustment. These advances had increased by 248.80 per cent from Rs. 2.09 crore as on 31 March 2005 to Rs. 5.20 crore as on 31 March, 2006. However, confirmation of the large outstanding balance was not obtained from the units concerned. Age-wise break-up of the outstanding advances is as under:

	(Rupees in lakh)
Period	**Advances**
Upto 31.3.2001	6.00
2002-03	0.73
2003-04	0.12
2004-05	182.55
2005-06	330.83
Total	**520.23**

2.1.4 Non-adherence to the approved pattern of investments

The Council had invested entire amount of Rs. 9.05 crore on account of GPF/CPF and Pension Fund balances in the banks in contravention of the pattern of investment prescribed by Government of India, Ministry of Finance despite similar audit observations in the Audit Reports for the year 2003-04 and 2004-05.

2.1.5 Non-inclusion of "HBA Fund, Pension Fund and GP Fund" in the main account

The Council has prepared separate Receipts and Payments Account for the period 2005-06 and Balance Sheet as on 31 March 2006 for House Building Advance Fund. The same has not been depicted in the main accounts of the Council despite specific audit observation made at para 2.2.3 of the Audit Report for the year 2004-05.

Similarly, the Council has not depicted the Pension Fund and General Provident Fund balances in the main accounts of the Council though it had prepared separate set of accounts for these funds.

3. General

3.1 Diversion of funds

The Council had utilized an amount of Rs. 9.43 lakh out of Plan funds on payment of lease rent of Ooty research garden. This expenditure was a legitimate charge on Non-Plan funds. This resulted in diversion of plan funds aggregating Rs. 9.43 lakh for Non-Plan activities.

3.2 Physical verification not conducted

The Council had depicted assets worth Rs. 2.34 crore in the Balance Sheet as on 31 March 2006. However, physical verification of these assets was not conducted during 2005.06. In the absence of the same, the correctness of the assets as depicted in the Balance Sheet could not be verified in audit.

Net impact of audit comments

The net impact of the comments given in the preceding paragraphs is that the both assets and receipts were overstated by Rs. 40.45 lakh.

Sd/
Director General of Audit
Central Revenues

Place : New Delhi
Dated:

AUDIT CERTIFICATE

I have audited the attached Balance Sheet of the Central Council for Research in Homoeopathy as at 31 March, 2006 and the Income and Expenditure Account, Receipts and Payments account for the year ended on that date. Preparation of these financial statements is the responsibility of the Council's management. My responsibility is to express an opinion on these financial statements based on my audit.

I have conducted my audit in accordance with applicable rules and the auditing standards generally accepted in India. These standards require that I plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free from material misstatements. An audit includes examining, on a test basis, evidence supporting the amounts and disclosures in the financial statements. I believe that my audit provides a reasonable basis for my opinion.

Based on our audit, I report that:

1. I have obtained all the information and explanations, which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purposes of our audit;
2. Subject to the observations in the Separate Audit Report annexed herewith, I report that the Balance Sheet and the Income and Expenditure Account, Receipts and Payments Account dealt with by this report are properly drawn up and are in agreement with the books of accounts;
3. In my opinion and to the best of my information and according to the explanations given to me:

   (i) the accounts give the information required under the prescribed format of accounts;
   (ii) the said Balance Sheet, Income and Expenditure Account/Receipts and Payments Account read together with the Accounting Policies and Notes thereon, and subject to the significant matters mentioned in the Separate Audit Report annexed herewith, give a true and fair view.

   (a) In so far as it relates to the Balance Sheet of the state of affairs of the Central Council for Research in Homoeopathy as at 31 March 2006, and
   (b) In so far as it relates to the Income and Expenditure Account surplus for the year ended on that date.

Place : New Delhi
Dated:

Sd/
Director General of Audit
Central Revenues